अक्टूबर-दिसम्बर, 2024 (संयुक्तांक) ISSN- 2455-1309

साहित्य भारती

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

नक्षत्र

– गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

दूर यह भूरी पहाड़ी खोदने पर
बहुत भीतर से-
जगमगाते हुए निकले रत्न-
मंगल-शुक्र के कण,
अंशुमाली सूर्य के द्युति-खण्ड तेजस्वी।

बुद्धि-आलस त्याग
भर ली यत्न की हमने चमकती धूल
जिसमें जगमगाते रत्न के शतखण्ड।

मैदानी हवाओं में
चमकती चिलमिलाती दूर
वह भूरी पहाड़ी, या उपेक्षित तथ्य का टीला
कि सतही जानकारी में अजाना
ज़िन्दगी का स्तर तुम्हारी दृष्टि में
भूरी पहाड़ी-सा खड़ा वीरान-
तुम मेरे लिए वैसे कठिन बंजर
खड़े भूरे शिखर।

गहन परिचित अपरिचय की
काट पीली घास,
सतही जानकारी का भयानक
काट बंजरपन,
लगे हम खोदने दो ओर से
वह टेकड़ी भूरी,
बनाये गहन अन्तःपथ
अन्तस्थल-गुहा में तब
मिले ये दीप्त

साहित्य भारती

प्रबन्ध सम्पादक
आर.पी. सिंह
आई.ए.एस

सम्पादक
डॉ. अमिता दुबे

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

साहित्य भारती

त्रैमासिक
वर्ष : 27, अंक : 4
अक्टूबर–दिसम्बर, 2024 (संयुक्तांक)

सम्पादकीय कार्यालय
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग,
हजरतगंज, लखनऊ–226 001
email : sahityabharti1976@gmail.com

पत्रिका प्राप्ति–स्थान
पुस्तक विक्रय–केन्द्र
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग,
हजरतगंज, लखनऊ–226 001
दूरभाष : 0522–2614470

साहित्य भारती शुल्क

एक प्रति : रु0 25.00, वार्षिक शुल्क : रु0 100.00
आजीवन शुल्क : रु0 3,000.00
सदस्यता शुल्क : निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के नाम से ड्राफ्ट/एटपार चेक द्वारा

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के विचार उनके अपने हैं,
उनके विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

दो शब्द

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका साहित्य भारती का अक्टूबर-दिसम्बर, 2024 का अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। वर्ष 2024 का यह अन्तिम अंक है। इससे पूर्व राम साहित्य पर केन्द्रित विशेषांक की सराहना सुधी पाठकों, शोधार्थियों विद्यार्थियों के द्वारा की गयी जो हमारे लिए संतोष की बात है। इस विशेषांक हेतु कुछ आलेख बाद में भी प्राप्त हुए जिन्हें साहित्य भारती के इस अंक में स्थान दिया जा रहा है। आशा है के इस सामान्य अंक में भी पाठकों को विशेषांक का आनन्द मिलेगा।

हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका की रचनाओं का चयन करते समय नये रचनाकारों को भी स्थान दिया जाय। युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रति वर्ष राज्य स्तरीय कविता, कहानी, निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन संस्थान द्वारा किया जाता है जिनकी आयु सीमा 18 से 30 वर्ष होती है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, सांत्वना पुरस्कार जिसकी संख्या दो होती है, से पुरस्कृत युवा साथियों को संस्थान के स्थापना दिवस 30 दिसम्बर को सम्मानित, प्रत्येक वर्ष पुरस्कृत करने का प्रयास किया जाता है। चयनित रचनाओं में से कुछ रचनाओं को पत्रिका में प्रकाशित भी किया जाता है।

साहित्य भारती नयी लेखनी को मंच देने में संकोच नहीं करती बस रचना हमारी पत्रिका के अनुकूल होनी चाहिए।

शुभकामनाएं !

आर.पी. सिंह
आई.ए.एस.
निदेशक

सम्पादकीय

साहित्य क्या है? यह प्रश्न अत्यन्त सहज और स्वाभाविक है। साहित्य को परिभाषित करने के लिए अनेक विद्वानों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में-

'ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है'

तो सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द्र जी का मानना है-

'सबसे जीवित रचना वह है जिसे पढ़ने से प्रतीत हो कि लेखक ने अन्तर से सब कुछ फल की तरह प्रस्फुरित किया है।

वहीं अनंत गोपाल शेवड़े सच्चे साहित्य के निर्माण के लिए एकान्त-चिन्तन और एकान्त-साधना को आधार मानते हैं। वे साहित्य को चिरस्थायी और मंगलमय भी मानते हैं क्योंकि उसके आधारभूत मूल्यों की क्षति नहीं होती। तभी कहा भी गया है-

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।

हमारी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से मुखरित होती है। साहित्यकार इसलिए अमर होता है क्योंकि उसकी भौतिक काया तो समय के साथ नष्ट हो जाती है परन्तु शब्द के रूप में उसकी यश काया कभी नष्ट नहीं होती सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी मन्मथनाथ गुप्त ने किसी संदर्भ में कहा था- 'साहित्यकार की मृत्यु नश्वर शरीर की मृत्यु से नहीं हो जाती। उनके यशः कार्य को जरामरणज भय नहीं।' यह भय ही हमें आस्थावान बनाता है और आस्था के साथ आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है। हमारे आत्मविश्वास से जुड़ा साहित्य हमें रुचिकर होता है। कहा भी गया है साहित्य समाज का दर्पण होता है दर्पण में तो हमें वही छवि दिखायी देती है जो दर्पण के सम्मुख होती है। परन्तु साहित्य समय के सापेक्ष उन चित्रों को भी उकेरता है जहाँ समाज को दिशा निर्देश दिये जाने की आवश्यकता होती है, क्योंकि साहित्य समाज के आगे चलने वाली मशाल है। इस मशाल को लेकर चलने वालों को नमन करने के उद्देश्य से उनकी रचनाओं को आदर पूर्वक प्रकाशित करना साहित्य भारती त्रैमासिक पत्रिका का पाथेय हैं।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि साहित्य भारती का यह अक्टूबर-दिसम्बर, 2024 का अंक आप सबके लिए रुचिकर होगा। आपके सुझाव का स्वागत है।

डॉ. अमिता दुबे
प्रधान सम्पादक
मो0- 9415551878

साहित्य भारती

अनुक्रम

आलेख

मिथिला-साहित्य में संत परम्परा	डॉ0 अहिल्या मिश्र	01
रामायणम् महाकाव्य का वैशिष्ट्य	विजय रंजन	14
तुलसी के राम	डॉ0 हरिशंकर मिश्र	20
युगीन संदर्भों में मानस-मीमांसा	सुरेश चन्द्र शर्मा	25
पर्यावरण संरक्षण और तुलसीदास	योगेश कुमार मिश्र	31
गहरे पानी पैठ	डॉ0 चन्द्रपाल शर्मा	35
गोपाल सिंह नेपाली की कविता	डॉ0 मो0 दानिश	44
कर्त्तव्यपरायण उत्कलमणि गोपबंधु	डॉ0 चक्रधर त्रिपाठी	47
मुक्तिबोध की चिंतनशीलता	डॉ0 आराधना अस्थाना	52
आलोचना के शलाका पुरुषः रामविलास शर्मा	राजेन्द्र परदेसी	57
लोकनायक जयप्रकाश नारायण	अनुज प्रताप सिंह	60
केदारनाथ सिंह की याद में	राणा प्रताप सिंह	65
भावनात्मक एकता और हिन्दी	डॉ0 अखिलेश निगम 'अखिल'	72
हिन्दी - अवधी का अन्तर्सम्बन्ध	डॉ0 रामबहादुर मिश्र	75

कविता

चरणों में दे मुझे बसेरा	आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री	83
संशय की अमरबेल, सागरभर विश्वास, धूप के कम्बल	राधेश्याम बन्धु	84
प्रेरक कथा हैं राम	डॉ0 प्रेमशंकर त्रिपाठी	86
गुमान में क्या, और हम हैं, सीमित हैं हमारे, तो मत आना	नवीन शुक्ल	87
छांट लिया है मैंने, लिख दिया चट्टान में, सजी है दुनिया, पार होते हैं, बाजार में, शिकार है दुनिया, दोस्ती महसूस हो	ममता किरण	89
खामोशी	मोनिका जैन	92

कहानी

कैसे-कैसे चक्रव्यूह	भगवती प्रसाद द्विवेदी	93
विखराव	राजेन्द्र कुमार सिंह	98
जब उठी काली घटा	डॉ0 गिरीश पंकज	102
इस से पहले	योगीन्द्र द्विवेदी	105
कार्ड	पूजा गुप्ता	109
संत्रास	मंगला रामचंद्रन	112
अंतहीन भय	केशव मोहन पाण्डेय	117

यात्रा वृतान्त

जहाँ जन्म लिया शंकराचार्य ने	नीरज नीर	123
कृत्रिम बुद्धिमत्ता	रंजना मिश्रा	125
संस्थान समाचार		131

रचनाकारों से

- *'साहित्य भारती' त्रैमासिक के लिए साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचनाएँ, लेख, कहानी, कविता आदि आमंत्रित हैं।*
- *रचनाएँ स्पष्ट, हस्तलिपि में अथवा टंकित कागज के एक ओर हों, तथा रचनाकार का सम्पर्क सूत्र यथा पूरा पता, मोबाइल अथवा फोन नम्बर, ई-मेल अवश्य लिखें।*
- *अस्वीकृत रचनाएँ वापस नहीं की जातीं। अतः एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।*
- *साहित्य भारती में प्रकाशित रचना के मानदेय से पत्रिका की एक वर्ष की सदस्यता दी जाती है। अतः वर्ष में सामान्यतः एक ही रचना प्रकाशित की जाती है।*
- *रचना प्रकाशित होने पर लेखकीय प्रति प्रेषित की जाती है।*
- *प्रकाशित रचना की मौलिकता का सम्पूर्ण दायित्व रचनाकार का होगा।*
- *रचना के साथ अपना बैंक खाते में नाम (अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में), निरस्त चेक/बैंक विवरण IFSC कोड सहित भी भेजने का कष्ट करें।*

- सम्पादक

मिथिला - साहित्य में संत परम्परा

➲ डॉ0 अहिल्या मिश्र

अखिल भारत वर्ष की साहित्य अध्यात्मिक एवं दार्शनिक परम्परा अति प्राचीन एवं विलक्षण है। इसकी व्यापकता महासागर की तरह है। समय-समय पर आनेवाली सामाजिक विकृतियाँ एवं चुनौतियों के प्रति देश की दार्शनिकता का अध्यात्मिक परम्परा भक्ति का सहारा लेकर सम्पर्क करती रही है। विगत 500 वर्षो का साहित्य भक्ति आन्दोलन एक और भक्ति साहित्य की प्रणेता है तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति और समाज में हुए जनादोलन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण देशव्यापी एवं संस्पर्शी आन्दोलन है। इस आन्दोलन ने सम्पूर्ण भारत को एक साथ प्रभावित किया। देश के प्रत्येक प्रान्त में सभी भाषा और जातियों में अनेक संत प्रस्तुत हुए। किन्तु संतो की भाषा अलग-अलग थी। उनकी पूजा एवं साधना पद्धति में भी विभिन्नताएं थीं। किन संतों भक्तों एवं अनुयायियों के बीच एक सामान्य बात थी - भक्ति। यह भक्ति ही एक मात्र ऐसी भाव भूमि है जो सबों को आपस में जोड़ती रही। पूरा समाज या यों कहे सम्पूर्ण देश आपस में जुडा रहा। यही भाव समाज में जागरण और उत्थान का प्रणेता बना रहा।

नवचेतना लाते हुए मनुष्य के जीवन में उदात्त गुणों का आह्वान भी किया जाता रहा था। इसी भक्ति ने पूरब पश्चिम उत्तर-दक्षिण दसों दिशाओं के साथ हजारों वर्षों से हमारे देश को एक बनाए रखा है। भक्ति मानव - मानव के बीच - सभी भेदो - अभेदो को अस्वीकार कर अभेद की सृष्टि करती है। सभी प्रकारे की सामाजिक बुराइयों को नष्ट करती है। समाज में सामाजिक समरसता का निर्माण करना है। इसके माध्यम से अपने काल एवं परिवेश के आधार पर सत् साहित्य का निर्माण होता आया है।

मिथिला के साहित्य में संत परम्परा की ओर आगे बढ़ेने से पूर्व में साहित्य एवं संत पर बात रखते हुए मिथिला की संस्कृति, दर्शन तथा अध्यात्मक पर विभिन्न प्रभाव एवं साहित्य का उत्थान तथा संतो की देन पर भी दुष्टिपात करना उचित मानती हूँ। वैसे तो मिथिला का साहित्य अति प्राचीन है। इसके ऐतिहासिक प्रभाव का वर्णन भी आवश्यक है। संत के अन्य सभी अर्थो के साथ सबसे महत्वपूर्ण अर्थ जो ध्वनि होता है वह है मानव के रूप में सम्पूर्ण मानवता के गुणों का पालन करते हुए सौहाद्र, स्नेह, शांति तथा जीवन में उन्नति के साथ परोपकार की सहज भावनाओं का गतिमय संचरण हो। दूसरो के सुखो का ध्यान रखे। अपने अन्तः करण में शांति स्थापित कर ईश्वर के ध्यान एवं चर्चा में लीन होते हुए प्रत्येक मनुष्य के कल्याण हेतु कार्य करें। अध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण हो ।लोगों में ईश्वर प्राप्ति का ज्ञान बाँटे। साहित्य तो साहित अपने परिभाषा में ही प्रस्तुत करता है। समय सापेक्ष एवं अपने समय का दर्पण इसकी

प्रथमतः विशेषता होती है। स्वाभाविक है कि संतो के प्रार्दुभाव उनके समयानुकूल साहित्य में निहित होंगे। भक्तिकाल में सम्पूर्ण देश कि सभी भाषाओं में उधृत विभिन्न साहित्यों में तत्कालीन संतो का विशद स्वरुप हम देखते है। साहित्य इतिहास कार रामचन्द्र शुक्ल से लेकर अन्य लोगों ने इसे चित्रित किया है। मिथिला के साहित्य दर्शन एवं अध्यात्म तथा सभी सामान्य विषयों एवं जन पर बातें रखने की मात्र एक कोशिश होगी ।

वैसे तो मिथिला का साहित्य अति प्राचीन है। इसके ऐतिहासिक प्रभाव का वर्णन आवश्यक है। भारतीय संस्कृति अभी भी कई पहचाने जाने योग्य उप-सांस्कृतिक समूहों की तस्वीर प्रस्तुत करती है, जो नस्ल, धर्म, क्षेत्र, भाषा, जीवन शैली, कला, विचार और जीवन दर्शन के अंतर से अलग हैं। इसलिए, भारत को अक्सर इसके बहुलवाद द्वारा चिन्हित किया जाता है जिसमें सह- अस्तित्व और सहयोग बुनियादी विशेषताएँ रही हैं जिन पर कई सदियों से एक अन्य समकालिक संस्कृति का निर्माण किया गया है, लेकिन यह कहना भी गलत होगा कि इसमें कोई अंतर - संबंध नहीं था। समाज में सामूहिक तनाव - विभिन्न विचारधाराओं के बीच हमेशा से ही कई तरह के तनाव रहे हैं। इस प्रकार का तनाव भी मुख्यतः अपनी विचारधाराओं की सर्वोच्चता को लेकर था, न कि विभिन्न रीति-रिवाजों और जीवनशैली को लेकर। इस भूमि के लोगों ने अपनी परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार एक-दूसरे के सांस्कृतिक अनुष्ठानों के प्रति सहिष्णुता अपनाई, उन्होंने अन्य समुदायों की संस्कृति और रीति-रिवाजों को भी अपनाया । यहाँ कभी - कभी एक ही विचारधारा से अनेक विचारधाराओं का जन्म हुआ है, कई विचारधाराओं ने मिलकर एक विचारधारा का निर्माण किया है। जहाँ तक मिथिला समाज की बात है तो समय के साथ इस समाज में भी बदलाव आया । इसलिए मैथिल समाज के हर पहलू में आए बदलाव का अध्ययन जरूरी है। मध्ययुगीन काल के दौरान, विशेष रूप से मिथिला में, समाज पर शक्तिवाद, शैववाद और वैष्णववाद संप्रदाय का बड़ा प्रभाव था क्योंकि बौद्ध धर्म और जैन धर्म इस क्षेत्र से बड़े पैमाने पर निर्वासित थे लेकिन जिस प्रकार बौद्ध धर्म और जैन धर्म, मुख्यतः बौद्ध धर्म, ने आम जनता को कठोर ब्राह्मणवादी कर्मकांडों के विरुद्ध संदेश दिया, उसका प्रभाव समाज में लंबे समय तक बना रहा और इसी कारण सभी प्रचलित सम्प्रदायों के अनुयायियों ने एक-दूसरे के रीति-रिवाजों को अपना लिया। ये सारे बदलाव तत्कालीन साहित्य में दृष्टव्य है। आइए कुछ साहित्यक एवं अध्यात्मक विवेचनाओं पर नजर डाले। राजा जनक, विदेह यानी सीबरधव्ज से लेकर वर्तमान दरभंगा महाराज कामेश्वर सिंह तक संत परम्परा का निर्वाह करते हुए इनमें साहित्य का पोषण हुआ हैं।

यहाँ तक कि मध्यकाल के दौरान मिथिला में शाक्त संप्रदाय प्रमुख संप्रदायों में से एक था और तंत्र का अध्ययन किया जा रहा था, जिसके कारण अन्य ब्राह्मणवादी संप्रदाय और बौद्ध धर्म की तंत्र शाखा जैसे सहजिया संप्रदाय एक-दूसरे के करीब आए। और यही कारण था कि शाक्त और बौद्ध भक्तों ने एक-दूसरे की देवी को अपने-अपने संप्रदाय में स्थान दिया। यहाँ तक कि धार्मिक रीति-रिवाजों के मामले में भी इन संप्रदायों के अनुयायियों के बीच कोई विभाजन नहीं था। लेकिन यह सहिष्णुता धार्मिक प्रथाओं तक ही सीमित थी, एक-दूसरे के दर्शन के स्तर पर नहीं। इसलिए, मैथिल ब्राह्मणों ने बुद्ध को भगवान विष्णु के दसवें अवतार के रूप में स्वीकार किया, लेकिन बौद्ध दर्शन के साथ समझौता नहीं किया और इन संप्रदायों के बीच दार्शनिक शत्रुता बनी रही । जहाँ तक शैव और वैष्णव संप्रदाय का सवाल है, अनेक मैथिल विद्वानों ने इन संप्रदायों की मान्यताओं और प्रथाओं से संबंधित विशेष रूप

से रचनाएँ लिखी हैं, जिनसे पता चलता है कि इन संप्रदायों का महत्व तत्कालीन समाज में कितना था। इसके साथ ही बौद्ध संप्रदाय का ग्रन्थ थेरी गाथा, चर्या गाथा एवं अन्य साहित्य बहुतायत्त से उपलब्ध हैं । जैन, बौद्ध एवं सिद्ध संतों के द्वारा अभिव्यक्त मानवतावादी विचारधारा ने महायानी सामाजिक उन्नयन भाव, हीनयानी व्यक्तिवादिता, वज्रयानी भौतिकता, सहजयानी आत्मसंशोधनवादिता और नाथपंथी संस्कार वादिता का रूप ग्रहण कर लिया है। मध्यकालीन मिथिला के एक महान कवि, विद्यापति ने शिवसर्वस्वर और गोरक्षविजय नामक पुस्तक लिखी। भगवान शिव की भक्ति के लिए, दुर्गाभक्ति-तरंगिनी देवी शक्ति दुर्गा की भक्ति के लिए और गंगावाक्यावली पवित्र नदी गंगा के लिए लिखा। यहाँ तक कि विद्यापति ने अपनी कृति गंगावाक्यावली में शिव और विष्णु का मिश्रण दर्शाया है, जो इंगित करता है कि शैव और वैष्णव संप्रदायों के संतों और उनके भक्तों ने मिलनसारता का मार्ग अपनाया।

मिथिला में शाक्त परम्परा खंडवाल कुल के पहले की हैं पाल राजाओं के काल से मिथिला का यह क्षेत्र घनघोर शाक्त रहा। यानि बामाचार का मुख्य केंद्र। खण्डेवालो के प्रथम मुखिया महेश ठाकुर यहाँ आए तो वे भी शाक्त परम्परा के पोषक रहे। उस समय मछली मिथिला की प्रमुख उपज रही सो यह वहाँ का प्रमुख आहार बना। शाक्त दर्शन में होने से वह धर्म और लोक दोनों की वरेण्य हुई। यहाँ खटटर ककाक तरंग का एक उदाहरण देना चाहूंगी की मछली वहाँ के साहित्य एवं दर्शन में कैसे समाहित हैं - गरई गंगा कबई काशी झींगातो हैं घट-घट बासी। खंडवालों के नरेश यहाँ संस्कृत पाठशालाएँ खुलवाई। दरभंगा के महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह एक विद्वान एवं विधिव्यसनी राजा थे। इन्होने रायल एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता के सदस्य के रूप में कई पुस्तके छपवा कर साहित्य का संवर्द्धन किया। इनके साहित्य एवं शिक्षा सम्बन्धी कार्यों की कई कहानियाँ प्रचलित हैं।

काली माता का श्यामा माई मंदिर दरभंगा एक गहन आस्था एवं विश्वास का क्रेन्द्र इन्ही की समाधि पर समारक स्वरुप बना हैं।

आगे बढ़ने से पहले एक ऐतिहासिक सच की ओर संकेत देदूँ । बोलन व खैबर दर्रे से तुर्क, पठान, एवं अफगानियों का आगमन मिथिला में प्रभावशाली रूप में घटा।

इसके फलाफल ही मिथिला जैसी कठोर ब्राह्मणवादी भूमि के बावजूद, मध्यकाल में भी, इस्लामी रहस्यवाद सूफीवाद ने अपनी जगह बनाई क्योंकि यह जरूरी था कि तुर्क - मुगलों के रूप में एक नई राजनीतिक शक्ति ने पूरे उत्तर भारत में अपनी शक्ति स्थापित की थी। साथ ही मिथिला बंगाल का प्रवेश द्वार था, इसलिए राजनीतिक शक्तियों के लिए इसका महत्व सदैव बना रहा। इन्हीं कारणों से मिथिला में कुछ सूफी सिलसिले का प्रसार भी संभव हो सका। चिश्ती, शत्तारी और मदारिया सूफी सिलसिले से मुख्य रूप से मिथिला में सक्रिय थे। मिन्हाज अस शत्तार की रचना करने वाले शट्टारी सूफी संत शेख काज़िन मिथिला में बहुत प्रसिद्ध थे। हालांकि मिथिला ही नहीं, संपूर्ण भारत के सूफी संतों की एक प्रमुख विशेषता ने अपने विचारों के प्रसार के लिए स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ अन्य स्थानीय रीति-रिवाजों को भी अपनाया। उदाहरण के लिए, मध्यकाल के दौरान मिथिला सहित बिहार के सभी हिस्सों में सत्यपीर और मर्सिया जैसे लोकगीत प्रसिद्ध थे, जो समकालीन सूफी संतों के गीतों और शब्दों का मिश्रण है और उन सूफी संतों ने योग प्रथाओं और तांत्रिक मंत्रों को भी अपनाया था। इसीलिए मिथिला जैसे ब्राह्मण धर्म-बहुल क्षेत्र तक उनकी पहुँच संभव हो सकी। शत्तारी सूफी सिलसिले के अलावा, मदारिया सूफी भी मैथिल समाज में सक्रिय थे और उन्होंने कई ब्राह्मण

रीति-रिवाजों को भी अपनाया जैसे कि मृत्यु के बाद अपने बाल मुंडवाना (मुंडन) और गुरुवार को अपने गुरु (पीर) के लिए प्रार्थना करना। इस प्रकार, दोनों ओर से धार्मिक समन्वय की प्रक्रिया मध्ययुगीन मिथिला में एक सर्वदेशीय माहौल बनाए रखने में सहायक साबित हुई और मिथिला की धार्मिक स्थिति समकालीन समाज की एक ज्वलंत तस्वीर प्रस्तुत करती है जो कई धार्मिक पंथों से घिरा हुआ था और संप्रदाय एवं पंथ की बातें भक्ति साहित्य की रचना कर जन मानस को पल्लवित करते थे।

जब किसी इलाके में किसी धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों को किसी विशिष्ट विचारधारा के तहत लंबे समय तक नियंत्रित या जारी रखा जाता है, तो यह उस विशेष इलाके की विशेषता बन जाती है। और उस विशेषता के कारण, उस क्षेत्र का जनमानस उस विशेषता के आधार पर अपनी पहचान तलाशता है, बनाता है। कभी-कभी यह पहचान दंभ का रूप भी ले लेती है जो विचारधारा को व्यावहारिकता के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। यहाँ तक कि इस प्रक्रिया के अंतर्गत सामाजिक नियमों, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, रीति-रिवाजों और भाषा को भी एक समान ढाँचे में आकार देने का प्रयास किया जाता है, जिसके नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्ष होते हैं। मिथिला के संदर्भ में, हमें कुछ ऐसा ही मिलता है कि मिथिला प्राचीन काल से ही अपनी ब्राह्मणवादी संरचना और गतिविधियों को कायम रखे हुए था और कुछ अन्य तरीकों से यह बाद के काल में भी मजबूती से कायम रहा। इस प्रकार की विशिष्टताओं को बनाए रखने के लिए स्थानीय शासक वर्ग और बुद्धिजीवियों का समर्थन मिथिला के मामले में स्पष्ट प्रतीत होता है। मिथिला प्राचीन काल से ही वैदिक शिक्षा और दर्शन का प्रमुख केंद्र रहा है और यहाँ से शिक्षित विद्वानों ने भारत के अन्य हिस्सों में प्रचलित शिक्षा में योगदान दिया, लेकिन यह मानना बिल्कुल गलत होगा कि यह मैथिल विद्वानों की स्वनिर्मित सफलता थी। दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में, क्योंकि ब्राह्मण धर्म के विद्वानों और जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म के विद्वानों के बीच बहुत समय तक दार्शनिक युद्ध चलता रहा। फलस्वरूप, वर्चस्व की इस लड़ाई ने समाज में कटुता भर दी और सामाजिक संरचना को जटिल बना दिया। इसके अलावा, स्थानीय शासकों और शासक वर्गों ने इस लड़ाई का समर्थन करने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। हालाँकि, इस संघर्ष में ब्राह्मण धर्म और उसके विद्वानों की जीत हुई, क्योंकि इस पूरे संघर्ष का आधार एक-दूसरे की शक्ति की वैधता के मुद्दे से जुड़ा था। अतः हम पाते हैं कि मध्यकालीन मिथिला के बुद्धिजीवियों ने पुनः इस पर टिप्पणियाँ लिखना प्रारंभ कर दिया मध्यकाल में पुराणों, स्मृतियों और धर्मशास्त्रों ने धर्मशास्त्रों में वर्णित उचित आचार-व्यवहार को अपने ग्रंथों में विकसित समाज के लिए आदर्श माना और शासकों की सहायता से इसे समाज पर लागू करने का प्रयास किया, जो धीरे-धीरे इसका हिस्सा बन गया। उस क्षेत्र की संस्कृति साहित्य एवं अध्यात्म तथा दर्शन नवीनता का समिश्रण बन कर प्रस्तुत हुआ ।

समकालीन मैथिली विद्वानों ने धर्मशास्त्र और समृतियों पर भव्य रूप से लिखना आरम्भ किया। उनमें वर्णित नियमों और कानूनों को साहित्य में प्रमुख स्थान मिला। ये सभी बातें मिथिला, ब्राह्मण धर्म शास्त्र, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, दर्शन, साहित्य संस्कृति में उद्भूत हुए । सृजन और संत स्वभावी त्याग परंपरा की निभाने वाले होते थे। मिथिला के प्रसिद्ध राजनीतिक साहित्यिक विचारक चंदेश्वर ठाकुर कई मामले में धर्मशास्त्र लेखकों से अलग थे। ज्योतिश्वर ठाकुर भी नाम चिन्हित करने लायक है। विद्यापति ने कई ग्रंथो का लेखन किया है। शक्ति, शिव, वैष्णव (कृष्ण) और गंगाजी प्रार्थना सम्मिलित हैं ।

भारत देश की पवित्र भूमि में समय-समय पर

संतों का आगमन होता रहा है। विशेष तौर पर मिथिला की भूमि तो विदेह यानी जनक ऋषि राजा खीरध्वज के कारण अति प्रसिद्ध है। विदेह की संज्ञा से ही संत के सदगुणों का भान होता है। वैसे वेद पुराण में वर्णित कई संत ऋषि मिथिला की भूमि को पवित्र करते रहे हैं। कुछ ऋषिणियों की भी अमरकथा गाथा है। विदेहराज यानी राजा जनक यानी सीता के पिता/ कर्म से राजा होते हुए भी दर्शन और अध्यात्म का पालन करने हुए सम्पूर्ण विश्व को, त्याग और समपर्ण की सीख दे गए। सती की कथा से लेकर गौतम बुद्ध यानी राजकुमार सिद्धार्थ एवं मिथिला के वैशाली नगरी में जन्में भगवान महावीर जैसे संत इसी भूमि की उपज है, जिनके सत्य, अहिंसा, शांति एवं प्रेम प्रमुख गुण है। इनके साहित्य इन विचारों से पुष्ट है। इन संतों एवं महापुरुषों के साथ कवि विद्यापति का नाम लेना भी अपना औचित्य रखना है ये मिथिला के मधुबनी के निकटवर्ती गाँव के निवासी ब्राम्हण जाति के थे।

एक ओर उनकी रचनाएँ कृष्ण भक्ति से ओत-प्रोत है तो दूसरी और भगवती माँ दुर्गा एवं काली माता की भक्ति गीत सम्पूर्ण मिथिला में धार्मिक कार्य के आरंभ में आराध्यभाव से गायी जाती है। "जय जय भैरवि असुर भयाऊनि के बोल किसी भी अनुष्ठान में गूँजते है मधुबानी जिला (मिथिला) के भवनीपुर ग्राम में एक मंदिर उगना (महादेव मंदिर) है जिसके लिए किंवदति है कि भगवान शिव इनकी आराधना से प्रसन्न होकर बालक रूप धारण कर इनकी सेवा किया करतें थे। एक दिन विद्यापति की पत्नी ने उन्हें झाड़ू से मार दिया। उसी दिन शिव अंतर्धान हो गए। उनके वियोग में विद्यापति पुकार उठे उदनारे मोर कतय गेला। कतय गेला शिव किए भेला। अतः यहीं इसी मंदिर में शिव के संग विद्यापति की मूर्ति स्थापित है। वही इनके लिए प्रसिद्ध है कि अपने अंतिम समय में आप गंगा लाभ प्राप्त करना चाह रहे थे। अतः खड़खड़िया में सवार होकर। सिमरिया धाम के लिए चल पड़े। किन्तु करीब एक कोस पूर्व ही उनकी तबियत अधिक बिगड़ने लगी और वे गंगा के तट तक पहुँचने में असमर्थ हो गए। इन्होंने गंगा स्तुति की 'बर सुख सार पओले तु अति रे' और गंगा नदी माता अपनी सीमा तोडका इन तक आ पहुँची माता गंगा (नदी) का स्पर्श कर इन्होंने प्राण त्यागे। इनकी अन्य रचनाओं पर सामाजिक असमानता, बुराइयाँ आदि पर सन्मार्ग की पोषक रही है।

देखा जाए तो सम्पूर्ण भारत ही ऐसी परम पवित्र भूमि रही है, जहाँ अनादि काल से असंख्य ऋषि-मुनियों का जन्म होता रहा है। इसकी माटी में जन्म लेने के लिए मनुष्य तो क्या, देवता भी तरसते रहे हैं। मिथिला और सम्पूर्ण बिहार की धरती पर भी त्रेता युग में राजर्षि जनक से लेकर आगे के समय में विश्व प्रसिद्ध 'भगवान बुद्ध', 'भगवान महावीर, प्रख्यात सिक्ख संत गुरु गोविन्द सिंह सहित अनेक हिन्दू-मुस्लिम धर्मावलम्बी तपोनिष्ठ जन्म लिए भगवान बुद्ध ने बोधगया में एक वटवृक्ष (बोधीवृक्ष) के नीचे ज्ञान प्राप्त किया था और बाद में बौद्ध धर्म के प्रवर्तक बने भगवान महावीर भी वैशाली में जन्म लेकर जैन धर्म के प्रवर्तक बने। सिक्ख धर्म के दसवें गुरु, गुरु गोविन्द सिंह का जन्म भी पटना में हुआ था। इन संतों के विषय मैं तो दुनिया भर में इतना लिखा गया है कि साहित्य भी इस युग के संत गाथा से अटी पड़ी है। इतना लिखा जा चुका है कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं है । इनके दर्शन और उपदेश का अनुकूल साहित्यिक भंडार है।

आगे चल कर मिथिला की इस धरा पर बड़ी संख्या में प्राचीन ऋषियों ने गंगा तट पर साधना करते हुए परम चेतना को प्राप्त किया। इसमें गौतम, कणाद, कालीदास, याज्ञवल्क्य, अयाची, मंडन मिश्र, अहिल्या, गार्गी, मैत्रेयी, भारती, भामती आदि महान संतों ने पूर्व में मिथिला की धरती पर समय-समय पर जन्म लेकर हमें

गौरवान्वित करते रहे हैं। पिछले दो-तीन शताब्दी में भी कुछ विलक्षण संतों ने मिथिला में जन्म लेकर सम्पूर्ण विश्व को अध्यात्मिक और योग का ज्ञान प्रदान किया है, जिसमें सरभंग सम्प्रदाय के संत धरनीदास, संत दरिया साहब, परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं बाबा देवी, साहब, महर्षि मेंहींदास परमहंस के अतिरिक्त स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी दिव्यानन्द, स्वामी ज्ञानदेव, स्वामी करपात्री महाराज, स्वामी माधवानन्द, स्वामी रामभद्राचार्य, स्वामी रामसुखदास स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, स्वामी शिवानन्द, स्वामी अग्निवेश, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी आदि के नाम आदर के साथ लिए जा सकते हैं।

मिथिला की ही यह पुण्य भूमि है, जहाँ नालन्दा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय थे। इन विश्वविद्यालयों में दुनिया भर के विद्यार्थी शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने आते थे। धर्मान्ध बख्तियार खिलजी ने नालन्दा विश्वविद्यालय की सारी पुस्तकों को जलाकर इसे तबाह कर दिया था। इन सभी संतों के जीवन-दर्शन और उनके उपदेशों के बारे में लिखा जाय तो कई हजार पन्नों में भी इन्हें समेटना दुष्कर होगा। अतः इस छोटे-से आलेख में कुछ थोड़े ही संतों के बारे में संक्षिप्त विवरण इस प्रकार दिया जा रहा है-

सरभंग सम्प्रदाय

इसे 'अघोर और औघड़ पंथ की ही एक शाखा माना जाता है। इसका प्रसार अधिकतर चम्पारण, सारण, मुजफ्फरपुर आदि क्षेत्रों में है। सरभंग का शाब्दिक अर्थ 'समदर्शिता' है। इसमें जाति, सगुण-निर्गुण, पंथ और सम्प्रदाय के आधार पर कोई भेद-भाव नहीं किया जाता है इसकी स्थापना एक वैदिक ऋषि सरभंग ने की थी जिनका जिक्र वाल्मीकि रामायण और तुलसीदासकृत रामचरितमानस में भी मिलता है। सरभंग ऋषि भीलनी शबरी के गुरु थे। उन्होंने अपना शरीर त्याग करते समय उस कुटिया में श्रीराम के आगमन की भविष्यवाणी की थी।

इस पंथ के दो भाग हैं - (1) निरबानी परम्परा, जिसमें स्त्रियों का प्रवेश वर्जित है तथा (2) घरवारी परम्परा जिसमें स्त्रियों को दीक्षित होने की इजाजत है। इस पंथ का मानना है कि साधक गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए ईश्वर की भक्ति कर सकते हैं। इस पंथ में बड़ी संख्या में दूसरे धर्म के लोगों ने भी दीक्षा ली। सरभंग पंथ के लोग सगुण और निर्गुण दोनों की उपासना करते हैं। इसी निर्गुण को कुछ लोग 'अलख या निरालम्ब' भी कहते हैं।

संत धरणीदास (1646-1648)

संत धरनीदास बिहार की धरती पर जन्मे बहुत उच्चकोटि के संत हुए हैं वे रामानन्दी सम्प्रदाय के संत और भोजपुरी कवि थे जिन्होंने भोजपुरी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे सम्राट औरंगजेब के समकालीन थे। उनके अनुयायियों को धरणीदासी कहा जाता है, जो गले में माला पहनते हैं, भजन गाते हैं और शाकाहारी होते हैं।

उनका जन्म 1646 ई. में बिहार में छपरा के पास माँझी गाँव के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम परशुराम और माता का नाम बीरमा था और उनके बचपन का नाम गैबी था। उनके पूर्वज माँझी जागीर में दीवान के पद पर कार्यरत थे। संत बनने से पहले उन्होंने राज्य की भी सेवा की। उनके संत बनने के बारे में लोकप्रिय मिथक यह है कि एक बार अपने काम के दौरान उन्होंने कागजों पर एक बर्तन में पानी डाल दिया। ऐसा करने का कारण पूछने पर उन्होंने जवाब दिया 'आरती के दौरान भगवान जगन्नाथ जल गए थे और उन्होंने आग बुझाने के लिए ऐसा किया था'। जब मकान मालिक ने पूछताछ की तो कहानी सच निकली। उसके बाद वह एक संत बन गये ।

1657 ई. में वे रामानन्द के अनुयायी बन गये, जो वैष्णव धर्म के प्रचारक थे। जिन दो घटनाओं के कारण उन्हें सांसारिक जीवन छोड़कर भिक्षु बनना पड़ा, उनमें से एक उनके पिता की मृत्यु थी, और दूसरी मुगल सम्राट

शाहजहाँ की मृत्यु उन्होंने चरणदास नामक संत से दीक्षा ली और फिर विनोदानन्द के शिष्य बन गए । सदानन्द और करुणानिधान उनके दो उल्लेखनीय शिष्य थे।

अपने जीवनकाल में उन्होंने एकमा के पास पारस मठ, भटनी के पास सहनम मठ जैसे कई मठों की स्थापना की, जहाँ हर साल उनसे और उनके अनुयायियों सदानन्द और शिवानन्द से जुड़ा एक मेला लगता है। उन्होंने माँझी में भी एक मठ की स्थापना की। उनके धार्मिक विचार मूर्तिपूजा और अन्धविश्वास के विरुद्ध थे। उन्होंने तीन किताबें लिखीं (1) प्रेम प्रकाश (प्रेम प्रगास) (2) शब्द - प्रकाश, जो क्रमशः भोजपुरी और ब्रज भाषा में थीं और (3) अलिफ, जो फारसी में थी। 'शब्द प्रगास' का प्रकाशन 1887 में छपरा के नासिक प्रेस से हुआ था। धरनीदास की वाणी' नामक उनकी रचनाओं का एक संग्रह भी 1911 ई. में मात्र 47 पृष्ठों की पुस्तिका के रूप में इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था ।

परम चेतना सम्पन्न इस संत ने समाज से ऊँच-नीच का भेदभाव मिटाकर समरसता लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इनकी रचनाएँ 'प्रेम प्रकाश' और 'शब्द प्रकाश' अध्यात्मिक साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। उनकी अच्छी शिक्षा हुई थी और राजा माँझी के दरबार में उन्हें नौकरी भी मिली थी। लेकिन उनके अन्दर अध्यात्मिक चेतना बहुत कम उम्र से ही जागी हुई थी, लिहाजा उन्होंने नौकरी छोड़कर अपना जीवन ईश्वर की भक्ति, मानव कल्याण और समाज सेवा को समर्पित कर दिया। इन्होंने धरनी पंथ की स्थापना की, जिसने समाज की बुराइयों को दूर करने की दिशा में बहुत अच्छा काम किया।

संत दरिया साहब

यह एक महान संत थे। इन्होंने दरिया पंथ की स्थापना की । इनकी रचना 'दरिया ग्रंथावली' बहुत लोकप्रिय है। क्षत्रिय कुल में उत्पन्न होने के बावजूद उन्होंने कभी जातिगत भेद-भाव को नहीं माना। उनके अधिकतर अनुयायी पिछड़ी कही जाने वाली जातियों के थे। वे कहते थे "सभी प्राणियों - में ईश्वर की ज्योति है । वह गुणों से अतीत, अजर और अमर है।

संत दरिया साहब ने शब्द की साधना पर बल दिया। उन्होंने कुण्डलिनी जागरण की विधियाँ बतायीं और नाम महिमा पर बहुत जोर दिया। उन्होंने बाहरी आचारों और पाखंडों का खंडन किया। उनके अनुसार राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु सभी में वही एक ज्योति है।

परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाई (1787-1872)

ये बिहार के मिथिला क्षेत्र के योगी और अध्यात्मिक कवि थे जिन्हें 'बाबाजी' के नाम से भी जाना जाता था। इनका जन्म सहरसा जिले के परसरमा गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था । इन्होंने बाल्यावस्था में ही योग साधना और वेदान्त दर्शन का गहन अध्ययन कर लिया था। विवाहोपरान्त की खोज में ये जंगल की ओर निकल पड़े। ये भारत और नेपाल के बहुत से मठ मन्दिरों में घूमते रहे। अन्ततः तराई क्षेत्र के गुरु लम्बानाथ स्वामी के शिष्य बन गये जो स्वयं गुरु गोरखनाथ के शिष्य थे।

उन्होंने मैथिली और हिन्दी में राधा- कृष्ण और शिव-पार्वती सम्बन्धित बहुत-से भक्ति पदों (भजनों) की रचनाएँ कीं। इनके द्वारा रचित बहुत-से पदों को क्रिश्चियन जॉन नामक एक अंग्रेज ने प्रकाशित करवाया था। इनके बहुत-से भजनों के एक संग्रह को भजनावली भी कहा जाता है।

योग और तंत्र - साधना की शिक्षा ग्रहण कर परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाई (बाबाजी) सबसे पहले दरभंगा लौटे। तत्पश्चात् वे एक बार बनगाँव गये जहाँ ग्रामीणों ने उनकी योग प्रसिद्धि तथा एक ख्यातिलब्ध अखाड़े के मल्लयोद्धा के रूप में उनका भव्य स्वागत किया। लोगों के इस आदर-सम्मान का प्रतिफल यह हुआ कि बाबाजी ने

अपने जीवन का शेष भाग बनगाँव में ही कुटिया बनाकर रहने का निर्णय लिया। कारी झा नामक एक ग्रामीण ने दूध के लिए बाबाजी को एक गाय भेंट की थी। ऐसा कहा जाता है कि बाबा ने भी ग्रामीणों के लिए समय-समय पर अनेक भलाई के कार्य किए।

चूँकि इन्हें बहुत-सी दैवीय शक्तियाँ प्राप्त थीं, इनके गाँव परसरमा और बनगाँव में इनका मन्दिर बनाकर लोग इन्हें देवता की तरह पूजते हैं। वर्तमान समय में इनके असंख्य शिष्य इनकी शिक्षा, उपदेश और भजनों के प्रचार-प्रसार में लगे हैं।

बाबा देवी साहब (1841-1919)

बाबा देवी साहब संतमत धार्मिक आन्दोलन के नेताओं में से एक थे, जिन्होंने इसे पूरे उत्तर भारत और पाकिस्तान में लोकप्रिय बनाया।

महर्षि मेंहीदास परमहंस (1885-1969)

महर्षि मेंही परमहंस जी महाराज एक प्रसिद्ध अध्यात्मिक गुरु थे जिनका जन्म भारत के बिहार राज्य में हुआ था। उन्हें हिन्दू धर्म के अध्यात्मिक और दार्शनिक प्रवचन और सत्य की खोज के अपने आदर्शों में उनके योगदान के लिए जाना जाता है।

उनका जन्म एक ग्रामीण परिवार में सात बच्चों में सबसे छोटे के रूप में हुआ था। बालक मेंहीं का प्रारम्भिक जीवन चुनौतियों और अनुभवों से भरा था। जब वह बहुत छोटे थे, तो उन्होंने अध्यात्मिक ज्ञान की तलाश में अपने परिवार और अपनी मातृभूमि को छोड़ दिया। जीवन की वास्तविकता को जानने और सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने के लिए उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की।

महर्षि मेंही परमहंस संतमत की परम्परा के संत हैं उन्हें आमतौर पर 'गुरुमहाराज' के नाम से जाना जाता है वे 'अखिल भारतीय संतमत सत्संग के गुरु थे। उन्होंने वेदों, मुख्य उपनिषदों, भागवत गीता, बाइबिल, बौद्ध धर्म के विभिन्न सूत्रों, कुरान, संत साहित्य का अध्ययन किया और इससे यह आकलन किया कि इन सभी में निहित आवश्यक शिक्षा एक ही है। उन्होंने 'मोक्ष' प्राप्त करने का एक और सबसे आसान तरीका बताया वे हैं सत्संग' और 'ध्यान' मेंहीं उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद के बाबा देवी साहब के आप प्रत्यक्ष शिष्य थे।

प्रारम्भिक जीवनः उन्होंने कम उम्र से ही अकेले अध्ययन किया और फिर 1909 में बाबा देवी साहब के साथ अध्ययन किया। अपने शिक्षक के निर्देशानुसार मेहीं ने कई वर्षों तक कटिहार जिले के मनिहारी में स्थित एक आश्रम में गहन ध्यान में बिताया। महर्षि मेही का जन्म 28 अप्रैल 1885 को सहरसा जिले के खोखसी श्याम गाँव में उनके नाना के घर पर हुआ था। उनके पिता का घर पूर्णिया जिले के बनमनखी के समीप शिकली गढ़ धरहरा में था। वहाँ एक गुफा थी जिसमें वे ध्यान के लिये जाया करते थे उनके पिता का नाम बाबूजन लाल दास था।

पारिवारिक ज्योतिषी ने उनके ज्योतिषीय चार्ट के आधार पर उनका नाम रामानुग्रह लाल दास रखा, यह नाम मेंहीं के स्कूल रिकार्ड में भी पाया जाता है, उनके द्वारा अपनाए गए नाम मेंहीं का अर्थ है महीन? दुबला-पतला और तेज या सूक्ष्म भी लगभग दो दशक बाद जब रामानुग्रह लाल दास अपने गुरु बाबा देवी साहब के सम्पर्क में आये तो बाबा उनकी असाधारण तीक्ष्ण बुद्धि से प्रभावित होकर उन्हें मेंही कहने लगे।

जब मेंहीं चार साल के ही थे तो उनकी माँ जनकवती देवी की मृत्यु हो गई। उसकी बड़ी बहन उसके प्रति बहुत दयालु थीं। वह बहन और उसके पिता उसकी बहुत अच्छी देख-भाल करते थे। जब वह आठ साल के हुए तो उन्हें गाँव के स्कूल में भर्ती कराया गया। इस विद्यालय में स्थानीय कथी लिपि में शिक्षा दी जाती थी। घर पर उन्होंने अपने पिता को कवि संत गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा

रचित महान महाकाव्य रामचरितमानस का नियमित पाठ करते देखा। उनके पिता अक्सर सुनाते समय बहुत भावुक हो जाते थे और कई बार तो फूट- फूट कर रोने लगते थे। इससे मेंही को महाकाव्य की सामग्री जानने की उत्सुकता हुई। चूँकि महाकाव्य देवनागरी लिपि में छपा था इसलिए पहले तो वह इसे पढ़ नहीं सके। हालाँकि उन्होंने देवनागरी के अक्षरों को कैथी के अक्षरों से जोड़ने का प्रयास किया और जल्द ही वे देवनागरी लिपि भी सीख गए। रामचरितमानस ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला और इसकी कई चौपाइयों और दोहे उन्हें कंठस्थ हो गये। उन्होंने माध्यमिक विद्यालय में अंग्रेजी, उर्दू और फारसी भाषाएँ भी सीखीं ।

अपने बचपन के दिनों में महर्षि मेंही परमहंस शिव के उपासक थे, लेकिन उनकी पूजा करने की विधि अद्वितीय थी वे जमीन में एक कील गाड़ देते थे उस पर जल चढ़ाते थे और फिर उसके सामने ध्यान में बैठ जाते थे किशोरावस्था में वह बहुत अच्छे फुटबाल खिलाड़ी भी थे। गेंद को ड्रिबल करने के उनके कौशल से प्रभावित होकर उनके दोस्तों ने उन्हें टीम का कप्तान बना दिया। हालाँकि बहुत जल्द ही उनकी खेल के साथ-साथ औपचारिक पढ़ाई में रुचि कम होने लगी। यहाँ तक कि उन्हें रामचरितमानस के अलावा सुखसागर और महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन का भी गहरा शोक हो गया जब उसके दोस्त इन किताबों का अध्ययन करने के बदले खेलने में व्यस्त रहते थे तो वे अक्सर एकान्त में चले जाते थे । स्कूली शिक्षा और औपचारिक पढ़ाई के प्रति उनकी अरुचि उत्तरोत्तर बढ़ती गई और 04 जुलाई, 1904 को अपने चरम पर पहुँच गई। दसवीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ चल रही थीं और दूसरा पेपर था अंग्रेजी पहला प्रश्न था स्मृति से बिल्डर्स कविता उद्धृत करें और इसे अपनी अंग्रेजी में समझाएँ प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने पहली चार पंक्तियाँ उद्धृत की,

उन पंक्तियों के केन्द्रीय सन्देश की व्याख्या करते समय बालक मेंही त्याग की भावना के इतने प्रबल ज्वार से अभिभूत हो गये कि खड़े होकर निरीक्षक से पूछा, "May I go out Sir? यह सोचकर कि वह शौचालय जाना चाहता है, निरीक्षक ने अनुमति दे दी, लेकिन उसे क्या पता था कि यह युवा लड़का न केवल परीक्षा हाल से कुछ देर के लिए बाहर जा रहा था, बल्कि उसने हमेशा के लिए गृहस्थ जीवन को अलविदा कहने का फैसला कर लिया था। वास्तव में मेंही पहले ही घर से भागने की तीन असफल कोशिशें कर चुके थे, लेकिन इस बार उनका संकल्प दृढ़ था और उसने फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

गुरु : बाबा देवी साहब मेंहीं के प्रमुख अध्यात्मिक गुरु थे। हालाँकि, बाबा देवी साहब से मिलने से पहले, सच्ची मुक्ति के लिए उनकी तीव्र इच्छा उन्हें तीन अन्य गुरुओं (अध्यात्मिक शिक्षकों) के पास ले गई।

पारिवारिक परम्परा के अनुसार, मेंहीं की अध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत 1902 में बिहार राज्य के मिथिलांचल के दरभंगा जिले के एक ब्राह्मण पुजारी श्री राम झा द्वारा की गई थी। श्री झा भगवान शिव और देवी माँ काली के उपासक थे और शिकार के बहुत शौकीन थे। अपने बाद के वर्षों में, उनकी आँखों की रोशनी चली गई और उन्हें बस यह एहसास हुआ कि यह (दृष्ट की हानि) पक्षियों और जानवरों को मारने के उनके पिछले कृत्यों का परिणाम था। इसलिए उन्होंने मेंही को कभी भी हिंसा न करने का उपदेश दिया।

दरियापंथ (बिहार के संत दरिया साहब के नाम पर एक सम्प्रदाय) के साधु रामानन्द स्वामी मेंहीं के दूसरे गुरु थे। रामानन्द स्वामी ने मेंहीं को मानस जाप (आन्तरिक रूप से किसी पवित्र मंत्र का जाप करना या बार-बार पढ़ना), 'मानस ध्यान' (किसी पवित्र देवता या गुरु के रूप पर आन्तरिक रूप से ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश

करना) और बाह्य दृष्ट साधन' (स्थिर दृष्ट से देखना) का अभ्यास करना सिखाया। लक्ष्य बाहर है, भीतर नहीं। हालाँकि संत साहित्य और प्रासंगिक अध्यात्मिक ग्रंथों के अध्ययन के माध्यम से ही यह एहसास हुआ कि ध्वनि/शब्द ध्यान (सुरत-शब्द-योग) का ज्ञान मुक्ति के लिए जरूरी है एक ऐसा डोमेन जिसके बारे में रामानन्द स्वामी को जानकारी नहीं थी। मेंहीं द्वारा सार शब्द' (सर्वोत्कृष्ट अनस्ट्रक साउंड) के बारे में उत्सुकता से पूछे जाने वाले सवाल अक्सर उनके गुरु रामानन्द स्वामी जी को परेशान या क्रोधित कर देते थे, जिससे मेंहीं असन्तुष्ट हो जाते थे और पूरी तरह से आश्वस्त हो जाते थे कि उन्हें एक और उपयुक्त गुरु ढूँढना होगा। इस प्रकार वह बेचैन रहते थे और एक पूर्ण गुरु की तलाश में रहते थे। वह कई स्थानों पर दौड़ पड़ते थे, जहाँ भी उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति के मिलने की सम्भावना के बारे में पता चलता था जो ध्वनि ध्यान में उनका मार्ग- दर्शन कर सकता था।

यह उनकी दूर-दूर तक की निरन्तर खोज थी, जो मेंहीं को जोतराम राय के बाबा देवी साहब के श्री धीरज लाल नाम के एक शिष्य तक ले गई, जो उसी गाँव का था जहाँ मेंहीं रामानन्द स्वामी की उपस्थिति में रह रहे थे। मेंहीं कई विषयों पर श्री धीरज लाल द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण से बहुत सन्तुष्ट थे, जो लम्बे समय से मेंहीं को परेशान कर रहे थे। दिन के दौरान खाली समय निकालना कठिन था क्योंकि उन्हें अपने पूर्व गुरु द्वारा निर्देशित विभिन्न कर्तव्यों का पालन करना पड़ता था। इसलिए रात में रामानन्द स्वामी जी के प्रति अपने कर्तव्यों से मुक्त होने के बाद वह श्री धीरज लाल के पास जाते थे और दोनों के बीच आधी रात से लगभग 3 बजे तक गहन चर्चा होती थी और यह लगभग तीन महीने (मई- जुलाई, 1909) तक चलता रहा। अन्ततः उन्हें विश्वास हो गया कि वह सही स्थान पर पहुँचे हैं और बाबा देवी साहब वास्तव में सच्चे गुरु थे जिनकी उन्हें तलाश थी। चूँकि बाबा देवी साहब यूपी के मुरादाबाद में रहते थे, श्री धीरज लाल ने मेंहीं को सलाह दी कि वे इस बीच भागलपुर के श्री राजेन्द्र नाथ सिंह से सम्पर्क करें जो अपेक्षाकृत निकट का स्थान था। बाबा देवी साहब के दीक्षित श्री राजेन्द्र नाथ पेशे से वकील थे। उन्होंने मेंहीं के साथ कुछ प्रारम्भिक चर्चाएँ कीं और उनमें बी.एम.आई. (बॉडी माइंड इंटेलेक्ट ईगो काम्प्लेक्स) के बन्धन से मुक्ति के लिए प्यासा एक वास्तविक साधक देखा । उन्होंने खुशी से मेंहीं को दृष्टि साधन (आन्तरिक प्रकाश का योग दो आँखों के केन्द्र... के सामने आन्तरिक आकाश में टकटकी लगाने की एक तकनीक, जिसे विभिन्न रूप से सुषुम्ना या सुखमना कहा जाता है) की कला सिखाते हुए दीक्षा दी। अजना चक्र, तीसरी आँख, दसवाँ द्वार, शिव नेत्र आदि) का उद्देश्य स्थूल क्षेत्र, अन्धेरे के दायरे को पार करना और इस प्रकार प्रकाश के दायरे, सूक्ष्म विमान में जाना है। जैसे ही कृतज्ञ मेंहीं ने श्रद्धापूर्वक श्री राजेन्द्र नाथ के पैर छूने की कोशिश की उन्होंने उन्हें जबरन रोक दिया और कहा "देखो, मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ। मैंने तुम्हें केवल सदगुरु - बाबा देवी साहब द्वारा अधिकृत विधि बताई है। मैं नहीं, बल्कि बाबा देवी साहब ही तुम्हारे गुरु हैं। मेंहीं ने जवाब दिया- "हाँ, बिल्कुल, वही मेरे गुरु हैं और आपके भी गुरु हैं, लेकिन चूँकि आपने मुझे यह (दृष्टि साधन) सिखाया है, तो आप भी मेरे गुरु की तरह ही हैं।" इस प्रकार श्री राजेन्द्र नाथ सिंह को उनका तीसरा गुरु माना जा सकता है।

संतमत में दीक्षित होने और पूरी तरह से सन्तुष्ट होने के बाद, मेंहीं अपने दोस्तों की सलाह के अनुसार, वहाँ लौट आए जहाँ उनके पिता (जो अपने बेटे को घर वापस देखकर खुश हो गए थे) रहते थे।

और बाबा देवी साहब को देखने के लिए इन्तजार कर रहे थे। आखिरकार वह महत्त्वपूर्ण अवसर दशहरा उत्सव (आमतौर पर अक्टूबर में मनाया जाता है) के दौरान

आया जब बाबा देवी साहब का भागलपुर आगमन हुआ। जब श्री धीरज लाल ने मेंही को बाबा देवी साहब के भागलपुर आने के कार्यक्रम की जानकारी दी. तो मेंहीं एक बच्चे की तरह उत्साहित हो गये और अपने गुरु से मिलने के लिए दौड़ पड़े। 1909 की विजयादशमी के शुभ दिन पर ही उन्हें अपने गुरु की पहली झलक मिली थी एक सच्चे गुरु को एक सच्चा शिष्य और उत्तराधिकारी मिल गया था. जिसे सतमत को महिमा के सर्वोच्च शिखर पर ले जाना था।

22 साल की उम्र में वे ज्योतिर्मठ पहुँचे जहाँ उनके गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द भारती ने उनका मार्गदर्शन और निर्देशन किया। कुछ वर्षों के अध्ययन के बाद उन्हें विशेष ध्यान और एकाग्रता के लिए निर्देशित किया गया जिससे उन्हें अपने वास्तविक स्वरूप का एहसास हुआ 11 नवम्बर, 1944 को महर्षि मेंही परमहंस जी महाराज ने सद्गुरु बाबा देवी साहब से दीक्षा ली और उन्हें अध्यात्मिक नाम 'मेंही' दिया गया।

उस समय से वे विभिन्न तरीकों से लोगों के अध्यात्मिक उत्थान के लिए काम करने लगे, जिसमें अध्यात्मिक अभ्यास में मार्गदर्शन देना, सत्संग (अध्यात्मिक सभाएँ) स्थापित करना, वेदान्त के दर्शन पर प्रवचन देना आदि विचारों पर कई किताबें और टिप्पणियाँ लिखना शामिल है। शंकराचार्य और अन्य अध्यात्मिक गुरुओं, उनके अध्यात्मिक शिक्षण और अभ्यास के प्रति उनका दृष्टिकोण व्यावहारिक और दार्शनिक दोनों है।

महर्षि मेंही परमहंस जी महाराज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने दर्शन, शिक्षाओं और उपस्थिति के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने भारत और विदेशों में कई आश्रमों और अध्यात्मिक गतिविधियों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने सन्देशों को फैलाने के लिए दुनिया भर में कई यात्राएँ कीं। उन्होंने हिंदू और अन्य धार्मिक समुदायों से बहुत सम्मान अर्जित किया।

08 जून, 1986 को उन्होंने अपना भौतिक शरीर छोड़ दिया, किन्तु वे अपने पीछे अपनी शिक्षाओं और दर्शन की एक महान विरासत छोड़ गये है। उनके अध्यात्मिक प्रवचनों को कई खंडों में संगृहीत किया गया है, जिनका कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। यह न केवल ज्ञान के अमूल्य स्रोत के रूप में काम करते रहे, बल्कि दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रेरणा भी प्रदान करते रहे कई लोग उन्हें प्रेमपूर्वक दिव्य ज्ञान के प्रकाश के रूप में याद करते हैं।

महर्षि मेंहींदास परमहंस ने वेद और अन्य शास्त्रों का गहन अनुशीलन किया। इनके तेरह ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। इन्होंने श्रीरामचरितमानस, वेद, उपनिषद, भागवत, गीता, शिवसंहिता और महाभारत के विभिन्न प्रसंगों की समयानुसार व्याख्या कर उनके सही सन्देश को लोगों में पहुँचाया। उन्होंने महान संतों के जीवन और उनसे जुड़े प्रसंगों की भी बहुत सुन्दर व्याख्या कर लोकमानस में धर्म और भक्ति की लौ को जगाया। उन्होंने किसी भी प्रकार के भेद-भाव को मानने से साफ इन्कार कर समाज में समरसता को बढ़ावा दिया। इनके द्वारा प्रचारित-प्रसारित संतमत सत्संग को बिहार की निर्गुण साधना मैं अपनी खास जगह प्राप्त है। इस मत के प्रवर्तक बाबा देवी साहब थे। महर्षि मेंहीदास उनके पाँच प्रमुख शिष्यों में शामिल थे।

महर्षि मेंही परमहंस जी महाराज ने भागलपुर में कुप्पाघाट (बरारी) गंगा तट पर अपना आश्रम स्थापित किया। वहीं एक गुफा में ये ध्यानाभ्यास किया करते थे। महर्षि मेंहीदास के दो प्रमुख शिष्य संतसेवी जी और शाहीस्वामी जी थे मेहींदास जी के शरीर त्याग के बाद संतसेवी जी कुप्पाघाट वाले आश्रम में रह गये तथा शाहीस्वामी जी बाँसी के पास मनियारपुर आश्रम में रहने लगे। वैसे अब तो जगह-जगह ऋषिकेश तक मेहीदास के शिष्यों के आश्रम पाए जाते है और उनके नाम पर ही संतमत सिद्धान्त का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

इनके द्वारा प्रतिपादित संतमत सिद्धान्त इस प्रकार है

1. जो परम तत्व आदि - अन्त रहित, असीम, अजन्मा, अगोचर, सर्वव्यापक और सर्वव्यापकता के भी परे है, उसे ही सर्वेश्वर सर्वाधार मानना चाहिए तथा अपरा (जड़) और परा (चेतन) दोनों प्रकृतियों के पार में अगुण और सगुण पर अनादि, अनन्त-स्वरूपी अपरम्पार शक्तियुक्त, देश- कालातीत, शब्दातीत, नाम रुपातीत, अद्वितीय, मन, बुद्धि और इन्द्रियों के परे जिस परम सत्ता पर यह सारा प्रकृति-मंडल एक महान यंत्र की नाई परिचालित होता रहता है, जो न व्यक्ति है और न व्यक्त है, जो मायिक विस्तृत विहीन है, जो अपने से बाहर कुछ भी अवकाश नहीं रखता है, जो परम सनातन परम पुरातन एवं सर्वप्रथम से विद्यमान है संतमत में उसे ही परम अध्यात्म-पद वा परम अध्यात्म स्वरूपी परम प्रभु सर्वेश्वर (कुल मालिक) मानते हैं।
2. जीवात्मा सर्वेश्वर का अभिन्न अंश है।
3. प्रकृति आदि अन्त सहित है और सृजित है ।
4. मायाबद्ध जीव आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है। इस प्रकार रहना, जीव के सब दुःखों का कारण है। इससे छुटकारा पाने के लिए सर्वेश्वर की भक्ति ही एकमात्र उपाय है।
5. मानस-जाप मानस ध्यान दृष्टि - साधन और सुरत-शब्द-योग द्वारा सर्वेश्वर की भक्ति करके अन्धकार प्रकाश और शब्द के प्रकृतिक तीनों परदों से पार जाना और सर्वेश्वर से एकता का ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष पा लेने का मनुष्य मात्र अधिकारी है।
6. झूठ बोलना, नशा खाना, व्यभिचार करना, हिंसा करना अर्थात् जीवों को दुःख देना वा मत्स्य- मांस को खाद्य पदार्थ समझना और चोरी करनी इन पाँचो महापापों से मनुष्यों को अलग रहना चाहिए ।
7. एक सर्वेश्वर पर ही अचल विश्वास पूर्ण भरोसा तथा अपने अन्तर में ही उनकी प्राप्ति का दृढ निश्चय रखना, सतगुरु की निष्कपट सेवा, सत्संग और दृढ़ ध्यानाभ्यास इन पाँचो को मोक्ष का कारण समझना चाहिए।

इसके अतिरिक्त सर्वसाधारण के लिए इन्होंने संतमत की परिभाषा का भी प्रतिपादन किया जो इस प्रकार है

1. शान्ति स्थिरता वा निश्चलता को कहते हैं।
2. शान्ति को जो प्राप्त कर लेते हैं. संत कहलाते हैं।
3. संतों के मत वा धर्म को संतमत कहते हैं।
4. शान्ति प्राप्त करने की प्रेरणा मनुष्यों के हृदय में स्वाभाविक ही है। प्राचीन काल में ऋषियों ने इसी प्रेरणा से प्रेरित होकर इसकी पूरी खोज की और इसकी प्राप्ति के विचारों को उपनिषदों में वर्णन किया । इन्हीं विचारों से मिलते हुए विचारों को कबीर साहब और गुरु नानक साहब आदि संतों ने भी भारती और पंजाबी आदि भाषाओं में सर्व साधारण के उपकारार्थ वर्णन किया। इन विचारों को ही संतमत कहते हैं परन्तु संतमत की मूल भित्ति तो उपनिषद के वाक्यों को ही मानने पड़ते हैं, क्योंकि जिस ऊँचे ज्ञान का तथा उस ज्ञान के पद तक पहुँचाने के जिस विशेष साधन नादानुसन्धान अर्थात् सुरत-शब्द-योग का गौरव संतमत को है, ये तो अति प्राचीन काल की इसी भित्ति पर अंकित होकर जगमगा रहे हैं। भिन्न-भिन्न काल तथा देशों में संतों के प्रकट होने के कारण तथा इनके भिन्न-भिन्न नामों पर इनके अनुयायियों द्वारा संतमत के भिन्न- भिन्न नामकरण होने के कारण संतों के मत में पृथकत्व ज्ञात होता है, परन्तु यदि मोटी और बाहरी बातों को तथा पंथाई भावों को हटाकर विचारा जाय और संतों के मूल एवं सार विचारों को ग्रहण किया जाय तो यही सिद्ध होगा कि सब संतों का एक ही मत है ।

साहित्यः महर्षि मेंही परमहंस द्वारा लिखित या उनके बारे में

पुस्तकों की सूची इस प्रकार हैं। - (1) मोक्ष दर्शन (मुक्ति का दर्शन), प्रोफेसर वीना हॉवर्ड, ओरेगन विश्वविद्यालय यूजीन द्वारा हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवादित (2) अंग्रेजी में महर्षि मेंहीं की जीवनी का अंश (3) संतमत सिद्धान्त और कीर्तन (4) सत्संग योग (5) रामचरितमानस सार सातिक (6) विनय पत्रिका सार व्यंग्य (7) भावार्थ- सहित घात रामायण पदावली (8) मेंहीं पदावली; (9) सत्संग सुधा, भाग-1, (10) सत्संग सुधा, भाग-2 (11) श्री गीता योग प्रकाश (12) वेद दर्शन योग (13) ईश्वर स्वरूप और उसकी प्राप्ति (14) संतवाणी सातिक (15) ज्ञान योग युक्त ईश्वर भक्ति आदि।

रामायण-भक्त मैथिली कवयित्री चंदा झाः

इन्होंने मैथिली भाषा रामायण की रचना की । इसका मुख्य आधार 'अध्यात्म रामायण और श्रीरामचरितमानस है। इन्होंने भक्तिमय सात्विक और सदाचारी जीवन का आदर्श समाज के सामने प्रस्तुत किया। उनके द्वारा रचित मैथिली भाषा रामायण में बोल-चाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। यह रागों में लिपिबद्ध होने के कारण गाने में आसान है। इसी कारण इनकी यह रामायण इस प्रान्त के लोककंठ में बस गयी इस रामायण ने समाज में समरसता लाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया ।

93-सी, राज सदन
बैंगल राव नगर, हैदराबाद
पिन- 500098
मो0 9849742803

हमें सबसे पहले आत्म - सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। हम कायर और दब्बू हो गए हैं, अपमान और हानि चुपके से सह लेते हैं। ऐसे प्राणियों को तो स्वर्ग में भी सुख नहीं प्राप्त हो सकता।

-प्रेमचंद

रामायणम् महाकाव्य का वैशिष्ट्य

➲ विजय रंजन

वाल्मीकि रामायण में, जिसका मूलनाम 'रामायणम्' है, मुख्यतया सर्वगुणोपेत नायक दाशरथ राम की जीवनगाथा अभिवर्णित है। परन्तु कृतिकार आदिमहाकवि वाल्मीकि ने रामकथा के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखा - प्रशाखाओं का और लोकाचार, सदाचार आदि का समावेश भी कर दिया है इस कृति में। विभिन्न लोकहिती, मानवहिती आचार - सदाचार का निदेशन भी भरपूर वाचाल है कृति के राम-कथा के विभिन्न आख्यान - उपाख्यानों में । इसी अनुक्रम में देशहिती, राष्ट्रहिती 'राष्ट्रवाद' सदृश सार्वहिती भावाचार की देशना भी दृश्यमान देखी जा सकती है रामायणम् में। वास्तव में रामायणम् में जिस राष्ट्रवाद की देशना है, वह परम सात्त्विक, शान्तिशील, राष्ट्रहिती, राष्ट्राभिमानी होने के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति अकूत नैसर्गिक प्रेम-भाव और राष्ट्र के प्रति समर्पण, राष्ट्र सर्वोपरि सदृश भावों की पराकाष्ठा है, जो 18वीं - 19वीं शताब्दि के स्वार्थशील, शक्ति - संघननशील, शोषणकारी पाश्चात्य राष्ट्रवाद के बजाय पावनता, सात्त्विकता से आभरित सार्वहिती, लोकसंग्रही, लोकादर्शीय, लोकहिती, राष्ट्रीय हित - चेतना जाज्वल्य उदाहरण, तदेव भारतीय राष्ट्रवाद का प्रतिमान है। संभवतः ऐसे परम उत्कट, सात्त्विक राष्ट्रवादी चैतन्य के बल पर ही भारतीय संस्कारों के मर्यादा पुरुषोत्तम और भारतीय संस्कृति, भारतीयता के साक्षात् प्रतीक पुरुष, आदि - महाकाव्य 'रामायणम्' के महानायक दाशरथ राम विकसित होती उत्तरनवपाषाणकालीन समाज - व्यवस्था एवं राजतंत्रीय व्यवस्था में भी लोकतंत्र का प्रतिमानक रामराज्य सुस्थापित कर सके थे।

महाकाव्य रामायणम् में अनेक परिदृश्य, अनेक परिघटनाएँ (जिनका उल्लेख निम्नांकित प्रस्तरों में है) जहाँ अन्यान्य साहित्यिक सांस्कृतिक सौष्ठवों के प्रतिमानक है, वहीं वे भारतीय राष्ट्रवाद के पावन सात्त्विक, सार्वहिती राष्ट्रप्रेमी स्वरूप को वाचाल करने में भी समर्थ है। यथा-

दाशरथ राम की जीवनकथा से प्रथमद्रष्टया असरोकारित दिखने वाले राष्ट्रवाद का समावेशन जिस रूप-स्वरूप में रामायण रूपायित है; वह निस्संदेह आदि-महाकवि की काव्य-प्रतिभा के वैशिष्टय का अतिरिक्त प्रमाणक तथा उनके राष्ट्रवादी होने का प्रमाणक है। बिना किसी झण्डाबरदारी के बिना किसी 'वाद' या नामचीन भाव - विचार का नाम दिए राष्ट्रवाद का सर्वश्रेष्ठ व्यावहारिक मंत्र 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' उवाचित कर दिया गया है इसी कृति में। इस कृति के नायक (महानायक) स्वराष्ट्ररंजनम्, सुराष्ट्रवर्धनम् आदि के अधिलक्ष्य के साथ-साथ जिस स्वरूप में जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि... का उद्घोष करते हैं, उसे साकारित भी करते हैं; सोने की

लंका का वैभव छोड़कर, लंका में ठहरने के लंकापति विभीषण के आग्रह के बावजूद तत्काल अयोध्या प्रस्थान कर जाते हैं -उससे कृति नायक/महानायक का दाशरथ राम के रामत्व का और कृतिकार के स्वयं का गरिमावान राष्ट्रवादी स्वरूप भी प्रांजल हो जाता है ।

वस्तुतः भारतीय मनीषा में राष्ट्रवाद वायवीय भाव या विचार मात्र के बजाय जीवनाचार का नित - प्रति का सहज राष्ट्रीय आचार ही माना जाता है। भारतीय राष्ट्रवाद भारतेतर राष्ट्रवाद से आविर्भाव ही नहीं अपितु मूल - प्रकृति, भावभूमि आदि के संस्तरों पर भी नितान्त भिन्न है। यह हीगल, मेजिनी, मुसोलनी, हिटलर, एन्डरसन, अर्नेस्ट रेनन या / और चीन के राष्ट्रवादी राष्ट्रपति युआन शीह काई के 'राष्ट्रवाद' से भिन्न है और प्राचीनतर भी । ऋक युग से सत्त्वशील भारतीय राष्ट्रवाद अपने विशिष्ट रूप - स्वरूप में विद्यमान है भारत-भूमि में, इसे किसी वाद - विशेष का नाम दिए बिना। सम्भवतः इसीलिए इसे कोई नामधेय देने के या इसके गुणदोष गिनाने के बजाय उसके आचारिक गुण-धर्म को अपने महाकाव्य के नायक, सहनायक की सामान्य जीवनचर्या से संयुत और तद्वत् आचरित दर्शाते हैं आदि महाकवि। प्रतीततया राष्ट्र - हितरक्षण, स्वराष्ट्ररंजन, देशप्रेम, जन्मभूमि को अतिशय मान आदि का वस्तुनिष्ठत आचार साक्षात् दर्शाकर ; तद्गत प्रकट- प्रच्छन्न निदेशन के माध्यम से महाकवि राष्ट्रवाद एवम् राष्ट्रवादी मनस्-भूमि को आचारणीय दर्शाने का सफल प्रयास करते दिखते हैं । ऐसा करने वाले प्रथम महाकवि हैं वे कह सकते हैं कि अनेक साहित्यिक मानकों की प्रथम प्रस्तोता कृति होने के साथ-साथ आलोच्य कृति : रामायणम् साहित्यिक लौकिक महाकाव्यों में आविश्व प्रथम महाकाव्य एवम् राष्ट्रवादी आचार की प्रथम उद्घोषक प्रथम राष्ट्रवादी कृति भी है।

तथ्यतया पाश्चात्य अभिमत से राष्ट्रवाद राष्ट्र - हित के संरक्षण, राष्ट्र के प्रति कतिपय बलिदान, राष्ट्र के प्रति सम्मान आदि का संश्लेषित भाव है। भारतीय मनीषा राष्ट्रवाद को राष्ट्र के प्रति सात्मीकृतता, साथ ही राष्ट्र - हित के प्रति कतिपय कर्त्तव्यबोधी संस्कार और तद्गत जीवनाचार वाले राष्ट्रधर्म के रूप में आचरेय मानती है। ऋक से लेकर अथर्ववेद तक के अनेक सूक्त ऐसे भाव - बोध के ही परिचायक हैं। इस निकष पर आलोच्यकृति 'रामायणम्' को कर्षें तो यह देख कर कुतूहलजनित आश्चर्य होता है कि आज से लगभग 7000 वर्ष पूर्व के कालखण्ड में रामकथा के विभिन्न प्रसंगों का चित्रांकन - चरित्रांकन करते समय आदि - महाकवि ने भी राष्ट्रवाद के विविध मौलिक अवयवों को विस्मृत नहीं किया अपितु उन्हें वैखरी में यथास्थान समुचित मान, समुचित स्थान प्रदान किया । यह तब की बात है जब आविश्व राष्ट्रवाद के नाम के वाद का कहीं नामोनिशान तक नहीं था ।

आदि-महाकाव्य 'रामायणम्' में या कहें कि आविश्व प्रथम लौकिक महाकाव्य 'रामायणम्' के प्रायः सभी काण्डों में बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड तक 'राष्ट्रवाद' सम्बन्धी मूलभूत तत्त्वों का राष्ट्रहिती भाव-विचार ही नहीं अपितु तदगत संस्कार एवम् कृति में; वह भी इस तरह, कि रामकथा के विभिन्न प्रसंगों से मूलतया सात्मीकृत प्रतीत होता है राष्ट्रवादी संस्कार-भाव - विचार - आचार भी। यथा-

कृति के बालकाण्ड में सर्ग 1 के श्लोक 93 में राष्ट्र को "नगराणि च राष्ट्रानि धनधान्य- उत्पत्ति च" से युत होने को वांछनीय माना गया है। इसी काण्ड के सर्ग 3 में "सुराष्ट्रो राष्ट्रवर्धन" में स्वराष्ट्रवर्धन का स्पष्ट निर्देश है। कोसल राज्य के मंत्रीगण सुराष्ट्र के राष्ट्रवर्धन के लिए सन्नद्ध दर्शाए गए। देश - हितरक्षण की देशना भी है इसी काण्ड में - " गोब्राह्मण हितार्थाय, देशस्य च हिताय च" (ताड़का-वध प्रकरण), तो "देशे काले च कर्त्तव्य सदृशे

प्रतिपादनम् " (श्लोक 10 सर्ग 33) या कि "देशस्य हि महाबाहो" (श्लोक 13 सर्ग 24) का निदेशन भी लभ्य है कृति के बालकाण्ड में ही ।

और, बालकाण्ड में ही राजसभा में विभिन्न सभासद और विभिन्न अधीनस्थ राम को युवराज पद पर अभिषिक्त कराने का अभिमत प्रकट करते हैं इसलिए कि राम को राष्ट्र के सभी जन आशंसित करते हैं- 'आशंसते जनः सर्वो राष्ट्र... । इसतरह प्रकारान्तर से सम्पूर्ण राष्ट्रजन की सम् - मनांसि की आशंसा को युवराजपद / भावी राजापद के लिए वांछनीय माना जाता था -- यह भी सफलतया दर्शा देते हैं आदि महाकवि ।

और, रामायणम् में राष्ट्र के क्षेत्र-विस्तार तथा तद्गत राष्ट्रीय सौमनस्य का रेखांकन भी देखा जा सकता है इस रूप में कि राजा दशरथ ने जो पुत्रेष्टि यज्ञ किया, उसमें सिंधु सौवीर, केकय, सुराष्ट्र (सौराष्ट्र), मिथिला, अंग देश, बंगाल और दक्षिणापत्य राज्यों के राजागण सादर आमंत्रित हुए थे। उन सभी राजाओं ने यज्ञ में भी सहभाग किया था। इसी तरह दाशरथ राम भी जो यज्ञ करते हैं, उसमें काशी, मिथिला, किष्किंधा, लंका आदि के टीकाधारी राजागण और कश्मीर से कुमारी अन्तरीप एवं कच्छ से कामरूप तक के ऋषिगण, कोसल के विशिष्ट जन से लेकर शिल्पकारगण, कर्मकारगण तक सभी आमंत्रित किए जाते थे और वे सभी सहभाग भी करते थे । इसप्रकार राष्ट्र के राष्ट्रत्व के लिए संगच्छध्वम्, संवदध्वम्... सं वो मनांसि की अपेक्षाएँ तत्कालीन देश-काल में आपूरित दर्शाते हैं आदि- महाकवि

अयोध्याकाण्ड में सर्ग 21 में "येन निर्वास्यते राष्ट्राद् वनवासाय राघवः" और "इयं सराष्ट्रा स जनाः धन-धान्य समाकुला.... ...प्रदीप्ताम्" (धन-धान्य से राष्ट्र को प्रदीप्त करने का निर्देश) विद्यमान है।

और इसी काण्ड में राम के राष्ट्र - प्रेम को पराकाष्ठा की सीमा तक रूपायित किया है आदि - महाकवि ने । वनवास के लिए जाते समय कोसल से विदा होते समय वे अपनी पुरी से भी विदा - आज्ञा लेते हैं- "आपृच्छे त्वया पुरी श्रेष्ठे...।" और, "पुनर्द्रश्यामि मात्रा च मित्रा च सहसंगत सहसंगी...।" सीता एवं लक्ष्मण सहित वापस आकर पुनः पुरी भूमि के दर्शन करने की अभिलाषा भी प्रकट करते हैं कृति नायक राम। कोसलपुरी / अयोध्यापुरी को सर्वत्र वे श्रेष्ठ पुरी ही कहते हैं वे। इस तरह कृति नायक राम के राष्ट्र - प्रेम को पराकाष्ठा की सीमा तक रूपायित किया है आदि- महाकवि ने। अपनी पुरी के प्रति इतना अगाध प्रेम-भाव अन्यत्र किसी कथित नायक / लोकनायक में लभ्य नहीं है। राष्ट्र - भूमि का मानवीकरण दर्शाकर एक बार और आदि - महाकवि राष्ट्रभूमि को समुचित सम्मान अर्पित करा देते हैं ।

और, राष्ट्र की सर्वविध कुशलता के लिए तो सर्वाधिक चिन्तित रहते हैं कृति नायक राम। वे निषादराज गुह से भी पूछते हैं-

"अपितु कुशलं राष्ट्रे मित्रेषु वनेषु च।"

और, चित्रकूट में जब भरत राम को वापस लाने के लिए चित्रकूट पहुँचते हैं, तो राम भरत से प्रथमतः अयोध्या/कोसल राज्य के सुख, सौमनस्य रक्षण आदि का हालचाल सविस्तार पूछते हैं। इस बहाने राम भरत को राजकाज, राज्य - संचालन सम्बन्धी रीति-नीति का विस्तृत उपदेश भी देते हैं । यह एक ओर जहाँ राम के राज्य - हित, राष्ट्रहित रक्षण की आकांक्षा का बोधक है, वहीं, ऐसे निरूपणों से राज्य-राष्ट्र के कुशल-क्षेम को अक्षुण्ण रखने की राष्ट्रवादी नीति-रीति का प्रत्यक्षीकरण भी हो जाता है।

सहपात्र भरत को भी राष्ट्र की कुशलता के लिए चिन्तित दर्शाते हैं आदि - महाकवि । कैकेयी के द्वारा राम वनवासी किए जाने का तथ्य जानने पर भरत कहते हैं- "हतं त्वया राष्ट्रमिदं सराज्यं... हतश्च पौरा...।" (श्लोक 27 सर्ग 6) । ऐसे सम्प्रयोगों से आदि महाकवि "राज्य एवम्

राष्ट्र" के विलग स्वत्व, विलग इयत्ता को भी रूपायित कर देते हैं ।

इतना ही नहीं, अयोध्याकाण्ड में "अराजकं हि नो राष्ट्र विनाशनम् सम्वाधुयतः" (श्लोक 8 सर्ग 67) में अराजकता को विनाश का कारण बताया है आदि - महाकवि ने। इसी काण्ड में इसी सर्ग में श्लोक 9 से 31 तक अराजकता के विभिन्न कारक और तद्गत अनिष्ट वर्णित हैं; जो राष्ट्र ही नहीं, अपितु जनपद और जन के योगक्षेम को अपघातित करते हैं- "नाराजकम् जनपदे योगक्षेमः प्रवर्तते।" तथैव अराजकता को राष्ट्र-विरोधी, राष्ट्र - हित विरोधी बताते हुए प्रकारान्तर से वे उसे निरोधित करने का निर्देश भी दे देते हैं।

अतिरिक्ततया, राष्ट्र-रक्षण के उपाय भी इंगित हैं रामायणम् के इसी काण्ड में। यथा - "बले कोशे दुर्गे, जनपदे तथा राज्यं दुरा-रक्षतं" (श्लोक 27, सर्ग 52) । इसप्रकार सैन्य बल, राज्य के रक्षण करने वाले आचरण रूपी कोश, खजाना, दुर्ग जनपद और सम्पूर्ण राज्य को दुष्टजनों से रक्षित करने का निदेशन स्पष्ट रूप से निदेशित है इस ग्रंथ के अयोध्याकाण्ड में।

अपने राज्य-राष्ट्र के पुरजन के प्रति सौहार्द भी भरपूर व्याप्त है श्रीराम के मन-मस्तिष्क में, जीवनाचरण में भी । वनवास के से चित्रकूट में उन्हें छोड़कर सुमंत्र से वे रात के अँधेरे में ही निःशब्द दूर निकल जाने के लिए कहते हैं राम, निकल भी जाते हैं। और... महाप्रयाण के समय भी वे अपने पुरजनों के लिए स्वर्गतुल्य संतानक लोक की व्यवस्था सुनिश्चित कराने के पश्चात् ही महाप्रस्थान करते हैं।

अरण्यकाण्ड में स्पष्ट रूप में राष्ट्रवाद के प्रथमावश्यक कर्त्तव्य 'देशधर्मस्तु पूज्यताम' का निदेशन है। यहाँ कृति नायिका सीता राम से वनवास-अवधि में क्षात्र धर्म छोड़ कर वनवासी देश के धर्म के पालन का अनुग्रह करती हैं। सीता पूछती हैं- "क्व च शस्त्रं ध्व च वनं क्व च क्षात्रं तपः क्व च व्याविद्धमिदम् अस्माभि देशधर्मस्तु पूज्यताम्।" अर्थात् वन में तपस्वी जीवनावस्था में शस्त्र और क्षात्र धर्म क्यों ? हमें (राम, सीता, लक्ष्मण को, शब्दान्तर से सभी को) देश-धर्म को पूज्य मानते हुए उससे व्याविद्ध होना चाहिए, उसी को व्यवहार में लाना चाहिए । कृति - नायक राम अपने क्षत्रियत्व के कारण से सीता की सलाह स्वीकार नहीं कर पाते यह दूसरी बात है; परन्तु उन्होंने जो लोकरक्षण हेतु अपने क्षात्र धर्म को अपनायों वह भी स्थानिक देश-धर्म के बजाय वृहत्तर राष्ट्र-धर्म से इतर नहीं था। इसप्रकार प्रतीततया आदि महाकवि स्पष्ट कर देते हैं कि राष्ट्रधर्म को संकुचित अर्थ में नहीं लेना चाहिए; वरन् स्थानिक धर्म बनाम वृहत्तर राष्ट्रधर्म में चयन का अवसर आ जाय तो वृहत्तर राष्ट्र-धर्म चयनेय है।

प्रकटतः देश-धर्म को पूज्य मानने और उससे व्याविद्ध होने की देशना प्रकारान्तर से 'अहम् राष्ट्रे संगमनी...सं वो मनांसि, स गच्छध्वं' आदि का व्यावहारिक स्वरूप रूपायित करने में सक्षम है। भारत जैसे देश के लिए, जहाँ आज अनेक विदेशी समाजों के विदेशज संस्कारों वाले निवासी भी भारी संख्या में निवास करते हैं, ऐसी देशनाएँ एक सारवान् आचार-पथ रूपायित कर सकती हैं। ऐसी देशनाएँ यदि वास्तव में व्यवहृत होने लगें तो उससे राष्ट्र के विभिन्न निवासी संवर्ग के अन्तरद्वन्द्व उन्मूलित हो जाएंगे और उससे राष्ट्र की आन्तरिक उथल-पुथल का व्यावहारिक खदबद का शमन भी साकारित हो जाएगा । निस्संदेह ऐसे श्लोक- अर्द्धाली राष्ट्रवाद को परवान चढ़ाने में समर्थ ही सिद्ध होगी। काश हमारे आज के भारत में सभी राष्ट्रिक सामान्य भारतीय देश - धर्म को पूज्य मानने की देशना का सम्यक पालन करते तो अनेक समस्याएँ हमारे राष्ट्र से स्वतः तिरोहित हो जातीं!

अग्रेतर, कृति के किष्किंधाकाण्ड में भी 'राष्ट्र' पर

अपना ध्यान निवेशित किया है आदि-महाकवि ने यहाँ 'वसुधा येन पालिता' (श्लोक 5, सर्ग 5), राजा (राम) के लिए 'सर्ववत्सलता' (श्लोक 9 सर्ग 5) आदि गुणों की वांछनीयता को आगणन में नहीं लें तो भी 'स राष्ट्र सगणं रावणं तं वधिष्यासि' (श्लोक 39 सर्ग 27) में अनयाचारी रावण का उसके गण और उसके अनयशील 'राष्ट्र' सहित वध करने का संकल्प दृश्यमान है।

इसी काण्ड में 'सर्वः तु कांश्च देशेषु' और 'देश - प्रचक्रमे' सदृश शब्द - बन्धों का प्रयोग भी है ।

आलोच्य कृति के सुन्दरकाण्ड में राज्य - संचालन की नीति अर्थात् 'राष्ट्र' को सुष्ठु कैसे बनाया जाए-एतदर्थ नीति भी निदेशित है। यथा- "बध्या ह्येते दुरात्मना नृपाज्ञा परिपण्थिनाः ।" (सर्ग 62, श्लोक 33) में राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाला वध्य बताया गया है ।

युद्धकाण्ड में 'अर्ध दूषणीम् प्रकृति बुद्धिं त्यजेया' (सर्ग 2 श्लोक 41) और राज्य को सुगठित, सबल, शत्रुजयी बनाए रखने के निमित्त अनेक नीति - श्लोक अंकित हैं ।

और, इस काण्ड में तो राम का राष्ट्रवाद व्यावहारिक स्वरूप में भरपूर मुखर है । रावण - हनन के तत्काल पश्चात् लक्ष्मण से राम कहते हैं 'नऽपि स्वर्णमयीलंका में रोचते लक्ष्मणः, जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' जन्मभूमि को माता सम मान देते उसे स्वर्ग से भी महान् बताते हैं दाशरथ राम। क्या राष्ट्रवाद का इससे बेहतर कोई व्यावहारिक परिमान- प्रमान हो सकता है? क्या आविश्व किसी नायक, महानायक, लोकनायक ने ऐसी राष्ट्रवादी सदिच्छा का प्रमाण अन्यत्र प्रस्तुत किया है? नहीं ना SS!

मातृभूमि के प्रति प्रेम-भाव, सम्मान -भाव की तो साक्षात् प्रतिमूर्ति है कृति नायक राम। लंका - विजय के पश्चात् वनवासावधि पूर्ण होते ही अयोध्या - वापसी के लिए ललक उठते हैं राम। लंकेश्वर विभीषण से कहते हैं वे- उपस्थापय में शीघ्रम् विमानम्...। श्लोक 22 सर्ग 121 युद्धकाण्ड। और वापसी यात्रा में दूर से ही अयोध्या - भूमि दिखने पर वे स्वयं भी अपनी जन्मभूमि को नमन करते हैं, सीता से भी उस भूमि को प्रणाम कराते हैं - अयोध्याम् कुरु वेदेहि प्रणमम् पुनरागता। श्लोक 55 सर्ग 123 युद्धकाण्ड। मातृभूमि/जन्मभूमि के प्रति इतना असीम सम्मान - भाव - यह भी अन्यत्र नायक / महानायको में अलभ्य है ।

कृति के अंतिम काण्डः उत्तरकाण्ड में भी अनेक प्रसंगों में अनेक आख्यान - उपाख्यान में राज्य के सुष्ठु - संचालन, पौरजन के कल्याण, सुख-सुविधा के संरक्षण, मान - रक्षण, राज्य / राष्ट्र के सर्वतोभद्र उन्नयन, राष्ट्र-राज्य एवं प्रजा की उपेक्षा के दुष्परिणाम, राज्य - राष्ट्र की अवनति के कारक - कारण आदि का वर्णन - विवेचन यथावसर विस्तार से अंकित है। धर्माधर्म की चर्चा के साथ ही अनेकानेक श्लोक राजनीति अर्थात् राज्य-संचालन की सुष्ठु नीति से सरोकारित हैं इस काण्ड में। लवणासुर जैसे अनयशील राजा के हनन के साथ-साथ, मधुपुरी में सुष्ठु राज्य-व्यवस्था की संस्थापना, भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण द्वारा अनेक नगर-राज्यों की संस्थापना भी अंकित है इसी काण्ड में। यह सब राष्ट्र - कल्याण के निमित्त ही कारित किया गया दर्शाते हैं महाकाव्यकार वाल्मीक। लवणासुर को मारने पर प्रसन्न हुए देवताओं से शत्रुघ्न निजी हित लाभ के बजाय वर माँगते हैं मधुरापुरी को रम्य कर दें ।

शत्रुघ्नः भरतानुजः निरीक्ष्य परमप्रीतः पर हर्षमुपागतः" । यह अभीप्सा, यह हर्ष शत्रुघ्न के भी राष्ट्र - कल्याणक समृद्धाय होने और उनकी राष्ट्रधर्मिता का परिज्ञापन कराने में समर्थ है।

लोक को मान देने की पराकाष्ठा में वाल्मीकि के राम लोकापवाद के निरोधन के लिए, राष्ट्र में लोकादर्श

अनाक्षेपित रह सकें, इस हेतुक से अपने सुख अपने परिवारीजन के सुख, मान-सम्मान आदि को ताक पर रख कर सीता - निर्वासन भी कारित कर देते हैं- इस सीमा तक क्या अन्यत्र आविश्व कोई नायक, महानायक, लोकधर्मी राष्ट्रधर्मी दिख सकता है। नहीं नाऽऽ!

और, अपने महाप्रयाण के लिए प्रस्थान करने से पूर्व राज - परिवार में परस्पर सौमनस्य बना रहे, आपसी कलह नहीं हो, अनकथ स्वरूप में सम्पूर्ण राष्ट्र में शान्ति सतत प्रवहमान रहे, इस हेतुक से राजा राम द्वारा अपने आधीन विभिन्न क्षेत्रीय राज्यों का अपने पुत्रों व भ्रातृ-पुत्रों में समुचित विभाजन, कर दिया गया और इसतरह भी सभी को अपने-अपने राज्य - क्षेत्र का स्वतंत्र शासक बना दिया गया था सम्भवतः इसलिए कि राज्य / राष्ट्र में सत्ता के लिए अन्तर्कलह नहीं हो। राम का यह आचरण भी उनकी राष्ट्र - कल्याणक दूरदर्शिता का परिचायक है। वहीं, महाप्रयाण के समय ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान करने के पर्व पौरजन को संतानक लोक प्रदान करने की व्यवस्था कराने के पश्चात् ही अपना महाप्रयाण करते हैं वे । पौरजानपद से इतना सौहार्द, इतना प्रेम आविश्व किसी अन्य नायक, महानायक ने व्यवहृत नहीं किया है। राष्ट्र-जन के प्रति ऐसे असीम प्रेम-भाव से भी राष्ट्रीय सौमनस्य की वृद्धि होती है जो प्रकारान्तर से राष्ट्रवादी भावानुभाव में वृद्धि का कारक ही सिद्ध होता है।

उपर्युक्तानुसार, आलोच्य महाकाव्य में काण्ड - दर -काण्ड अनेक प्रकरणों में राष्ट्रवाद के विविध अवयव, राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्र-कल्याण, राष्ट्रजन के सुख-संधान, राष्ट्र - संवर्द्धन के कारक आदि के साथ-साथ राष्ट्र-रक्षण, राष्ट्रीय सौमनस्य आदि के उपक्रम सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक स्वरूप में भी गम्भीरतया विवेचित हैं । तथ्यतया पूर्वेकृत वैदिक ग्रंथ ऋक्, साम, यजुर्वेद में राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद का सैद्धान्तिक विवेचन होने के बावजूद उसका व्यावहारिक सात्त्विक स्वरूप में पल्लवन एवं तद्गत विस्तृत विवेचन प्रथमतः लौकिक महाकाव्य रामायणम् में ही देखने को मिलता है। तदेव, आलोच्य महाकाव्य वैदिक पावन, सात्त्विक, सार्वहिती, शान्तिशील भारतीय राष्ट्रवाद की स्वार्थशील, संघर्षकारी, शोषणकारी, अहम्वादी, हिंसक, भेड़ियामुखी, भेड़मुखी सदृश कदर्थनीय स्वरूपों वाले पाश्चात्य राष्ट्रवाद के सापेक्ष सर्वोपरि स्वीकार्यता को भी और भारतीय राष्ट्रवाद की परम सात्त्विकता, सार्वहितता आदि को भी वाचाल करता है।

अतएव, आदि-महाकवि वाल्मीकि को प्रथम राष्ट्रवादी महाकवि तथा रामायणम् महाकाव्य को भारतीय राष्ट्रवाद का प्रथम लौकिक महाकाव्य निर्विवादतः मानना ही होगा।

आश्रम, 4/14/41ए महताब बाग,
अवधपुरी कॉलोनी फेज-2
फैजाबाद- 224001, अयोध्या (उ0प्र0)
दूरभाष संख्या- 08874830492

कर्मफल और इंद्रिय-विषयों में मन न लगाकर कार्य करना ही अनासक्ति है
-अरविंद

तुलसी के राम

➲ डॉ0 हरिशंकर मिश्र

गोस्वामी तुलसीराम लोकचित्त के कवि है। उनके मन में लोक के प्रति गहरी संसक्ति है। वेद से लोक को वे कम महत्व नहीं देते। वस्तुतः वे जगत-जीवन-धारा को लोक और वेद के कूलों से मर्यादित होने पर अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि मानते है। लोक तुलसीदास के लिए प्राथमिक है क्योंकि सब कुछ लोक में घटित होता है। अतः उनकी सारी चेष्टाएँ तथा संकल्पनाएँ लोक मंगल के लिए है। लोक भी उनकी दृष्टि में समग्रता में है। लोक के प्रति कहीं एकांगिता या संकीर्णता उनके मन में नहीं लक्षित होती है। उनके लोक में चराचर की व्याप्ति है। तुलसी होती है। तुलसी की पार्वती की पृच्छा से यह स्पष्ट होती है।

कथा जो सकल लोक हितकारी।
सोई पूछन चह सैलकुमार।।
कीन्हिहु प्रस्नजगत हितलागी

अतः सकल लोक या चराचर जगत का मंगल तुलसी का मूल लक्ष्य है जिसकी सिद्धि के लिए उन्होने अपने राम को मूर्तित किया है। अपनी कान्त दृष्टि से वे लक्षित करते हैः

जग मंगल गुन ग्राम राम के।
दानि मुकुति धनधरम धाम के।।

पुरूषार्थ चतुष्टय का विधान शास्त्रीय है, जिसे लोक में रहकर प्राप्त करना मानव का परम लक्ष्य माना गया है और जिसकी प्राप्ति 'राम गुण ग्राम' से सहज संभव है। तुलसी के पूर्व राम के चरित्र में शास्त्र और लोक की इनती व्याप्ति दृष्टिगत नहीं होती। निर्गुण संतों के राम निराकार होने के कारण सामान्य लोक की पहुँच से प्रायः दूर ही रहते है। ध्यान-धारणा-समाधि के द्वारा ही निर्गुण राम अनुभव प्रत्यक्ष होते है और सामान्य लोक इस स्थिति तक पहुँच नहीं पाता है। लोक को तो अपने प्रत्येक सुख-दुख में सहभागिता करते हुए राम की आवश्यकता होती है, जो प्रतिक्षण मंगल विधान और योग क्षेम कर सके।

तुलसी के राम में यह सबकुछ कर सकने की सामर्थ्य है। तुलसी अपने राम को इसीलिए अवतरित भी करते है। 'राम जनम जग मंगल हेतु' (मानस 2-253-3) निश्चय ही तुलसी के राम वालमीकि भवभूति तथा निर्गुण संतो के राम विशिष्ट दिखलाई पडते है। लोक और वेद का जितना प्रगाढ़ समन्वय तुलसी के राम में है, उतना अन्यत्र नही। निर्गुण संतो की तो स्पष्ट अवधारणा ही है कि राम सगुण साकार नहीं हो सकते किन्तु तुलसी अपने राम को तत्वतः निर्गण और स्वरूपतः सगुण मानते है। अतः तुलसी के राम को शास्त्र एवं लोक दोनो दृष्टियों से विवेचित करना समीचीन होगा है।

तुलसी के राम का ब्रह्म रूपः- तुलसी अपने राम का निरूपम आदि पुरूष, परब्रहम, सर्वकरण रूप तथा सर्वाश्रय

के रूप में करते हैं। उपनिषदों में ब्रहम के द्विविध लक्षण निरूपित किए गए हैः स्वरूप लक्षण और तदस्थ लक्षण। स्वरूप लक्षण की दृष्टि से ब्रहम सच्चिदानन्द है तथा 'सत्य' ज्ञान मनतं ब्रहम है। ब्रहम के स्वरूप के सम्बन्ध में कुछ भी निर्देश करना संभव नहीं है क्योंकि वह निर्विशेष, निर्विकल्प, निरूपाधि और निरंजन है। यही कारण है कि श्रुति ने उसे 'नेति-नेति' कहकर निरूपित किया है। तुलसी के राम भी सच्चिदानन्द स्वरूप हैः 'राम सच्चिदानन्द स्वरूपा। सोई सच्चिदानन्द धन रामा (मानस 1-16-45, 7-42-3), राम ब्रहम चिन्मय अविनासी। (मानस, 1-20-6)। इस प्रकार तुलसी के राम स्वरूप लक्षण के अनुसार एक अद्वितीय, तुरीय व्यापक, विश्वात्मा, कूटस्थ, चराचरनायक, भुवननिकायपति, दृष्टा आदि सब कुछ है।

तटस्थ लक्षण की दृष्टि से ब्रहम उद्भव, पालन तथा प्रलय का विधान करने वाला होता हे। श्रुति का कथन है, "यतो व इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति... तद्ब्रहमेति (तैन्तिरी योजनिषद् 3-1-1)। तुलसी के राम वेदोक्त तटस्थ लक्षणों से मुक्त है। वे सृष्टि के कर्ता, धर्ता एवं संहर्ता हैं। सृष्टा एवं सृष्टि रूप हैं तथा विश्व के परम कारण हैं। सृष्टि के आदि मध्य और अन्त में राम की ही सत्ता और स्वामित्व है। आदि मध्य अन्तराम साहिवी तुम्हारी। (वि0प0 पद 78/3)। इस प्रकार स्वरूप एवं तटस्थ दोनों लक्षणों की दृष्टि से तुलसी के राम पूर्व ब्रहम है।

तुलसी के राम निर्विशेष एवं सविशेष हैं। श्रुतियों में ब्रहम के सर्वोपाधि विवर्जित रूप को निर्विविशेष तथा नाम रूप उपाधि से विशिष्ट (विभूषित) रूप को सविशेष कहा गया है (प्रश्नोपनिषद् - 5-2 तथा बृहदारण्यकोपनिषद् 2/3/1)। तुलसीदास ने अपने राम के स्वरूप में इन दोनों रूपों को युगपत (रूप में स्वीकार किया है।

व्यापकु ब्रह्म अलख अबिनासी, चिदानंद निरगुन गुनरासी (मा0ब0 341-6) अगुन अमान अलेप एक रस। राम सगुन भए भगत प्रेम बस (मा0 अयो 21-6)। तुलसीदास ने विनयपत्रिका के पद 56 तथा अन्यत्र भी अपने राम अज, अनाम, अरूप, अखण्ड, अनन्त, अव्यक्त, अगुन, अकल, अतर्क्य अप्रमेय, अपार, आयान्रहित, निर्गुण, निस्सीम, निरांकार, निरंजन, निरामय, निरुपाधि, केवल आदि कहकर उनके निर्विशेष रूप का प्रतिपादन किया है। तुलसीदास निर्गुण और सगुण में तात्विक अभेद मानते हुए भी ब्रहम के सगुण रूप का ही प्रतिपादन करते हैं। उनके राम का रूप त्रिभुवन मोहन है। राम के अतिशय सौंदर्य से अभिभूत होकर खरदूषण जैसे प्रकृत्या हिंस जनों की चेतना में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा जाता है। (मा03/19)।

तुलसीदास के राम स्वरूप से तो अतिशय सुंदर हैं ही, स्वभाव से भी अतिशय सुंदर है। वे भक्त वत्सल, प्रणतपाल, शरण तथा आर्तबंधु तथा दीनों के प्रतिपालक है। उनका मधुर स्वभाव सर्वदा सर्वानुकूल है। तुलामी के राम का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए गुण, स्वभाव, संपत्ति, कोलीन्य, वाक्चातुर्य, बुद्धि आदि की अपेक्षा नहीं है। वनचरों से भी उन्होंने मित्रता की और उसका सदा निर्वाह किया। वस्तुतः तुलसीदास अपने राम को अनेकशः गुणसागर गुणनिधान, गुणग्राम, गुणराशि, गुणासिंधु कहते हैं तथा उन्हें करुणायतन करुणासागर, करुणानिधि, करूणा सिंधु तथा कारण रहित कृपालु मानते हैं। तुलसीदास के राम अपनी उदारता के लिए विश्वविश्रुत हैं। 'विनयपत्रिका' के पद 162 में तुलमी कहते हैं' -

ऐसो को उदार जग माही ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं।

तुलसी के राम तो अरि का भी अनमला नहीं करते - 'अरिहुक अनमल कीव्ह न रामा।' वे सदा सभी का अभ्युदय और निःश्रेयस चाहते हैं। (मानस, 2-183-6,

6-17-8)। वे अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते। तुलसी कहते हैं- मैं जानउँ निज नाम सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।। (मानस, अयो0 260-5)। शरण में आकर एक बार भी प्रणाम करने वाले कर-कुटिल आदि को भी वे अपना लेते हैं। क्रूर कटिल, खल, कुमति, कंलकी, नीच निसील निरीस, निसंकी। तेउ सुनि सरन सामुहे आए, सकृत प्रनाम किए अपनाए (मा0 अयो0 299/-2-3)। अपने जन के लिए उनके पास कुछ अदेय नहीं है। तुलामी के राम सदा प्रणत पर प्रीति करते हैं और उनके वश में रहते हैं। (वि0प0 पद 98)।

तुलसी के राम, विरुद्ध धर्माश्रयी एवं विराट पुरुष हैं। विरुद्ध- धर्मा श्रयता और विराटत्व ब्रहम के दो अनिवार्य वैशिष्ट्य है। तुलसीदास में इन दोनों का अपने राम के संदर्भ में अनेकशः उल्लेख किया है (द्रष्टा वि.प. पद 53) तुलसी के राम अनेक नामा होते हुए भी अनाम हैं 'नाम अनेक अनाम निरंजन' (मा.उ.कां, दोहा-34)। इसीप्रकार उनके राम विश्वारूप और व्यापक हैं। विश्वरूप रघुबंसमनि करहु बचन - विस्वास (मानस, लंका कां दो0 14) । विराट रूप राम पाताल लोक पैर, ब्रहमलोक सिर, सूर्य नेत्र, चन्द्रमा मन मेघमाला केशकलाप वायु श्वास, माया हँसी, अहंकार शिव तथा ब्रहमा बुद्धि है। राम ही आदि, मध्य और अंत में हैं, जैसे वस्त्र में तन्तु, घड़े में मिट्टी, कुंडल आदि में सुवर्ण देखा जाता है, उसी प्रकार राम विश्व में दृष्टिगत होते हैं (वि.प. पद 54)।

तुलसी के राम त्रिदेव- ब्रह्मा-विष्णु-महेश भी हैं और इनसे ऊपर भी हैं। तुलसी मानते है राम त्रिगुणों को पृथक-पृथक् धारण कर ब्रहमा रूप से जगत की सृष्टि, विष्णु रूप से उसका पालन तथा रुद्र रूप से उसका संहार करते हैं। वे परब्रहम राम से ही इनकी उत्पत्ति मानते हैं। संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना, उपजहि जासु अंस तें माना (मानश, बा0का0 दो0 144 - 6)। तुलसी के राम में विधि को विधिता, हरि को हरिता तथा शिव को शिवता प्रदान की है (वि0प0 पद- 135-3)। यहाँ हमारा ध्यान एक विशेष संदर्भ की ओर अवश्य जाता है कि कुछ स्थलों पर तुलामी ने अपने राम को क्षीराब्धिशायी विष्णु कहा है और कहीं-कहीं राम को अंशी और विष्णु तथा ब्रहमा और रूद्र का अंश माना है। बस्तुतः तुलसीदास को महाविष्णु और विष्णु की अवधारणा मान्य है। उनके राम महाविष्णु हैं और अन्य - अन्य अवतार उन्होंने ही धारण किए हैं। (मीन कमठ सुकर नरहरी; बामन परशुराम बापू धरी - मा0 उ0 दो0 110-3)। जब तुलसी राम को विष्णु या हरि कहते हैं तो वहाँ तात्पर्य अवतारी महाविष्णु से है किंतु जहाँ विष्णु को राम का अंश मानते है, वहाँ उनका तात्पर्य त्रिदेवों के विष्णु से है।

तुलसी के राम लीला पुरुष है। उन्होंने भक्त हितार्थ एवं सुखार्थ लीला को ही प्रमुख अवतार हेतु स्वीकार किया है यद्यपि अन्य अवतार हेतु धर्मसंस्थापन, दुष्ट दमन, साधुजन रक्षण, धेनु रक्षा, भूभार हरण आदि को भी उन्होंने माना है। भगवान की लीलाएँ भक्तजन हितकारिणी, भक्ति-मुक्ति-दायिनी तथा परमानंद- प्रदायिनी होती है। राम अपनी इच्छा से नस्तनु, लीला तनु, तथा लीला-वपु धारण करते हैं (भगत हेतु लीलातनु गहाई मा0 बा0का0 दो0 142-7 तथा 'मैं कछु करबि ललित नर लीला' मा0 अरण्य दो0 24-1) राम की लीलाएँ इतनी मनोहारिणी एवं परमानंद प्रदायिनी है कि जीवन मुक्त भी निरंतर लीलागान में निरत रहते हैं। राम की लीला दनुजों को मोहित करने वाली किंतु भक्तों को आनंद देने वाली है। तुलसीदास कहते हैं, कि राम की लीलाएँ अत्यंत गूढ़ है मनवचन-कर्म से उनकी तर्कणा नहीं की जा सकती है-

(चरित राम के सगुन भावानी,
तर्कि ने जाहिं कर्म मन बानी। मा.ल.का. दो0-1)

तुलसी के राम दशरथ नंदन, श्रुति सेत पालक,

और लोक रक्षक है। लोक में मर्यादा की रक्षा करना उनका लक्ष्य है। तुलसी लोक में सुदृढ़ व्यवस्था के आग्रही हैं। उनकी दृष्टि में व्यवस्था के टूटने या विकृत होने पर लोक में विखराव तथा स्थगन आ जाता है। अनाचार अत्याचार भी बढ़ जाता है। राम भूमि-भय-टारन, हेतु अवतरित होते हैं। तुलसीदास के मत में निर्गुण ब्रहमही दशरथ-सुत के रूप में सगुण साकार होकर अवतरित हुए। इम तथ्य को नकारने वाले तुलसी की दृष्टि में मूढ़, अंध, अकोविद तथा अंतत्वविद हैं।

वस्तुतः तुलसी के राम परब्रह्म, सगुण राम और दशरथ- सुत तीनों हैं। उनमें परब्रहमत्व और मनुष्यत्व का अपूर्व समन्वय है। तत्वक ऋषि-मुनि आदि उनमें ब्रहम-दर्शन करते हैं तथा सामान्य जन उन्हें उदान्त पुरुष, ग़रीब निवाज, परोपकारी, दीन बंधु, दीनाथ, इष्टदेव, उपास्य, आराध्य आदि रूपों मैं अपने निकट पाकर आनंदित होते हैं। तुलसी के राम इसीलिए लोकनायक हैं। गज, गणिका, गीध, अजामिल आदि का उद्धार करने वाले हैं। तुलसी जब अपने राम के मानव रूप का चित्रण करते हैं तो उनका चरित और भी सहज और उदात हो जाता है। उनके राम सामान्य से सामान्य जन के अत्यंत निकट आ जाते हैं। केवट, ग्रामीण जन तथा वनवासी सभी सहज रूप में राम से अपनी सेवाएँ स्वीकार करने का आग्रह करते हैं। राम इन सभी को वत्सल भाव से अपनाते है। तुलसी मानते हैं कि उनके राम निर्बल के बल, असहाय के सखा, भाग्यहीनों के देव (भाग्य) गुणहीनों के गुण, गरीबों को अपनाने वाले, दीनों को सम्पन्नता देने वाले हैं। तुलसी के राम सच्चे अर्थो में दीनबंधु हैं, वे दीनों की रक्षा ही नहीं करते अपितु उन्हें बंधुवत् अपनाकर उनकी सभी प्रकार की मर्यादाओं में बृद्धि करते हैं। निषादराज स्वीकार करते हैं-

राम कीन्ह आपन जबहीं तें। भयउँ भुवन भूषण तब हीं तें। (मानस, अयो0 दो0 196-2) तुलसी के राम राजाधिराज होने पर भी अपने को सामान्य नागरिक की श्रेणी में मानते है तभी तो वे जन-सामान्य सभा में नागरिकों को अभय करते हुए कहते हैं-

जौ अनीति कछु भाखौं भाई। तो मोहि बरजहु भय विसराई। (मानस दो0 43-6) यह असंदिग्ध है कि तुलसी के राम मानवता और कृतज्ञता के प्रतिमान हैं। राक्षसों, आततायियों द्वारा पीड़ित ऋषि मुनियों तथा सामान्य जनों की रक्षा करना मानवता की ही रक्षा है। सुग्रीव - विभीषण को संरक्षण देना, बालि और रावण के आंतक राज्य को समाप्त करना भी मानवता का पोषण ही है।

तुलसी के राम साम्राज्यवाद के विरोधी है। वे जनतांत्रिक मूल्यों को महत्व देते हैं। बालि और रावण के वध के पश्चात् स्वयं उनके राज्यों में आधिपत्य ग्रहण नहीं करते अपितु सुग्रीव और विभीषण को राजा बनाते हैं। अंगद को भी युवराज बनाकर उनके साथ न्याय करते हैं। तुलसी के राम का एक महान गुण कृतज्ञता भी है। वे अपने प्रति किए गए उपकारों के प्रति अतिशय कृतज्ञ है। हनुमान् के प्रति कृतज्ञताभाव व्यक्त करते हैं।

सुनु कपि तोहि समान उपकारी।
नहीं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।
सुनु सुत तोहिं उरिन मैं नाहीं।
देखउँ करि बिचार मन माहीं।।
(मानस, ल0का0दो0 32)

तुलसी के राम युद्ध में सहायता करने वाले वानर-भालुओं के प्रति भी कृतज्ञ होते हैं। अयोध्या आकर गुरु वशिष्ठ से परिचय कराते हुए कहते हैं।

ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे,
भए समर सागर कह बेरे।
मम हित लागि जनम इन्हें हारे,
भरतहुँ ते मोहिं अधिक पियारे।
(मानस, उ0का0 दो0 8)

तुलसी के राम अपने शील और सदाचार के लिए विश्वविश्रुत है। वे हणमान्त्र उपकार के लिए भी कृतज्ञ होते हैं। वे मानवता के सच्चे प्रतिनिधि। दीन-दुखियों एवं गरीबों के प्रतिपालक हैं। गोस्वामी तुलसीदास अपने राम की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता या बड़ाई का उल्लेख करते है: 'रघुबर रावरि यह बड़ाई, निदरि गनी, आदर गरीब पर करत कृपा अधिकाई। (वि0प0 पद 165)।

तुलसीदास ने राम राज्य में जिन मानव मूल्यों, मर्यादाओं, व्यवस्थाओं की स्थापना की है, उन सबके मूल में उनके राम हैं। राम तुलसी के सबसे बड़े जीवन मूल्य हैं। इसीलिए वे अपनी कसौटी बनाते हैं। "मानिये सबहि राम के नाते।" राम विश्वरूप हैं तथा विश्व मानवता के प्रतीक हैं। सभी प्राणियों पर समभाव से दया करने वाले तुलानी के राम सदा-सर्वथा निरूपम और निरवधि हैं-

निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहैं।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रवि कहत अतिलघुता लहैं
।। (मानस उ0का0 दो0 92)

इस प्रकार तुलामी के राम सभी दृष्टियों से विशिष्ट है।

पता- 26 मानस विहार
सर्वोदय नगर, लखनऊ- 226016
मो0- 9935378501

देखत चित्रकूट-वन मन अति होत हुलास।
सीताराम लषन-प्रिय तापस-वृंद-निवास।
सरित सोहावनी पावनि, पाप-हरनि पथ नाम।
सिद्ध-साधु-सुरसेवित देत सकल मन-काम।

-तुलसीदास

युगीन सन्दर्भों में मानस- मीमंसा

➲ सुरेश चन्द्र शर्मा

गोस्वामी तुलसी दास जी हिन्दी-साहित्य के एक ऐसे- कवि हैं, जो जन्म से लेकर आज तक विवादों, कुचर्चाओं और जीवन के क्रूर थपेड़ों को सर्वाधिक सहने वाले कवि हैं। मैंने तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व से जुड़े कई ग्रन्थों का अध्ययन किया है। लगातार बारह वर्ष तक गोस्वामी तुलसी दास से जुड़े स्थानों, विवरणों एवं उनसे सम्बन्धित ग्रन्थों का सम्यक सर्वेक्षण व अनुशीलन करने के बाद 'पद्म भूषण' सम्मान से सम्मानित लोक प्रिय कथाकार अमृतलाल नागर ने 'मानस का हंस' उपन्यास लिखा है। 'मानस का हंस' में नागर जी ने गोस्वामी तुलसी दास के जीवन की व्यथा-कथा का इतना जीवन्त और मार्मिक चित्रण किया है कि उसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि नागर जी ने तुलसी के जीवन से जुड़े दुःख-दर्द और उनके जीवन-संघर्ष को अपनी आँखों से देखा है। उस उपन्यास को भी मैंने दो तीन बार पढ़ा है।

गोस्वामी तुलसी दास एक बालक के रूप में सन 1532 ई0 में जन्म लेते ही विवाद और नाना प्रकार के आघातों के बीच फँस गये। ऐसी मान्यता और विश्वास है कि ये अपनी माँ के गर्भ में 12 माह तक रहकर पैदा हुये थे। जन्म के समय इनके मुख में बत्तीसों दाँत थे। इनका नवजात शिशु-रूप पाँच वर्ष के बालक के समान था। जन्म लेते ही इनके मुख से 'राम-राम' शब्द निकला था। 'अभुक्तमूल' नक्षत्र में जन्म लेने के कारण समाज और परिवार की दृष्टि में त्याज्य और दुःखदाई बालक के रूप में चर्चित हुये। जन्म लेने के दो दिन बाद ही इस बालक की माँ हुलसी भी इसे समाज का कोपभाज बनने के लिये अकेला छोड़ कर स्वर्गवासी हो गईं। पिता आत्माराम दुबे 'मूलनक्षत्र' का पूर्ण दोष अपने ऊपर जान-समझ कर इस बालक को घर से बाहर हटा दिया या किसी दूसरे को पालने हेतु दे दिया। 'चुनिया' नामक गाँव की एक बूढ़ी सेविका ने इस बालक का लालन-पालन किया। पाँच वर्ष बाद वह बेचारी भी इस बालक को अकेला छोड़कर स्वर्गवासी हो गयी।

अब यह अभागा 'राम बोला' बालक दर-दर की ठोकरें खाने लगा। 'तुलसी' बनने तक यह बालक भूख-प्यास से पीड़ित, तरह-तरह की दुत्कार, अपमान, मार-धिक्कार, फटकार सहता हुआ कितना कष्ट झेला, यह तो तुलसी-साहित्य का पारायण करने वाले सुधी पाठक और 'मानस का हंस' उपन्यास के रसिक अध्येता ही जानते हैं।

तुलसी दास का जन्म - समय व जन्म-स्थान भी विवादों के बीच ही फँसा रहा। 'राजापुर' 'सूकरखेत', 'सोरों' को इनका जन्म - स्थान बताया गया। अधिकांश विद्वानों ने बाँदा जिले के 'राजापुर' नामक - गाँव को ही इनके जन्मस्थान के रूप में स्वीकार किया है। इसी तरह कुछ

विद्वान इनकी जन्मतिथि 1497 ई0, कुछ 1526 ई0 एवं अधिकांश विद्वान 1532 ई0 मानते हैं। विद्वानों के मध्य सर्वसम्मति 1532 ई. पर ही बनी है।

नाना प्रकार के झंझावातों और जीवन के विषम थपेड़ों को सहते हुये यह बालक नरहरिदासजी के आश्रम (मन्दिर) में किसी- तरह पहुँचा। गुरू नरहरिदास ने जब इस बालक को निराश्रित जाना तो अपने आश्रम में रहने के लिये व्यवस्था बना दिया। दूसरे दिन शुभ- मुहूर्त में सन्ध्या-समय तुलसी के बड़े-बड़े पौधों के झुरमुट के पास पूजा-पाठ करके जब इस बालक को नरहरिदासजी ने दीक्षा देना प्रारम्भ किया, तो संयोगवश तुलसी की कुछ पत्तियाँ उसके सिर पर गिर पड़ीं। यह देखकर प्रसन्न भाव से नरहरि दास ने इस बालक का नाम तुलसी दास रख दिया। अब वह बालक राम बोला से तुलसी, दास कहा जाने लगा। बालक तुलसी की किशोरावस्था का पूर्वार्द्धनर हरिदासजी के सान्निध्य में बीता। गुरू नरहरिदास ने इस बालक के अन्दर भक्तिभाव और दिव्यज्ञान की ज्योति जलाया।

आगे चलकर बालक तुलसी दास के व्यक्तित्व का विकास अयोध्या और काशी में हुआ। तरुण तुलसी ने एक कथावाचक और ज्योतिषाचार्य के रूप में अपने सांसारिक जीवन का प्रारम्भ किया। काशी में दो-चार बार ही राम-कथा का वाचन करते ही इनकी लोकप्रियता - बहुत बढ़ गयी। इनके श्रद्धालुओं और कथा-श्रोताओं की संख्या दिनोदिन बढ़ती गयी। एक तरफ इनकी लोक प्रियता बढ़ रही थी तो दूसरी तरफ ईर्ष्यालुओं और विरोधियों की संख्या भी निरन्तर बढ़ती जा रही थी। ईर्ष्या का मूल कारण इनका पाण्डित्य और कथा वाचन की सुमधुर, प्रभावशाली शैली ही थी।

एक बार तुलसी दास अपनी जन्म भूमि राजापुर के निकट यमुना नदी पार महोबा गाँव में कथा कह रहे थे। उनकी कथा-रस-माधुरी और सुदर्शन व्यक्तित्व से प्रभावित होकर दीनबन्धु पाठक की पुत्री 'रत्नावली' पत्नी के रूप में इनके जीवन में आयीं। रत्नावली के गुण व रूप- सौन्दर्य पर तुलसी मुग्ध रहते थे। एक बार तुलसी किसी कार्य से बाहर गये थे। रत्नावली अपने मायके चली गयीं। रात के प्रथम प्रहर में जब तुलसी पर लौट कर आये, तब रत्ना को घर पर न पाकर बेचैन हो उठे। पड़ोसियों से यह जानकारी मिली कि वह तो मायके चली गयीं हैं। तुलसी यमुना नदी पार कर मध्य रात्रि में अपनी ससुराल महोबा गाँव पहुँच गये। पत्नी रत्ना के कमरे में पहुँचते ही, वह नाराज हो गयीं। रत्नावली पति को फटकार लगाते हुये बोल पड़ीं -

"लाज न आवत आप के दौड़े आये साथ
धिक् - धिक् ऐसे पति को कहा करों मैं नाथ।।
अस्थि चर्म मय देह मम तामें ऐसी प्रीति
ऐसी जो रघुनाथ में होत न तव भव भीति"।।

अब तुलसी को सच्चा ज्ञान और सच्ची भक्ति का बोध हो - गया था। पत्नी की फटकार से तुलसी राम जी के परम भक्त बन गये। आगे- चलकर काशी के कथा-श्रोताओं की प्रबल माँग पर तथा शिवजी व हनुमान जी की प्रेरणा से वह सन् 1574 ई0 (सम्वत् 1631) में "राम चरित मानस" लिखना प्रारम्भ किये। तुलसी दास संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, चाहते तो संस्कृत भाषा में भी वह 'मानस' लिख सकते थे। किन्तु आम जनता, की पसन्द और उनकी भाषा-ग्राहयता को ध्यान में रखकर उन्होंने अवधी भाषा में राम चरित मानस लिखना प्रारम्भ किया। काशी के पण्डित इनकी लोकप्रियता और अवधी भाषा में रचे जाने वाले रामचरित मानस से बहुत नाराज हो गये। उन सभी का मत था कि राम-कथा संस्कृत भाषा में ही लिखी जानी चाहिये। काशी की विद्वत मण्डली इनको अपमानित कोसती व फटकारती थी। वह विद्वत्-मण्डली जबर्दस्ती रामचरित मानस के लिखे गये पन्नों को उनसे छीन कर गंगा नदी में डाल देती थी किसी प्रकार तुलसी ने नाना प्रकार के

घात-प्रतिघात व विरोध को सहन करते हुये काशी और अधिक समय तक अयोध्या में रहकर रामचरित मानस को दो वर्ष सात महीने छब्बीस दिन में पूर्ण किया।

तुलसी के राम सर्वगुण सम्पन्न महामानव और मर्यादा पुरुषोत्तम थे। गोस्वामी जी चाहते तो खर-दूषण, ताड़का आदि के बध के बाद राम और रावण के युद्ध का वातावरण सृजित करके अपने राम को 'आदर्श नायक' बना देते। तुलसी के पाण्डित्य और उनके अद्‌भुत कवि-कौशल की कुशलता को परखकर ही डॉ0 नगेन्द्र ने इस प्रकार कहा है "तुलसी एक ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रतिभा थे, जो कर युगों के बाद एक बार आया करती है तथा ज्ञान-विज्ञान, भाव-विभाव अनेक तत्त्वों का समाहार होती है। इनकी प्रतिभा इतनी विराट भी है कि उसने भारतीय संस्कृति की सारी विराटता को आत्म सात कर लिया था। ये महान दृष्टा और सृष्टा थे। ये विश्व-कवि थे और हिन्दी-साहित्य के आकाश थे, सब कुछ इनके घेरे में था।

सर्वथा सच है कि तुलसी अपनी विराट प्रतिभा और दूरदर्शी दृष्टि के कारण ही राम चरित मानस में केवट, निषाद राजगुह, अहल्या, शबरी, कागभुशुण्डि, हनुमान, सुग्रीव, अंगद, जामवन्त, नल-नील, जटायु आदि पात्रों कथानक को जोड़ा। इन पात्रों के सहयोग और प्रतिनिधत्व से लंका विजय एवं मानस के कथा- वितान का विस्तार किया। राम चरित मानस की दो-चार पंक्तियों जैसे- "ढोल गंवार सूद पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।" "पूजहिं विप्र सकल गुन हीना। सूद न पूजहिं - परम प्रवीना। नारि स्वभाव सत्य सब कहहीं। अवगुण आठ-सदाउर रह हीं।" "साहस अमृत चपलता माया। भय अविवेक। असौच अदाया।" इन पंक्तियों के सच्चे मर्म और भाव को गलत सिद्ध करते हुये कुछ राजनेता 'ओट' की राजनीति करते- हुये सत्ता-सुख के आकर्षण में खिंच कर गोस्वामी जी के ऊपर अमर्यादित, अशोभनीय टिप्पणी कर रहे हैं। 'राम चरित मानस' और गोस्वामी तुलसी दास दोनों को सूद्र, नारी, जाति का विरोधी व अपमान करने वाला सिद्ध कर रहे हैं। ऐसी टिप्पणी करने वाले नेता लोग विवेकी हैं, सत्यासत्य का विवेचन भी कर सकते हैं किन्तु सत्ताकर्षण एवं ओट की राजनीति ने रामचरित मानस और तुलसीदास दोनों के ऊपर उन्हें अनर्गल टिप्पणी करने के लिये विवश कर दिया है।

चित्रकूट की सभा में श्रीरामजी ने अयोध्या की प्रजा, मुनि वशिष्ठ, सुमन्त्र, माताओं व सभी भाइयों के मध्य यह घोषणा की थी कि, "राजा को वही कार्य करना चाहिये, जोप्रजा के हित में हो।" यह श्री राम जी की आदर्श और प्रजा हितैषी राजनीति का एक 'सूत्र' था। आज के राजा (राजनेता) प्रजा- के मध्य अशोभनीय बात कहकर सामाजिक समरसता को नष्ट करने पर तुले हुये हैं, यही चिंता का विषय बन गया है। आज से कई वर्ष पहले एक महाशय विश्वनाथ जी 'समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास पुस्तक लिखकर अपने मन की खीझ व्यक्त कर चुके हैं।

सच तो यह है कि गोस्वामी तुलसीदासजी की प्रतिभा और कवि-कुशलता तथा उनकी लोकप्रियता से जलने वाले तत्कालीन या उनके बाद के पण्डितों ने उन्हें अपमानित व उनकी लोकप्रियता को नष्ट करने के उद्देश्य से राम चरित मानस की कुछ पंक्तियों के साथ छेड़छाड़ करके कुछ परिवर्तन किया हो। यदि उन पंक्तियों को गोस्वामी जी द्वारा लिखी हुई ही मान लिया जाये तो मानस मर्मज्ञों व कुछ टीकाकारों ने उन पंक्तियों में प्रयुक्त शब्दों का भावार्थ एवं शब्दार्थ अलग-अलग ढंग से बताया है। मानस-मर्मज्ञ स्व0 राम किंकर उपाध्याय, तुलसी-साहित्य के अध्येता स्व0 रामनवलसिंह व वैदिक विद्वान एवं धर्मशास्त्र-वेत्ता आचार्य पं0 भवानी प्रसाद मिश्र ने उपरोक्त उधृत पंक्तियों का नूतन दृष्टिव समाज वैज्ञानिक दृष्टि से बड़ा ही सार्थक विवेचन किया है।

रामचरित मानस आज से लगभग 650 वर्ष पूर्व लिखा गया है। उस समय की सामाजिक स्थिति तथा देश की स्थिति कुछ और थी। आज एक्कीसवीं शताब्दी की सामाजिक व देश की स्थिति कुछ और है। किसी भी ग्रन्थ में कही गई बातों को युगानुरूप एवं परिस्थितियों के सापेक्ष मूल्यांकन और विवेचन करना चाहिये। 'टिप्पणी' और 'कुतर्क' तथा दोषारोपण करके आज की सामाजिक, मानवीय समरसता में विष एवं कटुता नहीं घोलनी चाहिये। गोस्वामी जी ने राम राज्य के माध्यम से जिस सुन्दर, स्वस्थ, और समरस समाज की संकल्पना की है, उसकी प्रासंगिकता सार्वकालिक है। इस कथन की पुष्टि के लिये उनकी कुछ पंक्तियों को यहाँ अंकित करना आवश्यक पड़ रहा है-

"बैमरून कर कादूसन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई।।"
"सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरतश्रुतिनीती"
"नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोठ अबुधन लच्छन हीना।।
"हैरषित रहहिं नगर के लोगा।
करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा"।।
नर शरीर धरि जे पर पीरा।
कराहि ते सहहिं महाभव पीरा"।।

गोस्वामी तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। इनकी - भक्ति दास्य भाव की थी। राम चरित मानस में विस्तार के साथ राम के चरित्र का वर्णन है। तुलसी के राम में शक्ति, शील और सौन्दर्य तीनों गुणों का अपूर्ण सामंजस्य है। 'रामचरितमानस' के सम्बन्ध में तुलसी साहित्य के आधिकारिक विद्वान आचार्य त्रिभुवन नाथ चौबे जी का यह कथन भी ध्यान देने योग्य है, "अवधी भाषा में रचित रामचरित मानस बड़ा ही लोकप्रिय ग्रन्थ है। विश्व - साहित्य- के प्रमुख ग्रन्थों में इसकी गणना होती हैं।" गोस्वामी जी ने रामचरित मानस में मानवीय सम्बन्धों का बड़ा ही पवित्र और उज्ज्वल चित्रण किया है। भारतीय संस्कृति के सुधी व्याख्याकार और हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन कितना सार्थक और उपयुक्त है, "तुलसीदास का 'मानस' जन हिताय पर हिताय एवं लोक मंगल की कामना से सम्पन्न है। सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का उच्चतम् आदर्शजन मानस के समक्ष रखना ही तुलसी दास का काव्य आदर्श था। "रामचरित मानस का मूल सन्देश लोक कल्याण ही है। गोस्वामी जी का यह कथन कितना मार्मिक है-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा समनहिं अधमाई।।

तुलसी दासजी से बहुत पहले इसी बात को व्यासजी ने इस प्रकार कहा है-

"अष्टादस पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

गोस्वामी तुलसीदास के राम चरित मानस में शुद्र एवं स्त्री का अपमान नहीं किया गया है। उनके सृजन का काल मुगलों की सत्ता का उत्कर्ष काल था। मुगल-संस्कृति और मुगलों की शासन व्यवस्था में जी रही भारतीय जनता की सही दशा-दिशा का उन्हें पूर्ण ज्ञान था। राम चरित मानस के आधिकारिक विद्वान और व्याख्याकार स्व0 राम किंकर उपाध्याय जी ने तो 'ताड़न' शब्द का अर्थ 'निगरानी रखना' अथवा 'देख- भाल करना' बतलाया है। कुछ टीकाकारों ने 'ताड़न' का अर्थ कष्ट न देना स्वीकार किया है। 'सूद्र' का अर्थ मानस मर्मज्ञों ने 'प्रजावर्ग' से लगाया है। राजा सर्वाधिक लोकप्रिय होता है, जिसके शासन में प्रजा सुख-शान्ति से निवास करती है। वैदिक ग्रन्थों में ऐसा भी कहा गया है कि संसार के सभी बालक, चाहे वे ब्राह्मण के घर में ही क्यों न पैदा हुये हों, शूद्र पैदा होते हैं। 'जन्मना

जायते शुद्रः । वे पाँच वर्ष तक शूद्र ही रहते हैं। इस आयु में वे परम पवित्र होते हैं। इनके छू लेने से कुछ भी अपवित्र नहीं होता है। इस मत के प्रकाश में स्वतः सिद्ध हो जाता है कि 'सूद्र' का अर्थ 'पवित्र' होता है, अथवा पवित्र आयु वाला बालक। उपरोक्त अर्थों के प्रकाश में ढोल गंवार सूद पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी" पंक्ति का सुधीजन स्वतः अर्थ लगा सकते हैं। यहाँ कुशल राजनीतिज्ञ व प्रखर चिंतक डा0 राम मनोहर लोहिया का विचार ध्यान देने योग्य है,- "गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में नारी की पीड़ा का इतना जीवन्त चित्रण किया है कि वैसा चित्रण विश्व-साहित्य में कहीं नहीं मिलता है।" गोस्वामी जी ने राम चरित मानस में जिस सुन्दर, स्वस्थ और समदर्शी समाज की कल्पना की है, वह दृष्टि उनके दृष्ट रूप को ही दर्शाती है। मुगल- सत्ता में जी रही भारतीय जनता और भारतीय समाज के लिये भी गोस्वामी जी वही रामराज्य व्यवस्था की कल्पना कर रहे थे। इस कल्पना के माध्यम से वह मुगलों की शासन- व्यवस्था के लिये एक सन्देश भी देना चाह रहे थे। अपने आराध्य राम के आदर्शों को अपने व्यक्तित्व में समाहित करने के लिये तत्कालीन शासकों के लिये उनका सद् सुझाव भी था। कहा जाता है कि, "जहाँ न पहुँचे ही रवि, वहाँ पहुँचे कवि" सच तो यह है कि गोस्वामी जी राम राज्य के माध्यम से अपने समय के बाद के भी भारतीय समाज की खुशहाली की कल्पना कर रहे थे। इस कथन की पुष्टि के लिये चर्चित समालोचक व प्रखर चिंतक डा0 राम विलास शर्मा का यह कथन भी अत्यन्त विचारणीय है- "गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरित मानस में जिस सुन्दर और स्वस्थ समाज की संकल्पना की है, वह उनकी लोक स्पर्शी दृष्टि का परिणाम है। रामचरित मानस में जीवन और जगत का सुन्दर सार समाहित है। तुलसी जैसा युगान्तर कारी कवि न हुआ है, और न होगा।"

प्रसिद्ध टीकाकार श्रद्धेय हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने राम चरित मानस का इन शब्दों में मूल्यांकन किया है, श्रीरामचरित मानस का स्थान हिन्दी - साहित्य में ही नहीं, जगत के साहित्य में निराला है। इसके जोड़ का ऐसा सर्वाङ्ग सुन्दर, उत्तम कोटि के लक्षणों से युक्त, साहित्य के सभी रसों का आस्वादन कराने वाला, काव्य-कला की दृष्टि से सर्वोच्च कोटि का तथा आदर्श गार्हस्थ- जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, आदर्श पतिव्रत धर्म, आदर्श भ्रातृधर्म के साथ-साथ सर्वोच्च भक्ति, ज्ञान, त्याग, वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा देने वाला, स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध और युवा सबके लिये समान उपयोगी एवं सर्वोपरि सगुण साकार भगवान की आदर्श मानव-लीला तथा उनके गुण, प्रभाव, रहस्य तथा प्रेम के गहन तत्त्व को अत्यन्त सरल, रोचक एवं ओजस्वी शब्दों में व्यक्त करने वाला दूसरा ग्रन्थ हिन्दी-भाषा में ही नहीं, कदाचित संसार की किसी भाषा में आज तक नहीं लिखा गया।

प्रतिभा, शोहरत, लोकप्रियता का हर एक काल में विरोध होता आया है। आज के कुछ नेताओं के वक्तव्यों में भी रामचरितमानस की उपादेयता और लोक प्रियता पर व्यंग्य और मन की भड़ास निकालना ही प्रतीत होता है। इस प्रतीति में सत्ता-सुख का और वोट बैंक की राजनिति का आकर्षण झलकता है। तुलसी के मानस-काल की परिस्थितियों में और आज की संवैधानिक व दलित-आन्दोलन से उपजी परिस्थितियों- में बहुत अन्तर है। तुलसी दास ने 'मानस' की जब रचना किया था, उससे कई सौ वर्ष बाद संविधान बना और दलित आन्दोलन शुरू हुआ।

सच तो यह है कि गोस्वामी तुलसीदास जी साहित्य में साधना के सुमेरू हैं। वह विश्व-विश्रुत कवि एवं सुन्दर समाज की संकल्पना एवं संरचना का स्वप्न देखने वाले दृष्टा और सृष्टा दोनों थे। उनके जगत- लोकप्रिय ग्रन्थ 'मानस' की समता करने वाला विश्व - साहित्य में

दूसरा ग्रन्थ नहीं है। वरिष्ठ पत्रकार हेमन्त शर्माजी के विचार अत्यन्त मननीय हैं, "तुलसी दास का पूरा साहित्य सद्भावमयी समाज और सुन्दर, स्वस्थ राजनीति की संकल्पना है। काश, हम अपनी दृष्टि व्यापक कर पाते - तो राम चरित मानस में जातिवाद नहीं बल्कि त्याग और लोकतन्त्र देख रहे होते।

यह भी विधि की विचित्रता ही कहा जायेगा कि इनकी मृत्यु सम्वत् 1680 में वाराणसी में गंगा के अस्सी घाट पर हुई थी। बाँदा में पैदा होने वाले तुलसी वाराणसी में अपनी देहत्यागे। उनकी मृत्यु से जुड़ा एक दोहा इस प्रकार चर्चित है।-

संवत् सोलह सौ अस्सी, अस्सी गंग के तीर
श्रावण शुक्ला सत्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।।

पता - मिजौली (नरायनपुर)
पो0 लम्भुआ
जिला- सुल्तानपुर (उ0प्र0)
पिन- 222302
मो0- 7379736426

रामनाम मणि - दीप धरु जीह - देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहिस उजियार।।
तुलसी 'रा' के कहत ही, निकसत सकल विकार।
पुनि आवन पावत नहीं देत 'म' कार किवार।।
राम नाम सुन्दर करतारी। संशय विहग उड़ावन हारी।।

-तुलसीदास

पर्यावरण संरक्षण और तुलसीदास

○ योगेश कुमार मिश्र

भारतीय संस्कृति त्यागपूर्वक उपभोग की संस्कृति रही है। 'तेन त्क्तेन भुंजीथा' हमारे पूर्वज आवश्यकता से अधिक चीजों के संग्रह के पक्ष में नहीं रहे, जो हमारे लिए आवश्यक है, उसका उपयोग करने के साथ ही हम शेष को यथावत बना रहने देते हैं। प्रकृति में इतने उपादान है, जो आज भी जो हमारी आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम है। इस संदर्भ में हमें गांधी जी के कथन पर दृष्टि डालनी चाहिए- 'प्रकृति के पास हमारी जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन है, लेकिन हमारी लालच पूरी करने के लिए नहीं।' इसके साथ ही आपको यह भी स्पष्ट करता चलूँ कि ''आधुनिक शब्दावली में जिसे 'पर्यावरण' या 'परिवेशिकी' कहा जाता है, उसे ही भारतीय पारंपरिक शब्दावली में 'प्रकृति' कहा जाता रहा है। पर्यावरण हमारे चारों ओर व्याप्त वह आवरण है जिसमें स्थल, जल तथा वायु सभी आते हैं। भारतीय परंपरा में मानव प्रकृति को सदैव सहचरी मानकर उसकी उपासना करता रहा है, उसके शांति की कामना करता रहा है। यदि हम 'शांति पाठ' पर दृष्टि डालें 'ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः' तो पाएंगे कि यहाँ वनस्पतियों, औषधियों सभी के शांति की कामना की गई है; क्योंकि यदि इनका संतुलन बिगड़ेगा तो यह विपरीत प्रभाव को उत्पन्न करेंगे। भारतीय जनमानस प्रारंभ से प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर चलता रहा है। यही कारण है कि हमारे तीज-त्योहार, परंपराओं तथा जीवन शैली में पर्यावरण को स्थान मिला हुआ है। हम जल, अग्नि, वायु तथा आकाश सभी को देवता मानते रहे हैं। इन सभी पर हमारा जीवन निर्भर करता है, साथ ही सभी के संतुलन से धरती हमारी हरी-भरी रहती है और सभी जीव-जंतु तथा वनस्पतियां विकसित होती है। इसीलिए हम भारतीय पर्यावरण के प्रति कृतज्ञता का भाव रखते रहे हैं तथा उसके संरक्षण का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हैं।

भारतीय संस्कृति की इन्हीं विशेषताओं के चलते ठाकुर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस संस्कृति को 'अरण्य संस्कृति' कहा है। लेकिन इधर पूरे विश्व में ''औद्योगिक क्रांति और उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते मनुष्य और प्रकृति के संबंध अब बदल चुके हैं।'' आधुनिक मनुष्य की बदलती जीवन शैली के चलते वह सारी सुविधाओं को अपने आप में समेट लेना चाहता है। पर्यावरण विनाश का कारण विज्ञान और प्रौद्योगिकी मात्र नहीं है; क्योंकि" विज्ञान और प्रौद्योगिकी मनुष्य के पास सदैव किसी न किसी रूप में रहा है। बस उनके उपयोग करने की कला में और प्रवृत्ति में अवश्य अंतर रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के द्वारा विकास के साथ ही बाजारवाद की प्रकृति को बढ़ावा मिला है, जिससे पूरा विश्व पर्यावरण संरक्षण की प्रकृति को

दरकिनार करके आगे बढ़ने लगा है, जबकि हम सभी को यह मालूम है कि संतुलित पर्यावरण के अभाव में हम जीवन की कामना अधिक समय तक नहीं कर सकते हैं।

हमारे साहित्य में पर्यावरण को बराबर स्थान मिलता रहा है। साहित्य, समाज, संस्कृति तथा पर्यावरण को साथ लेकर चलता रहा है। प्राचीन साहित्य को देखने से यह ज्ञात होता है कि पर्यावरण हमारे साहित्य का अविभाज्य अंग रहा है। इधर मानव के उपभोगवादी प्रकृति के चलते वह पर्यावरण संरक्षण के अपने मूल उत्तरदायित्व को भूलता जा रहा है। "स्वार्थ के लिए किसी को भी मसलने में कोई हिचकिचाहट नहीं। यह मानसिकता मानवी शोषण तक सीमित नहीं, बल्कि प्रकृति के दोहन में तीव्रतर है।" आधुनिक मानव के इस बदलते व्यवहार के कारण आज कुछ प्रश्नों का खड़ा होना स्वाभाविक है जिसका उल्लेख डा0 के. वनजा ने अपनी पुस्तक 'साहित्य का पारिस्थितिक दर्शन' में किया है। उनका कथन है कि "भूमि का यथार्थ अधिकारी कौन है? क्या यह भूमि मनुष्य मात्र के लिए है। भूमि के जैव और अजैव सत्ता को भी यहाँ अधिकार है या नहीं।" इसमें आगे वे लिखती हैं कि "मनुष्य के समान इस प्रकृति की सभी सत्ताओं का अपना मूल्य है और उन्हें अपने अस्तित्व को खुद ढूंढने का अधिकार है। प्रत्येक सत्ता का मूल्य इस पर केंद्रित नहीं है कि वह मनुष्य के लिए उपयोगी है या नहीं।' इस प्रकार हम देखेंगे डा0 के. वनजा की चिंता वाजिब है। वह हमारा ध्यान जिस ओर खींच रही है, सच में विचार करने योग्य है। वह यहीं पर नहीं रूकती हैं, बल्कि आगे बढ़ते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए' को चुनौती देते हुए कहती है कि साहित्य केवल मनुष्य केंद्रित ही क्यों? उसे जैव केंद्रित भी होना चाहिए। यदि हम गौर से देखें तो पता चलता है कि संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य की विकास यात्रा में पर्यावरण का स्थान कम होता जा रहा है। प्राचीन कवियों के यहाँ प्रकृति का जो स्वरूप देखने को मिलता है या उसे जो स्थान प्राप्त था वह अपनी क्रमिक यात्रा में उपेक्षित सा होता चला गया।

इस बात की चिंता आचार्य रामचंद्र शुक्ल भी जाहिर करते हुए अपनी पुस्तक 'गोस्वामी तुलसीदास' में लिखते हैं कि "हिंदी कवियों में प्राचीन संस्कतृ कवियों का सा वह सूक्ष्म निरीक्षण नहीं है। जिससे प्रकृतिक दृश्यों का पूरा चित्र सामने खड़ा होता है, यदि किसी में यह बात थोड़ी बहुत है, तो गोस्वामी तुलसीदास में ही। "आचार्य शुक्ल के इस कथन के शब्द 'थोड़ी बहुत' जो पर्यावरण के संबंध में बात तुलसीदास के यहां मिलती है, उसे खोजने की मेरी कोशिश यहाँ रही है। तुलसीदास का नाम मध्यकालीन हिंदी साहित्य के बड़े कवियों में शुमार किया जाता है, क्योंकि उनका सृजन आज भी प्रासंगिक है। प्रकृति के नाना रूपों का चित्रण उनके यहाँ दिखाई पड़ता है। तुलसीदास ने ज़्यादातर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन राम के कार्य-व्यापार को दर्शाते हुए किया है। राम के चरित्र में पर्यावरण संरक्षण की संस्कृति देखने को मिलती है, कारण यह कि राम के जीवन का आरंभिक समय वन में व्यतीत हुआ। राम जीवन के प्रारंभ में ही राजमहल से दूर गुरु विश्वामित्र के यहाँ जाते हैं।

'गुरु गृह गए पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब विद्या पाई ।।'

उसके बाद वापस आते हैं, राज्याभिषेक का अवसर बनता है, लेकिन स्थिति अशांत हो जाती है। कैकेयी, भरत को राज्य दिलाने के लिए कोलाहल करती है और राम को वनवासी बनाना चाहती है। राम राजमहल के इस कोलाहल से ऊब जाते हैं और वन में निवास करना अधिक पसंद करते हैं जिससे दोनों की समस्या का समाधान निकल आता है :

'तापस वेष विशेष उदासी।
चौदह बरिस राम बनवासी ।।'

इसके आगे का उनका जीवन पर्यावरण की गोद में व्यतीत हुआ। वनवासी का अर्थ है- जो वन में वास करे और वन में वास करने वाला अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए उसी पर निर्भर रहेगा। अब राम राजकुमार नहीं, बल्कि वनवासी हैं। बचपन में भी विद्यार्जन हेतु गुरु की पाठशाला में रहे, जो वन में थी। अतः उनके बालमन पर पर्यावरण के इन मनमोहक रूपों की अमित छाप पड़ी हुई है, इससे स्पष्ट हो जाता है कि वन से उनका परिचय और लगाव दोनों है। इसीलिए वे माँ कौशल्या से कहते हैं कि

'दीन्ह पिता मोहि कानन राजू।
जहं सब भाँति मोर बड़ काजू।।'

इतना ही नहीं इसे और स्पष्ट रूप से देखना हो तो आप देखें राम वन को कैसे जा रहे हैं, उनके लिए जैसे यह अभिशाप नहीं, बल्कि वरदान हो या आज के किसी पर्यटक की भाँति जो शहरी जीवन से ऊब चुका हो और उसे कोई प्राकृतिक स्थल पर रहने का प्रस्ताव दे तो वह आंतरिक रूप से अतिशय प्रसन्नता का अनुभव करते हुए जाएगा, उसे अपने शहर की कोई चिंता नहीं होगी उस समय। राम भी कुछ इसी प्रकार से जा रहे हैं:

'राजीव लोचन राम चले।
तजि बाप को राज बटाउ की नाई।।'

इससे पता चलता है कि राम का प्रकृति प्रेमी होना, पर्यावरण के प्रति उनका लगाव और उसके संरक्षण का भाव। चित्रकूट में रहते हुए वहाँ के मूल निवासियों के साथ मिलकर नदियों की स्वच्छता में राम योग देते हैं, वृक्षारोपण में सहयोग करते हैं। पर्णकुटी बनाकर रहते हैं। यह उनके आह्लाद का विषय है क्योंकि महल की अशांति की अपेक्षा वनवासी का जीवन उन्हे अधिक रुचिकर है, यही कारण है कि भरत की अनेक कोशिशों के बावजूद वे वापस आने को तत्काल तैयार नहीं होते। इस प्रकार देखें राम विशुद्ध रूप से वनवासी हैं और वनवासी को पर्यावरण से लगाव उसके सुरक्षा की चिंता स्वाभाविक रूप से रहती है। राक्षसों का विनाश भी कुछ हद तक इसी क्रम में करते हैं, जो वन में रहने वाले ऋषि-मुनियों तथा वहाँ के पर्यावरण का क्षरण करते हैं, राम को उनसे आपत्ति है, यही कारण है कि वे युद्ध के लिए भी प्रस्तुत हैं और इस युद्ध में सहयोग भी उन्हीं वनवासियों का लेते हैं, न कि अपनी अयोध्या की मानवीय सेना बुलाते हैं। वृक्षारोपण का एक सुंदर दृश्य 'रामचरितमानस' की इन पंक्तियों में देखने को मिलता है:

'सफल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदंब तमाला।।
लगे सुभग तरु परसत धरनी।
मनिमय आलबाल कल करनी।।'

मामला केवल इतना ही नहीं है, वनवास में उनका मन रमा हुआ है, जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में राम, लक्ष्मण और सीता सतत प्रयास करते हैं जिसका संकेत इन पंक्तियों में देखने को मिलता है:

'तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए।
कहुँ कहुँ सियँ कहुँ लखन लगाए।
बट छायाँ बेदिका बनाई।
सियँ निज पानि सरोज सुहाई।'

आज पर्यावरण संरक्षण की तमाम बातें हमारे आस-पास सुनाई देती हैं। सरकारें भी इस दिशा में कुछ कदम उठाती रहती है, क्योंकि आज पर्यावरण के संरक्षण की चिंता हम सभी को सताने लगी है। कारण यह नहीं है कि प्रकृति के हम समीप आ रहे हैं, इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि हमें अपने जीवन की चिंता होने लगी है, क्योंकि स्वच्छ पर्यावरण के अभाव में हमारा जीवन भी दुरूह होता चला जा रहा है। अब जब दक्षिण अफ्रीका की राजधानी 'केपटाउन' जैसे शहर हमारे सामने आ चुके हैं, जहाँ 'शून्य दिवस' जैसी स्थिति पर सोचने के लिए बाध्य

किया है और वह दुनिया का पहला 'जलमुक्त' शहर बन गया, तब जाकर हमारी चेतना जाग्रत हुई है कि इनका संरक्षण आवश्यक है नहीं तो इस धरा का ही अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है और जब धरा ही अपना धर्म त्याग देगी तो हम रहेंगे कहाँ? क्योंकि यह धरती ही है, जो हम सभी को किसी भी स्तर पर धारण करने को तैयार है। एक माँ के सदृश अपने प्रति हमारी अच्छाई-बुराई से परहेज किए बिना, लेकिन आज का मनुज अपने धर्म पर अड़िग नहीं है, इसलिए उसे इस बात की बराबर चिंता रहती है कि कहीं ये पर्यावरण के घटक भी मानवों की भाँति अपना धर्म न त्यागने लगे, जैसा कि अब दिखाई भी पड़ने लगा है कि सदानीरा नदियाँ अब वर्ष पर्यंत जल को नहीं धारण कर पा रही हैं, तालाब मृत प्राय हो रहे हैं, वृक्ष समयानुसार फल को अब धारण नहीं कर रहे हैं और सागर भी अपनी मर्यादा का त्याग करने लगा है। इन बदलाओं ने मानव को यह सोचने पर मजबूर किया है कि यदि पर्यावरण के साथ ताल- मेल समय रहते नहीं बैठाया गया तो बहुत संभव है कि धरती भी अपना धर्म भूलकर मानव का भार ग्रहण करने से मुकर जाए। मानव अब अपने अतिवादी कृत्यों को देखकर उसके संरक्षण की बात करने लगा है। पर्यावरण के साथ इसी तालमेल की बात तुलसीदास ने भी अपने साहित्य में की है :

'रीझि खीझि गुरु देत सिख सखा सुसाहिब साधु।
तोरि खाइ फल होइ भल तरु काटें अपराधु'।।

इस प्रकार अन्यान्य बहुत सी बातें हैं हमारे वेद, उपनिषद तथा प्राचीन साहित्य में मिलती हैं जो पर्यावरण-संरक्षण के महत्त्व को बताती हैं। तुलसीदास के साहित्य विशेषकर रामचरितमानस में ऐसे कई प्रसंग है जिनमें पर्यावरण के संरक्षण-संवर्धन तथा उसके महत्त्व को दर्शाया गया है। निष्कर्षतः इस प्रकार के चित्रण का उद्देश्य कहीं न कहीं हमारे ध्यान को आकृष्ट करना ही रहा है। हम पर्यावरण के महत्त्व को समझे तथा उसके साथ सामंजस्य बैठाएँ, यही हमारा दायित्व है, जिसका आह्वान तुलसीदास भी अपने साहित्य में करते हैं।

पता- हिन्दी विभाग,
विवेकानन्द ग्रामोद्योग
महाविद्यालय, दिबियापुर
औरैया (उ0प्र0)
पिन- 206244
मो0- 6394667552

फूलै फलै ना बेंत, यदपि सुधा वरषहिं जलद
मूरख हृदय ना चेत, जो गुरु मिलै विरचि सम

सुर नर मुनि कोउ नाहि, जेहि न मोह माया प्रबल
अस विचारि मन माहि, भजिअ महा मायापतिहिं।।

-तुलसीदास

गहरे पानी पैठ

➲ डॉ0 चन्द्रपाल शर्मा

कबीर अक्षर-ज्ञान से शून्य होने पर भी जीवन की पाठशाला के योग्य विद्यार्थी थे। सीधी सपाट भाषा में वे प्रायः बड़ी गम्भीर बात कह जाते हैं। संसार के सभी धर्म-सम्प्रदाय किसी अज्ञात सत्ता की खोज में लगे हुए हैं। कबीर ने बताया कि खोजने पर उस सत्य को उसने ही पाया है जिसने गहरे पानी में प्रवेश किया है। गहरे पानी से बचने वाले तो किनारे पर ही बैठकर लौट जाते हैं। कबीर की इस उक्ति को समझने के लिए ईश्वर या परमात्मा की ओर जाने वाले विभिन्न मार्गों की समीक्षा आवश्यक है।

स्वयं कबीर ने भी एक मार्ग बताया है जिसमें मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे की निस्सारता, धर्मस्थानों की यात्रा की व्यर्थता रोजा-नमाज, व्रत-उपवास की निरर्थकता को उजागर किया है यदि इन सब को त्याग दिया जाये, तो मार्ग कौन सा अपनाया जाये। कबीर ने मन, वचन, व कर्म की सत्यता पर बल देते हुए, कथनी-करनी की एकता का प्रतिपादन किया है जिसमें राम नाम का स्मरण करना अपरिहार्य बताया है। कबीर का राम दशरथ-पुत्र राम नहीं है। वह अपनी-अपनी भाषा में ईश्वर, खुदा, गॉड या महोबा किसी भी नाम से जाना जा सकता है।

इस भूमिका से यह निष्कर्ष निकालना सरल है कि ईश्वर को पाने के लिए दो मार्ग हैं। एक सैद्धान्तिक व दूसरा व्यावहारिक। धर्म ने भी विभिन्न शब्दावलियों का प्रयोग करते हुए दो ही मार्ग बताये हैं। उसे बह्य या आन्तरिक अथवा कर्मकाण्ड व व्यावहारिक जैसे नाम दिये जा सकते हैं। आशय यह है कि धर्म नाम की संस्था सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हुए उस परम सत्ता की ओर जाने का मार्ग बताती है।

यह जिसासा स्वाभाविक है कि धर्म शब्द से आशय क्या है ? सामान्यतः धर्म शब्द किसी सम्प्रदाय अथवा उपासना पद्धति का व्यंजक है किन्तु साधारण मनुष्य को उलझाने के लिए धर्म शब्द के विविध प्रयोग उत्तरदायी हैं। मनुधर्मशास्त्र के प्रथम व्याख्याता है, उन्होंने 'आचारः परमो धर्मरू' कहकर यह बता दिया कि व्यक्ति का आचरण ही प्रथम धर्म है अर्थात् आचरण की शुद्धता धर्म का प्रथम सोपान है। आचरण से आशय कर्तव्य से है अर्थात् यदि हम अपने कर्तव्य का पालन ढंग से या ईमानदारी से करते हैं तो हम धर्म के मार्ग पर पहला पग रखते हैं।

अत्यन्त संक्षेप में कहकर भी मनु ने बात बहुत गहरी कही है। सचमुच यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने-अपने कर्तव्य कर्म का पालन करने लगे तो इस संसार की समस्त समस्याएँ अपने आप सुलझ जायेंगी। कर्तव्यपालन से जहाँ संसार का लाभ है, वहीं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति भी महानता को प्राप्त करता है। यदि देवी-देवताओं की चर्चा न करके इस लोक के व्यक्तियों की ही बात की जाये तो विदित

होगा कि कर्तव्यपालन करने वाले को ही देवत्व कोटि प्राप्त हुई है। राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, ईसा आदि को जो देवत्व भाव प्राप्त हुआ है, उसके मूल में उनके लोक कल्याणकारी कार्य हैं। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि लोकहित करने वाले मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी व वृक्षादि भी इस गुण के कारण देवत्व या पूजा के अधिकारी बन जाते हैं।

भारतीयों द्वारा गाय को पूज्य मानने के पीछे गाय की उपयोगिता ही थी। गाय हमारी आर्थिक समृद्धि का आधार थी। कृषि प्रधान देश में खेती उसके पुत्रों के बल पर ही सम्भव थी। उसका दूध स्वास्थ्यप्रद व पौष्टिक है, उसका गोबर व मूत्र उत्तम खाद है। अतः पंचगव्य की महत्ता को जानकर गाय को माता का महत्वपूर्ण पद प्राप्त हो गया है। जीवन में आक्सीजन की आवश्यकता सर्वाधिक है सर्वविदित है। वृक्ष आक्सीजन देते हैं, ऐसा विश्वास है कि पीपल दिन रात आक्सीजन देता है, अतः वह पूजनीय बन गया। निष्कर्ष यह है कि जो समाज का कल्याण करे, वह धार्मिक है। समाज कल्याण ही धर्म हैं। तुलसी, पीपल, बेल, बरगद आदि का महत्त्व उनकी उपयोगिता के कारण ही है।

यदि धर्म किसी परिभाषा में सिमट जाता तो धर्मों की इतनी भीड़ खड़ी नहीं होती। एक अन्य उक्ति के अनुसार लौकिक उन्नति व पारलौकिक कल्याण की प्राप्ति जिस कार्य से हो, वह धर्म है - "यतोम्युदय निः श्रेसय सिद्धि स धर्मः" आशय यह है कि व्यक्ति के वे कार्य जिनसे इस लोक में उन्नति के साथ परलोक सुधरने की भी आशा हो, धर्म कहलाते हैं। यहाँ इन दोनों को एक साथ जोड़कर विरोधाभास सा प्रतीत होता है किन्तु विरोध नहीं है। लौकिक उन्नति अनुचित साधनों से भी हो सकती है किन्तु वे अनुचित साधन पारलौकिक कल्याण के मार्ग में रुकावट डालते हैं। अतः उचित कार्यों के माध्यम से यदि व्यक्ति लौकिकहित चिन्तन में प्रवृत्त रहेगा, तो उसका परलोक अपने-आप सुधर जायेगा। यहाँ भी कर्म को ही मान्यता दी गई है।

गीता भगवान श्रींष्ण की वाणी है और भारत ही नहीं समस्त विश्व के मनीषी इस ग्रन्थ की महत्ता को स्वीकार करते हैं हैं। गीता में श्रीकृष्ण एक स्थान पर कहते हैं :- "स्वधर्मे निधनं श्रेयः पूरधर्मो भयावह" इस उक्ति को पढ़कर सामान्य व्यक्ति उलझन में पड़ जाता है। यही भाव ज्यों का त्यों अभि संहिता में दिखाई पड़ता है। वहाँ कहा गया "परधर्मो भवेत् त्याज्यः सुरूप परदारवत्" अर्थात् जिस प्रकार दूसरे की स्त्री का सौन्दर्य भी त्याज्य होता है, उसी प्रकार परधर्म भी त्याज्य है। यह अपना या पराया धर्म क्या है? क्या यहाँ धर्म से आशय वही है जो हिन्दू, मुसलमान या सिक्ख धर्म कहते समय, धर्म का अर्थ होता है।

वस्तुतः श्रीकृष्ण अथवा अत्रि ऋषि का धर्म से आशय यहाँ करणीय कर्तव्य से ही है। प्रत्येक व्यक्ति का निश्चित कर्तव्य है, उसका पालन करना ही श्रेय है। अपने निहित कर्म में दक्षता के कारण हम अपना भी लौकिक हित करते हैं और समाज का भी हित करते हैं। गीता का यह परम्परागत और धर्म शताब्दियों के बीत जाने के बाद भी अपनी गरिमा का निर्वाह करता दीखता है। वर्णव्यवस्था के भयंकर विरोधी भी इस सत्य को नकार नहीं सकते कि आज भी ज्ञान में ब्राह्मण की शक्ति में क्षत्रिय की, व्यापारिक कुशलता में वैश्य की और शारीरिक कार्यों में शूद्रों की श्रेष्ठता दबी जवान से स्वीकृत की जा रही है। आरक्षण की बाड़ लग जाने के बाद भी विविध क्षेत्रों कुछ जातियों को वर्चस्व होने का कारण परम्परागत व्यवसाय से जुड़े रहना है। यह दक्षता समाज या समष्टि के प्रति काम आने पर धर्म बनती है और यह समष्टि हित ही पारलौकिक कल्याण बन जाता है।

महाभारत ग्रन्थ के बारे में कहा जाता है कि 'यन्नभारते तन्नभारते' अर्थात् जो महाभारत में नहीं है, वह

भारतवर्ष में नहीं है। इस ग्रन्थ में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं, धर्म प्रजा को धारण करता है अर्थात् व्यवस्था में रखता है। आशय यह है कि धर्म केवल सैद्धान्तिक विवेचन मात्र नहीं है, अपितु जिसे व्यवहार में लाया जाए, वह धर्म है। 'सत्य बोलो' एक सद् उक्ति मात्र है किन्तु सत्यवादी व्यक्ति सत्य को धारण करने के कारण धार्मिक है। धर्म प्रजा को नियंत्रण में रखता है अर्थात् करणीय कर्तव्य करने के लिए व्यक्ति धर्म से प्रेरणा पाते हैं। यहाँ कर्तव्य और प्रेरक दो भिन्न तत्त्व हैं? स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि प्रेरक कौन है? प्रेरक ही धर्म के लक्षण है। गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार 'परहित सरिस धरम नहिं भाई' परपीड़ा सम नहिं अधमाई" इसी प्रकार संस्कृत की यह सूक्ति "परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्" जिस धर्म की बात करते हैं, वह किसी देश, काल अथवा जाति समुदाय तक सीमित नहीं है। अपने से परे अर्थात व्यक्ति के वे कार्य जो दूसरों के हित के लिए है, लोकहिताय या लोक कल्याण के निमित्त हैं, वे धर्म है और जो दूसरों को पीड़ा देते हों, वे अधम कोटि में आयेंगे।

आशय यह है कि यदि व्यक्ति संसार के कल्याण के लिए कार्य करता है, तो वह धार्मिक है। संसार में व्यक्ति स्वयं भी निहित है, अतः उसके कार्यों से उसका हित होना भी स्वाभाविक है। यह दूसरे लाभ की स्थिति है इस प्रकार व्यक्ति, अपना लाभ भी करता है और धर्म का अर्जन भी होता रहता है। यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के हित की सोचने लगे, तो उसका स्वयं का हित अनुमान से बढ़ते आगे तक होता है। अपने हित की सोचने वाला व्यक्ति अकेला ही अपना हित चिन्तन करेगा किन्तु जब सभी दूसरों का हित- चिन्तन करेगें, तब हमारा हित-चिन्तन करनेवाले करोड़ों में नहीं अरबों में होंगे। इसी भावना से भावित होकर भारतीय मनीषियों ने संसार के कल्याण की कामना की है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

कैसी विराट कामना है संसार का प्रत्येक व्यक्ति हमारे लिए सुख की कामना कर रहा है। पंचतंत्र में धर्म के विषय में श्लोक मिलता है:-

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

पहली बात तो यह हुई कि धर्म को धारण करना होता है। दूसरे जो कार्य या व्यवहार आपको अपने अनुकूल प्रतीत न हो वह दूसरों के प्रति भी मत करो। तब आपसे बड़ा धार्मिक कोई नहीं होगा। यदि यह उक्ति व्यवहार में आ जाये, तो संसार में समस्त पापकर्म अपने आप समाप्त हो जायेंगे। हत्या, चोरी, लूट, डकैती, अपहरण धार्मिक बेइमानी, चारित्रिक हीनता जैसे दुर्गुण कहाँ टिक पायेंगे। कुछ भी करते समय यह ध्यान रहेगा कि यदि हमारे साथ कोई ऐसा व्यवहार करेगा, तो हमें कैसा लगेगा?

यह सोचते ही व्यक्ति अनुचित की ओर जाने रुक जायेगा और वह सद्मार्ग पर चल निकलेगा। इस मार्ग के पथिक से तो संसार का कल्याण ही होगा। एक अन्य श्लोक में धर्म को केवल एक शब्द में ही निहित कर दिया है -

नास्ति सत्यात् परो धर्मो, नानृतात पातकं परम्।
अतः सर्वेषु कार्येषु सत्यमेव विशिष्यते।।

अतः यदि व्यक्ति सत्य का पालन करना धर्म मान लेगा तो आचरण में पवित्रता स्वतः ही आ जायेगी, असत्य उसे पातक महसूस होगा तो मिथ्याडम्बर अपने आप समाप्त हो जायेंगे

इस विवेचन से एक बात स्पष्ट हो रही है कि आचरण की पवित्रता, कर्तव्य का पालन, परोपकार व सत्यता में से व्यक्ति किसी एक को भी अपना ले, तो वह धर्म की गोद में होगा। यहाँ यह विचार करना भी असंगत नहीं होगा कि आचरण की पवित्रता के लिए करणीय कर्म का ज्ञान कैसे हो ? प्रथम तो यह कहा जा सकता है कि शास्त्र

विहित कर्म ही करणीय कर्म हैं और दूसरे सद् आचरण का निर्धारिक व्यक्ति का मन है। शास्त्र किसी भी सम्प्रदाय का हो, वह अच्छी, बातों का ही प्रतिपादन करता है। शास्त्र धर्म के दो रूपों का वर्णन करते हैं - एक बाह्य जिसमें पूजा पद्धति या कर्मकाण्ड निहित होते हैं और दूसरा आन्तरिक जिसमें सदवृत्तियों का वर्णन होता है। कर्म व्यक्ति की वृत्तियों से ही प्रभावित होते हैं। अतः पहले कर्म से सम्बन्धित धर्म को देखना ही उचित होगा।

धर्म के कर्मकाण्ड व उपासना पद्धति में अनेकानेक भिन्नताएँ हैं। जब धर्म से उपासना पद्धति या आस्था-विश्वासपरक अर्थ लिया जाता है, तब उसके अन्तर्गत कुछ कर्मकाण्ड या पूजा-उपासना विधान का वर्णन होता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई, यहूदी आदि अनेक उपासना पद्धति या कर्मकाण्ड के ही भेद है। यह भेद क्रमशः बढ़ता ही जाता है और इसी कारण एक मूल शाखा से अनेक शाखा प्रशाखा फूटती रहती हैं। विभाजन की यह प्रक्रिया अनवरत है और इतनी विध्वंशक है कि प्रायः धर्म के नाम पर आन्दोलन, खून-खराबा एवं युद्ध सामान्य घटना बनकर रह गये हैं। इस धर्मकाण्ड या उपासना- पद्धति को हृदय अथवा भावना से जोड़कर बुद्धि को निष्कासित कर दिया जाता है। प्रतिशोध एवं हिंसा की आग को प्रज्वलित किया जाता है। उसका दुष्परिणाम यह होता है कि एक व्यक्ति का अपराध उस उपासना पद्धति को मानने वाली समस्त जाति का अपराध मान लिया जाता है। इतिहास में इस मनोवृत्ति के अनेक उदाहरण मिल जायेंगे। कलह का मूल कारण हमारा ब्राह्याचरण ही बनता है। बाह्य-आचरण को ही धर्म मानना अथवा अपने बाहय आडम्बरों को ही एक मात्र सही मानना संघर्ष का कारण बनता है। वास्तविकता यह है कि मूलतः सभी धर्म अच्छे हैं किन्तु उनके अनुयायी जब धार्मिक कर्मकाण्ड को धर्म का आवरण दे देते हैं, तब स्थिति विकराल हो जाती है।

किसी पंथ, सम्प्रदाय या उपासना पद्धति की सीमा केवल पूजा-पाठ या उपासना स्थल तक ही सीमित नहीं होती। धर्म के क्षेत्र की व्यापकता के कारण धर्मशास्त्र के साथ ही नीति, लोक- व्यवहार एवं सदाचार भी इसके अन्तर्गत आते गये। यही कारण है कि प्रत्येक पंथ एवं सम्प्रदाय ने कुछ नीतियाँ व नैतिक मान्यताएँ निर्धारित की हैं। यदि इन समस्त सम्प्रदायों की मान्यताओं का अवलोकन किया जाये, तो एक बात स्पष्ट देखने को मिलेगी कि इन नीतियों एवं नैतिक मान्यताओं में प्रायः कोई मूलभेद नहीं है। किसी भी सम्प्रदाय ने बुरी बातों को अच्छा नहीं कहा है और न अच्छी बातों की निन्दा की है। सत्य, अहिंसा, परोपकार, क्षमा, दया, उदारता आदि को सभी ने स्वीकार किया है और हिंसा, असत्य, परपीड़ा आदि को अधर्म कहा है। भेद केवल यह रहा कि पूजा तीन समय की संध्या के रूप में उत्तराभि मुख होकर की जाये अथवा पाँच बार की नमाज़ काबाभि मुख होकर की जाये। आश्चर्य तो तब होता है, जब उन बातों पर संघर्ष देखते हैं, जिन पर उनका स्वयं का विश्वास दृढ़ नहीं है। उदाहरण के लिए आज के बुद्धिवादी युग में कितने प्रतिशत लोग मन से यह मानते हैं कि वेद अपौरूषेय हैं, कुरान खुदा का कलाम है, बाईबिल ईश्वर की वाणी है अथवा वह परम सत्ता पृथ्वी पर अवतार लेती है, ईसा ईश्वर का पुत्र मुहम्मद को खुदा ने अपने दूत के रूप में भेजा है किन्तु इन विश्वासों के विरुद्ध एक भी बात कोई सुनने को तैयार नहीं है। प्रत्येक धर्म के उपदेशकों ने अपने-अपने धर्म-प्रवर्तकों या अवतारों के साथ अनेक काल्पनिक कथा जोड़ दी हैं और उनकी सत्यता पर सन्देह करने वालों को अधार्मिक या काफिर घोषित कर दिया जाता है

संसार में धर्म के नाम पर जितना रक्त बहा है, उतना साम्राज्य विस्तार के नाम पर राजाओं या योद्धाओं ने भी नहीं बहाया है। कहने को हम इक्कीसवीं सदी के मानव

हैं किन्तु जब धर्म का प्रसंग आता है, तब हमारी सोच मध्यकालीन इतिहास के पन्ने पलटने लगती है। धर्म का बाह्य रूप पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, रोजा-नमाज, तीर्थयात्रा अथवा हज- माया, खानपान, वेशभूषा, त्योहार आदि तक सीमित रह जाता है। बाह्य आचरणों का पालन करनेवालों और इन्हीं बातों को धर्म मानने- वालों की संख्या प्रत्येक समुदाय में बहुतायत से मिलती है।

यह बाह्याचरण या कर्मकाण्ड कलह व विभाजन का जनक है। एक मूल से ही सम्बन्ध रखने पर भी हिन्दुओं, बौद्धों, जैनों व सिक्खों के मतभेद, तथा इसी प्रकार यहूदी मुसलमानों ईसाइयों के संघर्ष के उदाहरण हैं। इस बाह्याचरण के कारण हिन्दू-मुसलमान, यहूदी मुसलमान, ईसाइ, यहूदी, शैव-शाक्त, शिया-सुन्नी, दिगम्बर- श्वेताम्बर, हीनयान-महायान, केशधारी- मोना या निरंकारी संघर्ष ने मानवजाति का जितना अहित किया है, क्या उसका अनुमान लगाना सम्भव है। दोनों का विश्वास ईसा में है किन्तु कैथोलिक व प्रोटेस्टेण्ड संघर्षरत हैं। दोनों खुदा, कुरान और मुहम्मद साहब में आस्था रखते हैं किन्तु शिया-सुन्नी एक साथ बैठने को तैयार नहीं।

धर्म के आन्तरिक पक्ष में सद्गुणों का वर्णन किया गया है। मनु रचित, मनुस्मृति भारतीय परम्परा में धर्मशास्त्र का प्रथम ग्रन्थ है। इस ग्रंथ में धर्म के लक्षण बताते हुए मनु कहते हैं-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।।

धृति (धैर्य), क्षमा, दम (मन को वशवर्ती रखना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्रता का भाव), इन्द्रिह- निग्रह (समस्त इन्द्रियों को वशवर्ती करना) धी (विवेक), विद्या, सत्य व, अक्रोध (क्रोध न करना), ये दस धर्म के लक्षण मनु ने बताये है। पद्मपुराण में भी धर्म के इस अंग कहे हैं। ये दस हैं ब्रह्मचर्य, सत्य, तप, दान, संयम, क्षमा, शौच, अहिंसा, शान्ति व अस्तेय। आशय यह है कि सभी ग्रन्थों ने धर्म का अर्थ उन शाशवत मूल्यों को बताया है जिसे संसार के सभी मानव कम से कम मन से तो मानते ही हैं, भले ही किसी स्वार्थ के कारण उन नियमों या लक्षणों का व्यवहार में उल्लंघन कर जाते हों। वस्तुतः धर्म के लक्षण या अंगों का जो व्यक्ति मन, वचन व कर्म से पालन करता है, वह निश्चय ही धार्मिक है।

मनु वर्णित धर्म के दस लक्षण की थोड़ी सी चर्चा करना अनुचित नहीं होगा। धैर्य को न त्यागकर, उद्विगन रहित स्थिति में कर्तव्यपथ से च्युत न होते हुए भी हर स्थिति में सन्तोष ही धृति है। हरिश्चन्द्र, प्रहलाद, ध्रुव, पाण्डवों आदि के चरित्र में धैर्य की परीक्षा हुई है। कालिदास कहते हैं-

विकार हेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एवं धीराः।

धैर्य की परीक्षा आपात्काल में ही होती है।

गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं -

धीरज धरम मित्र अरु नारी।
आपदकाल परखिए चारी।।

धैर्य की इस कसौटी पर खरा उतरनेवाला व्यक्ति कभी भी कर्तव्यपथ से विचलित नहीं होगा और फिर उसके समस्त कार्य लोक-कल्याण के निमित्त ही होंगे।

कोध को वश में करके उत्तर देने की क्षमता रखते हुए भी दूसरों के अपराध को सहन करके बदले की भावना को न आने देने का नाम ही क्षमा है?- 'सत्यपि सामर्थ्ये उपकार सहनं क्षमा' इसी भावना से विष्णु ने भृगु को और वशिष्ठ ने विश्वामित्र को क्षमा किया।

गांधीजी कहते थे - क्षमा शक्तिशाली का हथियार है। जिसे परम्परा से इस उक्ति के द्वारा जाना जाता है- 'क्षमाश वीरस्य भूषणम्' राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' अपने ग्रन्थ कुरुक्षेत्र में लिखते हैं.:-

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल है।
उसको क्या जो दंतहीन विष रहित विनीत सरल है।।

बुराई का बुराई से उत्तर देना सद्मार्ग से विचलित होना है। अतः क्षमा धृति का ही अंग है।

विकार के कारणों के होने पर भी मन को वश में रखकर निर्विकार भाव को बनाये रखने का नाम दम है। मन का दमन करना या मन को वश में रखना दम कहलाता है। क्योंकि 'मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः मन की एकाग्रता ही इन्द्रियों को कार्य की ओर उन्मुख करती है। हमारी इन्द्रियाँ मन से संयुक्त होने के बाद ही अपने- अपने कार्यों में लगती हैं। अतः मन को सदैव करणीय कर्म में प्रवृत्त करके अधर्म से रोकने का नाम ही दम है। मन को वश में कर लेने बाद ही 'मा ग्रंधः कस्यस्विद्धनम्' की भावना उत्पन्न होती है। जिसने मन को वश में कर लिया, वह बुरी बातों से स्वतः हो दूर हो जायेगा।

मन को वश में करने के करने के उपरान्त मनसा, वाचा, कर्मणा चोरी न करने की भावना आती है, जिसे अस्तेय कहते हैं। किसी अन्य के धन की स्पृहा न करने की भावना से मनुष्य अनेक दुर्गुणों से बचा रहता है। दूसरे शब्दों में दूसरे के धन के प्रति किसी प्रकार की कामना या लालसा न रखना ही अस्तेय है। जिस प्रकार मार्ग में पड़े ढेले देखकर उसे पाने की लालसा मन में नहीं होती, वैसे ही दूसरे के धन के प्रति उत्पन्न होने वाली भावना दूसरे अस्तेय है। इस भाव के आने पर चोरी, लूट-डकैती, अपहरण तस्करी, घुसखोरी जैसे पापकर्मों के लिए अवसर स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं

मन में बुरे विचारों को न उठने देना आन्तरिक शौच के अन्तर्गत है, और स्वच्छ वस्त्र तथा शरीर की निर्मलता बाह्य शौच है। आशय यह है कि व्यक्ति की कथनी-करनी व सोच में निर्मलता का भाव होना चाहिए। व्यवहार में पवित्रता होनी चाहिए अर्थात हमारे कार्य पवित्र हो। यह व्यवहारिक शौच विविध क्षेत्रों में वांछनीय है। इस व्यावहारिक शौच का एक उदाहरण मनु ने इस प्रकार दिया है - **"सर्वेषामेव शौचानां अर्थशौच विशिष्यते"** अर्थात् हमारे धन का स्रोत भी पवित्र होना चाहिए।

विषयों के प्रति इन्द्रियों की आसक्ति को रोककर, उनको संयम में रखते हुए उनके सद्प्रयोग का नाम ही इन्द्रिय निग्रह है। यह इन्द्रिय समूह बड़ा बलवान है: "बलवान इन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति" । उनको वश में करनेवाला व्यक्ति सद्गुणों से युक्त होना स्वाभाविक है। यदि इन्द्रियाँ अपने धर्मानुकूल कार्य में प्रवृत्त रहें, तो फिर दुर्व्यसन, घृणा या द्वेष का स्थान ही नहीं रहेगा। इन्द्रिय पर अपना अधिकार जमा लेने वाला व्यक्ति सब प्रकार के सम्मान को पाने का पात्र बन जाता है।

बुद्धि की उस निर्मलता की स्थिति को जो भले-बुरे का ज्ञान रखती है, उसे धी कहते हैं। धी से आशय विवेक से है। बुद्धि हो सबके पास है, पर भले-बुरे की निर्णायक बुद्धि सब के पास नहीं होती । आत्म अध्ययन अथवा बहुश्रुत होने के कारण अनात्मक विषयक ज्ञान विद्या से प्राप्त होता है। इसीलिए विद्या को नेत्र कहा गया है : 'नास्ति विद्या समं चक्षु'। मिथ्या व अहितकारी वाणी को त्यागकर कल्याणकारी वाणी विद्या-सम्पन्न होने पर ही निकलेगी। धी व विद्या दोनों का यदि परस्पर सहयोग होगा तो धी के कारण सत्पुरुषों का सामीप्य पाकर व्यक्ति धर्माचरण करता हुआ आलस्य व प्रमाद को त्यागकर अखाद्य पदार्थों को छोड़कर श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करेगा तथा विद्यावान होकर मन, वाणी व कर्म की एकता को व्यक्त करता हुआ परमात्मा से लेकर पृथ्वी पर्यन्त वास्तविक ज्ञान का स्वामी होगा।

जो पदार्थ जैसा है या व्यक्ति जैसा है, उसको वैसा ही समझना और उसमें उस सत्य स्वरूप परमात्मा का दर्शन करना ही सत्य है। सत्य का उपासक न तो कटुवाणी बोलेगा

और न मिथ्या- भाषण करेगा। सत्य के कारण अनेक सद्गुण अपने आप आ जाते हैं सत्यवादी व्यक्ति कभी विपथगामी नहीं हो सकता। त्याग, नम्रता पवित्रता, उदारता, सच्चरित्रता, मधुरता आदि गुण, सत्य के भाई-बन्धु हैं। सत्यवादी मिथ्या व अहंकारी वाणी से सदैव दूरी बनाकर रखेगा।

कोध्र के कारण उपस्थित होने पर भी क्रोध न करना अर्थात् क्रोध को वश में रखने का नाम ही अक्रोध है। क्रोध कारण सर्वप्रथम उचित-अनुचित का विवेक मर जाता है। गीता ने इसे बुद्धिनाश कहा है। विवेक के अभाव में व्यक्ति धर्म के मार्ग से भटक जाता है।

मनु के द्वारा वर्णित धर्म के ये इस लक्षण देश, काल, जाति, सम्प्रदाय से बाधित नहीं है, जिनको मनु के नाम से ये स्वीकार न हों, अपने आराध्य या मान्य के उपदेश व कार्यो मे भी इन गुणों को खोज सकते है।

धर्म-अधर्म का सम्बन्ध मन, वाणी और कर्म से होता है। अतः मनुसा, वाचा, कर्मणा के आधार पर तीन प्रकार के पापों की संख्या भी मनु ने दस बतायी है। पाप कर्म व्यक्ति को धर्म-विमुख बनाते हैं और धर्म के दस लक्षणों का पालन करनेवाला व्यक्ति धार्मिक बन जाता है अर्थात् धर्म के दस लक्षण करणीय कर्तव्य हैं और आगे वर्णित अधर्म अकरणीय। दूसरे के धन को प्राप्त करने के लिए जो उपाय, चिन्तन, मनन, एवं प्रयास किये जाते हैं, वे अधर्म वर्ग में आते हैं। मन में निषिद्ध कर्मों का जागना हो अधर्म है। जीव, आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग-नरक में अनास्था रखते हुए केवल शरीर को ही सब कुछ मान बैठना भी अधर्म है। कठोर भाषण, मिथ्या-भाषण, परनिन्दा, व्यर्थ का वार्तालाप सभी पाप वर्ग में आते हैं। बिना दिये हुए किसी भी वस्तु लेना भी पापकर्म है। तन, मन अथवा वाणी से किसी को दुःख पहुँचाना भी अधर्म है। परपुरुष या परस्त्री के साथ शारीरिक सम्बन्ध भी पाप की श्रेणी में आता है। इन पाप कर्मों से बचकर जो व्यक्ति पूर्व वर्णित धर्म के दस लक्षणों का पालन करता है, वह पूर्ण धार्मिक है।

इन विधि निषेध का पालन करने वाले व्यक्ति के पास लक्ष्मी, बुद्धि, श्रद्धा जैसी उपलब्धि स्वतः ही आ जाती है और ये बाते प्रत्येक स्थान, काल और व्यक्ति पर लागू होती हैं। संसार के हित में भी जो कार्य ईमानदारी से किया जाये, वह धर्म बन जाता है और उन कार्यों के पहले धर्म स्वतः आ बैठता है - यथा धर्मशाला, धर्मादय, धर्मकांटा, आदि शब्दों में धर्म का प्रयोग। सार्वभौम धर्म सबके लिए है, तो सामान्य धर्म का सम्बन्ध व्यक्ति विशेष से होता है। अपने पद या व्यवसाय के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का एक उत्तरदायित्व होता तो और इस उत्तरदायित्व का पालन करना ही सामान्य धर्म कहलाता है। पिता का धर्म है, सन्तान का समुचित पालन-पोषण, गुरु का धर्म है, शिष्यों को उत्तम ज्ञान का उपदेश वाणी व व्यवहार से देना, राजा का धर्म है, अपनी प्रजा की रक्षा और सुख-सुविधाएँ जुटाना। सामान्य धर्म के ऐसे अनेक रूप होते हैं।

एक ही व्यक्ति के अनेक धर्म हो सकते हैं। एक ही व्यक्ति पिता, पुत्र, पति, अधिकारी व अधीनस्थ अनेक रूपों में हो सकता है और प्रत्येक स्थिति में उसके धर्म में भिन्नता स्वाभाविक है। मनुष्य का यह कर्तव्य कर्म ही यदाकदा धर्म की संज्ञा पा जाता है, यथा पतिधर्म, पत्नीधर्म, पुत्र धर्म आदि। धर्म के कर्मकाण्ड रूप में हम किसी देवी- देवता की पूजा करते हैं किन्तु सामान्य धर्म के आधार पर माता, पिता, गुरू व अतिथि की सेवा को धर्म मानने वाले विचारक ने ही "मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव।" का वैदिक आदेश दिया होगा। यही भाव विकसित होकर प्रत्येक कर्म के कर्ता से जुड़ता चला गया जैसे राजधर्म, स्वामी धर्म, सेवक धर्म आदि।

कर्तव्य ही धर्म है, इसका सबसे अच्छा उदाहरण गीता में मिलता है। विषादग्रस्त अर्जुन श्रीकृष्ण से कुल धर्म

व जाति धर्म की बात कहता है। कहता है कि कुल-क्षय से कुल धर्म नष्ट हो जायेगा-

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।

आगे वह कहता है कि ये शाश्वत कुल धर्म व जाति धर्म वर्ण संकर कारक दोषों से नष्ट हो जाते हैं:- 'उत्सामते जाति धर्माः कुलधमश्चि शाश्वतः।'

आशय यह है कि कुल व जाति का भी अपना धर्म होता है अर्थात् कुल व जाति के कुछ करणीय कर्तव्य होते हैं। जाति या कुल की अपनी मर्यादाएँ या परम्पराएँ होती हैं। यथा अध्ययन-अध्यापन ब्राह्मण का धर्म हैं, देश व समाज की रक्षा करना क्षत्रीय का करणीय कर्तव्य या उसका व्यक्तिगत धर्म है। समाज की विविध आवश्यकताओं को पूर्ण करना ही वैश्य - समाज अपना धर्म समझता है। श्रमिक वर्ग समस्त समाज की सेवा करना ही अपना करणीय कर्म मानता है, और यही उसका अपना धर्म है। प्रत्येक परिवार में जाति या राष्ट्र में व्यक्ति का एक दायित्व होता है और यह दायित्व ही उसका धर्म है। उसका पालन हो गीता का स्वधर्म पालन है। मनुष्य का स्वाभाविक धर्म कर्तव्य कर्म का पालन है

करणीय कर्म को धर्म और शास्त्र विहित कर्म को करणीय कर्तव्य मानने के बाद भी कर्तव्य का कोई निश्चित सांचा नहीं है। यह देश, काल, व्यक्ति सापेक्ष भी होता है। एक ही कर्म कभी प्रशंसनीय व कभी निन्दनीय हो सकता है। यथा-युद्ध में अधिक से अधिक शत्रुओं को मारने वाला वीर प्रशंसनीय योद्धा है किन्तु आतंकवादियों द्वारा किया गया कत्लेआम नृशंस हत्या का निन्दनीय कार्य है। कक्षा में छात्र की जिसासाओं का शमन करना अध्यापक का धर्म है किन्तु परीक्षा भवन में अधर्म। एक ही कार्य दृष्टिकोण भेद से धर्म व अधर्म बन जाता है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय स्वतंत्रता सेनानी ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में विद्रोही थे किन्तु स्वतंत्र भारत की सरकार की दृष्टि में वे देशभक्त हैं। 1857 का संघर्ष भारतीयों के लिए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हैं और तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में सिपाही विद्रोह या गद्दार था। ऐसे उहापोह के समय कर्तव्य का निर्धारण करते समय स्वयं के हित को त्यागकर अधिक से अधिक के हित को ध्यान में रखा जायेगा तो सही मार्ग या दृष्टिकोण स्वतः ही मिल जायेगा

सद्आचरण का निर्धारक शास्त्र के अतिरिक्त मनुष्य का अपना मन है। धर्म का निर्णय तर्क वितर्क या विभिन्न मतों के विवेचन से सम्भव नहीं है। मन उचित - अनुचित को बता देता है किन्तु बुद्धि की प्रबलता व इन्द्रियों का आकर्षण व्यक्ति को अनुचित की ओर खीच लेता है। मन के अतिरिक्त लोकाचार भी आचरण की पवित्रता - अपवित्रता को निर्धारित करता है। लोकहित की कसौटी भी धर्म के निर्धारण में विशेष महत्व रखती है। इसी कारण व्यक्ति-व्यक्ति ही नहीं अपितु कभी-कभी दो समाजों के धर्म में भिन्नता देखी जाती है। यह भिन्नता बाह्याचरण व आन्तरिक प्रवृत्तिगत दोनों प्रकार की हो सकती है। उदाहरण के लिए इस्लाम के मानने वालों में चाचा, ताऊ, मामा, फूफी के लड़के लड़की पति-पत्नी बन सकते हैं। ऐसा करके वे न किसी नियम का उल्लंघन करते हैं और न सामाजिक दृष्टि से कोई अनुचित कार्य किन्तु इसी प्रकार का विवाह हिन्दुओं में कानूनन अवैध है और सामाजिक दृष्टि से पाप या अधर्म है।

प्रवृत्तिगत उदाहरण देखें तो सन्तोष ब्राह्मण का गुण है किन्तु क्षत्रिय का अवगुण- 'असन्तुष्टा द्विजा नष्टा, सन्तुष्टाश्च महीपति' नीति वाक्य यही प्रकट करता है। लोकाचार या परम्परा के अवसर पर धर्म का निर्वाह करने के लिए इस नीतिवाक्य को ध्यान में रखना हितकर होगा- 'धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महाजनो येन गतः स पन्थाः।' धर्म को कर्तव्य का पर्याय मान लेने पर सद्शास्त्र भी धर्म के विषय में प्रमाण हो जाते। भगवान श्रीकृष्ण गीता में अर्जुन

से कहते है कि तेरे लिए कर्तव्य व अकर्तव्य की व्यवस्था मे शास्त्र ही प्रमाण है- ''तस्माच्छारस्त्र प्रमाणं ते कार्माकार्यव्यस्थितौ'' शास्त्रों में भले ही विविधता है किन्तु फिर भी सभी शास्त्र अकरणीय कर्मों के प्रति एकमत हैं। अतः उपनिषद्कार कहता है - 'यानि अनवयानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नी इतराणि'

बाह्याचार या कर्मकाण्ड की इस प्रवृत्ति के अनेक उदाहरण देखने के बाद मानव जाति का हित इसी में है कि पूजा-पद्धति, कर्मकाण्ड, बाह्याचार को गौण मानते हुए मानवीय मूल्यों : सत्य, आहिंसा, परोपकार, दया, क्षमा, इन्द्रिय-निग्रह, सहनशीलता, सरलता, उदारता, अक्रोध आदि पर विशेष बल दिया जाये। ऐसा व्यक्ति दुर्गणों से अपने को बचायेगा और काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, ईर्ष्या, राग-द्वेष, असत्य, छल-कपट आदि से पूर्ण छुटकारा पाने का प्रयास करेगा। धर्म के नाम पर परमसत्ता में विश्वास व कर्मफल के सिद्धान्त में आस्था रखने से उदात्तगुणों में दृढ़ता आयेगी

धर्म मूलतः एक है, ऊपरी भेद सम्प्रदायों की विभिन्नता के कारण है। 'एकम् सद् विप्राः बहुधा वदन्ति' सत्य एक ही है, विद्वाजनों ने उसे विविध रूपों में व्यक्त किया है। इस निष्कर्ष पर वही पहुँच सकता है जिसने गहरे पानी में प्रवेश करने का साहस किया हो। वही उसमें से मोती निकालकर ला सकता है। तट पर बैठनेवालों को तो सीपियों से ही संतोष करना पड़ेगा।

सम्पर्क सूत्र :- सहयोग, सर्वोदयनगर,
पिलखुवा, पिन- 245304
मो0- 7668115170

प्रेम व्यथा तन में बसे, सब तन जर्जर होय।
राम वियोगी ना जिये, जिये तो बौरा हुये।।

पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ, पंडित हुआ ना कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।।

कबीर सब जग निरधना, धनवंता नहिं कोय।
धनवंता सो जानिये, जाके रामनाम धन होय।।

-कबीर

गोपाल सिंह नेपाली की कविता

➲ डॉ0 मो0 दानिश

आधुनिक हिंदी कविता की रचनात्मक जमीन को आत्माभिमान और स्वाधीनता जैसे प्रतिरोधी भावों से सिंचित करनेवाले रचनाकारों की जमात के नायक कविवर गोपाल सिंह नेपाली 'कवि की स्वायत्तता' के सर्वोत्तम प्रतिमान हैं। 'कवि की स्वायत्तता' को सर्जना की निर्बाध उड़ान और दूरदृष्टि सम्पन्न आत्मविश्वास के संदर्भों से जोड़कर देखने पर गोपाल सिंह नेपाली की युगांतकारी रचनाशीलता का मर्म खुद-ब-खुद जाहिर होने लगता है । इस मर्म की उदात्त अभिव्यक्ति करते हुए उन्होंने लिखा है -

"हम धरती क्या आकाश बदलने वाले हैं,
हम तो कवि हैं इतिहास बदलने वाले हैं,
हर क्रांति कलम से शुरू हुई सम्पूर्ण हुई,
चट्टान जुल्म की, कलम चली तो पूर्ण हुई,
हम कलम चलाकर त्रास बदलने वाले हैं,
हम तो कवि हैं इतिहास बदलने वाले हैं।" 1

बताने की जरूरत नहीं है कि समय की शिला पर कवियों, रचनाकारों की प्रगतिगामी और युगप्रवर्तक भूमिका का जयघोष वही कवि कर सकता है, जिसने अपने जीवन में मूल्यों और आदर्शों को साकार किया हो। यहाँ यह भी याद रखना जरुरी है कि कविवर नेपाली की काव्ययात्रा प्रकृति प्रेम से शुरू हुई थी जिसका उतरोत्तर विस्तार मानवप्रेम और राष्ट्रप्रेम तक हुआ। इस क्रम में उन्होंने भावना की विस्तृत भूमि को आधार बनाकर कई कालजयी रचनाओं का प्रणयन किया ।

हिंदी साहित्य के उत्तर छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भ रहे गोपाल सिंह नेपाली का जन्म 11 अगस्त, 1911 को बेतिया (बिहार) में अवस्थित ऐतिहासिक कालीबाग मन्दिर प्रांगण के आउट हाउस में हुआ था। उल्लेखनीय है कि तब उनके पिता रेलबहादुर सिंह बेतिया राज की सेवा में कार्यरत थे। जन्मस्थली चम्पारण की प्राकृतिक सुषमा और स्निग्धता के मोहवश काव्य- सर्जना की ओर उन्मुख हुए गोपाल सिंह नेपाली की प्रकृति केन्द्रित सरस, सहज और लालित्यपूर्ण कविताओं की तुलना केवल हिंदी के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पन्त की कविताओं से की जा सकती है ।

23 वर्ष की युवावस्था में कविवर नेपाली का पहला काव्य संग्रह 'उमंग' (1934) प्रकाशित हुआ था। इस कविता संग्रह के माध्यम से नेपाली जी ने हिंदी के तत्सम और क्लिष्ट शब्दों को सहज और मनोहारी स्वरुप प्रदान करने में अपूर्व सफलता पाई। इसकी पुष्टि 'पंछी' कविता की इन पक्तियों से की जा सकती है-

"निर्झर का जीवन ही झर-झर गुंजार मधु करते
मधुकर झीलों में खेलें जीवन भर हंसिनी-हंस निर्मल
जल पर तू भी अब अपनी चंचु खोल
रे पंछी, मंजुल बोल-बोल।" 2

महाकवि सुमित्रानंदन पन्त ने गोपाल सिंह नेपाली की इस काव्यात्मक मौलिकता और विशिष्टता को 'उमंग' की भूमिका में उजागर करते हुए अर्थपूर्ण टिप्पणी की है

"आपने निर्झर को झरना, सरोवर को झील पक्षी को पंछी, रिक्त को रीता बनाकर खड़ी बोली की कविता को सहज सुषमा से पूर्ण कर दिया है।" 3

एक नवोन्मेषी भावक की तरह नेपाली जी ने प्रकृति के तमाम दृश्यों और गतिविधियों को अपनी मौलिक सर्जना से अद्वितीय कलात्मकता प्रदान की है। एक कविता में उन्होंने पीपल के पत्तों का मानवीकरण करते हुए उनके अस्तित्व को सजीव कर दिया है -

"निर्झर के पास खड़ा पीपल सुनता रहता कलकल छलछल पीपल के पत्ते गोल-गोल कुछ कहते रहते डोल- डोल।" 4

भारतीय उपमहाद्वीप की विशाल चौहद्दी में समाहित वैविध्यपूर्ण प्रकृतिक सौन्दर्य एवं उसकी रमणीयता तथा मनोहारी भंगिमाओं को 'पोएटिक स्केचिंग' के जरिये जो साकार रूप उन्होंने दिया,वह पाठकों को चमत्कृत करने के लिए पर्याप्त है। कल्पना और अनुभूति के मेल से उपजा यह अनूठा काव्यचित्र द्रष्टव्य है -

"सुनहरी सुबह नेपाल की, ढलती शाम बंगाल की कर दे रंग फीका चुनरी का, दोपहरी नैनीताल की।"5

'गीतों के राजकुमार' के रूप में प्रतिष्ठित गोपाल सिंह नेपाली ने गीत विधा को भाव और शिल्प दोनों निकषों पर समृद्ध किया। उन्होंने अपनी प्रभावी प्रस्तुति और सामयिक रचनाओं के बल पर हिन्दी की मंचीय काव्य-परम्परा को उत्कर्ष तक पहुँचाया। गीत, संगीत और कविताई के सम्मिश्रण से वो ऐसा जादू बाँध देते थे कि देश के जिस भी शहर में नेपाली जी काव्य पाठ के लिए आमंत्रित किये जाते वहाँ हजारों श्रोता उनको सुनने के लिए व्यग्र हो जाते। गणमान्य से लेकर श्रमिक समाज तक सभी उनके गीतों के मुरीद थे। सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना से लैस उनके गीतों में किसान, मजदूर, नौजवान, विरहिणी,भाई बहन, सैनिक, राष्ट्र - गौरव जैसे विषय पूरी मार्मिकता और अर्थवत्ता के साथ अभिव्यक्त होते थे। समय की नजाकत के अनुसार उन्होंने अपने गीतों के विषय का चयन किया। जब नवस्वतंत्र राष्ट्र के नवीन स्वप्नों को संकल्पित करने का समय था तब उन्होंने नवनिर्माण के गीत लिखे और जब जनता को जाग्रत करने की आवश्यकता थी तो उन्होंने जागरण के गीत लिखे। जब पूरे देश में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद नवता बोध की प्रगतिशील धारा को निराला 'नवगति नवलय ताल छंद नव' की उर्जा से अनुप्राणित कर रहे थे तब नेपाली जी भी हिंदी के मंचों से **"निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए, तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो, तुम कल्पना करो।" 6** के ओजस्वी आह्वान को प्रतिध्वनित कर रहे थे। नेपाली जी की नवीन कल्पना का साध्य भारतीय संविधान में वर्णित 'लोक कल्याणकारी राज्य' को साकार करने से सम्बन्धित था ।

नेपाली जी की काव्य-यात्रा की परिधि में - पराधीन और स्वतंत्र- दोनों तरह के भारत समाहित हैं। पराधीन भारत में अपनी नागरिक चेतना को सामूहिक गोलबंदी से सम्बद्ध करते हुए जिस कवि ने लिखा-

"बढ़ो तुम्हारे बलिदानों से मानव जरा उदार बनेगा बढ़ो तुम्हारे इन कदमों से जीवन बारम्बार बनेगा।" 7,

वही कवि आजाद भारत में नेतृत्वकर्ताओं की बेईमानियों से उत्पन्न मोहभंग की परिस्थितियों में खुद को अकेला और निराश पाता है लेकिन कमाल यह है कि विद्रूपता भरे कठिन समय में भी कवि का आत्मविश्वास नहीं डिगता तभी तो वह आम जनमानस के विचारों को प्रतिबिंबित करते हुए लिखता है -

"तुम-सा लहरों में बह लेता तो मैं भी सत्ता गह लेता ईमान बेचता चलता तो मैं भी महलों में रह लेता" 8

सर्वव्यापी मूल्यहीनता और पतनशीलता से आक्रांत आज के दौर में गोपाल सिंह नेपाली की उपरोक्त पंक्तियाँ पहले से ज्यादा मानीखेज हो गयी हैं क्योंकि आज राजनीतिक, आर्थिक और आपराधिक भ्रष्टाचार अपने चरम पर है ऐसे में सबकुछ लुटाकर ईमान बचाने वाले बेख़ौफ़ कवि की याद आना स्वाभाविक है ।

कविवर नेपाली के कृतित्व की पहचान उनके सिनेमाई योगदान के बगैर पूरी नहीं हो सकती। उन्होंने हिंदी सिनेमा के गीतों को न केवल नई दिशा दी बल्कि वास्तविक अर्थों में 'हिंदी गीत' लिखे। उर्दू-वर्चस्व वाले सिने जगत में 400 से ज्यादा 'हिंदी गीत' लिख पाना नेपाली जी की जीवटता का प्रमाण है। उनके लिखे गीत और भजन आज भी लोगों के मानस पटल पर अंकित है।। भक्तिभाव से परिपूर्ण शास्त्रीय गीत लिखने में तो नेपाली जी की प्रतिभा अतुलनीय है। उनके द्वारा नरसी भगत' (1957) फिल्म का यह भजन "दर्शन दो घनश्याम आज मेरी अंखिया प्यासी रे" इसका परिचायक है। फिल्म 'नागपंचमी' में उनके लिखे गीत "अरथी नहीं नारी का संसार जा रहा है, भगवान तेरे घर का सिंगार जा रहा है" की मार्मिकता से प्रभावित होकर मशहूर शायर हफ़ीज़ जालंधरी ने लिखा -

"विश्व में आज आज तक किसी भी कवि ने बेजान
मुर्दे पर इतना गजब का गीत नहीं लिखा,
धन्य हैं कविवर नेपाली"9

कविवर नेपाली ने उमंग (1934), रागिनी (1935), पंचमी(1942), नवीन (1944), नीलिमा (1944), हिमालय ने पुकारा (1963) जैसे काव्य संग्रहों और प्रभात, सुधा, योगी, रतलाम टाइम्स जैसी पत्रिकाओं के सम्पादकीय कार्यों के माध्यम से आजीवन हिंदी की सेवा की। जीवनयापन के लिए आजीवन संघर्षरत रहे गोपाल सिंह नेपाली ने सेना के सिग्नल बॉय और बेतिया राज के प्रेस में हेड प्रिंटर तक की नौकरी की लेकिन जीवनपर्यंत साहित्यिक मूल्यों और आदर्शों से कभी समझौता नहीं किया।

गोपाल सिंह नेपाली को 'हिमालय ने पुकारा' काव्य संग्रह से अन्यतम प्रसिद्धि मिली। इस संग्रह में चीनी आक्रमण (1962) के प्रतिरोध की सृजनात्मक अनुगूंज है। इस समय नेपाली जी की कलम ने बन्दूक से ज्यादा ताकत दिखाई। पूरे देश में घूमते हुए उन्होंने-

"उजड़े न हिमालय तो अचल भाग्य तुम्हारा चालीस
करोड़ों को हिमालय ने पुकारा हो जाये पराधीन नहीं
गंगा की धारा गंगा के किनारों ने शिवालय को पुकारा
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।" 10

ज्ञात हो कि तब भारत की कुल जनसंख्या लगभग 40 करोड़ थी और राष्ट्रीय संकट कठिन दौर में नेपाली जी ने अपने कलम की ताकत से पूरे देश को जगा दिया था। 'आधुनिक वाल्टेयर' के रूप में उन्होंने भारतीयता की अजस्र धारा और शौर्य की परम्परा को सूत्रबद्ध करते हुए सम्पूर्ण जनमानस में न केवल नवचेतना का संचार किया बल्कि पूरे देश में घूम घूमकर, गीत सुनाकर जन-जन में राष्ट्र-कल्याण के लिए सर्वस्व उत्सर्ग करने वाली विद्रोही भावना को भी जीवंत किया। 'हिमालय ने पुकारा' संग्रह की लोकप्रियता और ओजस्वी भावना ने चीनी सरकार की नाक में दम कर दिया था तब पीकिंग रेडिओ से लगातार नेपाली जी के बारे में दुष्प्रचार किया जाने लगा लेकिन भारतीयता की प्रतिमूर्ति गोपाल सिंह नेपाली देश की तरुणाई को योद्धा बनने और राष्ट्ररक्षा का विराट संदेश निरंतर संप्रेषित करते रहे। राष्ट्र जागरण के इसी अभियान के दौरान 'स्वाधीन कलम को अपना धन मानने वाले' कविवर नेपाली ने 17 अप्रैल, 1963 को भागलपुर रेलवे स्टेशन (बिहार) पर आखिरी साँस ली।

पता- ग्राम जोरावरपुर, पोस्ट बाराडीह,
थाना- कराकाट, जिला- रोहतास- 802214, बिहार

कर्तव्यपरायण उत्कलमणि गोपबन्धु

➲ डॉ0 चक्रधर त्रिपाठी

गोपबंधु देशप्राण थे। वे देश की जनता के लिए ही जीवित रहे- इसमें दो मत नहीं हैं। वे ओड़िशा में एक नए युग के प्रवर्तक होने के साथ-साथ एक खास परंपरा के प्रतीक स्वरूप थे। बचपन से ही वे अच्छे वक्ता थे। शिक्षक तथा साधारण वर्ग के लोग उनकी युवा काव्य-प्रतिभा से मुग्ध और प्रभावित रहते थे। वे अपने कॉलेज की पढ़ाई के दौरान लोकसेवा - संगठन तैयार कर उसमें कर्मनिष्ठ रहते थे। वे साहसी और स्वाधीनता के सिपाही भी थे। ओड़िशा में बाढ़ और सूखा के दौरान उनकी तत्परता, सक्रियता, निष्ठा देशवासियों का ध्यान आकृष्ट करती थीं। वे अपने कॉलेज के दिनों से देश में नए राष्ट्रीय आदर्श और दृष्टि लेकर नए शिक्षा संस्थान तैयार करना चाहते थे। प्रचारक अनंत मिश्र, आचार्य हरिहर दास और पंडित नीलकंठ दास सर्वप्रथम उनकी दीक्षा में दीक्षित हुए थे। इसके पश्चात सिर्फ ओड़िशा में ही नहीं पूरे देश में पहला वन विद्यालय पुरी के निकटवर्ती स्थान सत्यवादी में स्थापित हुआ।

बाढ़ और अकाल के संकट के समय गोपबंधु प्रेरणा- पुरुष बन जाते थे। एक बार ज्वर ग्रस्त रहने पर भी उन्होंने केंद्रापाड़ा, जाजपुर - जैसे बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में अपने सहयोगियों के साथ राहत की सामग्री वितरण करने और उन्हें संकट से निकालने का कार्य भी किया था।

ओड़िया साहित्य में गोपबंधु नए युग के प्रतीक पुरुष थे। सन् 1913 में 'सत्यवादी' नाम से एक साहित्यिक पत्रिका गोपबंधु के संपादन में निकली थी। सत्यवादी विद्यालय, राष्ट्रीय विद्यालय बनने से पहले 'समाज' समाचार पत्र में उसके नाना विषयक साहित्य-ग्रंथ प्रकाशित हुए थे। अभी ओड़िया साहित्य में सत्यवादी अभियान सर्वत्र सुविदित है। इस प्रकार विभिन्न रूपों में गोपबंधु ने ओड़िया साहित्य और भाषा के पथ प्रदर्शक के रूप में भी सराहनीय कार्य किया है।

अगर हम राजनीति की बात करें तो ओड़िशा में गोपबंधु के समय कांग्रेस नहीं थी। ओड़िसा की राजनीति में मधुसूदन दास उत्कल सम्मेलनी आंदोलन छेड़ चुके थे। सन् 1930 में गोपबंधु पूरे मनोयोग से उससे जुड़। लेकिन इससे उनका राष्ट्रीय चरित्र कभी भी मलिन नहीं हुआ। राष्ट्रीय कांग्रेस महासभा के प्रति उनकी भक्ति अटूट थी। उत्कल सम्मेलन - जैसे संस्थान में भाषाई आधार पर प्रदेश गठन के लिए तत्पर रहने पर भी वे इसे कभी भी उद्देश्य नहीं मानते थे, वे वस्तुतः राष्ट्रीय चरित्र का ही इसे एक अंग मानते थे और उसी हिसाब से सन् 1917 में अखिल भारतीय राष्ट्रीय सभा में भाग लिया था। गांधी जी द्वारा चलाए गए सन् 1920 के आंदोलन में उन्होंने पूरे मनोयोग से भाग लिया था। सन् 1924 में हजारीबाग जेल से छूटकर गोपबंधु कटक आए और प्रादेशिक कांग्रेस मेला में योगदान

किया। उस मेले में कोलकाता के सर प्रफुल्ल चंद्र राय अध्यक्ष थे। वे गोपबंधु को देखने मात्र से 'उत्कलमणि' बोलकर उन्हें संबोधित किया था, तब से गोपबंधु दास 'उत्कलमणि' के रूप में प्रख्यात हो गए। स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश 'गठन में उत्कल सम्मेलनी के संस्थापक मधुसूदन दास की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। गोपबंधु इस प्रदेश गठन के लक्ष्य से जुड़े।

गोपबंधु के वक्तव्य में वाग्मिता रहने के साथ-साथ सरसता भी रहती थी। इसलिए वे काफी लोकप्रिय बन गए। गोपबंधु ने ही ठीक से समझा था कि भाषा और साहित्य के बिना किसी जाति का अथवा राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। एक बार वे रोते हुए बोले थे कि खरसुआं (आज यह बिहार प्रांत में है) से ओड़िया भाषा को लुप्त कर दिया गया। पंडित गोपबंधु कांग्रेस को ओडिशा लाए थे। इसलिए उन्हें ओड़िशा कांग्रेस का भगीरथ माना जाता है। पर वे अधिक दिनों तक प्रदेश अध्यक्ष के पद पर नहीं रह सके। कुछ उप नेताओं के द्वारा बार-बार असहयोग और साजिश करते रहने के कारण वे उदास रहते हुए कांग्रेस से दूरी बना ली और कटक छोड़कर सत्यवादी चल दिए। जनसेवा, राजनीति, समाजसेवा, पत्रकारिता, वकालत, स्वतंत्र प्रदेश गठन, शिक्षा, साहित्य सेवा, भाषा संरक्षण आदि जनजीवन के विविध क्षेत्रों में उन्होंने काम करना उचित समझा। उनमें एक मधुर और सुदृढ़ व्यक्तित्व ही नहीं था; बल्कि उसमें चरित्र गठन के साथ-साथ भविष्य की साधना और बलवती देशसेवा का भाव भी था। पंडित गोपबंधु ने सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय रहते हुए पूरे ओड़िशा का भ्रमण किया। 31 मार्च सन् 1922 को गोपबंधु को गिरफ्तार किया गया। जेल से निकलने के बाद गोपबंधु टाइफाइड बुखार से पीड़ित होकर काफी कमजोर हो गए थे। अचानक कोलकाता से खबर आई कि ओड़िशा का कुली समाज दिन-रात मेहनत करने पर भी उसे भरपेट भोजन नहीं मिल पा रहा है। इस खबर को सुनते ही गोपबंधु की आँखों में आंसू की धारा प्रवाहित होने लगी। उसके बाद वे कलकत्ते की ओर चल पड़े। चिकित्सारत डाक्टरों के रोकने पर भी उन्होंने डाक्टरों की बात नहीं सुनी। वे कोलकाता चले गए और वहाँ के श्रमिकों की समस्याओं को सुलझाते हुए उसी महीने 11 तारीख को सत्यवादी लौट आए। उस समय भी उन्हें प्रबल ज्वर था। सत्यवादी की एक छोटी-सी कुटिया में वे रहते थे। उन्हें बुखार इतना तेज हो गया था कि बिस्तर से खाट के नीचे उतरना उनके लिए संभव नहीं था। दोपहर में उनकी तबीयत खराब होती चली गई। गोपबंधु का शरीर ठंडा पड़ने लगा, हाथ-पैर ठंडे हो गए, मुँह से बोलना संभव नहीं था। अपने निकट उपस्थित बंधु को इशारे से ईश्वर की प्रार्थना करने का निर्देश दिया। लोगों ने पूरी निष्ठा से प्रार्थना की। भगवान के उद्देश्य दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए चिर निद्रा में वे सो गए। 17 जून सन् 1928 को वे हमेशा के लिए चले गए। उनकी मृत्यु से उड़ीसा तथा राष्ट्र जीवन से एक उज्ज्वल नक्षत्र हमेशा के लिए अस्त हो गया ।

गोपबंधु के महाप्रयाण पर लाला लाजपत राय, दीनबंधु सीएफ एंड्रयूज, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अतिरिक्त मद्रास के 'द हिंदू', दिल्ली से 'हिंदुस्तान टाइम्स', लाहौर से 'द ट्रिब्यून', पुणे से 'मराठा', पटना से 'सर्च लाइट', ब्रह्मपुर से 'ईस्ट कोस्ट', कोलकाता से 'स्टेट्समैन' - जैसे समाचार पत्रों में उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। बीपी फिल्म डीपी पर 'द टिप्स' समाचार पत्र में लाला लाजपत राय ने लिखा कि देश में सादा जीवन जीने वालों में गांधी जी के बाद उत्कलमणि का नाम लिया जाता है। गोपबंधु के चारित्रिक वैशिष्ट्य के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए यह कहते हैं कि 'अपनी समस्त जायदाद, जीवन की सारी पूंजी, विद्या, शक्ति, सामर्थ्य और यहाँ तक

कि अपनी आत्मा को भी जनता को सौंप दिया था। वे जनता को जो उपदेश देते थे स्वयं उसे पहले जीते थे। वे ओड़िशा के बेताज बादशाह थे। हमेशा वे जनता के प्रति समर्पित होकर देश के लिए लड़ना चाहते थे, ऐसे व्यक्ति के निधन से देश सचमुच दरिद्र हो गया और 'लोक सेवक मंडल' उनकी सेवाओं से वंचित रह गया।"

दीनबंधु सीएफ एंड्रयूज ने अपनी श्रद्धांजलि में यह कहा कि ओड़िशा से एक बार बिहार छात्र सम्मेलन में भाग लेने के लिए गोपबंधु ओड़िशा से एक छात्र दल लेकर पहुँचे थे जिससे सम्मेलन का महत्व काफी बढ़ गया था। वे 'समाज' समाचार पत्र चलाते थे; इसलिए उन्हें नित्य कटक जैसे शहर में रहना पड़ता था; किंतु उनका ह्दय हमेशा गाँव के लोगों में बिखरा हुआ रहता था । वे स्वयं एक ग्रामीण की भाँति जीते थे। वैसी ही वेशभूषा धारण करते थे। तनिक भी आडंबर नहीं था। ईश्वर के प्रति वे सरल और प्रगाढ़ भक्ति रखते थे।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने गोपबंधु की मृत्यु का समाचार पाकर जो वार्ता भेजी थी उसका संक्षिप्त अंश इस प्रकार है- पंडित गोपबंधु दास ओड़िशा में राष्ट्रीय आंदोलन के जनक के रूप में जाने जाते हैं। यद्यपि मिस्टर मधुसूदन दास के समय से ओड़िशा में जन-जागरण देखने को मिलता था, पर मधुसूदन पाश्चात्य विचारधारा से काफी प्रभावित थे। दूसरी ओर पंडित गोपबंधु दास अपने दृष्टिकोण और चिंतन में पूरी तरह भारतीय थे। सादा जीवन और उच्च चिंतन उनके जीवन का व्रत था। उन्होंने अपना अधिकांश समय साक्षी गोपाल स्थित तीर्थ क्षेत्र में अपने राज्य के गरीब श्रेणी के लोगों के बीच रहकर व्यतीत किया था। उनके जीवन में आडंबर नहीं था। दीन-दरिद्र लोगों की सेवा उनका व्रत था। वहाँ पर उन्होंने एक स्कूल आरंभ किया। असहयोग आंदोलन के बहुत पहले से राज्यवासियों की सहायता से यह स्कूल स्थापित हुआ। यह स्कूल राष्ट्रीय रीति से परिचालित होता था और राष्ट्रीय विचारधारा और कार्यकलाप का प्राण केंद्र था। पंडित गोपबंधु के साहस और त्याग के परिणाम स्वरूप ओड़िशा के युवा समाज में त्याग और निर्भयता का आदर्श पैदा हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन और सेवा के माध्यम से उन्होंने ओड़िशा की उन्नति को अपना लक्ष्य बनाया था। एकांत में रहते हुए कार्य करना और सेवा करना उन्हें पसंद था। यशोकांक्षा से वे दूर ही रहते थे, राज्य जब अकाल और बाढ़ का शिकार होता था, उस समय वे राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं में, राहत कर्मियों में और सेवादलों में अग्रगामी रहते थे। मद्रास के 'हिंदू' समाचार पत्र ने लिखा कि महात्मा गोपबंधु के तिरोधान से ओड़िसा ने एक अतुलनीय कर्ता और मानव प्रेमी को तथा इस देश ने एक सच्चे देशप्रेमी को खो दिया है। दिल्ली से प्रकाशित 'हिंदुस्तान टाइम्स' में लिखा गया कि राष्ट्र निर्माण के कार्य में गोपबंधु बिना थके अनवरत कार्य करते थे।

अपनी छोटी सी उम्र में ओड़िशा प्रदेश के अवहेलित पीड़ित, पद-दलित वर्ग के विकास के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया जिससे वे जनसेवक तथा जनबंधु के रूप में स्थापित हो गए। लाहौर के 'द ट्रिब्यून' अखबार में लिखा गया, गोपबंधु ओड़िशा के बेताज बादशाह के रूप में जाने-समझे गए। वे वहाँ राष्ट्रवादी आंदोलन की आत्मा के स्वरूप थे। पुणे के अखबार मराठा में श्रद्धांजलि की शब्दावली इस प्रकार थी- सत्यवादी समाज के निर्माता बिहार-ओड़िशा की विधानसभा के सदस्य के रूप में तथा असहयोग आंदोलन के नेता के रूप में वे अपने प्रदेश की जनता में तथा भारत के शेष क्षेत्रों में देश के अन्यतम स्वदेशप्रेमी तथा त्याग वीर संतान के रूप में जाने जाते थे। उनके निधन से बिहार और ओड़िशा ने अपने एक सर्वाधिक प्रभावशाली और जनप्रिय नेता को खो दिया। पटना के 'सर्चलाइट' समाचार पत्र में लिखा गया कि गोपबंधु ओड़िशा में त्याग और देशभक्ति के प्राणवंत प्रतीक

थे। ब्रह्मपुर के ईस्ट कोस्ट अखबार में बताया गया कि ओड़िसा ने गोपबंधु के निधन से एक राष्ट्रीय नेता को खो दिया। कोलकाता के द स्टेट्समैन में लिखा गया कि ओड़िशा ने एक सच्चा और एकनिष्ठ समाजसेवी को खो दिया। राजनीति में उनके कुछ विरोधी अवश्य थे; लेकिन सेवा के कार्यों में उनका विरोध करने वाला कोई एक व्यक्ति भी नहीं था। वे महात्मा गांधी के विश्वस्त शिष्य थे। अपनी छात्र-अवस्था में गोपबंधु ने कोलकाता विश्वविद्यालय की कुछ विसंगतिपूर्ण गतिविधियों का विरोध संगठित होकर किया और उस संगठन का नाम 'कर्तव्य बोधिनी समिति' रखा। मूलतः ओड़िया भाषा और संस्कृति के संदर्भ में उन्होंने आवाज उठाई थी। यह 'कर्तव्य बोधिनी समिति' धीरे-धीरे विद्यालय और महाविद्यालय के स्तर तक पहुँच गई। गोपबंधु ने कई बार स्वयं छात्र-छात्राओं को इसमें शपथ दिलाई थी। इसमें छात्रों के अतिरिक्त कुछ अध्यापक भी आग्रह के साथ शामिल हुए थे। कर्तव्य बोधिनी समिति का कार्य क्षेत्र धीरे-धीरे बढ़ता गया और संकटग्रस्त जनता की सेवा करना, गरीब और निराश्रित लोगों की सहायता करना तथा विपन्न लोगों में राहत की सामग्री पहुँचाना आदि कार्य इसके अंतर्गत आ गए।

सच्ची सेवा ही गोपबंधु की मूल प्रवृत्ति थी और उत्तम चिंतन तथा सत्कर्म उनके जीवन का मंत्र था। सोच में, ध्यान में और कर्म में सेवा ही उनका एकमात्र मंत्र जाप था । वे सेवा की जीवंत प्रतिमा थे।

गोपबंधु ने बहुत-से संस्थान बनाकर अनेक रचनात्मक कार्य किए थे। वे भगीरथ बनकर ओड़िशा में कांग्रेस को लाए और इस दल के प्रथम प्रदेश अध्यक्ष बने थे। समाज सेवा और समाज संस्कार करने वाली संस्थाएँ उन्होंने बनाई थीं। 'सत्यवादी' पत्रिका का प्रारंभ कर ओड़िया साहित्य के क्षेत्र में नवजागरण लाये थे। वस्तुतः वे ओड़िया पत्रकारिता के जनक थे। सत्यवादी वन विद्यालय और सत्यवादी बिहार की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने क्रांति ला दी थी। संकटग्रस्त जनता की सेवा, स्वाधीनता आंदोलन, स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश गठन, गांधी विचार का संप्रेषण, एक आत्मनिर्भर सशक्त और समृद्ध ओड़िशा के गठन का उन्होंने प्रयास किया था। उत्कल के नारी-समाज, कन्या वर्ग, युवा वर्ग, कृषक और मजदूर सब की उन्नति के लिए उन्होंने प्रयास किया था। बाढ़ से स्थाई रूप से मुक्ति मिले इसका प्रयास उन्होंने किया था। दैनिक समाचार पत्र 'समाज' का प्रसारण भी शुरू किया। देश के प्रति लोगों में कर्तव्य बोध की भावना जगाई। जातिभेद, कुसंस्कार और सांप्रदायिक सोच के खिलाफ एक शोषण मुक्त समाज-गठन का सपना गोपबंधु ने देखा था। सामंतवाद और राजतंत्र का अंत करते हुए एक स्वाधीन आत्मनिर्भर युक्त राष्ट्र व्यवस्था में वे विश्वास रखते थे। सन् 1909 में उन्होंने वन विद्यालय की, सन् 1920 में ओड़िशा कांग्रेस की, सन् 1925 में दरिद्र नारायण सेवा संघ की, सन् 1926 में लोकसेवक मंडल की विशेष शाखा की, सन् 1927 में ओड़िशा बाद सहायता समिति की, सन् 1927 में सत्यवादी प्रौढ़ शिक्षा केंद्र की स्थापना की थी ।

गोपबंधु ने ओड़िशा में राष्ट्रीय जीवन गठन के लिए और शिक्षा विकास के उद्देश्य से जगन्नाथपुरी के निकटस्थ स्थान पर सन् 1909 में सत्यवादी वन विद्यालय की स्थापना मनुष्य-निर्माण-कारखाने के रूप में किया था। इस वन विद्यालय रूपी कारखाने में देश के विभिन्न स्थानों से प्रख्यात लोगों का आगमन होता था। इनमें बिहार-ओड़िशा के लाट सर एडवर्ड गेट, सर कृष्ण गोविंद गुप्त, सर देव प्रसाद सर्वाधिकारी, सर आशुतोष मुखर्जी, सीएफ एंड्रयूज, मधुसूदन दास, महात्मा गांधी, फकीर मोहन सेनापति आदि प्रमुख हैं। उक्त विद्यालय के छात्रों में अनुशासनबोध और पेड़ के नीचे मुक्त परिवेश में शिक्षकों के आदर्शोन्मुख शिक्षा दान से प्रभावित होकर इसे बहुतों

विश्व विख्यात नालंदा विश्वविद्यालय के अनुरूप बताकर प्रशंसा की थी। यह किसी भी दृष्टि से शांतिनिकेतन से कमतर नहीं था - ऐसा तत्कालीन शिक्षाविदों ने बताया। उक्त वन विद्यालय के आदर्श ने समग्र देश को प्रभावित किया था। यह गोपबंधु का प्रथम साधना - पीठ और प्रयोगशाला थी। शिक्षा के विकास के लिए उन्होंने वन विद्यालय के माध्यम से नए प्रयोग के साथ-साथ भिन्न-भिन्न समाज सेवाएँ और संस्कारयुक्त कार्य आरंभ किए।

जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस वर्मा (म्यांमार) के मांडले जेल में थे, उस समय ओड़िशा के अनन्य जननायक पंडित गोपबंधु दास को अंग्रेजी में उन्होंने ऐतिहासिक गुरुत्व रखने वाले तीन पत्र लिखे थे। इन पत्रों से दोनों महापुरुषों के बीच पलने वाली श्रद्धा और सम्मान तथा संकटग्रस्त ओड़िशा के प्रति दोनों की असीम ममता दिखाई पड़ती है।

गांधी जी ने गोपबंधु के संबंध में कहा था कि उनमें मनुष्य के प्रति अनंत श्रद्धा और सम्मान था। उसी श्रद्धा और सम्मान के पुनर्जागरण के लिए हम गोपबंधु को स्मरण करते हैं। वे बोले थे, हमलोग सबसे पहले मनुष्य हैं फिर भारतीय और अंत में ओड़िया। कोई किसी जाति का क्यों ना हो, यह सर्वप्रथम मनुष्य है। ईश्वर की संतान है।

तत्कालीन अखंड ओड़िशा प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में गोपबंधु दास का नाम सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वोच्च स्थान रखता है। वे प्राक् उन्नीसवीं शती के महानायक थे। दुर्भाग्य से हम उनका मूल्यांकन नहीं कर पाए, उनके द्वारा किए गए राष्ट्रोत्थान के कार्यों को समझ पाए। हम अपनी अल्पज्ञता एवं संकीर्णता के कारण उनके हृदय के विशाल भाव समुद्र और वैचारिक उत्कर्ष को समझने में असमर्थ रहे। जो कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हो जाना चाहिए था, वह पचहत्तर वर्ष बाद भी नहीं हो पाया है। उनके संपूर्ण वाङ्मय का प्रकाशन हिंदी-अंग्रेजी में हो जाना था, वह आज केवल एक प्रांतीय भाषा तक सीमित होकर रह गया अर्थात् एक आंचलिक भाषा के पिंजरे में ही उस राष्ट्रनायक को हमने कैद कर दिया।

गोपबंधु राष्ट्रीय गौरव के प्रति समर्पित पुरोधा व्यक्तित्व थे। राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना और राष्ट्रीय चेतना का भाव उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। एक महान् उभरते राष्ट्रनायक का असमय चला जाना दुर्भाग्यपूर्ण था । जब हम गोपबंधु के व्यक्तित्व का आकलन करते हैं, तब हमें उनके व्यक्तित्व में अब्राहम लिंकन की छवि दिखाई देती है -

"मिशु मोर देह ए देश माटिरे।
देशबासी चालि जाआंतु पिठिरे।
देश र स्वराज्य पथे येते गाड़
पुरु ताहिं पड़ि मोर मांस हाड।"

अर्थात, देश की स्वराज्य-प्राप्ति के मार्ग पर जितने भी गडढे हों वे मेरे शरीर के मांस और अस्थि से भर जाएं। इस प्रकार मेरी देह इस देश की माटी में मिल जाय और मेरे देशवासी उस महान उद्देश्य के लिए मेरी पीठ पर चल कर जाए।

सम्प्रतिः कुलपति
ओडिशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
कोरापुट - 763004
मो0 - 9434210155

मुक्तिबोध की चिन्तनशीलता

➲ डॉ0 आराधना अस्थाना

मुक्तिबोध जी की नई कविता के प्रतिनिधि कवि है। इनकी काव्य सहिता प्रगतिवाद, प्रयोगवाद इत्यादि कालों के छोरों का संस्पर्श करती हुई नई कविता की वेगपाती धारा में मिल गई है। आधुनिक जीवन-मूल्यों की सशक्त और जीवन्त अभिव्यक्ति, मुक्तिबोध के काव्य की विशेषता है। मुक्तिबोध एक ऐसे कवि है जिनका अनुभव जगत बहुत व्यापक है और अपने परिवेश से अत्यन्त गहनता से हुडे हुए है।

मुक्तिबोध बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होनें कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, निबन्ध इत्यादि अनेक विधाओं में रचना की परन्तु आप स्वभावतः कति थे। मुक्तिबोध की कविताए 'चांद का मुंह टेढा है' नामक कविता संग्रह के रूप में हमारे समक्ष आई है।

मुक्तिबोध की कविताओं में उनका चिंतकरूप उभरकर हमारे सामने आता है। इनकी प्रगतिवादी दृष्टि, परिवेशबोध, सामाजिक चिन्तन और अनुभव वैविध्य को और बल देती है।

गजानन माधव मुक्तिबोध का कविताओं के अतिरिक्त 'काठ का सपना' नामक कहानी संग्रह, विपात्र नामक उपन्यास एक साहित्यिक की डायरी नामक आत्याख्यान 'नई कविता का आत्मसंधर्ष तथा अन्य निबन्ध' 'कामायनी एक पुनर्विचार' नामक निबन्ध 'उर्वशी दर्शन और काव्य' नामक पुस्तक समीक्षा तथा अधेय यशपाल, राघव याचेव, अमृतराय और कुँवर नारायण आदि की रचनाओं के सम्बन्ध में समीक्षाएँ भी लिखी है।

आपकी कविताओं में जीवन व समाज के प्रति चिन्तन का भाव विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक समाज की विसंगतियों, सामाजिक, असमानता, वर्गगत, वैषम्य, समाज मे शोषित वर्ग के प्रति चिन्ता का मुख्य रूप से वर्णन करते हुए आपने वर्णन करने के लिए ऐसे विषयों को चुका है जो जीवन के यथार्थ से सम्बन्ध रखते है।

शमशेर बहादुर सिंह ने मुक्तिबोध की तुलना एक चट्टान से करते हुए कहा है-

"शिलाओं पर शिलाएँ झरने केवल विरले ही, केवल गहरी बावडिया, सूखे हुए कुए, झाड, झंखाड, ऊची-नीची अनन्त पंगडन्डियाँ जैसे मलवा के पठार और मध्यप्रदेश की ऊबड़ खाबड धरती और इस धरती के आतुकमय रहस्यमय इतिहास उनके बीच लहु लुहान मानव। पुनः आप कहते है कि "मुक्तिबोध की कविता अदभुद संकेतों भरी जिज्ञासाओं से अस्थिर कही दूर से ही शोर मचाती कभी कानों में चुपचाप राज की बाते कहती चलती है। हमारी बाते हमीं को सुनाती है ओर हम अपने को एकदम चकित होकर देखते है और पहले से और भी

अधिक पहचानने लगते है।"

मुक्तिबोध जी की कविता में कोरी भावुकता नहीं है। उनके भावों के पीछे विचारों की गहनता है। इन्होनें जिन अनुभूतियों को झेला है और जिनमें लगातार जीकर अग्नि परीक्षा दी है उसे उस स्थान पर ला खडा किया है। जहाँ वे प्रत्येक संधर्षशील देश और उसकी जनता की निधि बन गए है। इनकी कविताओं के अनेक रूप है जैसे भय, डर, संशय, अकेलापन, आस्था-अनास्था तड़प और अकुलाहट, शक विश्वास, सादगी तनाव, टूटन सभी कुछ इनकी कविताओं में है।

आपकी कविताओं में युग चिन्तन को महत्व दिया गया है। नग्न यर्थाथ के वर्णन की जहाँ पर आवश्यकता पडी वहाँ पर इन्होने फैंटेसी का सहारा लिया है। फैंटेसी की व्यवस्था करते हुए इन्होने स्वलिखित वृत्तियों का अनुभव जीवन समस्याओं का इच्छित विश्वासों और इच्छित जीवन स्थितियों का प्रक्षेप होता है। फैंटेसी को मुक्तिबोध ने अपने काव्य में क्यों अपनाया इसके बारे में वे कहते है-

"मैं विचरण करता हूँ एक फैन्टेसी में यह निश्चित नहीं है कि कविता में विचारों का गाम्भीर्य सन्निहित है"

उनके भावावेश के पीछे विचारों की एक सुदीर्ध परम्परा है। उनकी चिंतन शैली बाहय करती है कि वे अपने परिवेश के प्रति जागरूक होकर सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति अपनी कविताओं में करे जो मानव श्रमशील है, पूँजीपति वर्ग द्वारा दबाया जाता है तथा समाज की असमानता सबकी चिंता उन्हे निरन्तर प्रेरित करती रहती है।

मुक्तिबोध की चिन्तनशैली के अनेक पक्ष दिखायी पडते है जिन्हे निम्नलिखित बिन्दुओं में स्थापित किया जा सकता है :-

आधुनिक जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति - मुक्तिबोध जी की चिंतन शैली उन्हें आधुनिक समाज, मूल्यों के प्रति सोचने को बाहय करती है। इन्होने आधुनिक जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए नए विषयों की नवीन संदर्भों से युक्त करके प्रस्तुत किया है। आधुनिक समाज की विसंगतियों के चित्रण के लिए इन्होने जीवन के यथार्थ से सम्बन्ध रखने वाले और नितान्त मौलिक विषयों को चुना है। शोषित नारी की उपमा इन्होने निम्नलिखित प्रकार से दी है:-

"मटक-मटक मुँह बिचकाती है पथ पर पागल
बूदे स्तन लटकाएं नंगी भाग्य देवता
फूटे वर्तन सी तिरस्कृता जब मानवता।।"

निम्न मध्यम वर्ग की जीवन दृष्टि को भी मुक्तिबोध चित्रित करते है जो वर्ग संधर्ष के कारण क्रान्ति के लिए विवश हो जाता है। निम्न मध्यम वर्ग के जीवन की कुंठा, टूटन, धुटन, संश्रास, पीड़ा दुख क चित्रण करता हुआ कवि उनके साथ सहानुभूति व्यक्त करता है:-

मेरी असंग स्थिति में चलता-फिरता साथ है,
अकेले मे साहचर्य का हाथ है।
उनका जो तुम्हारे द्वारा गर्हित है।
किन्तु वे मेरी व्याकुल आत्मा में बिंबित है, पुरस्कृत है
इसलिए तुम्हारा मुझ पर सतत आघात है।
सबके सामने और अकेले में।

(मेरे रक्त भरे महाकाव्यों के पन्ने उडते है तुम्हारे हमारे इस सारे झमेले में)

2. बौधिकता अथवा चिंतनशीलता -

मुक्तिबोध के भाव जगत में चिन्तन और विचारों और विचारों की प्रधानता है, इनकी कतिताओं में मस्तिष्क विहीन कोरी भावुकता कहीं भी दिखायी नहीं पडती। कवि समाज मानवता के बारे में चिंतन करने के साथ ही स्वंय के जीवन की उपयोगिता तथा इसका श्रमशील और शोषित वर्ग के हित में उपयोग के सन्दर्भ में विचार करता हुआ स्वंय को ही फटकारता है-

अब तक क्या किया, जीवन क्या जिया,
ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम

मर गया देश, अरे जीवित रह गये तुम।।

कवि निरन्तर देश, समाज और मानवता के प्रति समर्पित है। वह समाज में परिवर्तन लाना चाहता है जिससे समाज में किसी प्रकार का शोषण नही सर्वहारा वर्ग पूँजीपति वर्ग के द्वारा प्रताड़ित न किया जाए सभी को भरपेट भोजन मिले और समाज में सामाजिक आर्थिक दर दृष्टि से समानता की स्थापना के लिए सभी मिलकर प्रयत्न करें। सामाजिक परिवर्तन के लिए यदि क्रान्ति की आवश्यकता पडे तो कवि इससे भी पीछे नही हटना चाहता बल्कि वह शोषित वर्ग को प्रेरित करता है कि वे समानता के लिए संघर्ष करें क्योंकि हमारी ही भूल और हमारी ही गलती के कारण हमने सत्ता पर ऐसे लोगों को बिठा दिया है जिन्होने स्वंय के स्वार्थ के लिए अपने पद का दुरूपयोग करना और श्रमशील मानव को पीडित करना आरम्भ कर दिया है। वह भूल गलती को बिंबों का बाना पहनाकर उसे निम्नलिखित प्रकार से क्रूर सत्ताधरी पूँजीपति के रूप में चित्रित करते है -

भूल-गलती आज बैठी है, जिरह बख्तर पहनकर
तख्त पर दिल के चमकते हैं खड़े हथियार उसके दूर
तक आँखे चिलकती हैं नुकीले तेज पत्थर सी
खड़ी है सिर झुकाए सब कतारें
बेजुबाँ बेबस सला में अनगिनत खेमों व
मेहराबो थमे दरबार आम में।

मुक्तिबोध की चिन्ता केवल शोषित वर्ग के प्रति नहीं है वरन वे देश के उत्थान उन्नति की चिन्ता में भी निरन्तर बेचैन, व्यपित दिखाई पडती है-

मर गया देश अरे, जीवित रह गये तुम।।

आधुनिक मनुष्य जो केवल अपने स्वार्थो में भौतिकता की चकाचौध में डूबा रहता है, शहरीकरण, पाश्चात संस्कृति के प्रभाव के कारण अपने सम्बन्धों को भूल गया है। रिश्तों के महत्व आपसी प्रेम और अपने बडों की चिन्ता को भूल गया है, उपेक्षा करता रहता है। अपने बडों के उसके बारे में कवि कहता है कि -

"लो हित पिता को घर से निकाल दिया
जनमन करूणा से माँ को हलाल दिया
स्वार्थों के टैरियर कुत्तों को पाल लिया"

मुक्तिबोध की चिन्तनशैली निम्नलिखित प्रकार से भी अभिव्यक्त हुई है-

"दुखो के दागों के तमगा सा पहना
अपने ही ख्यालों में दिन रात रहना
असज बुद्धि व अकेले में सहना
जिन्दगी निष्क्रिया बन गई तलवार"

3. अनुभव जगत के अन्तःवाहय पक्षों और अन्तःसम्बन्धों की अभिव्यक्ति मुक्तिबोध यह मानते है कि जितनी तीव्रता से वाह्य जगत में घटनाओं का द्वन्द चलता है उतनी ही तीव्रता से मन की दुनिया में भी द्वन्द चला करता है-

"जितना ही तीव्र है द्वन्द क्रियाओं का घटनाओं का बाहरी दुनिया में उतनी ही तेजी से भीतरी दुनिया में चलता है द्वुन्द"

मुक्तिबोध की कविता में जहाँ वाह्य जगत का आभ्यन्तरीय चित्रण है वहाँ अन्तःकरण निगूढ वृत्तियों का वाहय जगत की विभिन्न प्रतिकियाओं के माध्यम से अंकन भी है। अन्तःवाहय पक्षों का यह सुन्दर समन्वय निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है-

मैदानी हवाओं में
चमकती चिलमिलाती दूर
यह भूरी पहाड़ी या उपेक्षित तटय का टीला
कि सतही जानकारी में अजाना
जिन्दगी का स्तर तुम्हारी दृष्टि में
भूरी पहाड़ी सा खड़ा वीरान
तुम मेरे लिए वैसे कठिन बंजर खड़े भूरे शिखर।

4. श्रमशील मानवताः मुक्तिबोध समाज में समानता की भावना को महत्व देते है। इन्होंने समाज में शोषण की

भावना को नकारते हुए शोषक वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूमि प्रकट किया है। ये छल, प्रपंच, झूठ, पूँजीपतियों, सत्ताधारियों के शोषण की भर्त्सना करते हुए समाज में मानवता की स्थापना को बल देते है और इसके लिए यदि क्रान्ति की आवश्यकता भी पडे तो मुक्तिबोध उसका समर्थन करते हैं इन्होंने जनजीवन की घुटन, कुंठा, संत्रास को बहुत निकट से महसूस किया है। इन्होने कहा है-

"झुलसी हुई आत्मा की अनगणित लकीरें
मुझे जकड़ लेती है अपने में अपना सा जानकर"

आधुनिक अभिशप्त जनजीवन से स्वंय को जुड़ा हुआ महसूस कर मुक्तिबोध उनसे सहानुभूमि प्रकट करते है। एक स्थान पर शोषित वर्ग का गर्भवती नारी के माध्यम से चित्रण करते हुए उसकी उस अवस्था का चित्रण किया है जो पेट में अपने बालक के होते हुए भी धर के कार्यों में लगी रहती है:-

"आखों में तैरता है चित्र एक
उर में संभाले दर्द
गर्भवती नारी का
कि जो पानी भरती है बजनदार घड़ों से
कपड़ों की धोती है भाड़-भाड़
घर के काम बाहर के काम सब करती है
अपनी सारी थकान के बावजूद"

5. प्रगतिवादी दृष्टि :- मुक्तिबोध की कविता में प्रगतिवाद और प्रयोगवादी काव्य की लगभग सभी विशेषताएँ पाई जाती है। आधुनिक संघर्षशील मनुष्य का उन्होंने बहुत सुन्दर चित्र खींचा है:-

"काठ के पैर
ठूंठ सा तन
गाँठ सा कठिन गोल चेहरा
लम्बी उदास लकड़ी डाल से हाथ क्षीण
वह हाथ फैल लम्बायमान
दूरस्थ हथेली पर अजीब घोसला,
पेड़ में एक मानवी रूप
मानवी रूप में एक ठूंठ।

मध्यमवर्ग का शोषित नारी के रूप में मुक्तिबोध निम्नलिखित प्रकार से चित्रण करते है-

"मटक-मटक मुँह बिचकाती है पथ पर पागल"

6. यांत्रिकी यथार्थवाद की व्याख्याः आधुनिक हिन्दी कविता में ऐसा प्रतीत होता है कि मुक्तिबोध ने ही सबसे पहले यांत्रिक यथार्थवाद के स्वरूप को पहचाना और उसकी व्याख्या की है। कड़वी सच्चरि यथार्थवाद के वास्तविक रूप की अभिव्यक्त करने के लिए इन्होने फैन्टेसी का सहारा लिया है। यांत्रिक यथार्थवाद के स्परूप को उजागर करने के लिए इन्होने लकडी का बना रावण चंबल की धाटियाँ परित्व्यक्त सूनी बाडी आदि का प्रतीक चुना है। आधुनिक परिवेश की व्याख्या करते हुए 'मै तुम लोगो से दूर हूँ' नामक कविता में कवि चितशीलता संवेदना के स्तर मुखरित हो उठे है-

मै कटफटा हूँ हेठा हूँ
शेवलेट डाज के नीचे लेटा हूँ
तेलिया लिबास में पुरजे सुधारता हूँ
तुम्हारी आशाएँ ढोता हूँ

दूसरी ओर उसके हृदय शोषित वर्ग के प्रति चिन्ता का भाव भी मुखरित हो उठा है-

"रिफ्रेरेजटरों विटेमिनों, रेडियोंग्रामों के बाहर की गतियों की दुनियाँ में मेरी वह भूखी बच्ची मुनिया है शून्यों में पेटों की आँतों में न्यूनों की पीड़ा है छाती के कोषों में रहितों की व्रीणा है"

7. परम्परा से विद्रोह- मुक्तिबोध की कविता छायावाद से पृथक आधुनिक विचारबोधों से सम्पृक्त है। इनकी कविता 'चांद का मुँह टेढ़ा है' नामक कविता में वर्णित चाँद और चाँदनी में कवि की चिंतनशैली नवीनता लिए हुए है। यह चाँदनी जब कँवारी नहीं रही उसके मुख पर चेचक के दाग नजर आने लगे है। चाँद का मुँह टेढ़ा हो

गया है। यह चाँद सन तिरपन का है जिसका सर गंदा है और जिसकी किरणों के जासूस छिपकर ताक लगाए बैठे है। आसमान में कर्फ्यू और धरती पर सन्नाटा है:-

हरिजन गलियों में लटकी है पेड़ पर
कुहासे के भूतों की सॉवली चुनरी
चुनरी में अटकी है कुँजी आँख गंजे सिर
टेढे मुँह चाँद की।

मुक्तिबोध और निराला में विद्रोह और क्रान्ति की भावना में समानता पाई जाती है। दोनों की विद्रोही चेतनाएँ आधुनिकता बोध से सम्पृक्त है। अन्तर केवल इस स्तर पर पाया जाता है कि मुक्तिबोध की सजग इतिहास दृष्टि समाजशास्त्रीय अनुशीलन में निरत दिखायी पड़ती है।

8. लोक जीवन की अभिव्यक्ति- मुक्तिबोध के काव्य में जो लोक जीवन की अभिव्यक्ति मिलती है उसमें भी उनकी चिंतनशीलता दिखायी पडती है। इन्होंने लोक-जीवन का जो विशद चित्र हमारे समक्ष उपस्थित किया है। उसमें लोक-जीवन का यथार्थ, मनुष्यों के अन्दर की उदासी पीड़ा घुटन संत्रास आदि के साथ उनके साथ स्वंय को जुडा हुआ महसूस करते है। लोक-जीवन में जो शोषण की प्रवृत्ति व्याप्त थी सत्ताधारी लोगो के द्वारा जो श्रमिक और मजदूर वर्ग को प्रताड़ित किया जाता था। इनका वर्णन करते हुए समाज में मानवता की स्थापना का प्रयत्न करते हुए दिखायी पडते है और मानव के बीच के अन्तर को मिटा कर समाज में समानता की स्थापना के लिए लोगों के अन्दर क्रान्ति की भावना भरना चाहते है। लोक जीवन और समाज के भ्रष्टाचार और सत्ताधारी वर्ग के आंतक को अभिव्यक्त करने के लिए इन्होने टूटे फूटे घर खंडहर वीरान बिल्लियों, घग्घुओं, उल्लुओं, चमगादडों, सियारों, प्रेतों, भूतों पिशाचों आदि का प्रतीक चुना है-

सूखे हुए कुओं पर झूले हुए झाडों में
बैठे हुए घुग्घुओं व चमगादडों के हित
जंगल के सियारों और
घनी-घनी छायाओं छिपे हुए
भूतों और प्रेतों तथा
पिशाचों और बेतालों के लिए
मनुष्य के लिए नहीं फैली यह
सफलता की भद्रता की
कीर्ति यश रेशम की पूनों की चाँदनी

अपने मुहल्ले के बच्चों को भी विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया है। ये भाव कभी नन्हें शिशु अनुभव शिशु तथा बालकृष्ण और कही पर स्वतंत्रता शिशु के रूप में अभिव्यक्त किया है।

इस तरह से हम देखते है कि मुक्तिबोध एक चिंतनशील कवि है। इन्होंने अपने काव्य में अपने समाज के प्रति मानव के प्रति देश के प्रति चिन्ता को अभिव्यक्त किया है और इसके लिए यथार्थ के विश्लेषण, शोषण, आंतक, पीडा, घुटन और रहस्य् तथा भय के निरूपण के लिए प्रतीक बिंब फैंटेसी का सहारा लिया है। इनके काव्य में मार्क्सवाद की अभिवयक्ति भी मिलती है क्योकि समाज में समानता की स्थापना शोषण को मिटाने और मानवता की स्थापना के लिए इस विचारधारा को अपने काव्य में प्रश्रय देते है। मुक्तिबोध का कवि हृदय सर्वत्र मानव की हृदय की संवेदना की भावना से जुडा समाज और मानव के श्रेष्ट बनाने की चेष्टा प्रतीत होता है।

पता- 1/790-डी विशाल खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ
पिन- 226010
मो0- 6393183454

आलोचना के शलाका पुरुषः रामविलास शर्मा

➲ राजेन्द्र परदेसी

सर्जक अपनी कृतियों में जिस संसार का सृजन करता है, उसमें उसकी अनुभूतियाँ आकार ग्रहण करके रचनाकार एवं उसके रचना - संसार से जुड़े पात्रों के चित्र को उभारती हैं, परम्परा और प्रयोग के सह-अस्तित्व में निर्मित कृतियाँ सामान्य भाषा से ऊपर उठकर विशिष्ट भाषा के सम्बल से साहित्यिक कोटि में पहुँचती हैं, जिसमें रचनाकार पात्रों के रूप में अपने वैचारिक अस्तित्व को बनाये रखने का भरपूर प्रयास करता है। यही रचना का वस्तु तत्त्व एवं रचनाकार का मुय ध्येय होता है, जिसको सहज, सुबोध एवं प्रतीति के स्तर पर सुग्राह्य बनाने का काम आलोचना करती है। वस्तुतः वह रचना का समग्र निरीक्षण करता है तथा उसके विभिन्न रूपों की व्याख्या विश्लेषण प्रस्तुत करके उसके सत्य रूप का उद्‌घाटन करता है। इस प्रक्रिया में आलोचक की दृष्टि न केवल रचनात्मक वैशिष्ट्य की परिधि में चक्कर लगाती, अपितु उन बिन्दुओं पर भी केन्द्रित होती है, जिसका संबंध रचनाकार के व्यक्तित्व उसकी कलात्मक प्रेरणा, कला-प्रयोजन एवं समकालीन परिस्थितियों से भी होता है। आलोचक के द्वारा रचना में निहित आन्तरिक मूल्यों, कलात्मक अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक वैशिष्ट्य का उद्‌घाटन उसके गुण-दोषों के संदर्भ में होता है ।

डॉ श्याम सुन्दर दास का कथन है- साहित्य के क्षेत्र में ग्रंथ को पढ़कर उसके गुण और दोषों की विवचेना करना और उसके संबंध में अपना मत प्रकट करना आलोचना कहलाता है'। तटस्थता आलोचना की अनिवार्य विशेषता होती है। अर्थात् राग-द्वेष से वह मुक्त होकर सत् एवं असत् का सही स्वरूप निर्धारित करती है। आलोचनात्मक दायित्व के निर्वाह में विविध समीक्षा पद्धतियों को अपनाना पड़ता है, जिसका सीधा संबंध आलोचक की साहित्यिक अवधारणा से होता है ।

साहित्य के क्षेत्र में आलोचना का आविर्भाव संस्कृत साहित्य में ही हो चुका था, किन्तु वह सम्पूर्ण मूल्यांकन में असमर्थ रही। सीमित आलोचना से ऊपर उठकर हिन्दी के क्षेत्र में आलोचना का विकास द्विवेदी युग के बाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के आगमन के साथ हुआ। आचार्य शुक्ल ने अपनी क्रान्तिकारी भूमिका से हिन्दी आलोचना को एक नया स्वरूप प्रदान किया। जिसमें गंभीर एवं वैज्ञानिक समीक्षा के दर्शन हुए । प्रथम महायुद्ध के बाद हिन्दी का आलोचना साहित्य संबंधी शोध कार्य साहित्य के इतिहास को विभिन्न कालों में बाँटकर अलग-अलग विद्वानों द्वारा उसकी विवेचना नयी आलोचना की एक कड़ी इस दिशा में डॉ रामकुमार वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, माता प्रसाद गुप्त, डॉ नगेन्द्र, आचार्य नंददुलारे बाजपेयी इत्यादि का प्रयास स्तुत्य है ।

आधुनिक हिन्दी आलोचना को मार्क्सवादी विचारधारा एवं फ्रायडवादी विचारधारा ने काफी प्रभावित किया। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित आलोचना अधिक व्यापक एवं सशक्त बनकर उभरी, जिसमें डॉ रामविलास शर्मा अपनी प्रखर एवं प्रभावकारी आलोचना दृष्टि के कारण सबसे अलग एवं आधुनिक बनकर साहित्य क्षितिज पर उभरे और आलोचना के क्षेत्र में वह मुकाम हासिल किये, जहाँ पहुँचकर कोई अपने युग और साहित्य का सशक्त हस्ताक्षर बन जाता है ।

प्रगतिशील आलोचक डॉ रामविलास शर्मा का जन्म उन्नाव (उत्तर प्रदेश) के एक छोटे से गाँव ऊँच गाँव सानी में 10 अक्टूबर 1912 को हुआ था। लखनऊ विश्वविद्यालय से 1934 में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया। स्नातकोत्तर उपाधि के उपरान्त वे 1938 तक शोधकार्य में लगे रहे। 1940 में लखनऊ विश्वविद्यालय से ही पी.एच.डी. की उपाधि हासिल की। सन् 1938 से 1941 तक वे लखनऊ विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे । उसके बाद वे 1971 तक बलवंत कॉलेज, आगरा में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष रहे। बाद में आगरा विश्वविद्यालय के कुलपति के अनुरोध पर वे के. एम. हिन्दी संस्थान के निदेशक बने और 1974 में सेवानिवृत्त हुए । इसके बाद वे साहित्य लेखन में पूर्णतः व्यस्त हो गये। 1949 से लेकर 1953 तक वे भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के महामंत्री भी रहे।

डॉ रामविलास शर्मा की पहचान वैसे तो एक प्रख्यात आलोचक, इतिहासकार और भाषाविद् के रूप में ही होती है, किन्तु साहित्य क्षेत्र में उनका आगमन कवि रूप में हुआ। अज्ञेय द्वारा सम्पादित प्रथम 'तारसप्तक' जिसका प्रकाशन 1943 में हुआ था, उसमें गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर, अज्ञेय सहित रामविलास शर्मा की कविताएँ संकलित हुई। बाद में चलकर इनकी दिशा आलोचना की ओर मुड़ गई और अपनी रचनात्मक ऊर्जा का उपयोग इसी क्षेत्र में करते हुए ख्यातिलब्ध आलोचक की हैसियत से साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाकर कीर्तिमान स्थापित किया।

प्रगतिवादी आलोचक डॉ रामविलास शर्मा ने मुख्य रूप से दो प्रकार के निबंध लिखे हैं - एक तो किसी कृति या कृतिकार की समीक्षा करने वाला निबंध और दूसरा छोटे-छोटे आकार वाले तीखे व्यंग्यात्मक, स्वतंत्र विषयों पर लिखे गये उन्मुक्त चिन्तनपरक निबंध, जिनमें उनका धक्कड़पन उजागर होता है। वे बेलौस होकर अपने विचार रखते हैं, बिना इसकी परवाह किये किसी को बुरा लगेगा या अच्छा। उनके निबंध साहित्य के विषय में डॉ जयचन्द्र राय ने लिखा है कि- प्रगतिवादी आलोचक डॉ रामविलास शर्मा के अधिकांश निबंध आलोचनात्मक ही है। उनमें दो टूक बात कहने की प्रवृत्ति है और इसीलिए निष्कर्ष तथा निर्णय पर पहुँचने की जल्दी और बेचैनी, व्यंग्य का प्रयोग वे तीक्ष्ण शस्त्र की भाँति करते हैं। प्रतिपक्ष को पराजित करने में इस शस्त्र का प्रयोग वे कारगर ढंग से करते हैं। उनकी विचार - प्रक्रिया सरल और स्पष्ट है। भाषा तदनुकूल सभी प्रकार के चलते शब्दों से सम्पन्न है। साहित्यकार के लिए वर्गभेद पर आधारित सामाजिक पहचान को वे आवश्यक मानते थे। उन्होंने अपनी पुस्तक भाषा, साहित्य और संस्कृति में लिखा है पार्टीजन साहित्यकार बनकर ही हम ऐसे साहित्य का निर्माण कर सकेंगे, जो अगली पीढ़ियों के लिए मूल्यवान हो।

डॉ रामविलास शर्मा का चिंतन देशभक्ति और मार्क्सवादी चेतना में ही अधिक केन्द्रित रहा । इसीलिए वे प्रश्न उठाते हैं कि किसका साहित्य अमर हो सकता है और किसका क्षणिक। वे व्याख्यायित भी करते हैं कि जिसमें जितना अधिक नैतिक बल होगा, उसका साहित्य उतना ही

श्रेष्ठ एवं अमर होगा। इसके विपरीत जिस लेखक का मनोबल क्षीण हो गया है, या जो व्यक्ति जीवन संग्राम से पलायन करता है, जिसके कंठ से शत्रु के लिए ललकार नहीं करूण चीत्कार निकलती है, जो उसके सामने भयभीत हो उठता है, भला ऐसा कायर व्यक्ति अमरत्व का दावेदार कैसे हो सकता है। उसे अमरत्व पाने का कोई अधिकार नहीं है। अमरत्व का अधिकारी वही हो सकता है, जो सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकता है। ऐसी स्थिति में अपने सामाजिक उत्तरदायित्व से बचना वस्तुतः एक प्रकार की कायरता ही है। दूसरी बात यह है कि लेखक समाजिक उत्तरदायित्व निभाता है या नहीं। यह प्रश्न साहित्य के लिए भले ही महत्त्वपूर्ण न हो पर यह प्रश्न लेखक की नैतिकता से अवश्य जुड़ा है। सामाजिकता से जुड़ना लेखक का परम उत्तरदायित्व है। उसकी प्रगतिवादी चिंतन की निरंतरता वाल्मीकि और कालिदास से लेकर मुक्तिबोध तक जाती है, जिसमें उनकी रचनाओं का मूल्यांकन प्रगतिवादी चेतना के आधार पर किया गया है। प्रगति विरोधी आलोचना की कला एवं साहित्य संबंधी भ्रांतियों को दूर करने का श्रेय डॉ रामविलास शर्मा को ही जाता है ।

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना' को उनकी समीक्षा शैली का केन्द्र बिन्दु समझना होगा, जिसमें आचार्य शुक्ल की लोक-सम्पृक्ति के अतिरिक्त उनके अन्तर्विरोधों को भी उजागर किया गया है। डॉ शर्मा का चिंतन काफी गंभीर है। उनके इस चिंतन में समाज - साहित्य तथा परम्परा के आपसी संबंधों का वास्तविक विवेचन अधिक प्रामाणिक एवं पुख्ता होकर प्रभावी बन गया है। सामाजिक विकास की दिशा में साहित्य की क्रांतिकारी भूमिका को स्पष्ट करने के लिए परम्परा का ज्ञान, उसकी समझ और मूल्यांकन के विवेक की अनिवार्यता पर बल देते हुए डॉ शर्मा ने अपनी पुस्तक 'परम्परा का मूल्यांकन में बड़ी तर्क संगत चर्चा की है। उन्होंने लिखा है- जो लोग साहित्य में युग परिवर्तन चाहते हैं, जो लकीर के फकीर नहीं हैं, जो रूढ़ियाँ तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य रचना चाहते हैं, उनके लिए साहित्य की परम्परा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है,' परम्परा और आधुनिकता की युग सापेक्ष समझ विकसित करने में इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने एक सार्थक पहल की है।

डॉ रामविलास शर्मा ने अपने लेखन से जीवनी - साहित्य को भी एक नया आयाम दिया है और उसे समृद्धि प्रदान की है। जीवनी साहित्य में निराला के जीवन पर तीन खण्डों में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' काफी चर्चित और लोकप्रिय हुई। 1969 में प्रकाशित 'निराला की साहित्य साधना' पुस्तक पर डॉ शर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था। जीवनी - लेखन में डॉ शर्मा की शैली वैविध्यपूर्ण होने के साथ-साथ लालित्यपूर्ण भी है।

हिन्दी साहित्य के विन्यास, विकास श्रीवृद्धि और समृद्धि में डॉ0 शर्मा की भूमिका अविस्मरणीय है। वे एक व्यक्ति ही नहीं, एक संस्था थे। साहित्य जगत के लिए उनका व्यक्तित्व और सदा आदरणीय बना रहेगा और अनुकरणीय भी।

सम्पर्क सूत्र :- 136 मयूर रेजीडेंसी
फरीदी नगर, लखनऊ
मो0- 9415045584

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

➲ अनुज प्रताप सिंह

स्वतंत्रता आन्दोलन एवं सम्पूर्णक्रान्ति के महानायक/लोकनायक जयप्रकाश नारायण को कोई भूल नहीं सकता है। स्वतंत्रता के आशय को भूलने वालों को उन्होंने स्मरण दिलाया। लोक चेतना को लोकतंत्र के सच्चे रूप की ओर उन्होंने उन्मुख किया। उनकी सफलता पर लोगों ने दूसरी आजादी की घोषणा की। लोकनायक वही हो सकता है- जो महान् समन्वयी हो। जो सब को मिलाकर या लेकर चलता है- वही प्रबल कहा जाता है।

वे स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख प्रणेता, दार्शनिक, विचारक प्रकाण्ड विद्वान, कट्टर देशभक्त सामाजिक न्याय के प्रति समर्पित तथा पदलोलुपता से परे के व्यक्ति थे। उनको सत्ता और सुख से क्या लेना देना था। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा की। उनको आदर्श राष्ट्रभक्त कहना संगत होगा। सरल स्वभाव, सादगीपसन्द मितव्ययी जीवन था, वे साम्प्रदायिकता से परे थे। वे साम्यवादी थे, पर किसी के बिछलग्गू नहीं थे। वे स्वतंत्र चेता और स्थिर चित्त के प्राणी थे। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में साम्यवादियों आन्दोलन में साम्यवादियों के बहिष्कार की नीति से आहत होकर वे उससे विरक्त होकर राष्ट्रसेवा में लग गये। उन्होंने भारतीय समाजवाद को जन्म देकर राष्ट्र के प्रति अपने समर्पण और त्याग की भावना को सर्वसमक्ष कर दिया

उन्होंने देश में नये युग का आरम्भ किया। उत्तर प्रदेश और बिहार की सीमा पर स्थित पवित्र गंगा और सरयू के संगम पर ऋषि मुनियों और सन्तों की तपोभूमि में ग्यारह अक्टूवर उन्नीस सौ दो को शरद्कालीन विजयादशमी को उनका जन्म हुआ था। वे प्रतिभा सम्पन्न छात्र थे। विद्यार्थी जीवन से ही देश को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने की भावना उनमें भी उनमें थी। इसी से वे सरकारी स्कूल को छोड़कर बिहार विद्यापीठ में गये। वहाँ से उन्होंने आई.एस.सी. परीक्षा को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे सम्पन्न परिवार के नहीं थे, पर शिक्षा के प्रति उनमें अनुराग था। वे सगे सम्बन्धियों से आर्थिक सहयोग लेकर उन्नीस सौ बाइस ई0 (1922 ई0) में उच्च शिक्षार्जन के लिए अमेरिका चले गये। वहाँ पर सात वर्षों तक रहकर उन्होंने कैलिफोर्निया विसंकोन्सिन तथा ओहियो इत्यादि विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा ग्रहण की। वे उन्नीस सौ उन्तीस ई0 में स्वदेश भारत वर्ष को वापस हुए। उस समय वे मार्क्सवादी विचार- धारा से अत्यधिक प्रभावित थे।

देश में उन्नीस सौ बीस से असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो गया था। जयप्रकाश जी आन्दोलन से जुड़ गये। गाँधी जी के आह्वान पर उन्होंने नौ अगस्त उन्नीस सौ बयालीस ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। उस समय बड़े नेता गिरफ्तार हो गये थे। इस दशा में उन्होंने आन्दोलन का नेतृत्व किया था। वर्तानिया सरकार ने उनको

भी गिरफ्तार कर लिया। हजारी बाग जेल में उनको भेज दिया गया। आठ नवम्बर उन्नीस सौ बयालीस ई0 को दीपावली की रात में वे अपने चुने हुए साथियों के साथ जेल की ऊँची दीवार को फांदकर फरार हो गये। छिपे रूप से वे आन्दोलन को गति देते रहे - फिर नेपाल की पहाड़ियों में चले गये। वहाँ उन्होंने 'आजाद दस्ता' का गठन किया उस समय की सरकार के खिलाफ वे क्रांन्ति के समर्थक थे । वे अहिंसावादी थे, पर क्रांन्तिकारी भी । वे बौद्धिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। वे भारत- विभाजन के कट्टर विरोधी थे। वे अव्यवस्था को ठीक करना चाहते थे। वे पद के लोभी नहीं थे, यद्यपि उनको अनेक पद दिये जाते रहे।

वे अमेरिका से साम्यवादी होकर स्वदेश वापस आये थे। उन्होंने गहन अध्ययन और अनुभव के उपरान्त भारतीय साम्यवादियों को राष्ट्रहित में कार्य करने की सलाह दी थी। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन से विमुख साम्यवादियों को आन्दोलन से जुड़ने की उन्होंने सलाह दी थी। उनके ऐसा न करने पर जयप्रकाश जी स्वयं उनसे अलग हो गये तथा उन्होंने 'भारतीय समाजवाद' की स्थापना की। बिहार में समाजवाद की नींव उन्नीस सौ उन्तीस ई0 में पड़ चुकी थी, परन्तु वह उन्नीस सौ इकतीस ई0 में अस्तित्व में आया। 'बिहार समाजवादी पार्टी' का विधिवत गठन हुआ। उसके उद्देश्यों को उन्होंने बड़े परिश्रम और चिन्तन के साथ लिखा था। आगे चलकर उन्नीस सौ चौंतीस ई0 में 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया गया। वे उसके महासचिव बनें। वे भारतीय समस्याओं का निदान भारतीय स्तर पर ही करना चाहते थे

वे सर्वोदयी क्रान्ति के प्रति समर्पित थे। सर्वोदय का अर्थ है- 'सब का समान उत्थान' । इसको गाँधी का समाजवाद भी कहते हैं- जिसको जयप्रकाश जी ने प्रजातांत्रिक समाजवाद का नाम दिया है। इस समाजवाद का मुख्य उद्देश्य मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना, भूमिदान ग्रामदान, सम्पत्तिदान तथा अन्त में जीवनदान के माध्यम से राष्ट्र को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने का प्रयास था। वे विचार परिवर्तन के साथ-साथ समाज का सर्वांगीण विकास भी चाहते थे। वे 'जियो और जीने दो' से भी ऊँचा आदर्श लाना चाहते थे - 'दूसरों के लिए जियो'।

स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व की आधारशिला पर शोषण विहीन समाज के प्रति प्रतिबद्धता एवं विशिष्ट जनसेवा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का प्रतिष्ठित पुरस्कार सन उन्नीस सौ पैसठ में उनको फिलिपिन्स के 'रैमन मैगससे' से सम्मानित किया गया ।

अपने कार्यो के कारण उनको विश्व में सम्मान मिला। उन्नीस सौ पैतालीस ई0 में उनकी रिहाई के लिए 'लन्दन' में 'लेबर पार्टी' ने एक विशाल रैली निकाली थी। इसी प्रकार के उनके पक्ष और सम्मान में देश- विदेश में अनेक कार्य हुए।

उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का अद्‌भुत प्रभाव था। विचार परिवर्तन कराने में वे बहुत सफल रहे। चम्बल के डाकुओं तक ने उनके सामने समर्पण कर दिये थे। उनके आतंक से चंबल का क्षेत्र विपत्तिग्रस्त हो गया था। बीहड़ जंगलों और घाटियों में लगभग छः सौ चौवन डाकुओं ने उन्नीस सौ बहत्तर ई0 में जयप्रकाश नारायण के व्यक्तित्व पर मुग्ध होकर आत्मसमर्पण कर दिया था। उनमें माधव सिंह भी सम्मिलित थे।

उनकी सम्पूर्ण क्रान्ति का उद्देश्य मात्र राजनैतिक न होकर आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक, शैक्षिक और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन करना था अपनी शताब्दी की वह महान लड़ाई थी । वे व्यवस्था और समाज में अमूल्य परिवर्तन चाहते थे। इसके साथ उनका अपार नैतिक बल था।

वे विद्वान लेखक थे। वे आन्दोलनकारी के साथ-साथ महान् लेखक और विचारक भी थे। उनके लेखन

में गाम्भीर्य और ओज है। तीन दर्जन से अधिक उनकी बहुमूल्य रचनाएँ अमरकृति के रूप में हैं। सहस्राधिक उनके लेख प्रकाशित हैं। अनगिनत व्याख्यान स्मरणीय हैं।

उनका कथन है कि सामाजिक क्रान्ति का एक मात्र नुस्खा है प्रेम ! इसी नुस्खे से उन्होंने चौरासी बुंदेलखण्ड और शेष चम्बल के दस्युओं का समर्पण कराया था। उन्होंने कुल चार सौ पाँच दस्युओं का समर्पण कराया था। आतंकवाद उन्मूलन के लिए उनके नुस्खे को अपनाया जा सकता है। चौदह अप्रैल उन्नीस सौ बहत्तर का उनका उक्त उपक्रम सामाजिक परिवर्तन के लिए आज भी प्रासंगिक है। सच है कि सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक संरचना, गरीबी अमीरी, परस्पर राग द्वेष, स्वभाव की भिन्नता, वैमनस्य, पंचायत चुनाव से लेकर राजनीतिक दल - बन्दी तक अनेक कारण हैं- जिनके कारण लोग बागी हो जाते हैं। आज महंगाई, बेरोजगारी और विविध करों (टैक्सों) से अधिक विसंगतियाँ उत्पन्न हो रही है

उक्त समस्याओं को समाप्त करने के लिए उनके सुझाव बहुत कारगर है- "समाज की रचना ऊँच-नीच, भेदभाव जातिप्रथा, सामंतवाद, पूँजीवाद आदि के कारण जो शोषण और अन्याय होता है, उसे रोकना होगा आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। परिवर्तन के लिए क्या करें, यह एक प्रश्न है, और इसके तीन उत्तर हैं - 1. खूनी क्रान्ति 2. कानून 3. सर्वोदय। इनके सम्बन्ध में उनके विचार है -

खूनीक्रान्ति- यह रूस चीन के क्रान्तिकारी परिवर्तनों का रास्ता है। पहले लोकनायक भी इसी रास्ते को मानते थे, पर कालान्तर में वे गाँधी-वादी हो गये । पहले वे उग्र समाजवादी थे, गाँधी के कठोर आलोचक पर उनकी पत्नी तब भी गाँधीवादी थीं। नया समाज बनाने के लिए वे मार्क्स और लेनिन के अनुयायी थे। रूस में हिंसा के परिणामस्वरूप खूनी-क्रान्ति हुई, लेकिन लेनिन के नारों का क्या हुआ ? किसानों और मजदूरों की पंचायतें बनाने की बात कहाँ गई ? भारत में आम नागरिकों, छात्रों और सब को आजादी है, पर रूस और मास्को में छात्रों, मजदूरों और किसानों पर कठोर प्रतिबन्ध है। ऐसी क्रान्ति किस काम की जिसमें पचपन वर्षों के उपरान्त भी आजादी न मिले ? फ्रांस में भी खूनी क्रान्ति हुई थी, पर उसमें से उत्पन्न हुआ नेपोलियन। समानता और भाईचारे के नारों पर जो क्रान्ति सत्रह सौ नवासी में हुई थी, उसमें तो भाईचारा कहीं दिखा नहीं। चीन में रक्त क्रान्ति हुई थी, उसकी दुर्दशा भी सबके सामने है। इसका अर्थ यह हुआ कि हिंसा के बल पर जो क्रान्ति होगी, वह हिंसा के बल पर ही कायम रह सकती है। वर्गदल की सत्ता कायम हो सकती है, पर मानव मात्र को उससे स्वतंत्रता, स्वाभिमान से अपना सिर खुले आसमान में उठाने की स्वतंत्रता नहीं मिल सकती। अंतः खूनी क्रान्ति का परिणाम निरर्थक है।

कानून- दूसरा रास्ता कानून का है। इससे समाज का ढाँचा बदलेगा पर मनुष्य नहीं बदलेना । बन्धुत्व नहीं आयेगा; केवल ढाँचा ही बदलेगा । मार्क्स ने कानून बनाने को कहा। उन्होंने आर्थिक उद्देश्य बताये। उनका कहना था कि इंसान अपनी शक्ति भर पैदा करे और आवश्यकतानुसार उपभोग करें, पर ऐसा नहीं हो सका। फिर स्टालिन आए। उन्होंने पूँजीवादी कानून बना डाले। उन्होंने काम के बराबर दाम का कानून बनाया । जरूरत के बराबर दाम वाली बात नहीं चल पाई। अब हाल यह है कि श्रम का भेद जितना रूस में है उतना अमेरिका में भी नहीं है। दिल और दिमाग नहीं बदले, इसलिए उद्देश्य अधूरा रहा।

महात्मा गाँधी ने लोकतांत्रिक कानून की आवश्यकता बतायी। लोकतंत्र में जनता के वोट के बल पर सरकारें बनीं। उसको 'जो चाहो, सो करो' का अधिकार मिला। सरकार ने रेलों का राष्ट्रीकरण कर दिया। तब वे देश की सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन "आन इंडिया रेलवे मेन्स

फेडरेशन" के अखिल भारतीय अध्यक्ष थे। तब से लेकर अब तक रेलवे में काम करने वाले लोगों की स्थिति में कोई फर्क नहीं आया। रुपये की कीमत चार आने रह गयी है, पर उस हिसाब से मजदूरों की आय नहीं बढ़ी। डॉ जान मथायी और सर गोपाल स्वामी आयंगर रेलमंत्री थे, तब उन्होंने माँग की थी कि रेलवे बोर्ड में मजदूरों को प्रतिनिधि बनाइए, पर आज तक वह नहीं हुआ। यही हाल अस्पृश्यता का है। कानून बना हुआ है, पर हुआछूत खत्म नहीं हुई। कानून के जरिये सामाजिक प्रगति सम्भव नहीं।

सर्वोदय- तीसरा और अंतिम रास्ता है, सर्वोदय का, गाँधी का। जिस सीमा तक समाज परिवर्तन हो सके, उतना कराओ। पुलिस और अदालत के बजाय आपसी झगड़े पंचायतों में निपटाओं । गाँव-गाँव में ऐसी रचना करें। हम जंगल के जानवर नहीं, नगर के नागरिक हैं। समाज में जिम्मेदारी की भावना पैदा करें। प्रेरणा और प्यार का भाव जगाएँ। गाँधी जी ने इसे 'पड़ोसी धर्म' नाम दिया है। सामाजिक क्रान्ति का एक मात्र नुस्खा है- प्रेम। इसके अलावा गाँवों में अस्पताल हों, स्कूल हो, सामाजिक, आर्थिक और बीहड़ों का विकास हो। यह सरकार का काम है, उसे करना चाहिए । 'नेवास्कर रिपोर्ट' में भी इस समस्या का असली हल विकास और समाज को बदलना बताया गया है। विनोबा इसे सामाजिक क्रांति कहते हैं। चंबल घाटी में चार सौ पाँच दस्युओं द्वारा आत्म- समर्पण का एक बड़ा काम हुआ है। सरकार को अब चेत जाना चाहिए। बीहड़ों के समतलीकरण, नये उद्योग धंधों की स्थापना, जीविका के नए-नए साधन जुटाना, सरकारी तंत्र में सुधार करना आदि काम जल्दी से जल्दी कर लेना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि अब यथाशीघ्र प्रशासन को सुधारा जाए और परिवर्तन के रास्ते खोले जाएँ, ताकि लोगों को बिंगडने के बजाय बनने में मदद मिले।

मुझको गर्व है कि मैंने उनको सुना देखा और उनके साथ कुछ दिनों तक कार्य भी किया है। जितने राजनेताओं को मैंने देखा और सुना है- उनमें वे सर्वोच्च हैं। उनको पाकर मैं स्वतः कितने बौने लोगों को भूल गया मुझको स्मरण है कि आपात्काल लागू होने के कुछ दिन पूर्व वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्र संघ के उद्घाटन के लिए आये थे। तब मैं शोधकार्य में लगा था। ऊपर के आदेशानुसार उनको विश्वविद्यालय के परिसर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गयी। मुख्य द्वार पर स्थित मालवीय जी की मूर्ति के पास उनको मंच बनाकर दे दिया गया। एक साधारण फुलपैण्ट टाइप का खादी का सफेद पैजामा, सादा कालरदार कुर्ता, एक झोला बंगल में लटका हुआ, के भेष में मैनें उस क्रान्ति- दूत को देखा था। भीड़ बहुत अधिक थी यद्यपि यह आशंका सभी को थी कि लाठी चार्ज ही नहीं फायरिंग भी हो सकती है। प्रायः लोग भागने का रास्ता देखकर बैठे थे। लंका गेट से आगे के चौराहे तथा बायें- दायें की सड़कों, पीछे की जगह में लोग भरे थे। कोई किसी से कुछ कहता नहीं था। सब मौन श्रोता थे। कभी-कभी लोकनायक जयप्रकाश के नारे लग जाया करते थे, पुलिस और पीएसी के जवान बहुत सावधान और सक्रिय दृष्टिगत हो रहे थे। सब ऊपर के आदेश की प्रतीक्षा में थे। लोकनायक का व्याख्यान क्रान्तिकारी विचारपूर्ण और समसामयिक राष्ट्रवाद से सम्बद्ध था। सम्पूर्ण क्रान्ति और समकालीन अव्यवस्था पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। सब में एक नई ऊर्जा का प्रवेश हो रहा था, अधिकांश लोग सड़कों पर बैठे थे। बगल में कुछ लोग खड़े थे, व्यापारी सशंकित थे। छात्रों की भीड़ सबसे अधिक थी। छात्राएँ नाममात्र की थीं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महारथी, क्रान्ति पुरुष, राष्ट्र- हृदय समाजवादी राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक, साम्प्रदायिकता के विरोधी, अहिंसा के पुप्पारी कट्टर

देशभक्त, लोकनायक और विश्व-मानव आठ अक्टूबर उन्नीस सौ उन्यासी को सदैव के लिए इस धरती से चले गये। उनकी विशाल शवयात्रा अपना विशेष महत्व रखती है। बिना किसी पद पर रहते हुए उन्होंने इतने विपुल यश को प्राप्त किया। यश/कीर्ति की दृष्टि वे अमर हैं। उनके निधन पर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपना ध्वज झुका दिया और अमेरिका के सी राष्ट्रपति ने कहा "सज्जन, महान् और अनोखे गांधीवादी नेता को मुझे अपना कहने में गर्व है। उन्होंने अमेरिका में पढ़कर हमें गौरवान्वित किया।"

जयप्रकाश नारायण ग्यारह अक्टूबर उन्नीस सौ दो ई0 तक इस धरती पर रहे उनका जन्म - स्थान सिताब-दियरा (बिहार) वर्तमान में बलिया उत्तर प्रदेश पुण्यभूमि के रूप में वन्दनीय है। उनको उन्नीस सौ सत्तर में इंदिरा गाँधी के विरुद्ध विपक्ष का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है। इंदिरा जी को पदच्युत करने के लिए उन्होंने 'सम्पूर्ण क्रान्ति' नामक आन्दोलन चलाया। वे मूलतः समाज सेवक थे जिनको लोकनायक के रूप में जाना जाता है। उन्नीस सौ अट्ठानवे ई0 में उनको मरणोपरान्त 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त पटना के हवाई अड्डे का नाम उनके नाम पर रखा गया है। दिल्ली सरकार का सबसे बड़ा अस्पताल 'लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल' उनके नाम पर है। अपनी छिहत्तर वर्ष की अवस्था के हर क्षण का उन्होंने सदुपयोग किया। अध्ययन, चिन्तन-मनन का लोकमंगल के लिए उन्होंने क्रियान्वयन किया। पाँच जून उन्नीस सौ पचहत्तर ई0 को जयप्रकाश जी की ऐतिहासिक जनसभा कलकत्ता में हुई - जिसमें नौ-दस लाख लोग सम्मिलित हुए। उनके लोकनायकत्व को राष्ट्र नमन करता है।

सम्पर्क सूत्र- मीरा भवन
1228/ए, वार्ड 09 राजा विजयपुर कोठी
सिविल लाइन, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश-231001

जैसे पुण्य का हृदय से ही सम्बन्ध है उसी प्रकार पाप का भी हृदय से ही सम्बन्ध है। पाप और पुण्य दोनों तुम्हारी मानसिक अवस्था से सम्बन्धित हैं।

-स्वामी रामतीर्थ

केदारनाथ सिंह की याद में

➲ राणा प्रताप सिंह

चांद की शीतल चांदनी भी जेठ की उमस का कुछ नहीं बिगाड़ पाई थी। वह वैसे ही लोगो को पसीना पसीना कर रहा था। उमस की ताप से भयायी नींद न जाने कहाँ लुका गई थी। लोग रात के स्वागत में सोने के लिए बिस्तर पर लेटे भर थे। आँख नींद से कोशो दूर थी। जेठ की गर्मी में बेना (हाथ का पंखा) आम लोगो का साथी होता है। जिसकी हवा से देह ठंढ़ाती तब कहीं नींद धीरे-धीरे झपकी की तरह आँख में उतरती है। बड़े लोगो के लिए और बात गर्मी ठंडी का मौसम उनका कुछ बिगाड़ नहीं पाता है। वह उसको कृत्रिम यंत्र से अपने मन लायक बना लेते हैं। यह सब कहा नसीब था दिन रात खटने वालो के लिए। वह वैसे खुले आसमान के नीचे खाट पर इस आश में पसर जाते हैं की आसमान से चुपचाप कोई ओस कण चुवे की भर नींद आँख सो सके। इसी कशमकश से प्रभु जूझ रहा था। कोई जानी पहचानी आवाज उसके कान तक आई। "तुम सो रहे हो?" वह चौक गया। बिस्तर पर उठ कर बैठ गया। सामने देखा तो... "अरे डाक्टर साहब!" उनको पहचानने में उसको अंधेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाया। उसके लिए उनकी आवाज काफी थी। खाट से नीचे उतर आया। भौंचक डॉ साहब की ओर देखता रहा। "इतनी गई रात अचानक..."

पडरौना में उनका कोई निश्चित ठौर नहीं था। रमता जोगी की तरह कही रात बिता देते थे। प्रात होने पर अगले दिन का कार्यक्रम बनाते। सहज आदमी कठिन से कठिन काम आसान बना लेता है। वह यहाँ दिल्ली से चल कर आए थे। बीते कल की याद आज भी मन में उसी तरह जीवित है जैसे पहले थी। उसी को आज आकाश देना है। मन को कदम देते सड़क मापते जीवन भर आकाश ढूंढते रहे।

प्रभु उन्हीं के गाँव का था। डाक्टर साहब उसको यहाँ चपरासी में लगवा दिए थे। वह उनके हाथ का अटैची ले लिया। सुरक्षित रख कर वापस आया तो वह वैसे ही खाट के पास खड़े थे। उनको बैठने के लिए कहा। बैठ तो गए, परन्तु मन किसी खोज के लिए आतुर था। जीवन का सुर इसी अँधेरा से फूटता है। जिसको विरले कोई सुन पाता है ।

लोकाचार के व्यवहार में सहज होना आदमी को उदार बनाता है। तभी वह लोगो में चर्चित थे। हिदायत देते हुवे कहे। "श्याम जी की कैंटीन से कुछ रसगुल्ला लेते आओ। रात के भोजन के साथ काम आएगा।" "वह उसको रुपए देते मन ही मन सोच रहे थे। यह रोटी चोखा बड़ा मजेदार बनाता है। उसको टोकते हुए फिर कहे। "जल्दी जाओ रात काफी गहरा गई है। देर करोगे तो कहीं दुकान बंद न हो जाए।"

वह बाजार की ओर चल दिया। अकेले दीपदीपाती ढेबरी की लौ में बैठ गए। जहाँ का वातावरण सुन शान होता है वहाँ से दिव्य ज्योति का पुँज फूटता है।

मन कहाँ कभी अकेला रहता है। वह देह छोड़ कर किसी और यात्रा के लिए निकाल जाता है। जहाँ से जीवन का रहस्य खोज सके।

तब का पडरौना आज का पडरौना नहीं था। कुछ ही दुकानें थीं जो जरूरत की चीजें बेचती थीं। समय से खुलना और शाम को जल्दी बंद होना उसकी नियति थी। लोगों को बाजार की जरूरत आज की तरह नहीं थी।

प्रात होने से पहले उनकी नींद उचट गई। सूरज जागा। पशु-पक्षी रात वाला ठिकाना छोड़कर कही और के लिए उड़ रहे थे। वह भी सजग हो गए। किसी पथिक की तरह।

मिलने की आश में जीवन सजीव होने लगता है। जिससे हाल-चाल का पता चलता है। उनके आने कि खबर आश पास से दूर तक पहुँच गई रहती। महत्वपूर्ण न होते हुए भी जन मानस में आदरणीय थे।

देहात अब भी शहर की आबो हवा से घबराया रहता है। साहस से दृढ़ता आती है। वे भी गाँव के थे। शब्द, गढ़ रहे थे। यह सब, सबके बस की बात कहाँ है। प्रभु बाजार से वापस आ गया था। सकुचाते हुए पूछा। "इतनी रात, बिना कोई सूचना दिए यकायक आ गए।" उसे वह बताए ।

"रेलवे को कहाँ समय का ध्यान रहता है कि समय पर पहुँचाए।" यहाँ आते-आते रात का लगभग दस बज चुका है। सब कुछ सुनशान है। रात गुजारने के लिए यहीं आ गए। वह कहा "यहाँ का सब कुछ आप ही का दिया है। इसमें सोचने की क्या बात है !" संबंध जीवन को धर्म सिखाता है, जिसमें संकोच की कोई गुंजाइश नहीं रहती है। सबेरे का वहीं भीगा चना और लाल चाय। सुबह का नाश्ता था।

डाक्टर साहब उदित नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय पडरौना के प्राचार्य हुआ करते थे। आज लोगो के इतिहास में जीवित हैं। तब का जमाना पढाई लिखाई पर कम ध्यान देता था। मेंहनत आदमी की विवशता थी। हर काम देह के बल बूते करने का साहस रखते थे। सरकार शिक्षा पर जोर दे रही थी। नए नए कॉलेज, युनिवर्सिटी खुल रही थी फिर भी लोगो में पढ़ाई का डर सताता था कि माट्साहब पढ़ने के लिए मारेंगे। स्कूल जाने से बच्चे कतराते थे। आज के अध्यापकों की तरह नहीं, उस समय अध्यापक गाँव-गाँव जाकर लोगो में इसका महत्व बताते कि पढ़ लिख कर अपना भाग्य विधाता बनों। थोड़ा भी पढ़ लिख लेने की समझ जिनमें थी। उन्हें किसी न किसी संस्थान, स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटी में सरकार रख लेती की वह देश के काम आये। हमारे क्षेत्र के कितने पढ़े लिखे युवको को वह इस काम के लिए लगाए थे ।

निषाद, यादव, बड़ी जातियों में मुंशी सिंह उनके शिष्य थे। इकबाल अहमद जमाली से राम चरित्र मानस और दीवाने गालिब पर खूब चर्चा करते। मुंशी सिंह अध्यापक के बाद वह वहीं के प्रिंसिपल हो गए थे। पद पाते जो अहंकार में आ जाता वह वहीं छूट जाता है। जो इस बीमारी से बच गया वहीं समाज में नायक की तरह चमकता है। डाक्टर साहब इनके भाग्य विधाता थे।

पडरौना का खेतान परिवार रईस है। इस परिवार का डाक्टर साहब से लगाव था। कई कल कारखाने, विशेष कर गन्ना मिलें यहाँ की पहचान है। लिखने पढ़ने वालों की इज्जत करते थे। समय मिलता तो डाक्टर साहब जरूर उनसे मिलते। कैलाश पति निषाद उन्हीं का शिष्य था। गृहस्थी की जरूरत में उन्हीं की युक्ति को आजमाता। डाक्टर साहब उसके आदर्श थे। निषाद को बताये थे। अब आप भी आदत डाल लें। स्त्री विमर्श का जमाना आने वाला है। लोगो की वजह से कोई अपना सम्बन्ध थोड़े बिगाड़ लेगा। "डॉ साहब की बातों में भविष्य झलकता था। वह लोगो को सचेत कर रहे थे।" अब संसद से लेकर प्रशासन में इनकी भागीदारी बढ़ने वाली है। यह भी साथ-साथ रहेंगी।"

डॉ साहब अक्सर गंभीर रहते। किसी वैरागी कि तरह। जीवन की जरूरत की तरह। "इसमें मेरा क्या ? वीणा जी स्वयं गृहस्थी की चक्की में पिसती पति की दिन चर्या से चिंतित रहती।" सोचती कैसे उनकी दिन चर्या में सहभागी बनू। डाक्टर साहब एक प्रेरक कि तरह उनको मार्ग बतलाते रहे।

कविता उनकी आदत थी। सहजता उनका वेश-भूषा था। पडरौना में उनका कोई घर परिवार नहीं था फिर भी उनका यहँ से आत्मीय सम्बन्ध था। यहाँ की यादें, हवाएँ बरबस खींच लाती। निषाद की जुबान से अक्सर सुनी जाती। "उस मुफलिसी में डाक्टर साहब वीणा जी के सम्बल बने थे, नहीं तो उनके पति को क्या पता रहता की पढ़ाई लिखाई के साथ परिवार में क्या टूटता जुड़ता है। गृहस्थी के साथ-साथ पढ़ाई-लिखाई में ध्यान देना बड़ी बात है।" बात-बात में साझ उतर आयी। मिलना-जुलना उनका स्वभाव था। डाक्टर साहब खुले विचार के थे। कुर्ता पाजामा और स्लेटी रंग की सदरी पहने रहते थे। कढ़ी हुई जुल्फ पीछे की ओर मुड़ी रहती। गौर वर्ण, चौड़ा ललाट पर मोटे फ्रेम का चश्मा चढा रहता। किसी भी विषय पर बोलते तो लगता भविष्य की कोई बात बता रहे हैं। जीवन का रहस्य उनके व्यक्तित्व में झलकता था। घर गृहस्थी की चर्चा में दुनियादारी की बातें होती रहती। वीणा जी उनके स्वभाव से परिचित थीं। वह तपते पठार की तरह कठोर थे। जीवन जीने में सरल स्वभाव था।

वीणा जी हाई स्कूल तक पढ़ी थी । प्राइवेट फार्म भरवा कर उन्हें स्नातक करा दिया गया था। बीएड की सीट भर गई थी। फिर भी उनके नामांकन के लिए गोरखपुर विद्यालय के कुलपति से सिर्फ उनके लिए एक सीट मांगे, और मिला भी। बीएड पूरा हो जाने के बाद उसी बीएड कैंपस में लेक्चरर हो गईं। यह अनुकंपा कुलपति की नहीं डाक्टर साहब की थी।

उस दिन उनके घर आए तो वह शाम का भोजन बना रहीं थीं। वह जमाना गैस चूल्हे का नहीं था। लकड़ी का चूल्हा था। लकड़ी के ताप से चूल्हे की आग लपट हो रही थी। बटलोई की दाल उफान पर थी। जब आग से लपट उठने लगता तो धुंआ, हवा की तरह अदृश्य हो जाता है। यहाँ तो बात की ऊष्मा से मन उमंग की तरह परिभाषित हो रहा था। कितने दिनों की सोई चेतना आज इतिहास बन रही थी।

वह अपनी विवशता वीणा जी से बताने लगे। रोजी-रोटी की दौड़ धूप में गांव छूट गया नहीं तो दिल्ली में क्या है। वहाँ अपनापन नहीं शहरापन है। जिसमें लोग जरूरत के हिसाब से संबंध बनाते हैं। भारतीय संस्कृति की परम्परा गाँवों में बसती है। शहर में अपनापन है भी तो स्वार्थ के पाए पर टिका होता है। वे अपनी सहजता पर कैसी-कैसी बातें बता रहे थे। पिछली यादें मुखर हो रही थी। वह उनसे बताने लगे। मास्को यात्रा का वृतांत, वहाँ लेखक यूनियन संघ में भारत का प्रतिनिधित्व करने गए थे। मेरा दागिस्तान के लेखक से मिलना हुआ था। भारत की मैत्री भी तो उनको निभाना था। रसूल हमजातोय मशहूर किताब मेरा दागिस्तान विश्व प्रसिद्ध कृति के लेखक हैं। वहाँ भी भारत की तरह जातिय नस्ल भेद के शिकार हमजातोव उस सम्मेलन की अध्यक्षता नहीं कर पाए थे। वे किसी दूसरी जाति के थे। कोई दूसरा लेखक अध्यक्षता कर रहा था जो बड़ी जाति का था। यह दुनिया अपनी रौ में चलती है। यहाँ की तरह वाहा भी जातियों का विभाजन है। मनुष्य का अहंकार पद से बड़ा होने के लिए दबाव बनाता परन्तु वह वहाँ टिक नहीं पाता है। वह उनसे पूछी। "आखिर यह सब कैसे हुआ? "वह बताने लगे।" अध्यक्षता कोई करे, उनका स्थान कोई नहीं ले सकता है।

डाक्टर साहब की कविताएँ दुनिया के तमाम भाषा में अनूदित हुई है। जब हार्वर्ड विश्वविद्यालय में इस कविता का पाठ करके मंच से नीचे उतर रहे थे तो मराठी कवि अरुण कोल्हटकर उनका ध्यान उस बूढ़े अमेरिकी

नागरिक की ओर खींच दिए। वह भीड़ में पीछे खड़ा था। अपनी नोट बुक में बनारस कविता की कुछ पंक्तियां हिंदी में लिखने का अनुरोध कर रहा था । यह जादू बनारस शहर का है या उनकी कविता का या हिंदी भाषा का जो भारतीय बोलियों को अपने आप में समेट कर हिंदी बना दिया गया है। डॉ साहेब की अधिकतर कविताएँ ग्रामीण जीवन पर आधारित है। आज यूरोप से गाँव ख़त्म हो गया है। खेतो में काम करने वाले पशु, चिड़िया घर की शोभा बढ़ा रहे हैं। जब बाघ कविता इटेलियन में अनुवाद होकर आई तो वहाँ के पाठकों में हलचल मच गया। एक मनोचिकित्सक तो अपने मरीजों में इनकी प्रतियां भेट देता कि इसको पढ़ने से लोगो में बाघ, जंगल, प्रकृति का आभास हो सके। आज हम हवा में बारूद घोल कर वातावरण को दूषित कर रहें हैं। हार जीत किसी की हो, परंतु इसका दुष्परिणाम तो सारी दुनिया भोग रही है। यकायक डॉ साहब की नजर उनके पोलियो ग्रस्ति बच्चे की ओर चली गई।" अरे यह तो शिरीष की तरह लचकदार है। "पोलियो की वजह से वह लचक लचक कर चल रहा था। उन्होंने उसका नामकरण शिरीष कर दिया। आगे चल कर उसका नाम आज भी शिरीष है। "तब तो आप की भी सबसे छोटी बेटी रोती रहती है, तो क्यों न उसका नाम रोली रख दिया जाय।" डॉ साहब सहज हँसते रहे। "जैसी आप की इच्छा।" वीणा जी तुनक कर उनकी बेटी का नामकरण रोली कर दी। दोनों लोगो की अपनी अपनी गृहस्थी थी। बात-बात में दोनों बच्चो का नाम करण हो गया। पद प्रतिष्ठा की बात थी तो वे दिल्ली जे. एन. यू. में चले गए नहीं तो वहाँ से यहाँ मन बार-बार घूम कर आता रहता। पडरौना की गलियाँ उनके मन मस्तिष्क में रची बसी थी। वीणा तो खैर उनके कविता में 'जहाँ लिखा है प्रेम वहाँ लिख दो सड़क नहीं पड़ता फरक' की तरह लहर रही हैं। उनकी 'जड़' कविता गाँव की उस जमीन की तरह उपजाऊ है जहाँ से दर्शन फूटता है। जरूरत में दिन रात मनुष्य कैसे-कैसे खटता है। मौलिक संघर्ष होने में मनुष्य को माजता है। तब की बात हैं जब रूढ़िवादी परम्परा में घर की बड़ी बहू ससुराल की चौखट लांघ कर पढ़ने-पढ़ाने जाना घर वालो की नजर से बचना, बड़ा कठिन काम था। उनको वह आधुनिक शिक्षा के लिए वे तैयार कर रहे थे।

उनकी कई कविताओं का संकलन आ गया था। पत्नी के दिवंगत हो जाने से मन भटकता रहता। चित्त उनकी आभा को याद करके लरजता। विवश समय उनकी याद में कटता। कुछ याद करते हुए बताने लगे। 'इटली किसी के लिए अच्छी जगह है। एक बार रोम और वेनिस के बीच पादुया गाँव में, प्रधान के घर ठहरे थे। उनकी दो भाषिया उन्नीस बीस बरस की रही होगी। उस लड़की का प्रेमी पचहत्तर बरस का बूढ़ा कवि था। वे एक ऐतिहासिक इमारत देखने जाने की योजना बनाए थे। जिसको 120 सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ कर देखना था। वे लोग तो ऊपर चढ़ गए परंतु वह बूढ़ा पीछे छूट गया था। अचानक उस लड़की को याद आया। उसका बूढ़ा प्रेमी नीचे छूट गया है। वह नीचे की ओर भागी। उसके पीछे-पीछे वे भी नीचे आए। वह क्या देखते है कि वह बूढ़ा रेंगता हुआ जैसे-तैसे अभी बीस सीढ़ियाँ किसी तरह ऊपर चढ़ पाया था। वह उदास आँखो से ऊपर की सीढ़ियों की ओर देख रहा था। वह लड़की भागती हुई उसके पास गई और बेतहाशा चूमने लगी। यह दृश्य दुनिया की किसी महान कही जाने वाली प्रेम कविता से कम न था। वे कवि वायरल को याद दिलाते हुये उनसे कहने लगे। वह समुद्र के दृश्य में इतना भाव-विभोर हो गए कि अपनी स्थिति तक भूल गए। देखते-देखते ध्यान समुद्र की लहरों में तरंगित होने लगा। वह उसमें कूद गए। तब उन्हें भान हुआ कि दर्शन देह को देहू कहाँ रहने देता है। उसे प्रकृति के करीब खड़ा कर देता है। वह एक डेढ़ किमी समुन्द्र तैर कर किसी तरह बाहर आए थे। आज वहाँ वायरल का स्मारक है ।

सवेरे सवेरे उनका शिष्य निषाद गाँव से यहाँ

आया था। डॉ साहब के आने की खबर जाने कैसे उसको लग गई थी। गुरु की कृपा से आज वह भी अध्यापक है। वह उन्हें अपने गाँव बुलाने के लिए आया था। गाँव की छटा शहर से भिन्न है। गाँव उन्हें खूब भाता था। लिट्टी, आलू बैगन का चोखा। गर्म गुड़ की मिठास, शहद से ओत-प्रोत होता। स्वाद जीभ की वजह से मस्तिष्क को घुमाता है, तब पूरी देह संतुष्ट होती है।

वह कई भाई थे। उनमें कमासूत निषाद ही था। उन्हीं के सहारे संयुक्त परिवार का भोजन पानी चलता था। उसके और भाई राम भरोसे, भजन कीर्तन में लीन रहते थे। साझ वेरा भोजन मिल गया तो कल सवेरे वह मुंह चीरे है तो जरूर देंगे, वाले सिद्धांत पर जीते थे। औघण मलंग की तरह। जटा पगड़ी की तरह सिर पर बधी रहती । तन पर वस्त्र लंगोट, भभूत उनका भव्य परिधान था। भागवत भजन ढोलक, झाझ, झाल की संगत अभूतपूर्व थी। 'राम खेवइया, राम रचईया, राम ही राम भव पार लगइया। संगीत से मन का उद्‌गार सधाते। डॉ साहब उनके दर्शक भर थे। उन्हें सुझाव दिए। "आप लोग किसके लिए यह कर रहें हैं।" दीन-दुनिया से बेखबर उस असीम कृपा की झलक पाने के लिए मनुष्य कितने तरह का वाना धरे रहता है। वे भी एक वाना धरे उसी असीम कृपा की फेर में दिन रात लगे रहते थे। उनके सनातन धैर्य को देख कर डाक्टर साहब के मन में एक बात आयी। "कैसे अपने जीवन की जरूरत पूरा करते होंगे ? "वह कहने लगा।" कोई ललक नहीं, उन्हीं का दिया तन उन्हीं को समर्पित है। जरूरत भी वही पूरा करेगे"। ठंडी आह भरते बात कर रहा था। केदार जी कहने लगे "जीवन का सबसे बड़ा तप किसी वाना में नहीं परिवार में रह कर कुटुंब जन के लिए श्रम करते रहे और उनके सुख के लिए धीरज बनाएँ रहें कि परिवार दिन ब दिन तरक्की करता रहे। यह देश काल के लिए सबसे अच्छा तप है। हम लोग दिन रात खटते है, तब भी जीवन की जरूरत में लगने वाला समय कही न कही कुछ छूट जाता है।" घर गृहस्थी के लिए कोई भाग दौड़ नहीं। उदार भाव से ठंडी आवाज में वह फिर कहने लगा। "जब शादिए नहीं किए तो परिवार कैसा ? भईया के सिर पर हम लोगो का भार है, तभी तो निखुटका जीवन जी रहे हैं।" निषाद के भाई दीन-दुनिया से बेखबर अपने दिन में लीन रहते थे ।

इतने अद्‌भुत हैं आप लोग। जिंदगी का विकास यही आकर रुक गया है। इसी तरह कितने लोग यही बाना धरे इस देश पर बोझ की तरह चल रहें हैं। तब इतनी बड़ी जनसंख्या को भोजन पानी कौन देगा?" एक पक्षी भी आराम के लिए एक पेड़ की अदद डाल के लिए जीवन से लड़ता है। तब जगह बनापाता है।"

डॉ साहब उनके संतोष से चकित थे। वापस जाते निषाद को हिदायत देते कहे थे। "इनको आप मत छोड़िएगा, अगर छोड़ दिए तो यह जीवन की जरूरत में कही बिला सकते है"।

डॉ साहब गाँव से वापस चले गए। कई दिनों तक वहाँ उनकी चर्चा होती रही। लोग आपस में बतियाते। कविराज जी आए थे। गाँव के लोगो को निषाद बताया। कविता के पारखी उनको कई पुरस्कार दिए है। साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ शलाका जैसे दर्जन भर पुरस्कार सरकार दी है। अखबार पत्र पत्रिकाओं में इनका साक्षात्कार छपता रहता है। कई विश्व विद्यालय में इनकी कविताएं पढाई जाती है। लोगो में उनकी बातो का छाप पड़ गया है। निषाद के घोट्ठा पर बना लिट्टी चोखा का स्वाद आज भी लोग चटखारे ले लेकर बतियाते हैं। इनकी कविताओं का अनुवाद लगभग सभी भारतीय भाषाओं के अलावा कई विदेशी भाषाओं में हुआ है। इन्होंने कविता पाठ के लिए दुनिया के तमाम देशों की यात्राएँ भी की है ।

तब गाँव से कहाँ कोई लड़की कॉलेज पढ़ने के लिए भेजता था। चार पाँच तक पढ़ा कर माता पिता उनसे जिम्मा छुड़ा लेते थे। पाठशाला पास हो जाने पर घर के काम में लगा देते या शादी करके ससुराल भेज देते थे। चलो

उसकी शादी करके पितृ ऋण से हम मुक्त हो गए। ससुराल में लड़की मैके से आए चिट्ठी पत्री बाच सके। अपना हाल चाल माँ बाप को चिट्ठी में बता सके। अब तो पति ही उसकी नैया का पार लगा सकता है। जीवन जैसे भी कटे उसका नसीब जाने। माँ बाप लड़की के पालन हार भर है।

पडरौना तब छोटा कस्बा था। उसकी साफ सफाई के लिए नगर पालिका का गठन हो चुका था। रेलवे स्टेशन, चीनी मिल, पीजी कॉलेज, व्यापारियों की दुकानें खुल जाने से शहर की तरह लगता। गाँव में भी उस समय प्राइमरी पाठशाला, जूनियर हाई स्कूल खुल रहे थे। शहर देहात के लोग भी तब लड़कियों को कॉलेज भेजने से हिचकते थे। कौन जहमत मोल ले। मर्दों के बीच लड़किया किस हाल सहज रह कर पढ़ाई कर पाएगी ? अनजान दूर देहात के लड़के उनके साथ कैसा बर्ताव करें? इसी सोच से लोगों का मन हिचक जाता था। कही बात बेबात कोई लड़का किसी लडकी को छेड़ दिया तो इस समाज को बात का बतंगड़ बनाते देर नहीं लगता है। यह समाज, सामाजिक कुरीतियाँ सिर्फ लड़कियो में ढूँढता है। अपने भले आकंठ दलदल में डूबे रहे इसको कौन पूछता है।

डॉ साहब तब कॉलेज के प्राचार्य थे। उन्हीं की प्रेरणा से पडरौना के व्यापारियों की लड़कियाँ, कॉलेज आने लगी थी। गाँव देहात तक के गार्जियन अपनी लड़कियों को कॉलेज भेजने लगे थे। लड़कियों के आने से कॉलेज का वातावरण संगीतमय रहता। अन्दर ही अन्दर डॉ साहब प्रमुदित रहते। सोचते चलो गाँव शहर में लड़का लड़की का भेद तो मिटा।

डाक्टर साहब के कई छोटे-छोटे बच्चे थे। पत्नी के दिवंगत हो जाने से उन्हें कठिन जीवन जीना पड़ा। उन्हीं बच्चों को समेट कर चल दिए जीवन के आवें में तपने। बैरागी की तरह जीवन है तो सुख दुःख लगा रहता है। सहानुभूति, प्रेम की सिफारिश लिए पडरौना के लोग उनके पीछे खड़े थे। प्रेम से आदमी का हौसला बढ़ता है। मन को विषय वासना से समेट कर शिक्षा के तप में तपते रहे। कच्चे बर्तन की तरह। कुम्हार के आवे की भट्ठी में बर्तन जब तप कर खरा उतरता है। तब कहीं वह बाजार के मोल-भाव के कीमत लायक तैयार होता है। पथ पर आगे बढने की आपाधापी में बच्चों का कुनबा पडरौना के मित्रो के सहारे छूट गया।

तब का जमाना कुछ और था। नामवर जी जे. एन.यू. आ गए थे। बनारसी ठाट बाट अब वहाँ कहा ? बनारसी मित्रो की मंडली केदार जी के पास भी थी। जो बनारस में छूट गया था। यहाँ तो उनकी यादें भर है। बनारस नगर ही नहीं, एक परम्परा के साथ आधुनिक शहर भी है। हिन्दू विश्व विद्यालय ख्याति प्राप्त संस्थान है।

बनारसी याद को भरने के लिए, केदार को जे. एन.यू. बुला लिए। उन्हीं के साथ और भी कई मित्रों को बुलाया गया। नामवर छाया वाद आलोचना कविता के नए प्रतिमान और दूसरी परम्परा की खोज में लगे थे। गांधी बाद में कम्युनिस्ट तिरोहित होना था, परन्तु नहीं हुआ। उनके जे.एन.यू. आ जाने से नामवर को अपना साथी मिल गया। यहाँ प्रतिष्ठा जरूर मिली परंतु व्यक्तिगत जीवन में अकेलापन मिला। एकाकी जीवन मनुष्य को विवश कर देता है। समय के भार को ढ़ोने के लिए शराब सहारा था। अपने लड़के लड़कियों की शादी कर दिए थे। अब तो जीवन का आखरी पड़ाव चल रहा है। लड़के लड़कियाँ अपने निजी जीवन में रम रहे हैं। पडरौना वाला प्रेम दिल्ली में नही मिला। डाक्टर साहब बताते। "यह सब कैसे होते गया मै भी नहीं बता सकता हूँ। एक बात जरूर है स्थान और सोहबत मनुष्य को निखारता है"। हीरा नंद सच्चिदानंद वात्सायन अज्ञेय के तीसरे तार सप्तक के कवि केदार राष्ट्रीय स्तर के कवि हो गए थे। उनकी कविताएँ छाया बाद के बाद प्रगति बाद फिर प्रयोगवाद और प्रयोग वाद के बाद सठोत्तरी कविता या यह कहें आधुनिक कविता के प्रयोगवादी कवि माने जाने लगे थे। यह वृक्ष हवाओं में झूम

कर आज भी उनकी याद ताजा करता है। शिव दुलारी दल डपट शाही महिला महाविद्यालय सिंगाहा कुशीनगर के उदघाटन पर्व पर आए थे। सेमिनार उद्घाटन और हिंदी भाषा की वार्ता में देश विदेश तक की यात्राएं किए। अपने पथ से भूले भटके छात्रों को अपने राह पर चलने के लिए प्रयोगवादी धारा से जोड़ते रहे । जीवन को प्रभावित करती विसंगतियो को दर किनार करके आगे बढ़ने का सुझाव देते रहें ।

हवाएँ किसी रहस्य से कम थोड़े है। सुख दुःख की बयार बहती तो वहाँ अपना हाल चाल देती हैं। हवाएँ नदी पहाड़ पार कर आ जाती। समुन्द्र पार की दुनिया से यहाँ मौसम उतार लाती । अपने आगोश में गर्मी ठंठी समेटे वातावरण में जलवायु बनाती है। केदार की हवा खूब कवितई पानी बरसायी है। रेगिस्तानी हवाएँ गर्म धूल लू से राहवासियों को कैसे-कैसे कलपाती। यही हवा जब हिमालय के मानसरोवर से होते हुए हेमकुंड की फुलबगिया से आती तो धरती के लोगो को मलयागीर का सुगंध महकाती। हवाएँ पेड़ पौधों की फुनगी पर झूला झूलती तो रमणीया उनकी देखा देखी कैसी कैसी पेंगे बढ़ा कर नभ को छू लेने कि आतुर रहती। इनमें न कोई पंख होता है न कोई टोकरी फिर भी गर्मी ठंड्री लू, धूल, धूप बारिस पानी की खेप लिए चलती है। अपनी धाक से वातावरण में मौसम जलवायु बदल देती। हवाएँ रहस्य बनी जीवन को प्राण वायु देती तो यह जीवन विहंसता है। केदार की कविताओं की तरह अब वह धरोहर हो रही है। उनकी कविताओं का संकलन फ्रेंच में आया तो हिंदी विहंस गई। केदार की पुस्तक का पेरिस में लोकार्पण हुआ था। करेक्टर प्रकाशन ने किताब छापी थी। उसने उनको इतनी राएल्टी दी जितना आज तक उनको नहीं मिला है। यह रकम उनके जीवन भर की राएल्ती से कही ज्यादा था ।

जिस कैफे में ज्या पाल सात्र बैठते थे, वहाँ उनकी कुर्सी पर टिकट कटा कर बैठने की परंपरा थी। जब रेस्त्रां मालिक को डॉ केदार के आने की खबर अनुवादिका ने बताया तो वह दौड़ता हुआ आया। उनके बारे में घोषणा कर के उन्हें वहाँ विना लाइन लगाए सात्र की कुर्सी पर बिठाया। उनको इतनी खुशी हुई बता नहीं सकता। क्या यह सब हम भारत में हम कर सकते हैं? फ्रांस दुनिया का एक अकेला देश है जहाँ कला साहित्य और संस्कृति सिनेमा को सबसे अधिक महत्व देता है।

मन कठफोड़वा की तरह उस काठ तक आने की जुगत में लगा रहता है कि वह ठक-ठक की भाषा गढ़ सके। याद करते हुए कहे "लोगो को प्रेम के लिए इटली से अच्छा जगह विश्व में कोई दूसरा जगह नहीं है।" उनका दुनिया के तमाम हस्तियों से मेल मिलाप था। केदार जी अपने गाँव चकिया जाते तो अपने घर न रह कर चाचा के ओसारा में सो जाया करते थे। डॉ. साहब कहते। "कौम अपने घर की साफ-सफाई कराने का जहमत मोल ले।" गाँव वालो को कहा पता था कि चौकी पर सो रहा व्यक्ति विश्वविख्यात कवि सो रहा है। वीणा जी चकित थीं। अद्भुत उनके जैसा महान व्यक्तित्व से उनका जान पहचान है। केदार इन्हीं हवाओं में संगीत की तरह लहर रहें हैं। एक एक दिन की याद में। अब तो चला चली की वेला है। कब कहा किससे साथ छूट जाए कह नहीं सकते। एक उम्मीद पर यहां यह सब चल रहा है। दुनियादारी की तरह ।

सम्पर्क सूत्र- ग्राम मटिहनिया खुर्द, पोस्ट बुजुर्ग
पडरौना, जिला कुशी नगर
पिन- 274304
मो0- 8756894896

भावनात्मक एकता और हिन्दी

➲ डॉ0 अखिलेश निगम 'अखिल'

हिन्दी भाषा भारतवर्ष की पावन गंगा नदी की भाँति है इसका कल-कल निनाद भारत की सामाजिक, साहित्यिक, भावनात्मक एवं सांस्कृतिक चेतना को मुखरित करता है जिस प्रकार गंगा नदी देश की समस्त छोटी-बड़ी नदियों को साथ लेकर सह अस्तित्व का पाठ पढ़ाते हुए सबको साथ लेकर चलती है ठीक उसी प्रकार हिन्दी भाषा भी राष्ट्र की सभी भाषाओं एवं बोलियों को एक सूत्र में पिरोकर एक सुगन्धित मनोहारी माला के रूप में प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के मूल में भारतीय संस्कृति, सनातन धर्म का समावेशी स्वरूप, भक्तिकालीन साहित्य तथा स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान देशवासियों की पारस्परिक एकता, अखण्डता तथा अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति के उद्घोष ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है जिसमें हिन्दी भाषा ने सम्पूर्ण देशवासियों को एक मंच पर खड़ा होने का अवसर प्रदान किया ।

आज के विकसित समाज का ढांचा पूर्णरूपेण भौतिकवाद पर आधारित है जहाँ स्वार्थ, तनाव, विसंगति, आत्मकेन्द्रित व्यवहार, अकेलापन वैश्विक समस्या के रूप में उभर रहा है वहीं भारतीय संस्कृति में विश्व बन्धुत्व की कल्याणमयी कोमल भावना है जो 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'परोपकाराय संता विभूतयः' से सदैव अनुप्राणित होती रही है। भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण मानव जाति और प्रकृति के प्रत्येक अवयव से अपना आत्मिक सम्बन्ध स्थापित करती है और जड़-चेतन सभी में परमात्मा के स्वरूप को प्रतिष्ठापित करती है।

भारत देश जितना प्राचीन है उतनी ही प्राचीन उसकी संस्कृति है। भारतीय संस्कृति का मूल स्वर 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम' की कल्याणमयी त्रिवेणी है जो मनुष्य मात्र के कल्याण को चरम लक्ष्य मानकर सामाजिक जीवन में सामूहिकता और मानवतावाद को प्रतिष्ठित करती है। मनुष्य की बाह्य एवं आन्तरिक एकता का बोध भारतवर्ष ने धर्म, दर्शन, कला, साहित्य और संस्कृति के माध्यम से कराया है, वस्तुतः भारतीय संस्कृति आपसी सहयोग, साहचर्य और सामंजस्य की भावना के कारण विश्व में अद्वितीय मानी जाती है संस्कृति भाषा के पश्चात हिन्दी भाषा ने भारतीय-संस्कृति का परचम केवल देश में नही वरन सम्पूर्ण विश्व में लहराया है। हिन्दी अपनी समावेशी प्रवृत्ति के कारण केवल उत्तर भारत में नहीं बल्कि भारत के प्रत्येक भूभाग में लोकप्रिय हो रही है। हिन्दी में भारतीय संस्कृति के संवाहक केवल हिन्दी साहित्यकार नहीं रहे हैं वरन् अमीर खुसरो, रहीम, मलिक मुहम्मद जायसी, और रसखान जैसे कवियों ने भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म को नया स्वरूप दिया है।

जहाँ तक नीति के दोहों की बात है तो अभी भी रहीम के दोहे जनमानस में लोकप्रिय हैं यथा-

"जो रहीम उत्तम प्रकृति, का कर सकत कुसंग।"
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

इसी तरह भीख माँगने तथा भीख न देने के सम्बन्ध में उनका बेजोड़ दोहा है।

"रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ माँगन जाहिं।
उनसे पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।

जो काम हिन्दी भाषा में कबीर, रविदास और मलूक दास जैसे सन्तों ने किया उससे जाति प्रथा, पाखंड, अंधविश्वास तथा कर्मकांड का विरोध हुआ तथा एकेश्वरवाद व सर्वधर्म समभाव की अवधारणा का उद्घोष किया गया जिससे भारतीय संस्कृति का उदात्त स्वरूप आम जनमानस के सामने प्रकट हुआ।

वर्तमान में हिन्दी भाषा का व्यापक जनाधार है वह भारत ही नहीं विश्व की महत्वपूर्ण भाषा है हिन्दी एक ऐसी धुरी है जिसके चारों ओर भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता तथा सनातन धर्म का पहिया घूमता है। सनातन धर्म की समावेशी प्रवृत्ति ने विभिन्न धर्मानुयायियों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया है यदि कतिपय नकारात्मक प्रवृत्तियों से परे हटकर चिन्तन करें तो यह स्पष्ट है कि वर्तमान में हिन्दी भाषा में सनातन धर्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा सिख धर्म के ग्रन्थों तथा सार तत्वों का हिन्दी में अनुवाद हुआ है अब कुरान ग्रन्थ का भी हिन्दी संस्करण बाजार में उपलब्ध है इन सब कारणों से राष्ट्रीय एकता को नया आयाम प्राप्त हुआ है।

देश की भावनात्मक एकता को एक मनोहारी माला में पिरोने का कार्य सर्वाधिक भक्ति कालीन सन्तों ने किया। मुगलकाल में सम्पूर्ण भारत वर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषाओं में जिस भक्ति साहित्य का सृजन हुआ उससे सम्पूर्ण राष्ट्र को एक नई चेतना प्राप्त हुई। निर्गुण एवं सगुण काव्य धारा के संगम से जो साहित्य प्रस्फुटित हुआ, वह अभी भी आम जनमानस के मन-मानस में जीवन्त है हिन्दी भाषा में तथा उसकी विभिन्न बोलियों में कबीरदास, रविदास, दादूदयाल, मलिक मोहम्मद जायसी आदि ने निर्गुण काव्य धारा में आम जनमानस को ढोंग पाखंड से दूर रहकर आत्मज्ञान का मार्ग बतलाया, वही सगुण भक्ति साधना में कृष्ण भक्ति धारा एवं राम भक्ति धारा के रूप में अनेक सन्तों ने प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन किया। सूरदास, परमानन्द दास, नाभादास आदि अष्टछाप के सन्तों तथा मीरा, रसखान जैसे भक्तों द्वारा रचित साहित्य में किसी ने कृष्ण को सखा भाव में आराधना की तो मीरा ने उन्हें प्रियतम के रूप में आराधना की, वहीं तुलसीदास ने रामचरित मानस व विनय पत्रिका जैसे ग्रन्थों की रचना कर राम भक्ति को एक नया स्वरूप दिया। आधुनिक काव्य साहित्य में खड़ी बोली में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का साकेत महाकाव्य बहुचर्चित रहा, इसी तरह निराला की राम की शक्ति पूजा, श्याम नारायण पाण्डेय का खण्ड काव्य 'जय हनुमान' तथा विभिन्न खड़ी बोली एवं आंचलिक बोलियों के रचनाकारों ने भक्ति साहित्य का सृजन कर सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया, भारतीय सनातन धर्म के गीता और रामायण दो ऐसे महान ग्रन्थ है जिनको समस्त भारतीय भाषाओं के विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से व्याख्या प्रस्तुत की है तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में उनका अनुवाद एवं समीक्षा हुई है। गीता के ज्ञान योग, कर्मयोग और भक्ति योग को लेकर विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से उसे प्रस्तुत किया है। भक्ति साहित्य में महाराष्ट्र के नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता व संत टुकड़ो, पंजाब-हरियाणा के गुरू नानक, गुरूगोविन्द सिंह, बाबा लाल दास, गुरू जम्भेश्वर, उड़ीसा - बंगाल के महाप्रभु चौतन्य, असम के शंकर देव - माधव देव, राजस्थान की मीरा, दादू दयाल,

बिहार के दरिया साहब, मध्य प्रदेश के गुरू घासीराम की दृष्टि एक जैसी दिखती है।

भक्ति काल में दक्षिण में भी अनेक कवियों ने प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन किया तमिल का संगम साहित्य अपने-आप में बड़ा ही समृद्ध हैं जिसमें भक्ति, शृंगार, आध्यात्म तथा विभिन्न विषयों को बखूबी उठाया गया है तथा दक्षिण के चारों प्रान्तों में हिन्दी को दक्खिनी हिन्दी के रूप में मान्यता मिली जिसके अन्तर्गत दक्षिण भारत में गोलकोंडा, गुलबर्गा और औरंगाबाद को केन्द्र बनाकर पर्याप्त साहित्य लिखा गया ।

स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान सम्पूर्ण भारत में आजादी को जो छटपटाहट हुई वह देश के प्रत्येक व्यक्ति में थी, देश के प्रत्येक कोने से अंग्रेजी दासता से मुक्ति का प्रखर स्वर विभिन्न भाषा-भाषियों के मध्य गूँज रहा था, महात्मा गाँधी लोकमान्य तिलक, सुभाष चन्द्र बोस, रवीन्द्र नाथ टैगोर, आदि विभिन्न नरम एवं गरम दल के नेताओं ने आम जन मानस में जन-जागरण करने के लिए हिन्दी भाषा में ही गर्जना की। गाँधी जी का सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन और दांडी मार्च ने आम जन मानस में अमिट छाप छोड़ा। लोकमान्य तिलक की गर्जना ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' अभी भी जनमानस में देश भक्ति का संचार करती है, सुभाष चन्द्र बोस का उद्घोष 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' अभी भी बाल, युवा और वृद्धों की रगों में जोश और ओज का संचार करता है। कानपुर के श्यामलाल पार्षद द्वारा हिन्दी में लिखा गीत- 'झंडा ऊँचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।' हिन्दुस्तान में कान्ति का गीत बन गया। पंजाबी, मराठी कन्नड़, तमिल, तेलगू, मलयालम, बंगला, उड़िया आदि भाषा-भाषी आन्दोलनकारियों को हिन्दी भाषा ने एक मंच पर लाकर खड़ा दिया ।

आजादी के दौरान हिन्दी भाषा की अन्तर्वाही शक्ति और सर्व समावेशी स्वरूप के कारण हिन्दी ने स्वयं लोकप्रियता प्राप्त की। सांस्कृतिक एकसूत्रता के माध्यम से भाषाई एकता का सार्थक प्रयास विभिन्न संस्थाओं द्वारा किया गया । हिन्दी वर्द्धिनी सभा, और हिन्दी समिति वर्द्धा का गठन किया गया, कई जनपदों में 'नागरी प्रचारिणी सभा की इकाइयों की स्थापना की गई। उत्तर में हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए 'साहित्य सम्मेलन' प्रयाग तथा दक्षिण में' 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति' के माध्यम से भाषाई चेतना को जागृत करने का प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर किया गया ।

विभिन्न भाषा-भाषियों के उत्कृष्ट साहित्य के अनुवाद ने सम्पूर्ण देशवासियों को एक दूसरे के निकट लाने में सार्थक भूमिका का निर्वहन किया। सच्चे अर्थों में अनुदित साहित्य ही विभिन्न भाषा-भाषियों को एक मंच पर लाने का सबसे प्रबल माध्यम है, किन्तु अभी भी इस दिशा में अनेक कदम उठाने की आवश्यकता है तथा हमें अनुवादकों को भी साहित्यकार की श्रेणी में रखकर उन्हें उचित मान-सम्मान तथा मानदेय देना होगा ताकि सभी भाषा-भाषी एक दूसरे से भली-भाँति परिचित हो सकें।

अन्ततः हम यह कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा ने अपनी सर्व समावेशी स्वरूप तथा अन्तर्वाही शक्ति के कारण राष्ट्रीय भावनात्मक एकता को एक नया स्वरूप दिया है और हिन्दी की लोकप्रियता एवं स्वीकारयता बढ़ी है किन्तु हम सबको आपसी सम्पर्क, साहित्यिक यात्रा, भाषाई संगोष्ठी, संवाद, अनुवाद तथा समीक्षा के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के बीच में उपजे असन्तोष एवं खाई को दूर करना होगा ताकि हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सके तथा विश्व पटल पर एक नया आयाम गढ़ सके।

सम्पर्क सूत्र- ओम निवास
51-क्ले स्क्वायर कबीर मार्ग, लखनऊ- 226001
मो0- 9793274150/9559024125

हिन्दी-अवधी का अन्तर्सम्बन्ध

➲ डॉ0 रामबहादुर मिश्र

अवधी ने एक परम्परा बनाई है। एक समय इसे हिन्दी की उपभाषा कहा जाने लगा था। अवधी की अपनी संस्कृति है, उस संस्कृति को बचाकर ही भारतीय संस्कृति को बचाया जा सकता है। भारतीय संस्कृति में समाहित अनेक संस्कृतियाँ भाषा से ही आई हैं। जहाँ तक अवधी की बात है तो वह भारत की सबसे महत्वपूर्ण लोकभाषा है और हिन्दी को समृद्ध करती है। आज पूरी दुनिया में अवधी बोलने और जानने वालों की संख्या दस करोड़ के आसपास है। विश्व भाषा में अवधी को 29वां स्थान प्राप्त है। भारत में गुरूगोरखनाथ और नेपाल में संत कुकरिप्पा अवधी के आदि कवि हैं। अमीर खुसरो को भी अवधी का प्राचीन कवि माना जाता है। अवधी का प्रादुर्भाव छठी शताब्दी से हुआ। यह आम बोलचाल, राजकाज और साहित्य की भाषा रही है।

अवधी एक प्रकृत भाषा है। दुनिया की किसी भी संस्कृति का अध्ययन हम अवधी के माध्यम से कर सकते हैं। नीग्रो, निषाद (यहाँ तक आस्ट्रेलिया) द्रविड़, किरात, मंगोल आदि परवर्ती संस्कृतियाँ हैं। कोशल में यज्ञ संस्कृति सबसे उत्कृष्ट रूप में विकसित हुई। यज्ञ संस्कृति का आविष्कार कोशल में ही हुआ। बाद में अन्य देशों ग्रीक, रोमन, ईरान आदि देशों में यज्ञ संस्कृति का विकास हुआ। नये शोधों से प्रमाणित हो चुका है कि अवधी का व्याकरण सातवीं सदी में ही स्पष्ट हो गया था। हेमचंद के शब्दानुशासन, वर्णरत्नाकर, प्राकृत पैंगलम, कीर्तिलता, संदेश रासक, उक्ति व्यक्ति प्रकरण, प्रबंध चिंतामणि कुमारपाल आदि में अवधी का व्याकरण देखा जा सकता है। गोरखनाथ की सम्पूर्ण रचनाओं में सर्वनाम, क्रियापद, सहायक क्रिया और क्रिया विशेषण आदि का प्रचुर शब्द भंडार अवधी में है ।

वस्तुतः अवधी उत्तर भारत में बोली जाने वाली वह सबसे महत्वपूर्ण भाषा है जिसे भारतीय आर्यभाषा की पूर्वी हिन्दी शाखा में प्रमुख लोकभाषा के रूप में माना जाता है। अवधी का हिन्दी को सबसे बड़ा प्रदेय है राम और रामकथा। रामकथा में निहित शाश्वत मूल्यों का आधार लेकर राम और रामकथा पर अनेकानेक संतों, कवियों, विचारकों, विद्वानों, लेखकों और साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई है। रामानंदी सम्प्रदाय के दो प्रमुख भक्तिकालीन कवियों कबीरदास और और तुलसीदास ने अपने-अपने ढंग से राम के रूप-स्वरूप का गुणगान किया है। कबीरदास जहाँ निर्गुण निराकर राम की चर्चा करते हैं वहीं तुलसीदास चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ के पुत्र और सगुण साकार ब्रह्म के रूप में अपने राम का गुणगान करते हैं यही कारण है तुलसी के राम जन-जन में व्याप्त हो गये और देशकाल की सीमा लांघकर सात समुद्र पार तक पहुँच

गये। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से भारत के पौराणिक सम्बन्ध रहे हैं जिनकी पुराण साहित्य में चर्चा है श्रीलंका, कंबोडिया, नेपाल, भूटान, जावा, सुमात्रा, लाओस, ब्रुनाई, वियतनाम, थाईलैण्ड, इंडोनेशिया, मालद्वीप, मलेशिया आदि देश इसमें शामिल है। इसी के साथ डेढ़ सौ साल पहले पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार से गये गिरमिटिया मजदूरों ने मारिशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिडाड, टुबैगो, गुयाना आदि देशों में रामचरितमानस के माध्यम से अवधी संस्कृति का विस्तार किया। इन देशों को अवध डायस्पोरा नाम से जाना जाता है इसके अलावा यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि महाद्वीपों में अनेक भारतवंशी बसे हैं, जिनमें ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, इटली, जर्मनी, रूस, चीन, जापान, नार्वे, स्वीडन, बेल्जियम, बेल्जियम, हालैण्ड आदि हालैण्ड आदि देशों में भी रामकथा पहुँची। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि अवधी और अवध क्षेत्र ने ही विदेशों में भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन का परचम लहराया। भगवान राम और भगवान बुद्ध दोनों ही अवध क्षेत्र में अवतरित हुए, एक अयोध्या में तो दूसरा कपिलवस्तु में। रामकथा और बौद्धधर्म ही विदेशों में भारतीयता को स्थापित करते हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की समृद्धि में अवधी का महत्वपूर्ण योगदान है। साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषिक दृष्टि से हिन्दी की यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण विभाषा है। अवधी उ0प्र0 में बोली जाने वाली वह सबसे महत्वपूर्ण लोकभाषा है जिसे भारतीय आर्यभाषा की पूर्वी हिन्दी शाखा की सबसे प्रमुख बोली के रूप में जाना जाता है। महाजनपद काल में कोशल जनपद भारत का सबसे गौरवशाली और शक्तिशाली राज्य था। गौतम बुद्ध के जन्म से बहुत पहले इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रियों ने इसकी स्थापना की। यह दो भागों में बंटा था अयोध्या के आस-पास का क्षेत्र उत्तर कोशल तथा छत्तीसगढ़ एवं म.प्र. के कुछ जिले दक्षिण कोशल के अन्तर्गत आते थे। उत्तर में नेपाल की तराई से लेकर दक्षिण में गंगा नदी तक इसका विस्तार था। अवध का वर्तमान भाग इस जनपद का केन्द्रीय भाग था। इस कोशल साम्राज्य की एक भाषा थी, जो थी तो आर्य भाषा पर संस्कृति से भिन्न बोल चाल की भाषा थी। इसको कोसली प्राकृत कहना उचित होगा। अवधी वस्तुतः कोसली प्राकृत का ही विकसित रूप है। इसकी साहित्यिक परम्परायें भी अति प्राचीन हैं। समस्त जनपदीय भाषाओं में अवधी ही एक भाषा के रूप में सामने आई और उसने एक सुदीर्घ और उत्कृष्ट साहित्यिक परम्परा को जन्म दिया। अवधी के प्रथम कवि मुल्ला दाउद ने चौदहवीं शताब्दी में चंदायन की रचना की किन्तु इससे पूर्व बारहवीं सदी में दामोदर भट्ट ने संस्कृति के समानान्तर उक्ति व्यक्ति प्रकरण नामक ग्रंथ में अवधी व्याकरण की रचना कर दी थी। यह इस बात का प्रमाण है कि अवधी बारहवीं शताब्दी तक एक भाषा के रूप में विकसित हो चुकी थी। डॉ राम विलास शर्मा के अनुसार सम्राट हर्षवर्धन के काल सातवीं सदी में कन्नौज में अवधी बोली जाती थी। डॉ शर्मा ने अवधी काव्य परम्परा के संदर्भ में विचार करते हुए कहा कि यह काव्य परम्परा संभवतः मुल्ला दाउद से पहले विद्यमान थी।

अवधी भाषाभाषी क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। इसके उत्तर में नेपाली पश्चिम में कन्नौजी, दक्षिण पश्चिम में बुंदेली, दक्षिण में बघेली, दक्षिण पूर्व में छत्तीसगढ़ी और पूरब में भोजपुरी तथा नेपाली बोली जाती है। बघेली और छत्तीगढ़ी अवधी की ही उप बोलियाँ हैं। अवधी न केवल उत्तर प्रदेश के पच्चीस जनपदों की भाषा है वरन मध्य प्रदेश और बिहार तथा नेपाल की तराई के विस्तृत भूभागों में फैली हुई महत्वपूर्ण भाषा है जिसे भारत से बाहर उर्दू बोलने वाले लोग भी समझते हैं।

1927 में प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी जार्ज ग्रियर्सन ने जब भाषा सर्वेक्षण के आंकड़े प्रस्तुत किये थे उस समय इस

भाषा के बोलने वालों की संख्या पौने दो करोड़ के आसपास थी। 1971 की जनगणना की रिपोर्ट के अनुसार अवधी भाषियों की संख्या तीन करोड़ थी। वस्तुतः ये सारे आंकड़े आधे-अधूरे हैं वास्तविकता यह है कि अवधी भाषियों की संख्या दस करोड़ के लगभग है। अवधी का पूर्ण रूपेण विस्तार 18 जनपदों में है ये जिले है अयोध्या, अम्बेडकरनगर, सुलतानपुर, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, अमेठी, कौशाम्बी, फतेहपुर, उन्नाव, रायबरेली, लखनऊ, सीतापुर, खीरी, बाराबंकी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, और गोण्डा। आंशिक रूप से बोलने वाले जिले हैं बस्ती, जौनपुर, मिर्जापुर, कानपुर, हरदोई, शाहजहांपुर, बांदा और चित्रकूट। मध्यप्रदेश के सतना, रीवां, शहडोल, बालाघाट से लेकर नरसिंहपुर सिहोरा (जबलपुर) तक अवधी की व्याप्ति है। भारत के औद्योगिक नगरों मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, लुधियाना, अमृतसर, अहमदाबाद, सूरत, बड़ौदा तथा नौसारी आदि महानगरों में व्यापक रूप से अवधी भाषा विद्यमान है। बिहार के मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में भी अवधी भाषी लोगों की पर्याप्त संख्या है।

भारत के पड़ोसी मित्र राष्ट्र नेपाल की तराई के मधेश क्षेत्र अर्थात नारायणी नदी से पश्चिम नवलपरासी, रूपनदेही, कपिलवस्तु, दांग, बांके, बरदिया, कैलाली तथा कंचनपुर जिले मुख्य रूप से अवधीभाषी क्षेत्र हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार नेपाल में कुल अवधी भाषा भाषियों की संख्या पाँच लाख साठ हजार सात सौ पचास है । नेपाल में 1994 से रेडियो नेपाल अवधी में समाचार प्रसारित करता है। 2006 के जन आन्दोलन एवं नेपाल मधेश आन्दोलन के बाद अवधी को नेपाल में राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता मिल गयी है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि वहाँ प्राथमिक कक्षाओं तथा कक्षा 9 एवं 10 के लिए नेपाल शिक्षा विभाग द्वारा अवधी पाठ्यक्रम तैयार किया गया पुस्तक का नाम हमार भाषा अवधी है। यही नहीं अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में प्रौढ़ एवं नवसाक्षरों के लिए अवधी में पाठ्य पुस्तकें तैयार की गयी है। नेपाल के अतिरिक्त फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टुबैगो, मॉरीसस, गयाना, आदि देशों में भी अवधी की भाषायी संस्कृति पूरे वैभव के साथ विद्यमान है।

हिन्दी के संवर्द्धन में अवधी का सर्व प्रथम स्थान है हिन्दी साहित्य की प्रमुख पाँच धारायें हैं जिनमें प्रेमाख्यान काव्य, संतकाव्य, रामकाव्य, कृष्ण काव्य, और रीति काव्य हैं। इनमें से तीन धाराओं प्रेमाख्यान, संत काव्य तथा राम काव्य का इतिहास तो अवधी से ही है शेष कृष्ण काव्य के साथ ही रीति काव्य भी अवधी में रचे गये हैं। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक रचित अवधी साहित्य ने हिन्दी को अत्यंत समृद्ध किया है। भारतीय साहित्य में प्रेमाख्यान परम्परा वैसे तो बहुत पहले से है जो संस्कृति भाषा से प्रारम्भ होकर राजस्थानी, तत्पश्चात अवधी में आयी लेकिन प्रेमाख्यान परम्परा को ख्याति अवधी ने ही दिलायी। अवधी के प्रेमाख्यान फारसी कविता की मसनवी शैली में लिखे गये। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता, भाईचारा, प्रेम और साम्प्रदायिक सौहाद स्थापित करने में सूफी संतों का बड़ा योगदान है। मुल्ला दाउद, मलिक मोहम्मद जायसी, कुतुबन, मंझन, उसमान, शेखनबी, कासिम शाह, नूर मोहम्मद, शेख निसार, आलम आदि सूफी साधकों ने दुनिया को प्रेम का संदेश अवधी में ही दिया। रहीम के बरवै नायिका भेद की भाषा ठेठ अवधी है। सूफी कवियों के अतिरिक्त अनेक हिन्दू प्रेमाख्यानकारों ने भी अवधी में ही सर्जना की है।

हिन्दी साहित्य की संत साहित्य धारा में अवधी संतों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है । भक्ति काव्य के दो प्रभेद तो प्रायः सर्व स्वीकृत हैं निर्गुण एवं सगुण। अवधी में एक तीसरी धारा भी प्रवाहित रही है जिसमें निर्गुण- सगुण दोनों का समन्वय दिखाई देता है। उत्तर मध्यकाल की - संत

परम्परा में सर्वाधिक पंथ प्रचलित हुए जिनमें सतनामी, नानक पंथ, गुलाल पंथ, साईंदाता, रामसनेही, शिवनारायण आदि सम्प्रदाय प्रमुख है। प्रमुख अवधी संतों में दादू, सुन्दरदास, हरिदास, गरीबदास, तुलसीदास निरंजनी, यारी साहब, भीखा साहब, पल्टू साहब बुल्ला साहब, मलूकदास, जगजीवनदास, धरणीदास, दरियासाहब, दूलनदास, देवीदास, नेवलदास आदि उल्लेखनीय हैं। निर्गुण संतकाव्य धारा के प्रमुख साहित्यकारों में रैदास, धर्मदास, ईश्वरदास, साहेब नेवलदास, बोधेदास, किसोरदास स्वामी राम लग्नानंद आदि की काव्यभाषा अवधी ही है। हिन्दी संतकाव्य पर नाथपंथी कवियों मुख्यतः गोरखनाथ का गहरा प्रभाव पड़ा। गोरखनाथ ने बोलचाल वाली सहज जनभाषा अवधी का प्रयोग किया है। एक उदाहरण प्रस्तुत है-

हँसिबा, बोलिबा रहिबा संग, काम क्रोध न करिबा संग ।
हबकि न बोलिबा डहकि न चलिबा धीरे धरिबा पांव,
गरब न करिबा सहजै रहिबा भनत गोरख राव।

हिन्दी साहित्य की रामकाव्यधारा अवधी की अति विशिष्ट धरोहर है। विगत 6 शताब्दियों में रामकाव्य परम्परा के अधिकांश कवियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति का मूल माध्यम अवधी को ही रखा। गोस्वामी तुलसीदास और उनके राम चरितमानस ने विश्वसाहित्य में हिन्दी को प्रतिष्ठित किया। यद्यपि तुलसी से पहले रामानंद अवधी काव्य सृजन का श्रीगणेश कर चुके थे फिर भी अवधी को शीर्ष पर पहुँचाने का श्रेय तुलसी को ही है। उनके प्रभाववश अनेक कवियों ने अवधी को अपना काव्य माध्यम बनाया। इनमें प्रमुख हैं सूरजदास अग्रदास, नाभादास, लालदास, ईश्वरदास, जानकी, रसिक शरण, रामप्रियाशरण, प्रेमकली, सहजराम वैश्य, प्रयागराज, झामदास, रामचरणदास, महाराज विश्वनाथ सिंह, जनक किशोरीशरण, रसिक अली, बनादास, ललकदास, रामगुलाम द्विवेदी, रघुनाथ दास, हरिदास, सीताराम शरण, सीताप्रसाद, बलदूदास, हनुमान शरण, शीतला सिंह, सीताराम दास, प्रेमहर्षण, मधुसूदन दास, सरयूराम पण्डित नवल सिंह रूद्रप्रताप सिंह आदि ।

अवधी की कृष्ण काव्य परम्परा भी बहुत समृद्ध रही है। भक्तिकाल में तो कृष्णचरित प्रचुरता के साथ लिखा गया आधुनिक युग में भी यह परम्परा समृद्ध है। अवधी के प्रमुख कृष्ण काव्यकार है, जायसी, लालदास, ललक दास, माधव कवि, सबल श्याम, भूपति, मंगलदास, चरनदास, नवलदास, ब्रजवासी मोहनदास, देवीप्रसाद, रघुनाथ दास, महेश अवस्थी, द्वारका प्रसाद मिश्र, रामस्वरूप मिश्र 'विशारद' माधवदास आदि ।

अवधी साहित्य बहुत ही समृद्ध है तथापि आश्चर्य है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में उसे समुचित स्थान नहीं दिया गया। हिन्दी साहित्य की सात मुख्य धाराओं में अकूत अवधी सर्जना हुई है जिसका विहंगावलोकन प्रस्तुत है-

1. अवधी संत काव्य धारा- अवधी काव्य धारा के आदि कवि मुल्ला दाऊद जिन्होंने 1379 ई. में चंदायन प्रबंध काव्य की रचना है। उसके बाद संत कबीरदास (सन् 1665 के लगभग) संत कीनाराम (सं. 1684) संत जगजीवन दास (सं. 1727) सहजराम 18वीं शती, महात्मा बनादास (सन् 1821-1920) संत ललकदास (1880) शीतलसिंह गहरवार, रूद्रप्रताप सिंह, संत अमीर अली संत रामसेवक, देवानन्द साहब, सुखलालदास सतनामी आदि संतों ने अवधी में अनेक आध्यात्मिक रचनाएँ की।

2. अवधी की प्रेमाख्यानक काव्यधारा- मुल्ला दाउद (1379ई.) कुतुबन (1560वि.) मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा 1577 वि. में पद्मावत की रचना, उसमान कवि कृत जवाहिर, ख्वाजा अहमद ने 1962 वि. में नूरजहाँ नामक महाकाव्य की रचना की । अवधी में लिखे गये प्रेमाख्यान के रचयिता प्रायः सभी मुसलमान थे, जिन्होंने फारसी, मसनवी परम्परा को अपना आधार बनाया। लोकप्रचलित तथा

ऐतिहासिक कथाओं को लेकर इन प्रेमाख्यानों का ताना-बाना बुना गया इसके द्वारा अवधी भाषा को साहित्यिक गरिमा प्राप्त हुई। प्रमुख प्रेमाख्यानों में चंदायन (मुल्ला दाउद) मृगावती (शेख कुतुबन) पद्मावत (मलिक मो. जायसी) मधुमालती (मंझन), चित्रावली (उसमान), रतनावली (जनकवि), ज्ञानदीप (शेख नबी) हंस जवाहिर (कासिम शाह) इन्द्रावत (नूर मोहम्मद), अनुराग बांसुरी (नूर मोहम्मद), पुपुपावती (हुसैन अली), नूर जहाँ (ख्वाजा अहमद), कथा कुबरायल (अली मुराद), प्रेमदर्पण (मोहम्मद नसीर) युसुफ जुलेखा (शेखनिसार) आदि प्रमुख प्रेमाख्यानक हैं।

3. अवधी राम काव्य धारा- अयोध्या तथा अवधी भाषा-भाषी क्षेत्र के निवासियों ने तो अवधी में काव्य रचना की ही, सुदूर प्रदेशों में रामभक्तों ने भी अवधी में ही रामकाव्यों की रचना की है। अस्तु अवधी में रामविषयक प्रबंध काव्यों और मुक्तक काव्यों की एक लम्बी और वृद्ध परम्परा विद्यमान है।

गोस्वामी तुलसीदास अवधी के विश्वविख्यात कवि हैं। तुलसी के प्रभाववश अनेक कवियों ने अवधी सर्जना को प्रमुखता दी। इनमें सूरजदास, ईश्वरदास, पुरुषोत्तमदास, अग्रदास, नाभादास, लालदास, बालकृष्ण बाल अली, जानकी रसिक सरन, प्रियाशरण प्रेमकली, सहजराम वैश्य, प्रयागदास, रामसखेजी, सरजूराम पंडित, झामदास, रामचरण दास, शिवप्रसाद, मधुसूदन, कृपा निवास, महाराज विश्वनाथ सिंह, रूद्रप्रताप सिंह, जनकराज किशोरी शरण, रामगुलाम द्विवेदी, नवल सिंह कायस्थ, रघुनाथ दास, जीवाराम, युगलप्रिया, रामसनेही पतित दास, हरिदास, उमापति त्रिपाठी, शीलमणि, रामशरण तिलक, माधव सिंह 'क्षितिपाल', बैजनाथ, जानकीप्रसाद, अनुमान शरण, शीतला सिंह, वृषभानु कुंवरि, 'राम प्रिया', बदलूदास, रामवल्लभ शरण, सियाशरण, सीताराम दास, लालमाधव सिंह, बैजनाथ कुर्मी, चतुर्भुज शर्मा, डॉ महेश प्रताप नारायण अवस्थी, डॉ दीनानाथ शुक्ल, नरेन्द्र शर्मा, आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप', शिवनाथ मिश्र, चन्द्रशेखर सिंह आदि प्रमुख हैं।

4. अवधीकृष्ण काव्य धारा- यह एक भ्रांति है कि रामकाव्य अवधी में लिखा गया और कृष्ण काव्य ब्रज में। इसका प्रमाण तुलसीदास के समकालीन कृष्ण भक्त कवि लक्षदास ने अवधी में दोहा, चौपाई छंद में 'कृष्णरस सागर' की रचना की। इसके पश्चात लगभग पचास कवियों ने आधुनिक युग के पूर्व अवधी में कई कृष्णकाव्य लिखे इस काव्य परम्परा में महाकाव्य, खंडकाव्य और मुक्तक सभी प्रकार के ग्रंथ लिखे । अवधी के प्रमुख कृष्ण काव्यकार हैं। लालदास, मलिक मोहम्मद जायसी, चरनदास, ब्रजवासीदास, माधव कवि, सबल स्याम, भूपति, मंगलदास, चरनदास, नवलदास, ब्रजवासी दास, मोहनदास मंचित, रत्नाकुंवारी बीबी, देवी प्रसाद, गणेश प्रसाद कायस्थ, रघुनाथ दास के साथ ही आधुनिक काल में महावीर प्रसाद नारायण त्रिपाठी, द्वारका प्रसाद मिश्र, रामस्वरूप मिश्र 'विशारद', दारूदयाल गुप्ता, परमानंद जड़िया, डॉ महेश प्रताप नारायण अवस्थी, गुरूप्रसाद सिंह 'मृगेश' आदि प्रमुख है। प्रमुख अवधी कृष्ण काव्यों में कन्हावत,कृष्णरस सागर, विनोद सागर, ब्रज चरित्र प्रेमरत्न, कृष्ण प्रिया, ब्रजवन यात्रा, हरिचरित्र, कृष्ण खंड, कृष्णायन, कृष्णचरित नामक आधा दर्जन प्रबंध काव्य लिखे गये हैं।

5. अवधी रीति काव्य धारा- अयोध्या सिंह उपाध्याय (रस कलश) ब्रजनंदन पाण्डेय, राजेश दयालु राजेश (बरवै हजारा) डॉ देवकीनंदन श्रीवास्तव डॉ महेश प्रताप नारायण अवस्थी, डॉ मुहम्मद अखलाक, डॉ उमाशंकर शुक्ल शितिकंठ'।

6. अवधी की आधुनिक प्रबंध काव्य धारा- महात्मा बनादास, माधव सिंह, हरिपाल सिंह, गदाधर सिंह, महावीर

प्रसाद त्रिपाठी, रामस्वरूप 'विशारद', द्वारिका प्रसाद मिश्र, सत्यधर शुक्ल, आचार्य विश्वनाथ पाठक, परमानंद जड़िया, आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' संकठा प्रसाद सिंह 'देव' आशुतोष श्रीवास्तव आदि।

7. आधुनिक अवधी काव्य धारा

अ. प्रथम उत्थान काल - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पं. प्रतापनारायण मिश्र, रामचरित उपाध्याय ।

ब. द्वितीय उत्थान काल - महावीर प्रसाद द्विवेदी, कल्लू अल्हैत' शिवरत्न शुक्ल सिरस, अवध बिहारी त्रिपाठी 'अवधेश', ब्रजकिशोर पाण्डेय, दयाशंकर दीक्षित 'देहाती'।

स. तृतीय उत्थान - अवधी प्रगतिवादी काव्य

अवधी की वृहद्त्रयी ने आधुनिक काल में अवधी को सर्वाधिक प्रतिष्ठा दिलाई इनमें बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस' पं. वंशीधर शुक्ल और चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका' का नाम आता है। इस त्रयी ने अवधी की भूमि को इतना उर्वर बना दिया कि अवधी पूरे वैभव के साथ साहित्य पटल पर उपस्थित हुई। इसके बाद तो भारत और नेपाल में सभी विधाओं में अवधी सर्जना होने लगी। कुछ प्रतिष्ठित और स्थापित अवधी कवियों साहित्यकारों के नाम इस प्रकार हैं

गुरुप्रसाद सिंह 'मृगेश' (बाराबंकी) आचार्य विश्वनाथ पाठक (फैजाबाद) त्रिलोचन शास्त्री (सुल्तानपुर) केदारनाथ अग्रवाल (बांदा) उमादत्त सारस्वत (सीतापुर) द्वारिका प्रसाद यादव (लखनऊ) लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र' यदुचंद (सीतापुर) कमला चौधरी (लखनऊ) चतुर्भुज शर्मा (सीतापुर) डॉ लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' (लखनऊ) सुमित्रा कुमारी सिन्हा (लखनऊ) चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि' (रायबरेली) सत्यनारायण द्विवेदी 'श्रीश' (फैजाबाद) दूधनाथ शर्मा 'श्रीश' (जौनपुर), डॉ श्याम तिवारी (बस्ती) डॉ देवकीनन्दन श्रीवास्तव 'नन्दन' (प्रतापगढ़) डॉ श्यामसुन्दर मिश्र मधुप और डॉ गणेशदत्त सारस्वत (सीतापुर) लवकुश दीक्षित (सीतापुर) पं. सत्यधर शुक्ल (खीरी), पारस नाथ मिश्र 'पारस भ्रमर' (बहराइच) जुमई खां आजाद (प्रतापगढ़) विकल साकेती (अम्बेडकरनगर) डॉ महेश अवस्थी (प्रयागराज) आद्याप्रसाद मिश्र 'उन्मत' (प्रतापगढ़) काका बैसवारी (उन्नाव) डॉ जयसिंह व्यथित और आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' (सुल्तानपुर) डॉ विद्याविन्दु सिंह (अयोध्या) डॉ अरुण त्रिवेदी (सीतापुर) आनन्द प्रकाश अवस्थी 'नन्हे भैया' (रायबरेली) जगदीश पीयूष (अमेठी) डॉ रामबहादुर मिश्र (बाराबंकी) आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर' और इन्द्रेश भदौरिया (रायबरेली) निर्झर प्रतापगढ़ी और अनुज नागेन्द्र (प्रतापगढ़) मनोज मिश्र 'कप्तान' (श्रावस्ती) विनय विक्रम सिंह (नोयडा) ओम निश्चल (दिल्ली) डॉ उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ' और डॉ अशोक अज्ञानी डॉ सुशील सिद्धार्थ, सच्चिदानंद तिवारी 'शलभ' (लखनऊ) पद्मश्री बेकल उत्साही (बलरामपुर) अरुण तिवारी (अम्बेडकरनगर) ज्ञान प्रकाश 'आकुल' और 'फारूख' सरल (खीरी) आदि ।

प्राचीनकाल में अवधी राजकाज की भाषा थी। अवध क्षेत्र के उन राज्यों में जहाँ अवधी को राजभाषा की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई उनमें बलरामपुर (गोण्डा) और रीवा (म. प्र.) राज्य प्रमुख हैं। राजा दिग्विजय सिंह (बलरामपुर) के राज्य का सारा का सारा काम अवधी में होता था। दैनिक वक्तव्य और राज्यादेश अवधी में प्रकाशित होते थे। एक उदाहरण प्रस्तुत है।

अर्जी गनेश कवि डौडियाखेर (उन्नाव) के ग्रंथ औ
बिदाई पाइबे के हेत तापै महराज को दसखत
अर्जी रघुनाथ पंडित तेवारी कै हित उड़ावरि ।

(सन्दर्भ दिग्विजय भूषण - डॉ भगवती प्रसाद सिंह पृष्ठ 25)

बलरामपुर की कई पुरानी फाइलों में अवधी गद्य-पद्य के प्रयोग आज भी दृष्टव्य है जबकि रीवा सम्बन्धी तथ्य जनश्रुतियों के रूप में प्राप्त है।

ईसाई मिशनरियों ने भी जनमानस में पैठ बनाने के लिए अवधी में बाइबिल का अनुवाद कराया था। एक उदाहरण -

"ईश्वर केरी समंस बातै मनइन केरे उबरिबे व अचरिबे काजे जौन धरम पोथी... मंगल समाचार ग्रीक भाषा तेरे तजुर्बा था श्रीरामपुर मा छापो।" सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को अवधी में पत्र लिखा करते थे - "विजया का असंख्य भूमिष्ठ प्रणाम । लिखा रहे कतौ जाब, मुला जाव नहीं भवा, हियैं रहि गयेन। अष्टमी के दिन मैथिली शरण से भेंट भै। रायकृष्णदास के साथ आये रहैं। एक-एक अनामिका दुनौ जने का दीन । दुसरे दिन हियां प्रेस मा मैथिलीशरण जी आयें औ छंद कै पूछेन, तब पढ़िके सुनावा खुब प्रसन्न भें।"

अवधी के समकालीन परिदृश्य में जहाँ एक ओर अनेकानेक विधाओं में सर्जना हो रही है वहीं अवधी संस्थाएं अवधी भाषा-साहित्य और संस्कृति के संरक्षण संवर्धन में प्रयासरत है, कुछ प्रमुख संस्थाएं इस प्रकार है अवधी परिषद (लखनऊ) अवधी अकादमी (गौरीगंज अमेठी), दिव्या समिति (सुल्तानपुर) अवधी साहित्य संस्थान (अयोध्या) अवधी अध्ययन केन्द्र (लखनऊ) अवध भारती संस्थान (हैदरगढ़, बाराबंकी) अवधी मंच (कादीपुर) अवधी साहित्य संस्थान (अमेठी) बंशीधर शुक्ल स्मारक समिति (खीरी) अवधी सांस्कृतिक प्रतिष्ठान (काठमांडो) नेपाल अवधी विकास मंच, नेपाल अवधी पत्रकार संघ अवधी सांस्कृतिक प्रशिक्षण संस्थान, अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद बांके नेपाल आदि ।

अवधी की अनेक पत्र-पत्रिकाएँ भारत और नेपाल से प्रकाशित हुई। यद्यपि ये दीर्घजीवी नहीं रही लेकिन अवधी पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका योगदान उल्लेखनीय है। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय पत्रिका है '- अवध-ज्योति' (आर.एन.आई. 62763/94) जो अवध भारती संस्थान द्वारा विगत 30 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। इसी संस्था द्वारा 1990 से 1994 तक जोंधइया (अवधी त्रैमासिकी) का प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त अवधी अकादमी गौरीगंज से लोकायन और बोली बानी, अवधी साहित्य संस्थान अयोध्या से 'अवधी', अवधी अध्ययन केन्द्र लखनऊ से 'बिरवा' अमृतायन संस्था से अमृतायन, अवधी मंच कादीपुर से 'आखत' बांके नेपाल से 'अवधी संदेश', घमनिया, गुलाब के फूल जैसी अनियतकालिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई।

अंत में एक विशेष जानकारी देना समीचीन है वह है नेपाल में अवधी। प्रायः भारतीय विद्वानों का ध्यान नेपाली अवधी पर कम गया है जबकि नेपाल में अवधी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। नेपाल के भारतीय सीमा से सटे जनपदों में अवधी बोली जाती है। नेपाल सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने प्राथमिक कक्षाओं में कक्षा 1 से लेकर कक्षा 5 तक हमार भाषा अवधी नामक पाठ्य पुस्तक तैयार की है ।

साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा और सामाजिक जागरूकता विषयक पाठ्य सामग्री तैयार की गयी है। नेपाल में कई अवधी संस्थाएँ कार्यरत हैं, जो प्रतिवर्ष अवधी केन्द्रित सेमिनार आयोजित करती है।

नेपाल में प्रमुख अवधी काव्य कृतियाँ इस प्रकार धूप-छांव (कवि धर्मात्मा शुक्ल), भगवान बुद्ध चरित (सच्चिदानन्द चौबे), अहिल्या खण्ड काव्य (प्रो. विष्णुराज आत्रेय, सिंगीघाट महाकाव्य (विष्णुराज आत्रेय), पूनम के चाँद (राम गोपाल यादव), अवधी गीत (श्यामानंद चौबे), कथा साहित्य के अन्तर्गत हमार गाँव (विक्रममणि त्रिपाठी), अवधी बाल अवधी बाल कथा (विश्वनाथ पाठक, रामचन्द्र पाण्डेय, विक्रममणि त्रिपाठी), लोकहितकारी खीसा (दीपक कुमार यादव), जल समाधि उपन्यास (लोकनाथ वर्मा)।

नेपाल के अवधी साहित्य में निबन्ध विधा की भी

सर्जना हुई है। वहाँ हिन्दी के महत्वपूर्ण निबन्धकारों का अवधी में अनुवाद भी किया गया है। प्रमुख अवधी निबन्धकारों में तपानाथ शुक्ल, विश्वनाथ पाठक, विक्रममणि त्रिपाठी, रामचन्द्र लोहर, हंसावती कुर्मी, भगवान चिराग आदि प्रमुख है।

निबन्ध के अतिरिक्त यात्रा संस्मरण, जीवनी डायरी, पत्र साहित्य आदि अवधी में लिखे गये। नेपाल सरकार ने स्वाध्याय, प्रौढ़ शिक्षा, चिकित्सा, साक्षरता जैसे विषयों पर अनेक पुस्तकों को अवधी में प्रकाशित कराया हैं, जिनका विवरण इस प्रकार हैं -

1. अवधी संस्कृति (व्रत औ तिउहार संवत 2066) विक्रममणि त्रिपाठी, विश्वनाथ पाठक।
2. हमहू पढ़ब औ मनन करब (परिवार समाज औ गाँव कै विकास संवत 2066) विक्रममणि त्रिपाठी।
3. हमहू पढ़ब औ सिखब औ करब (समूह योजना व्यवसाय संवत 2063) विक्रममणि त्रिपाठी।
4. हमहू जानब औ ध्यान देब (मानव शरीर औ स्वास्थ्य संवत 2066) विक्रममणि त्रिपाठी।
5. हमहू पढ़ब औ करब (गिरधारी काका औ पेड़ बातचीत संवत 2066) विक्रममणि त्रिपाठी।
6. अवधी संस्कृति-प्रकाशक नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान संवत 2069

सारांशतः अवधी का साहित्य हिन्दी के समानान्तर ही समृद्ध है। जिस प्रकार से अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण हिन्दी प्रभावित हो रही है, वही प्रभाव अवधी पर भी है। हिन्दी की समृद्धि में अवधी की शब्दावली, कहावतें, मुहावरें और उसका लोकसाहित्य बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते। इस दिशा में शासन प्रशासन और स्वयं सेवी संस्थाओं की भूमि प्रभावी होनी चाहिए।

सम्पर्क सूत्र- आर. एन. नगर
अर्जुन गंज, लखनऊ- 226002
मो0- 9450063632/9198776815

धनवानो के हाथ में माप ही एक है, वह विद्या, सौन्दर्य, बल पवित्रता और तो क्या, हृदय भी उसी से मापते हैं। वह माप है- उनका ऐश्वर्य।

-जयशंकर प्रसाद

चरणों में दे मुझे बसेरा

➲ आ0 विष्णुकान्त शास्त्री

राम- कृपा के बिना बने मन निर्मल कैसे
निज प्रयास तो घृत के हित जल-मंथन जैसे।
प्रतिक्षण चलती ही रहती मन की उधेड़बुन
दुष्ट मनोरथ करता रहता ऐसे-वैसे।।

रात दिवस मैं जूझ रहा अपने ही मन से
भोग लालसा प्रेरित इसके पागलपन से।
इसे नहीं यह ज्ञात कि यह तो भ्रांति सुखों की,
असली सुख तो मिलता निश्छल प्रभु-चिंतन से।।

यह कठिन आघात भी तेरी कृपा है,
मेघ, उल्का - पात भी तेरी कृपा है।
है यही विश्वास अनुभवजनित मेरा
क्रूरतम संघात भी तेरी कृपा है।।

तू अमंगल वेश में मंगलमयी है,
क्रोध की तो भूमिका, करुणामयी है।
तू कराती तप, रुला उर द्रवित करती,
प्रभु कृपा तू सच बड़ी क्रीड़ामयी है।।

मैं न दहलूँगा भयानक रूप लखकर,
भले उसको देख सबका मन दहल ले।
दृष्टि दी गुरु ने तुझे पहचानने की,
प्रभु-कृपा तू रूप चाहे जो बदल ले।।

साँस-साँस में रटूँ राम मैं नाम तुम्हारा
साँस-साँस में बुनूँ रूप मैं राम तुम्हारा
साँस-साँस में झलकाओ तुम अपनी लीला
साँस-साँस में रमो बने यह धाम तुम्हारा

औरों के हैं जगत् में स्वजन, बन्धु, धन, धाम।
मेरे तो हैं एक ही सीतापति श्रीराम।।

जीवन का पथ कितना दुर्गम रह-रह कर सिहरू,
हर ऊँची-नीची घाटी में, तुमको याद करूँ ।
चूर-चूर तन, साँस धौंकनी, बढ़ता हूँ फिर भी
तुम मेरे रक्षक हो स्वामी, तब क्यों कहीं डरूँ ।।

राम प्राण की गहराई से तुम्हें नमन है,
कृपा पा सकूँ नाथ तुम्हारी इतना मन है।
यह जग ज्वाला क्या बिगाड़ सकती है मेरा
नाम तुम्हारा, सब तापों का सहज शमन है।।

राधेश्याम बन्धु के तीन नवगीत

संशय की अमरबेल

रिश्तों की शाखों पर
संशय की अमरबेल मत पालो
ममता की क्षमता से
दुविधा की दूरी को कस डालो,

अपनों की घातों से
मुस्काने घायल है
मौन हुई बाहों में
मिलनों की पायल है
चांहों की बांहों में
सपनों के इन्द्रधनुष रच डालों,

सन्नाटा ठहरा है
अन्तर की घाटी में
छन्द नहीं उगते अब
आंसू की माटी में
माथे की शिकनों
में खोये सम्बन्धों को दुलरा लो,

संग्या की भूलों को
सर्वनाम सुलझाता
नदियों की नादानी
महासिन्धु पी जाता
मिलनों की बाहों में
रूठे विश्वासों को सुलझालो।

सागर भर विश्वास

सागर भर विश्वास दिया है
सारी रात जागना होगा
मिलनों का अहसास दिया है
सारी रात जागना होगा,

मैं' से तुम' तक सब दूरी
पलक झपकते मिट जाती है
मन से तन तक की मजबूरी
पलक झपकते मिट जाती है
सुधियों का भुजपाश दिया है
सारी रात जागना होगा,

एक लहर के लिए कूल को
तिल-तिलकर नित गलना होता
एक मिलन के लिए दिये को

रात-रात भर जलना होता
मधुऋतु का आभास दिया है
सारी रात जागना होगा,

एक नीद के लिए सिपाही
को सब नीद त्यागनी होती
कभी एक पाहुन की खातिर
सौ तकलीफ उठानी होती,
तुमने दिल में वास किया है
सारी रात जागना होगा।

धूप के कम्बल

तुम मिले तो आ गये फिर
संधियों के पल
चुप्पियों के शिविर में भी
एक है हलचल,

कौन पढ़ पाया अभी तक
प्यार की भाषा
तय न हो पाई अभी तक
सुख की परिभाषा
खोजते ही रह गये हम
आंसुओं के हल,

छुड़ाकर जाते कहां हो
रोशनी की बांह
मिली है किसको सदा ही
गुलमोहर की छांह,
उलझनों में खो न देना
नेह के सम्बल,
रूप के बाजार में कुछ
खो गये अपने
लौट आये शहर से
हारे थके थके सपने,
सर्दियो में भोर लायी
धूप के कम्बल।

डी-3/163, यमुना विहार
दिल्ली- 110053
मो0- 9868444666

नारायण संसार में, भूपति भये अनेक।
मैं मेरी करते रहे, लै न गए तृन एक।।
नारायण जिन के भवन विधि सम भोग विलास
अंत समय सब छाँड़ि के भए काल के ग्रास
- नारायण स्वामी

प्रेरक कथा हैं राम

➲ डॉ0 प्रेमशंकर त्रिपाठी

नीति, निष्ठा, भक्ति हैं श्रीराम,
स्नेह हैं, अनुरक्ति हैं श्रीराम।
शील के, सौन्दर्य के आगार,
शौर्य की अभिव्यक्ति हैं श्री राम।।

पीड़ितों की निज व्यथा हैं राम,
न्यायप्रिय शासन व्यवस्था राम।
लोक में आदर्श के प्रतिरूप,
त्याग की प्रेरक कथा हैं राम।।

सद्गुणों से युक्त करते राम,
दुर्गुणों को लुप्त करते राम।
भक्त जन पर कर कृपा की वृष्टि,
संकटों से मुक्त करते राम।।

ओज की प्रतिमूर्ति हैं श्रीराम,
तेज की सम्पृक्ति हैं श्रीराम।
पराक्रम के शौर्य के पर्याय
निर्बलों की शक्ति हैं श्री राम।।

परिजनों के प्राणप्यारे राम,
गुरुजनों के भी दुलारे राम।
गिरिजनों, वनजनों के आत्मीय
सूर्यकुल के हैं उज्यारे राम।।

राष्ट्र का सम्मान हैं श्री राम,
धर्म की पहचान हैं श्री राम।
हैं हमारी आस्था का केन्द्र
स्वयं हिन्दुस्तान हैं श्री राम।।

सम्पर्क सूत्र- आशीर्वाद अपार्टमेण्ट
CA-5/10 देश बन्धुनगर
बागुईहाटी, कोलकाता- 700059
मो0- 9830613313

नवीन शुक्ल की चार गजलें

गुमान में क्या

खून बाकी बचा किसान में क्या
इस बरस देंगे वो लगान में क्या
चर रहे है मवेशी खेतों में
सो रहा है कोई मचान में क्या
आएगा कैसे बोलना तुमको
एक नश्तर चुभे ज़बान में क्या
सारी धरती ही बेच डाली है
अब निगाहें हैं आसमान में क्या
मज़हबी रंग चढ़ गया कैसे
ज़िन्दगी आ गई ढलान में क्या
जितनी इज़ूज़त गवां के बैठे हो
उतनी दौलत मिलेगी दान में क्या
मुल्क सोने की चिड़िया कल था 'नवीन'
अब तलक हो उसी गुमान में क्या

और हम हैं

नशे में कारवाँ है और हम है
हमारी दास्ताँ है और हम हैं
ज़मीनों पर है क़ब्ज़ा हाकिमों का
बचा इक आसमाँ है और हम हैं
यही फुटपाथ मजबूरी है अपनी
उजड़ता आशियाँ है और हम हैं
लगा कर आग खुश है सारी बस्ती
नशीला सा धुआँ है और हम हैं
हमारी प्यास अब कैसे बुझेगी
शराफ़त का कुआँ है और हम हैं
सितारा अपनी मुट्ठी में न आया
तुम्हारी कहकशां है और हम हैं
'नवीन' अब फैसले की आस टूटी
अदालत बेज़बाँ है और हम हैं।

सीमित हैं हमारे

सभी दायित्व अंकित हैं हमारे
मगर अधिकार सीमित हैं हमारे
मुसीबत में कोई चेहरा नहीं है
बहुत से लोग परिचित हैं हमारे
शराफत, सच, अदब, तहजीब, तालीम
कई कीटाणु जीवित हैं हमारे
हमारा हौसला ही क्या करेगा
सभी सैनिक पराजित हैं हमारे
हमारी क्रांति कब की मर चुकी है
सुमन श्रद्धा के अर्पित हैं हमारे
हमारे पुण्य की गठरी न खोलो
बहुत से पाप अर्जित हैं हमारे
नहीं कहने की पाबन्दी है हम पर
'नवीन' इतने कहाँ हित हैं हमारे

तो मत आना

अमीरी का तुम्हें जलवा दिखाना हो तो मत आना
तुम्हारे साथ गर सारा ज़माना हो तो मत आना
ज़बाँ बन्दी के हम कायल नहीं हैं, सच बताएंगे
ज़बाँ पर सख़्त पहरे ही लगाना हो तो मत आना
गली कूचों से मातम की सदाएँ अब भी आती है
तुम्हें इस शहर में खुशियाँ मनाना हो तो मत आना
जो अपने हैं तुम्हारी हरकतों से रूठे बैठे हैं
मनाना हो तो आ जाना, सताना हो तो मत आना
यही बस काम है अपना बसाना उजडे लोगों का
तुम्हारे पास गर कोई बहाना हो तो मत आना
हमारी महफिलों में लोग सब से खुल के मिलते है
अना महफूज रखना और बचाना हो तो मत आना
'नवीन' उल्फत के पौधे रोपने है अपनी बगिया में
हवस के पेड, कांटे जो लगाना हो तो मत आना।

सम्पर्क सूत्र- 227 विजय नगर,
कानपुर रोड, लखनऊ - 226023
मो0- 9415094450

जब समाज कलाकार के किसी भी स्वप्न का मूल्य नहीं आंकता किसी भी आदर्श को जीवन की कसौटी पर परखना स्वीकार नहीं करता, तब साधारण कलाकार तो सब कुछ धूल में फेंककर रूठे बालक के समान क्षोभ प्रकट कर देता है और महान समाज की उपस्थिति ही बुलाने लगता है।

- महादेवी वर्मा

ममता किरण की सात गजलें

ममता किरण

छांट लिया है मैंने

जिंदगी तुझसे कभी कुछ न कहा है मैंने
रंग जो रब ने दिये उनको जिया है मैंने।
कड़वे बोलों को कई बार सुना है मैंने
अपने होठों को कई बार सिया है मैंने।
है मुनासिब जो चलन जोड़ लिया है उनको
जिनका औचित्य नहीं छोड़ दिया है मैंने।
मेरी शोहरत जो देखते हैं उन्हें क्या मालूम
कितने संघर्षों का भी स्वाद चखा है मैंने।
नारियल की ही तरह सख़्त हैं वो ऊपर से
दिल है मीठी सी गिरी जान लिया है मैंने।
तब कहीं जा के मिली थोड़ी सी रंगत उसको
पेड़ के दिल से हरेक कांटा चुना है मैंने।
उसको कब याद किया, कैसे बिताया दिन को
ख़त किसी अपने को हर रोज़ लिखा है मैंने।
नींद के पहलू में बैठा हो जो सारा आलम
शोर सन्नाटे का रातों में सुना है मैंने।
दोस्त एफ. बी पे जुड़े तो हैं हज़ारों ए 'किरण'
कौन सच्चे हैं उन्हें छाँट लिया है मैंने।

लिख दिया चट्टान में

हर घड़ी तुम हो हमारे ध्यान में
कोई ये चुपचाप कहता कान में।
उसकी बोली से चहक जाता है घर
जब परिंदा आये रौशनदान में।
ख़ैरियत का फोन उसकी आ गया
जान आयी तब हमारी जान में।
दिन वो स्मृतियों में ही बस रह गये
सूखते पापड़ थे जब दालान में।
पीठ-पीछे वार क्यूँ करते हो तुम
दम है तो आओ ज़रा मैदान में।
ध्यान उसने जिंदगी में ये रखा
कोई बट्टा लग न जाए शान में।
किस कदर हुलिया तुम्हारा बदला है
आ रहे हो तुम नहीं पहचान में।
प्यार को अपने अमर ऐसे किया
नाम उसका लिख दिया चट्टान में।

सजी है दुनिया

जाने कितने ही सवालों से घिरी है दुनिया
फिर भी परवाह नहीं करती कभी है दुनिया।
इसके तो पाँव में लगता है कि चक्कर कोई
रात-दिन चलते हुए भी न थकी है दुनिया।
धर्म तो प्रेम की ही बात सिखाता है मगर
धर्म के नाम पे लड़ने को तुली है दुनिया।

ज़लज़ले ज़िंदगी में आते हैं दुनिया की भी
अपनी सीरत से कभी भी न बुझी है दुनिया।
ये तो चलती ही सदा रहती है अपनी धुन में
कब मेरे और तेरे दुःख में रुकी है दुनिया।
आप क्या जानें हरिक राह थी दुर्गम उसकी
जाने कितनी ही दफ़ा उसकी हिली है दुनिया।
गोला-बारूद लिए बैठे हैं हाकिम अब तो
आज ये कैसे मुहाने पे खड़ी है दुनिया।
फूल, तितली, नदी, चिड़िया, घटा, झरने, पर्वत
खूब कुदरत के नज़ारों से सजी है दुनिया।

पार होते हैं

सामने जब भी मेरे मझधार होते हैं
नाम रब का ले के अक्सर पार होते हैं।
यूँ ग़ज़ल में कितने ही अशआर होते हैं
शेर लेकिन कुछ ही सच्चे यार होते हैं।
हर घड़ी सबकी मदद को रहते हैं तैयार
सच में ऐसे लोग ही दिलदार होते हैं।
पास बच्चे रहते हैं तो लगता है ऐसा
रोज़ ही जैसे कि बस त्योहार होते हैं।
मेहरबानी बादलों की हो जो खेतों पर
फ़स्ल अच्छी होने के आसार होते हैं।
इक अलग ही दृष्टि मिलती उनको है रब से
लिख समय का सच कहानीकार होते हैं।
जिसकी जैसी आस्था उसको दिखे वैसा
पत्थरों में राम के दीदार होते हैं।
ठगते हैं वो आपको बस मीठी बातों से
बच के रहना ऐसे जो किरदार होते हैं।

बाज़ार में

बाजार दिखायी न दे धूम घर-बार में
हैं त्योहार अब सिर्फ़ बाज़ार में।
तुम्हें याद दुनिया रखेगी भी क्यूँ
किया ऐसा क्या काम संसार में।
जुदा उनसे कर ले तू अपनी डगर
गवाँ वक्त मत उनसे तकरार में।
वो बातों से दिल जीत लेता है पर
है रूखा बहुत अपने व्यवहार में।
यही हाल है अब मुखौटे लगा
बशर मिलते हैं कितने किरदार में।
न उठना था जल्दी न स्कूल था
थी मस्ती भी कितनी ही इतवार में।

शिकार है दुनिया

श्वास का ही क़रार है दुनिया
मौत का इंतज़ार है दुनिया।
तुझको खिलना गुलाब सा ही है
हमने माना कि ख़ार है दुनिया।
तू जो होता है साथ मेरे तो
रसभरी इक फुहार है दुनिया।
चाँद, तारे, घटा औ गुल तितली
खूबसूरत बहार है दुनिया।
मन में होती है जब ख़लिश कोई
ऐसा लगता है भार है दुनिया।
जिसने खुद को बताया बढ़-चढ़ के
उसपे ही अब निसार है दुनिया।
हर कोई भागता नज़र आता
जाने किस रथ, सवार है दुनिया।
दुख जो आया तो तू हुआ तनहा
कब हुई ग़मगुसार है दुनिया।
व्हाट्सएप की है ये भी इक करतूत
झूठ की अब शिकार है दुनिया।

दोस्ती महसूस हो

जब भी तुमको ज़िंदगी अपनी बुझी महसूस हो
कुछ नया सोचो कि जिससे ताज़गी महसूस हो।
जब पिता गुज़रे तो माँ ने परवरिश की इस तरह
ये न हो बच्चों को पापा की कमी महसूस हो।
धन नहीं बस चाहिए थोड़ा समय औलाद का
माँ-पिता को बात कर ही बस खुशी महसूस हो।
रोप देना बीज वो, बस प्यार ही फूले-फले
जिस जगह भी तुमको थोड़ी सी नमी महसूस हो।
पीटते हैं वो ढ़िढ़ोरा की अता है रोशनी
रोशनी दी है अगर तो रोशनी महसूस हो।
दूर कर लोगे अगर, निश्चित सफ़लता है तेरी
तुझमें है जो भी कमी गर वो कमी महसूस हो।
बोलबाला अब है हिंसा और नफ़रत, झूठ का
हर बशर को जिंदगी अपनी घुटी महसूस हो।
बोलते हो झूठ कितना पर कभी ऐसा न हो
सामना जब खुद से हो शर्मिंदगी महसूस हो।
बांट लो दुख-दर्द उनका, जिनका कोई है नहीं
जिंदगी में कुछ तो उनको ज़िंदगी महसूस हो।
कोना-कोना खिल गया घर आयी जब नन्ही परी
मुस्कुरा देती है तो इक रोशनी महसूस हो।
काम वो आया नहीं मेरी मुसीबत में 'किरण'
दोस्त सच्चा है तो फिर ये दोस्ती महसूस हो।

सम्पर्क सूत्र- बी. 204
कृष्णा गार्डन अपार्टमेंट
सेक्टर 19 बी, नई दिल्ली
पिन- 110075

पंच महाभूतों से बनी हुई वस्तुओं में प्राणी श्रेष्ठ है। प्राणियों में बुद्धिजीवी उत्तम है, बुद्धि से काम करने वालों में मनुष्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में भी वे श्रेष्ठ हैं जिनकी बुद्धि जाग्रत है और जो उसका सदुपयोग करते हैं।

बुद्धि माया की माँ है, जहाँ
जाती है बेटी को साथ ले
जाती है

- सुदर्शन

खामोशी

➲ मोनिका जैन

ख़ामोशी क्यों कभी ख़ामोश नहीं रहती ?
मन के समंदर में
उठते हैं तूफ़ान
और उमड़ती हैं अनगिनत लहरें
किनारों की तलाश में
पर हर लहर को किनारों का
सहारा नहीं मिलता।
ख़यालों के गणित में
उठते हैं अनगिनत सवाल
अबूझे और असुलझे
जवाबों की तलाश में
पर हर सवाल के नसीब में
सुलझा कोई जवाब नहीं होता।
क्यों उलझनों में उलझा मन
सुलझने की चाह में
और उलझ जाता है
क्यों मन की लहरों का तूफ़ान
थमने की बजाय
और उबल जाता है।
खुद जवाब ही कभी -कभी
समय के झंझावातों में उलझ
सवाल बन जाते हैं
लहरों से टकराते - टकराते
सागर के किनारे भी
एक दिन बदल जाते हैं।
इस ख़ामोशी में छिपे हैं
सैकड़ों अहसास
चाहते हैं बोलना बेहिसाब
सुबकते हैं, चिल्लाते हैं,
शोर मचाते हैं
कुछ ना कहकर भी
कितना कुछ बोल जाते हैं।
दर्द भी है, तकरार भी है
इस ख़ामोशी में कई चुप्पे
इकरार भी हैं
ना जाने कितने महरूम ख़्वाबों की
ये सख़्त पहरेदार भी है।
कभी छलकती है आँखों से
कभी होंठों पे दम तोड़ जाती है
कभी तड़पती है बातों में
कभी कलम से कागज़ पर उतर आती है
कितना कुछ कहती है ये ख़ामोशी
फिर भी सदा खुद को बेचैन पाती है।
तूफ़ान के आने से पहले और
तूफ़ान के जाने के बाद भी
अश्कों के बहने के साथ और
आँखें सूख जाने के बाद भी
शोर भरे दिन में
और सन्नाटे की रात में भी
ना जाने कितना दर्द ख़ामोशी है सहती
ख़ामोशी क्यों कभी ख़ामोश नहीं रहती?

सम्पर्क सूत्र- 58 आजाद नगर,
वॉटर रोड कॉलोनी,
किशन वाटिका के पास
भीलवाड़ा, राजस्थान- 311001
मो0- 8209372548

कैसे-कैसे चक्रव्यूह

➲ भगवती प्रसाद द्विवेदी

आज बालदिवस है। बालमन के स्वच्छंद विचरण का दिन। इन्द्रधनुषी सपनों को पर लगने का दिन। दम-खम और हौसलों के साथ उड़ान भरने का दिन। अंकल कलाम ने भी तो कहा था कि हमें सपने देखना चाहिए- ऐसे दिवास्वप्न, जो हमें सोने न दें। उन्होंने तब तक हिम्मत न हारने की बात कही थी, जब तक मंजिल खुद आकर कदम न चूमने लगे। मगर जब वह कूड़े-कचरे से रद्दी कागज - प्लास्टिक चुनते बच्चों की कूड़ेदान-सी बजबजाती ज़िन्दगी को देखता है तो सहसा उदास हो जाता है। ऐसा लगता है मानो राहु-केतु के शिकंजे में जकड़ा शीतल चाँद काल कोठरी में कैद होकर इटपटा रहा हो। सचमुच, कितना खतरनाक होता है सपनों का मर जाना।

बंटी स्वयं भी तो एक काल कोठरी में लम्बे अरसे से रहने को अभिशप्त है। हालाँकि इसे 'बाल सुधार गृह' का नाम दिया गया है, मगर इस यातना शिविर में उसने जिन यातनाओं को झेला है उन्हें शब्दों में बयान- बखान नहीं कर सकता। यहाँ भी बाहर की दुनिया के ही रंग-ढंग देख उसे बेहद हैरानी होती है। चंद प्रभावशाली दबंगों की यहाँ भी चाँदी कटती है। उनके ऐशो-आराम के क्या कहने। जिसकी लाठी, उसकी भैंस। शेष सभी की नियति है - अमानवीय अत्याचार झेलना, आए दिन अप्राकृतिक यौन शोषण का शिकार होना। जबरा मारे भी और रोने भी न दे। अन्दर-ही-अन्दर घुट-घुटकर जीना क्या होता है, बंटी हर क्षण ऐसा ही महसूस करता है।

यहाँ के तमाम लोग गाहे-बगाहे उसे कुरेदना चाहते हैं। मगर शायद उन्हें नहीं पता कि ज़ख्म को बार-बार कुरेदकर हरा करने की पीड़ा क्या होती है। बेरहम प्रशासनिक अधिकारियों को तो छेड़ने में मज़ा आता है। चिड़िया की जान जाए, बच्चों का खिलौना। ठीक ही कहा गया है- जाके पाँव न फटी बिवाई, सो का जाने पीर पराई।

बंटी को खुद ही हैरानी होती है कि वह कैसे एक-एक कर चक्रव्यूह में फँसता चला गया। होश सँभालते ही उसकी दिली ख्वाहिश थी कि वह भी अन्य बच्चों की भाँति खेले - कूदे, पढ़े-लिखे और आज़ाद जिन्दगी जिए। मगर मम्मी-डैडी की जिद ने उसे असहज जीवन जीने को मज़बूर कर दिया था। मम्मी चूँकि फिल्मों में छोटी-मोटी भूमिकाएँ निभा चुकी थीं, अतः मम्मी-डैडी की फिल्मवालों में अच्छी धाक थी। फिर तो जन्म के कुछ माह बाद से ही वह फिल्मों में काम करने लगा था। कभी पालने में झूलता दिखाया जाता, तो कभी किसी की गोद में हँसता-किलकता। फिर डग भरते, कुलाँचें भारते और तुतलाते हुए, विज्ञापन फिल्मों से उसकी फिल्मी यात्रा शुरू हो गई थी।

बात उन दिनों की है, जब बतौर बालकलाकार बंटी की चर्चा होने लगी थी। एक रोज़ वह अभी दोस्तों के

साथ लॉन में क्रिकेट खेलने की तैयारी कर ही रहा था कि मम्मी वहाँ आ धमकी थीं। मम्मी को वहाँ खड़ी देखकर एकाएक सकपका गया था वह। फिर सहज होते हुए पूछ बैठा था, "क्या है मम्मी ?"

"बंटी!" मम्मी ने कड़े लहजे में कहा था, "क्या तुम अब तक तैयार नहीं हुए? हम लोग अन्दर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे और तुम हो कि ...

अब तो बंटी को काटो तो खून नहीं ! उसे तो याद ही नहीं था कि उस दिन उसे शूटिंग के लिए जाना था। इसीलिए उसने दोस्तों को क्रिकेट खेलने के लिए बुला लिया था।

"अम्मी! क्या आज का कार्यक्रम स्थगित नहीं हो सकता ..." बंटी ने अनमने भाव से कहा था, "आज मेरा बिलकुल मूड नहीं है।"

"मूड.....हुँह !" मम्मी ने मुँह बिचकाकर कहा था, "क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे इस मूड न होने की हालत में प्रोड्यूसर के कितने पैसे बेकार चले जाएँगे। हमें जो घाटा होगा सौ अलग"

"मगर मम्मी...!"

"क्या बात है? क्यों बहस हो रही है?" बंटी आगे कुछ कह पाता कि अचानक वहाँ आकर डैडी बोले थे।

"आपके लाडले का आज शूटिंग के लिए बिलकुल मूड नहीं है, समझे?" मम्मी ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा था।

"मूड नहीं है तो बन जाएगा, "डैडी ने मुस्कान हुए कहा था, "चलो, जल्दी तैयार हो जाओ।"

अब तो ना-नुकुर करने का सवाल ही नहीं था। बंटी ने मन मसोसकर अपने दोस्तों की ओर देखा था, फिर आहिस्ता- आहिस्ता मम्मी-डैडी के पीछे-पीछे हो लिया था।

मम्मी-डैडी के साथ कार में बैठकर बंटी शूटिंग-स्थल की ओर चल पड़ा था। रास्ते भर उसने चुप्पी साध रखी थी। यह बात उसकी समझ से परे थी कि मम्मी-डैडी उसे जबरन फिल्मी कलाकार बनाए रखने पर ही क्यों तुले हुए हैं? कितनी जकड़न और सख्त पाबन्दी है यहाँ। न वह आज़ाद होकर अपनी मरजी से कहीं घूम-फिर सकता है, न किसी के साथ घुल-मिलकर अंतरंग हो बतिया ही पाता है। कितनी कड़ी पहरेदारी रहती है मम्मी-डैडी की!

मगर बालकलाकार के रूप में फिल्मों में काम करते हुए उसे कितनी परेशानी होती है, यह सिर्फ़ वही जानता है। डाइरेक्टर उसे बार-बार समझाता है-कभी लाड़-प्यार से, तो कभी डाँट-डपटकर। मम्मी-डैडी भी तो निर्देशक का ही साथ देते हैं और कभी-कभी तो मार भी बैठते हैं।

एक दफा बंटी को रुआँसी सूरत बनाकर रोना था। डाइरेक्टर बार-बार समझा रहा था -- मान लो, परिवार में कोई मर गया है... मगर बंटी के अंतर्मन में करुणा का भाव पैस नहीं हो रहा था। वह झूठ-मूठ ही कैसे मान लें कि उसके परिवार में ऐसा हादसा हो चुका है। ग्लिसरीन की वज़ह से उसकी आँखें ज़रूर गीली हो गई थीं, परन्तु वह भराई हुई आवाज़ और रुदन का स्क्रू कहाँ से लाए ?

बंटी ने उस रोज़ निर्णय कर लिया था कि जान-बूझकर कतई नहीं रोएगा वह। पर परेशान होकर डैडी ने उसे कई तमाचे जड़ दिये थे और तब उसे सचमुच रुलाई आ गई थी।

उन दिनों बंटी की जब भी कोई फिल्म रिलीज होती, लोग उसके सहज अभिनय की तारीफ करते। मगर उस सहज अभिनय के लिए उसे बेहद असहज ज़िन्दगी जीनी पड़ती थी। बंटी जहाँ भी जाता था, जिज्ञासु दर्शक उससे तरह- तरह के सवाल पूछा करते थे और वह पसीना-पसीना हो जाता था। मम्मी- डैडी परछाई की तरह सदा ही उसके साथ लगे रहते। मगर उसकी दिली इच्छा होती कि वह अकेला टहले, दोस्तों के साथ घूमे फिरे, खेल-कूदे तथा अपने ढंग से जिए। लेकिन उसके खेल का

मैदान तो फिल्मी स्टूडियो को ही बना दिया गया था। उसे बार-बार कचोट होती गली-मोहल्ले के नौनिहालों को देखकर। उसको लगता, उससे बेहतर तो वे नंग-धडंग बालक हैं, जो देश-दुनिया से बेफ़िक्र हो स्वच्छंद जीवन जी रहे हैं।

बंटी के मानसपटल पर आज भी उस दिन की स्मृतियाँ हू-ब-हू अंकित हैं, जब वह मम्मी-डैडी के संग फिल्म की शूटिंग के लिए निकला था। उसका मन-मस्तिष्क ख्यालों में ही खोया हुआ था। क्या उसका सम्पूर्ण जीवन बेसिर-पैर की फिल्मों में कृत्रिम व नाटकीय अभिनय करते हुए ही गुजर जाएगा कब तक माँ- बाप के लिए वह धन कमाने वाला मशीनी रोबोट बना रहेगा ?

ज्योंही वह गाड़ी से बाहर निकला था, उसके सामने उसका एक परिचित फिल्मी कलाकार आ पहुँचा था। दिनकर। हाँ, यही नाम तो था उसका। दो-चार साल पहले तक वह भी बाल कलाकार था। बंटी ने उससे हाथ मिलाकर पूछा था, कैसे हैं आप ?

"मत पूछो यार! " उसने रुआँसा होकर कहा था, "बहुत बुरी हालत है। जब बड़ों की भूमिका माँगो, तो जवाब मिलता है- "अभी तो तुम बच्चे हो! और जब बच्चे की भूमिका के लिए कहते, तो बेरुखी से जवाब मिलता है– 'अब तो तुम बड़े हो गए हो !' धोबी का कुत्ता, न घर का, न घाट का ! घरवालों ने भी बहुत कोशिश की कि मैं बच्चा ही बना रहूँ और इसके लिए दवाइयाँ खिलाई गईं, इंजेक्शन दिये गये। मगर बढ़ती उम्र के साथ आने वाले बदलाव को भला कब तक रोका जा सकता था।"

बंटी को काटो तो खून नहीं । उसका चेहरा एकाएक उदास और पीला पड़ गया था। उसे भविष्य की दुश्चिंताएँ सताने लगी थीं। आज उसकी तारीफ हो रही है, काम मिल रहा है। किन्तु किशोरावस्था के बाद वह भी फिल्मों से दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिया जाएगा। तब वह कहाँ जाएगा ?

"क्या बात हो रही है?" डैडी ने उन दोनों के बीच में आकर कहा था।

बंटी एकाएक फफक-फफक कर रोने लगा था, "डैडी ! मुझसे मेरे खेल का मैदान मत छीनिए। जमकर मेरी पढ़ाई- लिखाई होने दीजिए। फिल्मों में काम पाकर मैं बेमौके ही हँसना- रोना, चीखना-चिल्लाना नहीं चाहता। कुछ वर्षों में मैं भी जब बच्चा नहीं रह जाऊँगा, तो मुझे यहाँ से निकाल बाहर कर दिया जाएगा - मेरे इस बड़े भाई दिनकर की तरह। इस चार दिन की चाँदनी की चकाचौंध की खातिर मैं जीवन-भर के लिए अंधकार नहीं खरीदना चाहता। इसलिए मुझे यह कृत्रिम ज़िन्दगी कतई पसन्द नहीं है।"

"यह क्या कह रहे हो, बेटे ! तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?" डैडी ने बात काटते हुए हैरत से पूछा था।

"हाँ डैडी ! मैं बिलकुल ठीक हूँ। पूरे होशो हवास में, कह रहा हूँ। मुझे पढ़ने दीजिए, डैडी। बंटी ने कातर दृष्टि से देखते हुए कहा था, " मैं कभी-कभार अभिनय करूँगा जरूर, मगर शौकिया । बचपन तो अनमोल होता है न! इसे चंद सिक्कों में मत बेचिए। मुझसे मेरा बचपन मत छीनिए ... डैडी, मुझसे मेरा बचपन मत छीनिए प्लीज!"

मगर डैडी पर तो इसका उलटा ही असर हुआ था। उनकी लाल-लाल रक्ताभ आँखें आग उगलने लगी थीं। उन्होंने चेतावनी देने के लहजे में दिनकर से मुखातिब होकर कहा था, "अच्छा! तो तुम्ही हो मेरे बेटे को बरगलाने वाले ! आईन्दा न तो कभी मेरे बेटे से मिलना, न हम सबके पास फटकने की कोशिश ही करना वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। मनहूस कहीं के! तुम्हारा नाम तो अमावस होना चाहिए। किस कमबख़्त ने तुम्हारा नाम दिनकर रख दिया।"

"आपका यह आचरण सरासर गलत है, डैडी। मैंने तो अपने मन की बात कही थी। इसमें इनकी कोई भूमिका है ही नहीं।" आप इन्हें खामख्वाह अपमानित कर

रहे हैं!" बंटी ने हाथ जोड़कर हस्तक्षेप करना चाहा था, "आई एम सारी, दिनकर भैया !"

गुस्से में डैडी ने बंटी के गाल पर जोरदार चपत लगा दी थी, तो अंडा सिखाए बच्चे को कि चूँ-चूँ करें ! बहुत कर ली तुमने नौटंकी। अब चुपचाप चलकर शूटिंग करे !"

लेकिन बंटी का अंतर्मन हाहाकार कर उठा था। नतीजतन, एक भी शॉट ओके नहीं हो पाया था। शाम को लौटते हुए डैडी और भी आग-बबूला हो उठे थे। गाड़ी चलाते हुए वे इस का आपा खो बैठे थे कि किसी को कुछ पता ही नहीं चला - कब गाड़ी एक ट्रक से टकराकर गहरी खाई में जा गिरी, कब, मम्मी-डैडी ने कराहते हुए से दम तोड़ दिया और क्यों हर तरह से बेसहारा होकर जीने को अभिशप्त बंटी बाल-बाल बच गया... ?

बंटी तो किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, क्या न करे। मम्मी-डैडी की एक साथ हुई मौत ने उसे हिलाकर रख दिया था। वह पूरी तरह अनाथ हो गया था। चूँकि मम्मी-डैडी ने अपने-अपने माता-पिता की मरजी के खिलाफ़ उनसे विमुख होकर अंतरजातीय ही नहीं, अंतरधार्मिक विवाह किया था. अतः अपने दादा-दादी, नाना-नानी के बारे में उसे कुछ भी अता-पता नहीं था। उसे तो बस मम्मी-डैडी और फिल्मों से ही मतलब रखने की छुट्टी पिलाई गई थी। बंटी को नेह-नातों का अभाव बुरी तरह खल रहा था। काश, उसे अपने दादा-दादी, नाना-नानी के रिश्तों की झाँव मिलती ! डैडी - मम्मी तो बाज़ारवादी सोच में स्वार्थान्ध हो बस अपने लिए ही जीते रहे-ढेले-पत्ते की तरह। ढेले का आश्वासन कि वह आँधी में पत्ते को सुरक्षित रख उड़ने नहीं देगा और पत्ते का वादा कि वह बारिश में ढेले की रक्षा कर उसे गलने से बचा बचा लेगा। लेकिन आँधी-बारिश के एक ही साथ आने पर दोनों का ही अस्तित्व मटियामेट हो गया था । मम्मी-डैडी भी तो अचानक ही काल के गाल में समा गये थे और बंटी सोच-सोचकर हलकान हो रहा था कि कैसे ढो पाएगा वह पहाड़-सी ज़िन्दगी का बोझ ? सत्य ही कहते हैं लोग कि बड़ी एहसान फरामोश है यह फिल्मी दुनिया, जहाँ सिर्फ़ मतलब से ही सबको मतलब है और अगर मतलब न रहा तो फिर क्या मतलब!

तभी रॉबिन अंकल एक देवदूत की तरह आए थे। बंटी ने उन्हें मम्मी-डैडी से बतियाते हुए कई बार देखा था। उन्होंने बेटी को ढाढ़स बँधाया था और ईश्वर पर भरोसा रखने की नेक सलाह भी दी थी। रॉबिन अंकल ने क्रिया-कर्म की पूरी कमान संभाल ली थी और उसको अवसाद से बाहर निकलने की अभिप्रेरणा भी दी थी। बंटी को अब ऐसा लगने लगा था कि दुनिया अभी भी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है और अच्छाई आज भी बरकरार है।

मगर मम्मी-डैडी की स्मृति से बाहर निकलना इतना आसान नहीं था। वह घंटों खोया-खोया-सा रहता और फिर आँसुओं की बाढ़-सी आ जाती थी। फिल्मी दृश्य की शूटिंग में वह आँसू की एक बूँद के लिए तरसता था, लेकिन अब तो आँसुओं का सैलाब उमड़ पड़ता था। रात-रात भर उसकी आँखों की नींद हराम रहती थी, पर जब से रॉविन अंकल ने प्यार से इंजेक्शन देना शुरू किया था, वह सुध-बुध खोकर देर तक खर्राटे लेता रहता था।

एक रोज़ खाना खाते वक्त रॉबिन अंकल ने समझाया था, "बेटे ! अब तुम्हें विधिवत अपनी पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिए। तुम्हारा मन भी लगेगा और मज़ा भी आएगा।"

अंधा क्या चाहे - दो आँखें। हादसे के बाद बंटी पहली मर्तवा हर्षोल्लास से भर उठा था। अगले दिन नामांकन होते ही अनुशासित विद्यार्थी की भाँति स्कूल जाने लगा था। हाँ, नियमित रॉबिन अंकल उसे दवाओं के कुछ पैकेट देते थे, जिन्हें रास्ते में वह उनके दोस्तों को दे दिया करता था। विद्यालय के कुछ साथी फिल्मों में उसके

अभिनय की भी चर्चा करते थे, मगर वह हँसकर टाल देता था।

उन्हीं दिनों रहस्यमय ढंग से एक प्रतिभाशाली युवा अभिनेता की मृत्यु हो गई थी तथा उनकी मौत खुदकुशी व हत्या बीच झूलने लगी थी। उसमें किसी ड्रग माफिया का हाथ होने की बात भी सामने आई थी और पुलिस रॉबिन अंकल को तलाशती हुई वहाँ आ पहुँची थी। मगर उनका तो कुछ अता-पता ही न था। शक की सुई बंटी की ओर भी घूमी थी और उसे गिरफ़्तार कर बाल सुधार गृह में डाल दिया गया था।

बंटी को तो कुछ मालूम ही नहीं था कि राबिन अंकल उसकी मार्फत हेरोइन के पैकेट भिजवाते थे और उसे भी मादक द्रव्य के ही इंजेक्शन दिया करते थे। अनजाने ही कैसे-कैसे चक्रव्यूह में उलझता आ रहा है वह ! यहाँ भी तो वही चक्रव्यूह। जन्म से ही उसके विरुद्ध व्यूह-रचना की जाती रही है और उसको सहज बचपन तिल-तिल मरने को अभिशप्त है।

आखिरकार अधीक्षक महोदय को बंटी के नेक स्वभाव और मासूम चेहरे पर तरस आ गया था और बालदिवस-पर मुक्त किये जाने वाले चंद बच्चों में बंटी का नाम सर्वोपरि था।

मंत्रीजी बंटी की मासूमियत पर इतरा रहे हैं, उसके अभिनय की प्रशंसा कर रहे हैं, मगर बंटी खुद ऊहापोह की स्थिति से गुजर रहा है। वह जाए तो जाए कहाँ? अभिमन्यु की तरह आखिर उसे कितने चक्रव्यूह भेदने होंगे?

अचानक दिनकर को वहाँ खड़ा देखकर बंटी की बाँछे खिल उठीं । दिनकर ने आगे बढ़कर उसे गले से लगा लिया, फिर पीठ थपथपाकर। कहा, "दोस्त! मैंने तुम्हारे जीवन की कथा को परदे पर उतारने का बीड़ा उठाया है। ख़त्म होते बचपन की थीम पर हम दोनों की मुख्य भूमिकाएँ होंगी। प्रोड्यूसर - फाइनेन्सर मैंने ढूँढ़ लिया है। चलो, आज से ही दम-खम के के साथ भिड़ जाते हैं।"

बंटी सोच में डूब गया। क्या यह कोई नया चक्रव्यूह है? मित्रों ने कहा भी था, एक बार जो मायानगरी की मृगमरीचिका में उलझ गया, उसका इस मकड़जाल से निकलना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन भी है।

"क्या सोचने लगे, यार ?" दिनकर के प्रश्न पर बंटी के मुँह से निकला, "दूध का जला हूँ, भैया ! पीने के पहले छाछ फूँक रहा हूँ।"

दिनकर ने सुबह के सिन्दूरी सूरज की ओर इशारा करते हुए कहा, "बंटी प्यारे ! हम दोनों को ही अब सोच बदलकर आगे बढ़ना होगा। मेरे प्रिय कवि ने कहा है-

सोच बदलो, सितारे बदल जाएँगे
रोशनी के नज़ारे बदल जाएँगे।
घेरे लें जब अँधेरे तुम्हारी डगर
आँधियाँ ही सफर में अगर हमसफर
आत्मबल से सँभालो समय की सुई
घाट घट-घट के सारे बदल जाएँगे
सोच बदलो, सितारे बदल जाएँगे।"

पक्षी पिंजरे की कैद से बाहर आ गया है। पूर्वी क्षितिज पर दिनकर की लालिमा अब सुनहरे रंग की अनन्त रश्मियों में परिणत हो रही है। पंछी स्वच्छंद आकाश में विचरण करने के लिए उड़ान भरने के पूर्व अपने पैरों को तोल रहा है।

सम्पर्क सूत्र- शकुंतला भवन,
सीताशरण लेन,
मीठापुर, पटना-800001 (बिहार)
मो0- 9304693031

बिखराव

➲ राजेन्द्र कुमार सिंह

बाप को रिटायर्ड होते ही दोनों बेटे बहू का माथा ऐसा ठनका कि वह रह-रहकर उल्टा मां-बाप पर बमक जाते। गृहस्थी के भार से मुक्त होकर अब सारा भार बेटों पर क्या डालते, परिवार में बिखराव की दरार स्पष्ट दिखने लगी। रामलाल को यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। बड़ा बेटा लखन बहू सीमा और दो बच्चों नवीन, विजय के साथ एक ही शहर में पास वाले कॉलोनी में अर्ध निर्मित बिल्डिंग में सुरक्षा प्रहरी का कार्य संभालते ही सपरिवार वहीं रहने चला गया था। बिल्डिंग आधे-आध में भरी हुई थी। इसलिए पगार के अलावा महीना में गाड़ी धोने व नये मकान मालिक के गृहप्रवेश के समय घर के साफ-सफाई से कुछ अतिरिक्त पैसा बना लेता था। छोटा बेटा आशीष और उसकी बहू सुष दोनों प्राइवेट जॉब में थे। एक छोटा बच्चा था दो साल का, जो सुष सासू मां के जिम्में छोड़कर जाती थी। दोनों अलग-अलग जगहों पर थे किंतु उधर से एक ही गाड़ी पर साथ आते थे। शाम को वापस अक्सर साथ में आते थे कभी-कभार ट्राफिक जाम की अधिकता की वजह से सुष बस से पहले निकल जाती थी।

रामलाल को सेवानिवृत हुए अभी दो माह भी नहीं हुआ था बिखराव की एक छोटी चिंगारी पैदा होकर इधर-उधर बिखरने लगी थी। क्योंकि रामलाल अब घर खर्च नहीं चलाने का इतिश्री करके सारा भार वह आतिश व सुष पर डालकर निश्चितता की नींद सोने वाले थे। किंतु पति के निर्णय सुनकर उनकी पत्नी अंशा को आभास हो गया था कि घर में बिखराव की आग लग चुकी है। मामला कब विस्फोट हो जाए।

एक तो रामलाल दोनों प्राणी शुगर और बीपी के पेशेंट थे दिन भर में दोनों प्रणानियों को दस-बारह कैप्सूल व टैबलेट तो खाना होता था। इसलिए बहू कुछ ग़लत करती तो वे कभी-कभी सुष को गलत कह देते थे। रामलाल समझाने के क्रम में कुछ कह देते तो बहू के साथ बेटा भी नाक सिकोड़कने लगता था। लेकिन बेटे के नाक मुँह सिकुड़ना या भीतर से मां-बाप का प्रति कसैलापन व्यवहार पूरी तरह स्पष्ट भी नहीं हो पाया था कि दिवाली के दो दिन पहले रामलाल को जिसका डर था वह विस्फोट की तरह घर में ब्लास्ट कर गया। एक हल्की से खरोच से सुष ने ससुर को अपने वक्तव्यों से नोचकर रख दिया।

'आप मुझ पर हुक्म चलाने वाले कौन होते हैं ? अपने पैरों पर खड़ी हूँ किसी का दिया हुआ नहीं खाती हूँ। अच्छा खासा कमाती हूँ। मैं किसी का रोब व आधिपत्य में रहने वाली नहीं। बहू का इस तरह के कटु व्यवहार से रामलाल तो भीतर से आहत हुए ही सासू अंशी का मन लावा की तरह बहू पर फट गया।

'हम तो चार-पाँच गोतिनी थी। लेकिन अपने

सास-ससुर को एक शब्द भी नहीं बोल पाती थी। तो क्या हमलोग का नहीं निबह पाया।'

'वो सब आपके जमाने में था। अब कि बहुएँ सहने वाली नहीं।' 'गलती करोगी तो डांटेंगे नहीं तो फिर कैसा परिवार?'

'परिवार रहे चाहे जाए भाड़ में। 'सुष इतना कह फोन करके वह अपने पिता को बुला ली थी।

सुष का मायका उसी शहर में था और दो-तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित था। इसलिए फोन करते ही आध घंटे में धमक आते थे। देर-सबेर बेटी के द्वारा पारिवारिक आंदोलन को हवा पानी देकर देख लेने की धमकी देकर बेटी को अपने यहाँ ले जाने में सफल हो जाते थे।

किंतु इस बार थोड़ा अधिक हो गया था। रामलाल के अवकाश ग्रहण के बाद का यह आंदोलन था। आजू-बाजू के लोग दो माह पहले निमंत्रण स्वीकार कर पड़ोस वाले काफी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिए थे। आपलोग के प्रति बहू बेटे के सेवा भाव के प्रवृत्ति को देखकर लंबी उम्र का आशीर्वाद व स्वस्थ रहने का आशीष देकर चले गए थे। अपने आजू-बाजू के लोगों द्वारा उनके परिवार के प्रति रखें कृतज्ञता का भाव से रामलाल का हृदय प्रदेश में हँसी खुशी के फूल खिल गए थे। अभी वह इसी आवेग के झूले में झूलते दो माह का वक्त ही सरक नहीं पाया था कि सुष ने उनकी सारी आशाओं पर यकायक पानी फेर दिया। एक हल्की-फुल्की बातों ने बहू ने अपने जोश को बेकाबू कर प्रहार रूपी प्रकोप में तेजी लाकर शांत सरोवर में पत्थर चलाकर प्रकंपन मचा दिया।

दिवाली के दो दिन पहले की ये घटित घटना त्योहार के उमंग को बेरंग करके रख दिया था। सुष के पापा प्रकाश भी आए थे और अपने बेटी के करतूत पर पर्दा डाल, उल्टे वह अपने समधी रामलाल को ही दोषी करार देकर बेटी के करतूतों पर पर्दा डाल, अपने बेटी को लेकर चले गए। जाते-जाते बोलते गए-'रामलाल जी मुझ में अभी हिम्मत है अपनी बेटी को पाल लूंगा । लेकिन इस घर मेरी बेटी आपकी दहलीज पर पाँव नहीं रखेगी। पिता की द्वारा कही गई बातें सुन बेटी सुष सुनकर एक बार फिर से दोहरा दी- 'अब मैं आने वाली नहीं।'

'जाओ मत आना।' रामलाल ने अपना उदगार आखिर निकल ही गया था। बेटा तो तटस्थ बना रहा। सुष की गलती होते हुए भी बेटा मां के बातों में गलतियाँ ढूँढ निकाली।

सुष तो उसी शाम चली गई थी अपने छोटे एकलौते बेटे को लेकर। उसका पति आतिश जाने के बाद अपने खुमारों को मां-बाप को प्रति फटकार कर बाहर निकाल दिया।

दो दिन बाद ही भैया दूज था। रामलाल की एकलौती बेटी रीता ससुराल से भाई दूज के लिए आई थी। किंतु यहाँ का नजारा देख वह भी भीतर से टूट गई थी। उसने भाई को समझाने का अथक प्रयास किया। किंतु वह सुष की गलती को मान नहीं रहा था। सारा दोष माँ के उपर डालकर एक बार फिर से बरस पड़ा। क्योंकि बेटा माँ-बाप को कुछ तरजीह नहीं दे रहा है तो बहन को क्या देगा ? रीता ने सुष से मिलकर मामला को रफा-दफा करने की प्रयास किया। किंतु उन दोनों के भीतर क्या था किसी को मालूम नहीं था। पर अब से घर का राशन भरने के बाद चली तो मामला उलटा पड़ गया। हालाँकि सुष को घर लाने की बात चल ही रही है लेकिन गलती होने पर रामलाल घर का बुजुर्ग होने के नाते समझौता तो करके चलने वाले हैं नहीं। गलती होगी तो बड़े बुजुर्ग होने के नाते डांटेंगे ही।

रामलाल घर के मामला को आपस में सुलझाना चाहते थे लेकिन उनके संभावना के विरुद्ध इसकी तंतु कमजोर पड़ने के बजाय और रफ्तार पकड़ लिया। क्योंकि वक्त के साथ सुष काफी मुंहजोर हो गई है। शरीर का कोई भी अंग जब काम नहीं करें तो उसका इलाज किया जाता

है। लेकिन यहाँ इलाज की गुंजाइश बची ही नहीं थी। पेड़ की कोई टहनी रोगग्रस्त हो गया हो तो उसे काटकर हटा दिया जाता है।

रामलाल छोटे बेटे बहू को परिवार से अलग करने का मन बना लिए थे। यदि बीमारी हाथ से निकल जाता है तो उसको काटकर फेंक दिया जाता है। जब भी कोई सिरा कमजोर होगा वह अंगड़ाई लेना शुरू कर देगा। इसलिए जिसको साथ रहना है तो स्वागत है। खाना-पीना साथ खा लेने से परिवार नहीं कहा जाता। आपस में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, विश्वास, समर्पण की भावना जब भरी होती है तभी परिवार है यदि ऐसा नहीं तो उसे संयुक्त परिवार कहना बेकार है।'

रामलाल तो हार मान लिए थे अपनी तरफ से। क्योंकि उनके दृष्टि में पानी सर से ऊपर बहने लगा है। लेकिन उनकी पत्नी अंशा को अभी भी विश्वास है की वह समझाने से समझ जाएगा।

रामलाल पत्नी की बचकानी बातें सुनकर हंस दिए थे। अंशा कुछ समझ नहीं पाई थी ।

वह मुस्कराते हुए अंशा से कह रहे थे- 'सुष और तुम्हारा बेटा वापस आ जाएँ तो क्या तुम खुश हो जाओगी ? क्या आपस में वैसा मेल मिलाप, वैसा स्नेहात्मक लगाव रहेगा। मुझे तो ऐसा कतई लगता नहीं।

जहाँ पैसा से प्यार करना आ गया वहाँ रिश्तों का सम्मान बेमानी हो जाता है। सारा ध्यान एक की बिंदु पर केंद्रित होकर उसी के इर्द-गिर्द घूमते रहती है। उपेक्षा का फसल उगाने का शुरुआत यहीं से शुरू होता है। जो बहू खींच-तानकर तीन-चार साल हमलोग के स्नेह के छाया में गुजारी वह स्नेह नहीं बल्कि अपना पाँव मजबूत कर पलायन का राह तलाश रहे थे। घर के बुजुर्ग सदस्यों का बोलना बच्चों पर जब बोझ लगने लगे तो समझिए आज नहीं तो कल बिखराव निश्चित है। किंतु समझाने-बुझाने से बिखराव रुकता नहीं बल्कि उससे कहीं बेहतर सटीक रास्ता चुनने का प्रयास करता है। ताकि चूक न हो और टीस की आंच से दोनों पक्षों में से कोई झुलसे नहीं। किंतु सबका सोच एक जैसा नहीं किसी-किसी में लोच की प्रवृत्ति पाई जाती है।

रामलाल का परिवार हाल-फिलहाल इसी दौर से गुजर रहा है। बड़ा बेटा तो मिला-जुलाकर ठीक है। हालाँकि बेटे में तो नहीं बहू में हल्की-फुल्की बिखराव की हवा लगते देखा था। किंतु बेटे ने साफ कह दिया था-' देखो नेहा, यदि मां-बाप को छोड़कर जाने के लिए कहोगी तो मैं आजीवन उनका दिल नहीं दुखाऊँगा। गलती हो गई तो उनका बोलना बिलकुल जायज है। वह जो सोचेंगे हमलोग के भलाई के लिए सोचेंगे। क्योंकि प्रकृति का नियम है कुछ दिन के बाद हम भी अपने बेटों पर अवलंबित हो जाएगें। जीवन का यह सिलसिला अनवरत चलता रहता है। इसलिए पाँव फूँक-फूँककर सोच-समझकर, आगे बढ़ाना है। ताकि हमारे व्यवहार से उन्हें लाचार न होना पड़े। छोटे भाई व उसकी पत्नी का लक्षण कुछ अच्छा नहीं दिख रहा है। यदि माँ-पिताजी के साथ हमलोग छोटे जैसा व्यवहार करने लगे तो वे दोनों पूरी तरह से टूट जाएँगे। क्योंकि हमें तोड़ना नहीं उनको जोड़कर रखना है। ताकि अपना सब कुछ हमलोगों पर अपना सर्वस्व न्योछावर करते रहे। अब उसका उपकार हमें चुकाना है। नेहा समझ गई थी। फिर उसने किसी को शिकायत की मौका नहीं दी।

किंतु छोटी बहू जैसे ही जॉब में लगी फिर उसके तो पंख निकल आए। बड़ा बेटा अधिक पढ़ा लिखा नहीं था। काम चलाऊँ था । जो छोटे-मोटे कंपनी या बिल्डिंग में सुरक्षा गार्ड का कार्य कर रहा था। किंतु छोटा एम बी ए किया हुआ था और जॉब में था।

कितना तनख्वाह है यह किसी को मालूम नहीं था। दोनों की बातें आपस में ही साझा सीमित रहती थी। हकीकत किसी और को ज्ञात नहीं था। छोटा तो शादी से पहले जब जॉब में था तभी वह इसकी भनक भी नहीं लगने

दिया था। अब तो पत्नी आ गई थी। अब कहाँ संभव था। लखन तो पहले ही घर से निकल गया था लेकिन उसका एक ध्यान हमेशा अपने माता-पिता पर रहता था। जब साथ में एक साथ एक छत के नीचे सभी रहते थे तब छोटी बहू अक्सर बड़ी बहू को लेकर माँ के कानों में छोटी-मोटी बातों को लेकर उकसाते रहती थी और सासू अंशा ने उसके बातों में आकर डाँट लगा देती थी। ऐसा करने में उसको बड़ा मज़ा आता था। तभी रोज-रोज के खींच-खींच से उसके पिताजी ने सुरक्षा प्रहरी के काम में रखवा दिया था। लखन पहले जिस कंपनी में अस्थाई रूप से कार्य करता था उससे बढ़िया था क्योंकि कंपनी में तो आठ घंटे की ड्यूटी उसमें रात्रि पाली की ड्यूटी भी। लेकिन अब उसको इन सारी समस्याओं से निजात मिल गया था। दिन पूर्ववत जैसे-तैसे बीत ही रहा था कि एक दिन बातों-बातों में रामलाल ने घर का राशन मैं नहीं लाऊँगा यह बात कहकर बुझा हुआ दिया एक हल्की सी चिंगारी से शनै-शनै सुलगने लगा। कुछ खाने-पीने की चीजों को लेकर मामला अक्सर तूल पकड़ लेता था।

रामलाल ने एक दिन सुष के पिताजी को बुलाया। लेकिन आकर बेटी को क्या समझाते मामला उल्टा तूल पकड़ लिया। उन्होंने बेटी का पक्ष लेने में कोई कमी नहीं की। बोले-'रामलाल जी मेरी बेटी बिल्कुल ठीक है। आज मैं अपने बेटी को लेकर जा रहा हूँ।'

संयुक्त परिवार है खाने पीने से क्या हुई मामला पूर्व पकड़ लिया उसके पापा भी आए तो बेटी को समझने का प्रयास क्या करेंगे। कोई कसर नहीं छोड़े रामलाल जी अपने जगह पर मेरी बेटी ठीक है। वह जो कह रही है ठीक कह रही है। आपके दहलीज पर अब हरगिज पाँव नहीं रखेगी।'

और आज उसका आखिरी फैसला था। अंशा और ननद रीता एक बार फिर से जुड़ने के प्रयास के क्रम में उसके घर आई। आतिश तो नहीं था किंतु काफी मशक्कत के बाद भी वह टस-से-मस नहीं हुई। सासू अंशा कहती रही- 'घर के बुजुर्ग हैं, बच्चे गलती करते हैं तो डाँट-डपट करना उनका फर्ज बनता है। इसे तुम दिल पर लेकर मत चलो। किंतु वह सास के फरियाद को अनसुना कर गई।

सासू माँ की बात को अनसुना करते देख सुष की माँ ने कहा- 'वह मेरी भी नहीं सुनती।'

सुष के यहाँ से लौटते वक्त शाम हो गई थी। आतिश ड्यूटी से आ गया था। अंशा व रीता की फरियाद पर कोई असर नहीं हुआ तो रामलाल आतिश के तरफ मुखातिब होकर कहा-'आतिश फैसला तुझे करना है। अब तुमको क्या करना है। मेरे संग रहना है या बहू-बेटे के साथ।

किंतु रामलाल को मालूम था कि ऊँट किस करवट बैठेगा। क्योंकि निर्णय क्या होने वाला है उससे अच्छी तरह वाकिफ हैं-'तुमको जो सामान ले जाना है कोई रोक-टोक नहीं है ले जा सकते हो। कहीं भी रहना शांतिपूर्वक जीवन यापन करना। क्योंकि किसी को ऐसा मत बोलना जिससे किसी को तकलीफ पहुँचे। तुम्हारी गलती माता-पिता सह लेंगे, दूसरा बर्दाश्त नहीं करेगा।'

'ठीक है पापा। 'आतिश यह कहते हुए भीतर से भावूक हो गया था- 'पहले क्वार्टर तो मिल जाए।'

और आज रामलाल का संयुक्त परिवार में बिखराव आ गया। आखिर वे भीतर से जर्जर हो गए रिश्ते पर कब तक लबादा डालते रहेंगे। जब अगला खुद नहीं रहना चाह रहा है।

सम्पर्क सूत्र- लिली आकेड, फ्लैट नं0 101
मेट्रो जोन बस स्टैंड महाजन हॉस्पिटल समोर
नासिक- 422009 (महाराष्ट्र)
मो. 8329680650

जब उठी काली घटा...

➲ डॉ0 गिरीश पंकज

रामदत्त चतुर्वेदी शुरू से बड़े बिंदास किस्म के व्यक्ति रहे हैं। पूरा जीवन उन्होंने एक आदर्श शिक्षक के रूप में बिताया और सेवा निवृत्ति के बाद स्वाध्याय में लग गए। जो भी बच्चा उनके पास आता, उसे साहित्य, संस्कृति और कला से संबंधित ज्ञान जरूर देते। सामाजिक आयोजनों में भी उनकी बड़ी भागीदारी रहती । लोग बड़े सम्मान के साथ उन्हें बुलाते और उनके प्रेरक उद्‌बोधन को सुनकर हर्षित होते । सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन पिछले कुछ दिनों से राहुल बहुत परेशान है। अपने पिता रामदत्त चतुर्वेदी में आए अप्रत्याशित बदलाव को देखकर वह दुखी है। वह समझ ही नहीं पा रहा कि पिता को यकायक क्या हो गया है। पिताजी कभी अकेले में हँसने लगते हैं और कुछ देर बाद अपने आप रोना शुरू कर देते हैं। कभी-कभी तो घंटों दीवार के किसी एक कोने को एकटक निहारते रहते हैं। कभी-कभी बेवजह गुस्से में आकर चिल्लाने भी लगते हैं। उस दिन तो हद हो गई। जब वे घबराते हुए पूरे घर में इधर-उधर दौड़ने लगे। ज़ोर-ज़ोर से कह रहे थे, "देखो, बाहर देखो !! कोई मुझे बाहर मारने के लिए आया हुआ है।... मुझे बचाओ... मुझे बचा लो !!"

इतना बोल कर वे तेजी के साथ अपने कमरे में घुसे और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। पूरा घर आश्चर्यचकित हो गया कि अचानक पिताजी को यह क्या हो गया है। पिछले कुछ दिनों से वे ऐसी ही विचित्र हरकतें कर रहे हैं

पिताजी ने जब अपने आप को कमरे में बंद कर लिया, तब राहुल ने जोर-जोर से दरवाजा खटखटाया, "पिताजी दरवाजा खोलिए!.. देखिए बाहर कोई खतरा नहीं है!. कोई आप को मारने नहीं आया है।... आपको भ्रम हुआ होगा।... पिताजी, दरवाजा खोलिए... दरवाजा खोलिए!"

लेकिन पिताजी ने दरवाजा नहीं खोला। पूरा घर घबरा गया; कहीं वे कुछ कर न बैठें। राहुल लगातार दरवाजा खटखटाता रहा। आधे घंटे बाद दरवाजा खुला। पिताजी बाहर आए। अब वे बहुत गंभीर नजर आ रहे थे। राहुल पिताजी के पास आया और मुस्कुराते हुए बोला, "कैसे हैं पिताजी ? सब ठीक तो है ?"

पिताजी ने कोई जवाब नहीं दिया। बस मुस्कुराते रहे और पूरे घर के लोगों को गौर से देखते रहे। फिर खिड़की के पास खड़े हो कर बाहर कुछ निहारते रहे।

राहुल ने पास आकर पूछा, "क्या देख रहे हैं पिताजी ?" लेकिन उन्होंने कोई ज़वाब नहीं दिया बस इतना ही कहा, "बाहर मत निकलना।... बहुत खतरा है।... तुम्हारी जान बहुत कीमती है।.. कोई भी घर के बाहर न निकले।... कल ही तो टीवी बता रहा था, बाहर निकलने

से खतरा है।"

राहुल ने कहा, "ठीक कहते हैं पिताजी! कोई बाहर नहीं निकलेगा। आप भी बाहर न निकलें। चिंता न करें। सब ठीक हो जाएगा।"

राहुल की बात सुनकर पिताजी अचानक जोर-जोर से हँस पड़े और राहुल के शब्द दोहराने लगे, "सब ठीक हो जाएगा... सब ठीक हो जाएगा।" उनकी हँसी रुक नहीं रही थी। यह देख राहुल उनके पास जाकर बैठ गया और उनकी पीठ थपथपाने लगा। माँ जाकर एक गिलास पानी ले आई। पानी का गिलास देखकर चतुर्वेदी जी की हँसी रुकी। कुछ देर तक वे गिलास को ध्यान से देखते रहे। फिर उसे उठा कर एक बार में गटगट करके पूरा पानी पी लिया। कुछ देर बाद उठे और सबकी ओर देखते हुए कहा, "कोई भी घर के बाहर निकले।... सबको घर पर रहना है।... हमारी जान को खतरा है।... दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है ।... सावधान रहना!... मैं सोने जा रहा हूँ।"

इतना बोल कर चतुर्वेदी जी अपने कमरे में चले गए और पलंग पर लेट गए। और शून्य में निहारने लगे।

पिछले कुछ दिनों से पिताजी ऐसा ही कुछ विचित्र व्यवहार कर रहे हैं। कभी अचानक से हँसने लगेंगे तो कभी रोने लगेंगे। कभी घर वालों पर ही चिल्लाने लगेंगे। न जाने उन्हें क्या हो गया है। क्या यह पागलपन के लक्षण हैं या कुछ और ?.. यह सोच कर राहुल को अपने मित्र डॉक्टर शुक्ला की याद आयी जो इन दिनों कोरोना संक्रमित लोगों की मदद करने में दिन रात लगे हुए हैं। राहुल ने उनको को फोन लगाया और पिताजी की सारी बातें बता दीं। मनोरोग विशेषज्ञ डॉ शुक्ला ने कहा, "यह कोई बहुत गंभीर चिंता की बात नहीं है। बस सावधानी बरतने की जरूरत है। पिताजी को इस वक्त 'सिज़ोफ्रेनिया' के मरीज हो चुके हैं। उन पर किसी चीज का गहरा सदमा पहुँचा है। इस कारण वे ऐसी स्थिति में पहुँचे हैं। पिछले दिनों घर-परिवार में कोई दुःखद हादसा हुआ था क्या ?"

राहुल को सोचता रहा, फिर बोला, "ऐसा तो कुछ नहीं हुआ। वे तो लॉक डाउन के कारण आजकल घर पर रहते हैं। बाहर घूमने भी नहीं जाते। सुबह-शाम बस टीवी देखते रहते थे। लेकिन इतना जरूर है कि टीवी देखते हुए अकसर एक बात कहा करते थे कि "यह क्या हो रहा है।... इस कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को परेशान कर दिया है।... हमारा शहर भी उसके चपेट में आ गया है।... पता नहीं क्या होगा ?'... हर चैनल में कोरोना वायरस से संबंधित खबरें देख कर वे तनाव में आ जाते थे। फिर चिल्ला कर कहते थे, 'बदलो इस चैनल को।... दूसरा लगाओ।' हम दूसरा चैनल लगाते, तो वहाँ पर भी कोरोना वायरस वाली कोई न कोई ख़बर चल रही होती। उसे देख कर पिताजी बहुत जोर से चिल्लाते, 'बदलो इसे'। उस चैनल को भी हम फौरन बदल देते। चैनल बदलते जाते लेकिन खबरें वही रहती कि कोरोना वायरस से इतने लोग मर रहे हैं... इतने लोग संक्रमित हो रहे हैं... सरकार ने लॉक डाउन बढ़ा दिया है... घर से बाहर निकलने वालों को पुलिस डंडे से मार रही है... मजदूर हजार किलोमीटर की यात्रा करके अपने घर जा रहे हैं... भूख से मर रहे हैं... पूरे देश बदहाली छाई हुई है। ऐसी खबरें देख-देख कर पिताजी धीरे धीरे बड़बड़ाने लगे कि 'पता नहीं हम लोगों का क्या होगा... इस दुनिया का क्या होगा ?... बेटा राहुल, तुम घर से बाहर मत निकलना।... कोरोना वायरस पकड़ लेगा, तो पूरे घर को चपेट ले लेगा।" राहुल की बात सुनकर डॉक्टर शुक्ला ने कहा, "ओह, तो यह बात है। मैं अब समझ गया। यह बिल्कुल सिजोफ्रेनिया के ही लक्षण हैं। तुम्हारे पिता कोरोना वायरस के संक्रमण को लेकर बुरी तरह भयग्रस्त हो चुके हैं। यह भय उनके दिमाग में इस कदर हावी हो गया है कि बस उसी के बारे में निरंतर सोच

रहे हैं। इस कारण उनके मन में अज्ञात भय समा गया है कि उनका भय परिवार का कोई अहित हो जाएगा।

"इसका उपचार क्या है डॉक्टर ?"

राहुल के प्रश्न पर डॉक्टर शुक्ला ने कहा, "इसका इलाज यही है कि पिताजी को कोरोना कोरोना की डराने वाली खबरें दिखाने वाले न्यूज़ चौनलों को देखने से रोको। उन्हें मनोरंजन प्रधान चौनल दिखाओ, जिनमें पुराने गाने आते हो। आजकल तो कुछ धार्मिक सीरियल भी आ रहे हैं। अच्छी फिल्में भी आती रहती हैं। यही सब उनको दिखाओ। पिताजी से कहो कि अपने समय का कोई फिल्मी गाना सुनाइए। उनकी पसंद का खाना बनाकर खिलाया जाए। उन्हें अकेला न रखा जाए। उन्हें इस बात का आभास ही न हो कि कोरोना वायरस जैसी कोई चीज उनके आसपास मंडरा रही है । उनको ऐसी दुनिया में ले जाओ, जहाँ चारों और सुख शांति हो। .. कोरोना की कोई खबर दूर-दूर तक नजर न आए। अगर तुम लोग ऐसा कर सके, तो पिताजी बहुत जल्दी ठीक हो जाएंगे। तुम मुझसे आकर मिलो। मैं कुछ दवाइयाँ लिख कर देता हूँ। इनका पिताजी सेवन करेंगे, तो उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहेगी। मानसिक रूप से उन्हें कुछ आराम मिलेगा। उन्हें नींद भी अच्छी आएगी।"

डॉक्टर शुक्ला की बात सुनकर राहुल की जान में जान आई। उसका तनाव कम हुआ । डॉक्टर की सलाह पर पूरे घर ने टीवी के समाचार चौनलों को देखना बंद किया। अब सारे लोग मिलजुल कर मनोरंजक धारावाहिक या फिल्में देखते हैं। पूरा परिवार पिता के साथ ही बैठकर गप्पे हांकता है। अंताक्षरी खेलता है। और पिताजी भी मूड में आकर पुराने जमाने का कोई गीत सुनाने लगते हैं। उनको कुछ पुराने गीत बहुत प्रिय है। जो अकसर गुनगुनाते रहते हैं। उस दिन राहुल की फरमाइश पर चतुर्वेदी जी ने एक गीत सुनाया, "जब चली ठंडी हवा, जब उठी काली घटा, मुझको ए जाने वफा तुम याद आए।" गीत गाकर चतुर्वेदी जी हँस पड़े। यह हँसी रोज़ की हँसी से बिल्कुल अलग थी। सामान्य हँसी ।

डॉक्टर शुक्ला का सुझाव रंग लाया। उसका सुंदर नतीजा निकला। अब तो रोज का यही सिलसिला बन गया। पिता के चेहरे पर मुस्कान लौटने लगी। राहुल ने महसूस किया कि धीरे-धीरे पिताजी सामान्य अवस्था में पहुँचते जा रहे हैं। उनके चेहरे पर अब भय के, तनाव के कोई लक्षण नजर नहीं आते। पिताजी कोरोना की खबरों से दूर हैं। मनोरंजक चौनल देखते रहते हैं। पूरा घर हर वक्त पिता के साथ ही रहता है। कोरोना वायरस पर कोई चर्चा ही नहीं करता। बाहर भले ही लॉक डाउन है। मगर घर के भीतर कोई लॉक डाउन नहीं। पिताजी खुश हो कर इधर-उधर टहलते रहते हैं। रह-रह कर वही एक गीत गुनगुनाते रहते हैं, "जब चली ठंडी हवा..जब उठी काली घटा"

राहुल ने डॉ शुक्ला को फोन लगा कर धन्यवाद दिया। डॉ शुक्ला बहुत प्रसन्न हुए और और बोले, "भगवान करे यह बीमारी फिर दोबारा आक्रमण न करे।"

पता :- सेक्टर-3 एच. आई. जी- 2
मकान नं0- 2, दीनदयाल उपाध्याय नगर
रायपुर- 492010 छत्तीसगढ़
चलभास- 8770969574

इस से पहले

➲ योगीन्द्र द्विवेदी

इस से पहले कि वे दोनों घर की देहरी लांघते, उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा। वे दोनों यानी उत्सव और स्वाती। उत्सव स्वाती को कुछ इस तरह सहारा दिये हुए था मानो संरक्षण, प्रेम और अपनत्व की त्रिवेणी बह रही हो। दोनों के चेहरे पर युवाओं जैसा आत्मविश्वास, ब्याह जैसी छलक-छलक जाती खुशी और अंतहीन सपने। कल ही दोनों ने कोर्ट मैरिज की थी और आज बंगलौर के लिए निकल रहे थे, ज्यादा छुट्टियाँ नहीं मिल सकी थी, इसलिए। उत्सव एक कारपोरेट कम्पनी में है, ठीक-ठाक पद पर है सो वहाँ अपना फ्लैट भी ले रखा है।

वे दोनों टा-टा करते हुए आँखों से ओझल हो रहे थे। एकबारगी मैंने निशा की ओर देखा। उसके चेहरे पर अभी भी कोई भाव नहीं थे। न किसी खुशी का इजहार, न कोई बातचीत। इतनी निस्तब्धता कम ही दिखती है, मगर जाने कहाँ से उसके चेहरे पर आकर ठहर गयी थी। वह कुर्सी पर बैठी खाली मेज के कोने को घूर रही थी। कुछ इतनी आत्मकेन्द्रित कि लगा कि यदि कुछ बोल दिया, तो वह रो पड़ेगी। कभी-कभी कुछ पल ऐसे भी होते हैं कि उनके दौरान कोई किसी को न छेड़े सो ही अच्छा। उसने एक लम्बी सांस जरूर ली जैसे किसी अकथनीय यातना से मुक्ति पा रही हो, फिर भी, उसके चेहरे पर फैली सपाट निस्तब्धता वैसी ही थी, पहले जैसी ।

इससे पहले कि निशा के बारे में विस्तार से कुछ बताऊँ, कई दशक बाद अब उससे मिलना अचानक ही हो गया था। 'घाट से दूर जा रही गंगा' सरीखी उम्र में। मैं अपने बैंक के काम से दिल्ली गया हुआ था और टैक्सी से उतरते हुए जाने कैसे चश्मा सड़क पर जा गिरा था। शीशे तो सही सलामत थे, परन्तु फ्रेम टूट गया था। चश्मे के बिना मेरा काम नहीं चलता, सो चश्मे की किसी दुकान की खोज में निगाह दौड़ायी। आस-पास पूछा तो किसी ने थोड़ी ही दूर पर मौजूद उसकी दुकान का पता दे दिया था ।

दुकान पर पहुँचते ही मैंने जल्द से जल्द चश्मा ठीक कराने के लिए अनुरोध किया। उस दिन भी मुझे अच्छी तरह याद है कि उसका चेहरा सपाट था जैसे खुशियों और उत्साह से भरपूर 'नहीं, दो-चार घंटे तो जिंदगी से उसका कोई वास्ता ही न हो। वह नपे-तुले शब्दों में बोली थी लगेंगे ही। शाम तक मिल पायेगा। बनाने के लिए कारीगर के पास भेजना होगा। मरता क्या न करता, मैंने हामी भर ही।

फिर पूछा कि कितने पैसे लगेंगे।

वह बोली- 'जो दे दीजियेगा।' बस इतना ही बोली थी और फिर एक लम्बी खामोशी उसके चेहरे पर पसर गयी थी। महिलाओं में शायद पहचानने की समझ पुरुषों से ज्यादा होती है, सो लगता है कि उसने पहली ही

नजर में मुझे पहचान लिया था, भले ही मैं बेखबर हो रहा होऊँ। खैर, उस दिन मैं बिना चश्में के ही अपने कामकाज किसी तरह निपटाता रहा और शाम होते ही उसकी दुकान पर जा पहुँचा था।

वह मानो इंतजार कर रही थी। जल्द ही उसने चश्मा सामने रख दिया। अब वह पहले से अधिक खूबसूरत और मजबूत दिख रहा था। फिर पैसों के बारे में पूछा तो उसका वही सधा हुआ सा उत्तर था 'जो दे दीजिए।' जेब में इधर-उधर हाथ डाला पर फुटकर नहीं थे।

वह बोली- 'क्या जल्दी है, कल दे दीजिएगा।'

अब मैंने ध्यान से उसके चेहरे की ओर देखा। मन के किसी कोने से अचानक आवाज आयी 'अरे, यह तो निशा है।'

बात-बात पर हंसती-खिलखिलाती और आसमान छूने की चाहत समेटे उस निशा को क्या हो गया है अब ? पढ़ने के दिनों में कितना मिला करते थे हम दोनों। फिर भी मैंने जाहिर नहीं होने दिया और बताया कि अभी तो कई दिन हूँ इस शहर में। वह खामोश ही रही, मुझसे रहा नहीं गया और पूछ ही लिया 'तुम निशा हो न।' क्या बना रखा है अपने को। कौन-कौन है घर पर। वह धीरे-धीरे बोलती रही 'सिर्फ एक बेटी है स्वाती।' वह कुछ साल पहले एक दुर्घटना में रहे नहीं, तो औसत चल रही जिंदगी पर भी मानो पहाड़ टूट पड़ा। संयुक्त परिवार के दूसरे लोगों ने मकान ही हड़प लिया और इन दिनों हम दोनों मां-बेटी किराए के मकान में रह रहे हैं। सम्पत्ति के नाम पर यह दुकान ही बची है।

'यह वही बेटी है न, जिसके बारे में तुमने अपनी शादी के डेढ़-दो साल बाद सूचना दी थी?'

'हाँ, वही। एमबीए कर रही है। फिर मिलना ही कहाँ हुआ। शादी के बाद मैं अपना और तुम्हारा शहर छोड़ यहाँ आ गयी थी। हालात से लड़ते-लड़ते थक गयी, उनके रहते हुए भी और उनके बाद भी ।' फिर एक लम्बी खामोशी। इस बार उसकी खामोशी में मैं भी शामिल था।

अचानक निशा बोली-- और तुमहारी जिंदगी कैसी कट रही है ? कौन-कौन है घर में।'

मैंने उसे बताया कि बेटा है उत्सव । बंग्लौर में आईटी जॉब में है। तुम्हारी शादी के कई साल बाद मैंने भी शादी की थी, पर लगभग दस साल पहले वह कैंसर से रही नहीं। उसके बाद दोबारा शादी के लिए मन ही नहीं हुआ। अब टिफिन सर्विस जिंदाबाद । एक अकेले की क्या चिंता ! काफी देर तक हम दोनों बतियाते रहे। मैंने कही बाहर चल कर खाना खाने के लिए कहा तो उसने मना कर दिया 'बेटी घर पर अकेली होगी।' अभी तो कई दिन हो यहाँ, फिर किसी दिन बनाते हैं खाने का प्रोग्राम, बेटी के साथ।'

मैंने कहा- 'किसी दिन नहीं, कल।'

इस बार उसने विरोध नहीं किया। दूसरे दिन हम डिनर पर मिले भी। फिर वही ढ़ेर सारी बातें, कुछ अपनी कुछ दोस्तों की और कुछ सामाजिक सरोकारों की भी। दिल्ली छोड़ते हुए यह तय हुआ कि जल्दी ही वह अपने मायके आयेगी, तभी मिलेगी। कुछ और विस्तार से बातें होंगी। दुनिया-जहान की वे बाते जिन्हें करते कभी हमारा मन नहीं भरता था। समूचे डिनर के दौरान स्वाती कभी अपनी माँ और कभी मुझे टुकुर-टुकुर ताकती रही थी, ढ़ेरों खामोश सवालों के साथ ।

इससे पहले कि निशा से अगली मुलाकात के बारे में बताऊँ, उसके बारे में कुछ और बतियाने का मन हो रहा है। मन प्रौढ़ हो या किशोर, मन तो मन ही होता है।

बरसो पीछे छूट गये पढ़ने-लिखने के दिन... वह अंग्रेजी की कविताएँ सुनाती और मैं हिन्दी की, पर सच कहूँ तो कविता तो बतियाने का बहाना भर हुआ करती थी। हम दोनों, अक्सर ठहाकों, मुस्कानों और सपनों में रहा करते थे। वह अंग्रेजी साहित्य में एमए कर रही थी और

पॉलिटिकल साइंस का विद्यार्थी था। हिन्दी साहित्य में भी रुचि थी, यह अलग बात है। एक और मौके पर एक कविता पंक्ति कही थी, तो वह खिलखिला पड़ी थी-- 'बहुत कुछ छोड़ आया हूँ, तुम्हारी ऊंचाइयों से अपनी ढलानो की ओर लौटते हुए।' उसने प्रतिउत्तर में किसी शायर की यह लाइने दोहरा दी थी 'मैं सच कहूंगी, फिर भी हार जाउँगी/वह झूठ बोलेगा और लाजवाब कर देगा।'

कविताएँ सुनाते समय उसके गाल कई बार कुछ और ज्यादा लाल हो जाते। एक बार एक कविता प्रिय को सम्बोधित थी। मैंने शरारतन कह दिया, तुम्हारी अंग्रेजी मेरे पल्ले नहीं पड़ती। इसे हिन्दी में समझाओ। उसने बड़े ध्यान से शब्दों को खोज-खोज कर वह कविता हिन्दी में समझायी, जिसका भावार्थ यह था कि कैसे प्रेयसी अपने प्रेमी के साथ मिल कर जीवन की उँचाइयाँ छूना चाहती है। मैंने नाटक किया, जैसे कुछ समझा ही नहीं हूँ। उसने दोबारा बताना चाहा, तो एकबारगी मैं खिलखिला पड़ा। मेरी चोरी पकड़ी गयी, मेरे इसरार के बावजूद उसने फिर कविता का अर्थ नहीं दोहराया और एकबारगी गम्भीर हो गयी। फिर मैंने देखा कि अक्सर वह कुछ ज्यादा ही गम्भीर रहती। कई बार पूछने पर उसने बताया था 'मम्मी-पापा दूसरे शहर में शादी तय करना चाह रहे हैं। बिजनेस है उस परिवार की धरोहर, किताबे नहीं।'

मैंने चिढ़ाते हुए कहा- 'तो फिर क्या, सेठानी बन कर रहना। और क्या चाहिए ?' तुम इतनी गम्भीर बात को इतने हल्के से ले रहे हो। अब मेरे गम्भीर होने की बारी थी। वह सिर झुकाये हुए मेज का कोना कुरेदते हुए बोली 'क्या यह नहीं हो सकता कि हम दोनों...।'

बात पूरी करने की जिम्मेदारी मेरी थी, पर मैं खामोश रहा। हाँ बोलते ही कहा ले जाकर बैठाऊँगा इसे। टूटा-फूटा घर, आधी-अधूरी गृहस्थी। फिर वह कई बार मिली थी, औसत बाते भी होती रही थी, पर अब उनमें आत्मीयता के बावजूद चिंताएँ अधिक दिखतीं। उसे माँ के न होने और जर्जर पारिवारिक स्थितियों का संकेत भी किया, पर उसने सिर्फ इतना कहा था -- 'हालात बदलते भी देर नहीं लगती।' फिर हम दोनों की लम्बी खामोशी और बस।

आखिरकार एक दिन उसने बताया -- 'शादी तय हो गयी है, फलां तारीख को।' एक गहरी उदासी उस पल में भी हम दोनों के चेहरे पर पसरी रही थी एक साथ, जैसे वही जीवन का पर्याय बन गयी थी। विश्वास नहीं होता 'कल उसकी आँखों ने क्या जिंदा गुफ्तगू की थी/ गुमान तक न हुआ, वह बिछुड़ने वाली है।...

फिर काफी दिनों तक हम नहीं मिले थे। डेढ-दो साल बाद उसका फोन आया था, हम मिले भी, तमाम बाते भी होती रही, पर उनमें औपचारिकता अधिक थी। शायद वह प्रतीक्षा न कर पाने के अपराध बोध से उबर चुकी होगी, पर मैं अभी भी खुद को माफ नहीं कर पाया था।

तभी उसने धीरे से बताया था कि नन्हीं बेटी है। घर पर माँ के पास छोड़ आयी हूँ। कुछ पल बाद मैंने उसका पर्स लिया, खोला और उसमें काफी सारे पैसे रख दिये। बोला- 'बेटी के पास ढेर सारे कपड़े होंगे। एक फ्राक मेरी ओर से भी पहनाना और फिर उसे देखना। मुझे लगा कि यदि अब ज्यादा कुछ कहा तो वह रो देगी, सो तत्काल विदा करते हुए कहा जीवन मनचाही राहो पर हमेशा चलता रहे, यह जरूरी नहीं है। आखिरकार वह थके कदमों से यह जानते हुए भी उठी कि 'जाना' हिन्दी की सबसे खौफनाक क्रिया है।

वह पल था और आज का -- कई दशक बाद भी वह खामोशी तमाम मुखौटों की बीच अभी भी जारी है। मैं वर्तमान में लौटता हूँ। कुछ माह पहले निशा आयी थी, घर भी। पूरे अधिकार से बिगडी थी 'कभी न होने का रोना था और अब है तो घर रखना भी नहीं आया, हर ओर

बेतरतीबी के अलावा कुछ दिखता ही नहीं। ऐसे ही रहा जाता है घर में?'

प्रति उत्तर में मैंने उसे बेटे उत्सव की फोटो दिखायी थी। वह देखती रह गयी थी 'बिल्कुल तुम पर गया है। चेहरे पर कितना सलोनापन है। आत्मविश्वास भी है जो गर घमण्ड तक न पहुँचे तो जीवन सजते-संवरते देर नहीं लगती।

मैंने कहा -- 'तुम्हारी बेटी भी तो जीनियस है। किसी भी बड़ी कम्पनी में नाम रोशन करेगी।'
एक बार देरी का दंश अभी तक सालता रहा था, सो अब देर नहीं की -- 'उसे उत्सव की जीवन साथी बनने की इजाजत दो। मैंने उत्सव से बात कर ली है, वह दोनों भी बात कर चुके हैं।' मैं सोच रहा था कि वह मुस्कुराएगी, तत्काल 'हाँ' कहेगी, पर वह सिर्फ इतना बोली -- 'जैसा तुम लोग चाहो।'

बड़ी मुश्किल से उत्सव को गिने-चुने दिनों की छुट्टियाँ मिली थी। नाते-रिश्तेदार और दोस्त भी गिने-चुने ही थे, सो तय हुआ कि कोर्ट मैरिज ही बेहतर रहेगी और रात में डिनर। गई रात डिनर रहा भी शानदार था।

आज उत्सव और स्वाती बंगलोर निकल रहे थे। निशा और मैं डाइनिंग टेबल के दो छोर पर बैठे थे। दोनों ने ही आकर पैर छुए आशीर्वाद तो दिया ही, फिर उत्सव को हिदायत भी दी 'स्वाती मेरी बहू ही नहीं, बहू-बेटी है। समझे भूल से भी इसे कभी कुछ मत कहना। एक सीख और वैवाहिक जीवन की सफलता एक दूसरे की गलतियों और कमियों को माफ करने में है, उन्हें बढ़ाने में नहीं।

स्वाती और उत्सव को आशीर्वाद देते समय निशा काफी देर तक उत्सव की पीठ पर हाथ रखे रही थी, बिना कुछ बोले। न बोलना भी कभी-कभी बहुत कुछ कह जाता है। शायद बोलने से भी ज्यादा।

जीवन की राह अपने ढंग से तय करने के लिए बहू-बेटे निकल चुके हैं। संक्षिप्त ही सही, घर कर उत्सवी माहौल अपनी पूर्णता की ओर था, पर मैं कई दिनों से यह देख हैरान था कि निशा की नीम खामोशी उसके चेहरे से मानो हटने का नाम ही नहीं ले रही है। बच्चों को विदा करते समय तक भी यह उदासी बदस्तूर थी ।

मैं सिर झुकाए बैठा था और उसकी ओर देखने का साहस नहीं जुटा पा रहा था। फिर भी, ऐसे कब तक चलता सो उसकी ओर एक बार फिर देखा। आश्चर्यजनक रूप से इस बार वह मेज के कोने को सिर झुकाये नाखून से उसी तरह कुरेद रही थी, जैसे बरसो पहले की एक शाम काफी देर तक कुरेदती रही थी। मीलो पीछे छूट गये सपने फिर लौट रहे है, उसके चहरे पर अब शर्म लौट रही है और लगा मानो बीत चुका समय खुद को दोहराने जा रहा हो।

खामोशी तोड़ने के लिहाज से मैंने पूछा 'कविता सुनोगी?'

'अरसा हो गया अच्छी कविता सुने हुए' -- 'वह एकबारगी चहक उठी। प्रतिउत्तर में मैं उसके निकट जाकर खड़ा हो गया, लगभग सट कर उसने एतराज नहीं किया। खामोश माहौल में धीर-गंभीर शब्द गूंजे -- 'सूरज अब जायेगा भी कहाँ/उसे यहीं रहना होगा/ यही हमारी सांसों में/हमारे रतजगों में/हमारे संकल्पों में/ तुम उदास मत हो/ अब मैं किसी सूरज को डूबने नहीं दूँगा..... ।'

उसके चेहरे पर बरसो पीछे छूट गयी मुस्कान फिर से पसर रही थी। हम दोनों एक साथ खिलखिला पड़े। लगभग एक जैसी निश्छल मुस्कान, एक बार फिर से सहेजते हुए।

सम्पर्क सूत्र- 355/123 ख,
आलमनगर, लखनऊ
मो0- 9305894597

कार्ड

➲ पूजा गुप्ता

वृद्धावस्था और मोतियाबिंद से धुंधलाई आँखों में जब निराशा उतर आई तो झिलमिलाते आंसुओं ने दृष्टि को और भी धुंधला बना दिया। जब दृष्टि धुंधला गई तो मस्तिष्क सक्रिय हो गया, क्योंकि हृदय का पलड़ा हल्का हो गया। "क्यों करती हो इंतजार? कब तक करती रहोगी? क्या मिल जाएगा तुम्हें एक बार पोस्ट कार्ड आने से? व्यर्थ ही परेशान होती हो। इस बुढ़ापे में भी मोह-माया त्यागने को तैयार नहीं... क्यों? आखिर क्यों?"

"कैसे त्याग दूँ मोह-माया?"

गिरिजा बुदबुदाई। "इसी मोह माया ने तो जिंदगी के सत्तर वर्षों को सुंदर बनाया और पल-पल खुशियों में गुजरा। हर दिन एक नई आशा नई खुशी लेकर आता था। पल-पल बढ़ती बच्चों की शरारतों, लड़ाई झगड़ों, प्यार-गुस्से मनुहार आदि को संजोया है मैंने, भविष्य के सुंदर सपने बुने हैं। जब इतनी उम्र हँसी-खुशी से बिताई है तो क्या कुछ वर्ष और नहीं बिता सकती।"

"नहीं बिता सकती.. बच्चों के बिना मेरा मन नहीं लगता। उनकी एक-एक किलकारी, उनकी एक-एक आवाज मेरा पीछा करती रहती है... और मैं थक-हार कर उन आवाजों से मोहित हो इंतजार करने लगती हूँ... उनके कार्ड का.. कभी बर्थडे, कभी एनिवर्सरी, कभी न्यू ईयर, तो कभी दीपावली की चिट्ठी।

एक जमाना था जब दिल के गुबार को काले अक्षरों में अभिव्यक्त कर चाहने वालों को भेजा जाता था। हर शब्द जैसे साकार हो उठता था। भेजने वालों का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष खड़ा हो जाता और पाने वाला धन्य हो जाता। वह जब चाहता, जितनी बार चाहता, उतनी बार उसे सामने पाता और स्वयं उस चिट्ठी को बार-बार चूम कर स्पर्श के आनंद से भर उठता। कितना सुखद लगता था चिट्ठी का मिलना और चिट्ठी को भेजना भी। प्रत्येक पंक्ति भावनाओं से ओत-प्रोत मन को छू जाती। बिना खोले ही समझ जाते कि किसकी है, कहाँ से आई है और वह निर्जीव चिट्ठी साकार हो उठती।

जीवन की आधुनिक शैली ने छीन लिए यह एहसास। इस मशीनी युग में भावों की अभिव्यक्ति भी मशीनी हो गई है। हो भी क्यों ना? क्या संवेदनाओं के अभाव में भावनाएँ उथल-पुथल मचा सकती है? जब भावनाएँ नहीं तो अभिव्यक्ति किसकी हो? बस इसलिए बचा लिया इस नए विकल्प ने यानी 'कार्ड' ने। यहाँ सब कुछ मिलता है, हर कुछ बिकता है। सुंदर शब्दों की सुंदर अभिव्यक्ति भी, प्रस्तुतीकरण भी। बस आवश्यकता है पैसों की यानी 'मनी' की। इस 'मनी' ने सबको 'मनी' बना दिया है। रिश्तों को, एहसासों को, कर्त्तव्यों को, नजदीकियों, अपनेपन को। अब हर संबंध, हर रिश्ता उतना ही है,

जितना उसमें 'मनी' है।

कहावत है- 'कुछ नहीं से कुछ भला' और इसी तर्ज पर चिट्ठियों की जगह कार्डों ने ले ली। प्रारंभ में गिरिजा को बड़ी चिढ़ होती थी इन कार्डों से, "अरे भाई, खुद क्यों नहीं कहते 'जन्मदिन की हार्दिक बधाई ।' मंगलकामनाएँ देनी है या धन्यवाद देना है या क्षमा मांगनी है तो खुद कहो, ताकि उस एहसास के साथ सामने वाला भी रोमांचित हो उठे। उसका रोयां-रोयां कम्पित हो उठे। यह क्या कि कार्ड पकड़ाया और उसी मशीनी तरीके से बधाई दे दिया।"

"चलिए शिष्टाचार के नाते ही सही यह परंपराएँ चल तो रही है। यही क्या कम है इस आपाधापी की जिंदगी में।" याद आता है वह दिन जब बच्चों ने जन्मदिन पर अलग-अलग कार्ड दिए और माँ को बधाई दी तो ना चाहते हुए भी गिरिजा ने बच्चों से कह ही दिया, "इस कार्ड पर फिजूल खर्च करने की क्या जरूरत थी? तुम्हारा प्यार ही बहुत है।" बच्चे कुछ उदास से हो गए। एक दिन तो हद ही हो गई। किसी बात पर दोनों बच्चों में झगड़ा हो रहा था। गिरिजा ने भी बीच-बचाव किया। दोनों को डाँटा तो लड़ाई का रुख ऐसा बदला कि वह लड़ाई आपस की न होकर माँ-बेटों की हो गई। अंत में माँ नाराज और बच्चे परेशान। बच्चों ने माफी मांगने का कार्ड लाकर माँ को दिया और चुपचाप खड़े हो गए।

माँ का पारा चढ़ गया, नालायकों, मुँह से नहीं बोल सकते? ऐसे माफी मांगी जाती है माफी... फिर कर आए पैसे खर्च!"

इतना कहना था की हंसी छूट गई बच्चों की, माँ यह तो दुकानदार ने मुफ्त दिया है।"

"क्यों?" गिरिजा ने आश्चर्य से पूछा।

"माफी का है ना। यह मुफ्त ही मिलता है।"

"अच्छा! कितना अच्छा है दुकानदार।"

बच्चे मुस्कुरा रहे थे की माँ को बुद्धू बना दिया और माँ बुद्धू बनकर खुश थी कि बच्चे उसका कितना ख्याल रखते हैं। आज भी वह कार्ड अमानत की तरह सम्भाल कर रखा हुआ है।

अंधेरा बढ़ने लगा तो गिरिजा के पति ने उनसे कहा,

कब तक करोगी इंतजार ? अब पोस्टमैन नहीं आएगा।"

"किसने कहा कि मैं इंतजार कर रही हूँ..? मैं तो ऐसे ही बाहर बैठी हूँ।"

"झूठ मत बोला करो इस उम्र में।" मैं सब समझता हूँ। मुझसे कुछ मत छुपाया करो। हम एक-दूसरे को इतना समझ गए हैं कि तुम कब क्या चाहती हो, क्या छुपा रही हो, कब सच बोलती हो, कब झूठ। कब दिल से खुश होती हो, कब बाहर से। कितना बता रही हो कितना छुपा रही हो। तुम्हारी हर बात से, हर चाहत से वाफिक हूँ।"

"फिर पूछते क्या हो?"

रुआंसी हो कर गिरिजा ने कहा।

"अच्छा अब आगे से नहीं पूछूंगा। अब तो चलो।" सहारा देते हुए उन्होंने कहा।

"तुम भी हद करती हो। अभी कल ही तो तुमने टेलीफोन पर बात की थी। अमेरिका क्या इतने पास है कि आज चिट्ठी लिखो और कल मिल जाए। तुम्हारा तो कभी दिल ही नहीं भरता।"

अरे... बच्चों से बात करके... कभी किसी का दिल भरता है भला।"

"तुम्हारे दिल की खातिर अपनी जेब खाली कर देता हूँ, इतना बिल बनवा देती हो टेलीफोन का।"

"मैं क्या अकेली बात करती हूँ? खुद ही तो फोन लगाते हो और नाम मेरा धरते हो ।"

"अच्छा... अब तुम्हारा नाम भी ना लूंगा... अब चलो भी।" उदास थकी हारी सी गिरिजा उठी। अंदर जाने के लिए कदम बढ़ाए, पर मुड़कर एक बार फिर बाहर

नजर दौड़ाई।"

"देखो तो... कोई आ रहा है?"

"कोई होगा?"

"नाथूराम ही लगता है।"

"तुम क्या इतनी दूर से पहचान सकती हो?"

"हाँ... वह ऐसे ही साइकिल चलाता है।"

"अब तो तुम्हें साइकिल चलाने का ढंग भी दिखाई देने लगा है। अब डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"मजाक मत किया करो।"

"तुम्हीं ने तो कहा था मोतियाबिंद की वजह से दिखाई नहीं देता।"

"ओह!" गेट खुलने की आवाज आई तो दोनों ने मुड़ कर देखा,

"मांजी..." नाथूराम ने पुकारा।

"नाथूराम... देखो मैं कहती थी नाथूराम होगा।"

"मैं ही हूँ... मैंने सोचा आप इंतजार कर रही होगी इसलिए इस समय ही चला आया।"

आता भी क्यों ना। उसे हर कार्ड के साथ बख़्शीश जो मिलती थी और मुँह मीठा भी होता था।

"क्या लाया है?" उतावली सी गिरिजा आगे बढ़ी।

"कार्ड!"

कार्ड को गिरिजा ने छाती से लगा लिया जैसे वह कार्ड नहीं, उसका बेटा ही हो।

भगवान दास की गली
आदर्श स्कूल के सामने
गणेश गंज
मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल नं0- 7007224126 पिन कोड - 231001

काम से ज्यादा काम के पीछे की भावना का महत्त्व होता है। जो काम शुद्ध हृदय से होता है, देखने में छोटा भले ही हो परन्तु उसका फल बड़ा ही महत्त्वपूर्ण होता है। बड़े से बड़ा काम अगर हीन आदर्श लेकर किया जाय तो उसकी कोई बड़ी कीमत नहीं हो सकती।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

संत्रास

➲ मंगला रामचंद्रन

यशी साधारणतया शाम के बाद ही टी वी लगाया करती थी। दिन भर की व्यस्त दिनचर्या के बाद शांत चित्त से समाचार सुनना फिर दो एक पसंद के कार्यक्रम देख लेती। पर उस दिन अपेक्षाकृत समय अधिक था सो दिन में ही समाचार लगा लिया। मानों इसी वज्रपात के लिए ही टी वी लगाया हो। पर्दे पर जिसकी तस्वीर दिखाई जा रही थी उसे पहचानने में भूल कैसे कर सकती है! अभी पिछले सप्ताह ही तो वो यशी से मिलने घर आया था। अचानक, अनायास स्कूल कॉलेज की शिक्षा पूर्ण कर लगभग बीस वर्षों पश्चात! बीच के दरम्यान ना कोई सम्पर्क ना कोई खबर, मानों एक दूसरे के अस्तित्व से भी अनजान हों।

उस दिन जब अर्दली ने यशी को सूचना दी कि बाहर कोई व्यक्ति आपसे मिलना चाहता है तो वो आश्चर्य और कौतूहल से भरी गई थी। ऐसा अनजान व्यक्ति कौन होगा जो उससे मिलना चाहता है, क्योंकि एस पी साहब से मिलने आने वाले बाकायदा चिट भिजवा कर बाहर के आफिस में मिलते। अक्सर अर्दली उनको चिन्ह जाते थे और पहचानने लगते थे। यशी से मिलने आने वालों में अधिकांश महिलाएँ ही होती थीं जिनको भी सारे अर्दली अच्छे से जानने पहचानने लगे थे। अब ये नया व्यक्ति कौन हो सकता है, यही सोचतें हुए जब उस व्यक्ति को ठीक अपने सामने पाया तो विस्मय से चकित रह गई । स्कूल में दस ग्यारह वर्षों का साथ कक्षा के हर छात्र छात्राओं के बीच लगभग-लगभग एक मित्रता का एहसास दिला ही देता है। हाँ, किसी के प्रति कुछ आसक्ति हो सकती है तो किसी और के साथ मित्रता का भाव अधिक गहरा हो जाता होगा। स्कूली शिक्षा के बाद पृथक राहों पर निकल जाने पर भी कुछ के सम्पर्क सूत्र बने रहें हैं और कुछ ऐसे थे जिनका कोई अता पता ही नहीं था कि कहाँ हैं और क्या कर रहें हैं। चैतन्य की बस इतनी खबर थी कि उसने खड़गपुर से बी टेक किया, उसके बाद कहाँ गया क्या कर रहा है कुछ अता पता नहीं था। यशी को जानने की उत्सुकता भी तो नहीं थी और कदाचित कक्षा के किसी भी छात्र को उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता रहीं भी नहीं होगी। उसका स्वभाव ही कुछ विचित्र सा था, बातें करते हुए कभी तो लगता मानों वह समक्ष खड़े व्यक्ति के दिल में ही झांक रहा है और कभी कहीं इतनी दूर देखता हुआ लगता मानों अंतरिक्ष में टकटकी लगाए हो। उसके पिता किसी स्कूल में शिक्षक थे और कभी अपने बेटे के स्कूल आएं हो ऐसा हुआ नहीं। उसकी माँ भी या तो जीवित नहीं है अथवा उसके पिता को छोड़कर चली गई। ये सारी ख़बरें बस सुनी सुनाई होतीं जिनकी सत्यता का किसी को कुछ पता नहीं था।

चैतन्य का कक्षा के छात्रों के साथ संभाषन अत्यंत अल्प था, पर शिक्षक शिक्षिकाओं से पढ़ाई से सम्बन्धित

प्रश्नों का एक जखीरा सदा रहता। अभी तो जिनियस की तरह लगता और कभी ऐसे बेतुके सवाल पूछता मानों शिक्षकों को मात्र खिजाना चाहता हो। अब इतने लंबे अंतराल के बाद उस शख्स को अनायास अचानक अपने सम्मुख देखने पर स्कूल की मीठी स्मृतियाँ ज़हन में आई और यशी के होंठ स्मित मुस्कान में खिल उठे। हो सकता है अर्दली ने उसकी खुशी को चैतन्य के आगमन से जोड़ कर देखा हो! उस समय तो स्वाभाविक रूप से हुई क्रिया और प्रतिक्रिया थी पर अब इस खबर को देखकर उसका मन विचारों का बवंडर सा उठ खड़ा हुआ।

चैतन्य कट्टर नक्सली है और किसी मकसद से उस जिले में घूम रहा है। खासकर प्रमुख सरकारी अधिकारियों के घरों में घुसने का कोई ना कोई बहाना बनाकर अंदर प्रवेश कर रहा है। आम लोगों से सावधानी बरतने और फोटो पर दिख रहे व्यक्ति को देखने पर सूचना देने के लिए सम्पर्क नंबर दिया गया था। जिस दिन वो यशी से बंगले पर मिला था उस दिन, उस वक्त को यशी अपने जेहन में लाकर मन ही मन दोहराती है कि क्या-क्या बातें हुई थी, चैतन्य ने ऐसा कुछ विशेष कहा हो जिसका यशी कुछ अर्थ निकाल सके। पर ना ही कुछ याद आ रहा था ना समझ जिससे कोई संकेत मिले कि किस मकसद से आया था। यशी ने पूछा था कि उसे कैसे पता कि वो यहाँ है, जिसका जवाब उसने एकदम सहजता से दिया ----"अरे भाई, तुम ठहरी जिले के पुलिस अधीक्षक की पत्नी तो तुम्हारे पति देव जहाँ तैनात होंगे वहीं तो रहोगी।"

चैतन्य से यशी ने एक साथ अनेक प्रश्न पूछ लिए थे, वो कहाँ है क्या कर रहा है और यहाँ किस काम से आया है। उसने यूँ ही गोल-गोल सा उत्तर दिया था, ---"खंडवा जा रहा था, जीप ख़राब हो गई, सुधर रही है। वो सब छोड़ो, तुम कैसी हो? एस पी साहब के साथ मज़े ही कर रही होगी, पुलिस विभाग में तो दोनों हाथों में लड्डू ही तो है।"

"क्या मतलब है तुम्हारा; चौबीसों घंटों में कभी भी काम आ जाना, जान सांसत में पड़ी रहती है सो अलग फिर ऐसे-ऐसे अपराधियों के साथ डील करना पड़ता है ये सब तुम्हें मामूली और सरल लगता है ?"

जोश में आकर इतना बोल गई फिर तनिक सांस लेने रूक कर अवहेलना और तंज कसते स्वर में बोली----" तुम तो शायद इंजीनियर हो और तुम्हारे काम के घंटे तो तय होंगे।"

अब जब उस दिन के पूरे संभाषन का याद करती है तो साफ समझ आता है कि कितनी सफलता से बात को टालते हुए कुछ यूँ कहा था ---- "सरकारी अफसरों को इतनी सहूलियत और अन्य सुविधाएँ मिलती हैं उस अर्थ में कह दिया था। बुरा लगा हो तो माफी चाहूंगा।"--- कहते हुए उसके चेहरे पर विद्रूप एवं अवहेलना भरी हंसी साफ देख पा रही थी।

यशी ने बेमन से चाय के लिए पूछा अवश्य और जब वो ये कहते हुए निकल गया --- "कहीं जल्दी पहुँचना है, जीप ठीक हो गई होगी, पर हाँ चाय पीने कभी आऊंगा जरूर।"--- तेजी से निकल गया।

अब जब उस दिन की घटनाओं को सिलसिलेवार याद करती है तो सिहर उठती है। अच्छा हुआ चाय पीने रूका नहीं, पर आया क्यों था? पुलिस अधीक्षक के बंगले पर उनकी पत्नी से मिलने आना, भले ही वो स्कूल में साथ में रही हो, पर इस तरह अचानक और चंद मिनटों के लिए आना रहस्यमई मुआयना करने जैसा लग रहा है। यशी ने तो उसी दिन पति समीर को चैतन्य के अचानक आने और तुरंत चले जाने की बात कही थी, उसी सहजता से जितनी किसी भी परिचित के आगमन पर बताती थी।

समीर ने भी तो सदा की तरह सरलता से कहा था----"मैं घर पर होता तो मिल लेता पर ये नौकरी ही

ऐसी है, कोई बात नहीं उसे किसी दिन बुला लेंगे।"

यशी कहना चाहती थी कि चैतन्य उसके लिए तनिक भी अहमियत नहीं रखता है कि बुलाया जाए और वैसे भी उसने सम्पर्क बनाए रखने के लिए अता पता अथवा नंबर दिया ही नहीं। अब टीवी पर उसका चित्र देखते और खबरें सुनते हुए वो स्वयं को एक जाल में फंसाता हुआ महसूस कर रही है। चैतन्य अचानक अथवा अनायास नहीं आया था वरन् योजना बना कर ही आया होगा। समीर तो कुछ दिनों से मुख्यमंत्री और प्रदेश के गृहमंत्री के साथ मीटिंग में इतने व्यस्त हैं कि खाने पीने का भी ठिकाना नहीं है, यशी और उसकी ढंग से बात भी कहाँ हो पा रही है! यशी का मन असाधारण रूप से बैचेन हो रहा था, उसे इस बाबत जल्द से जल्द समीर से बात करनी है। अपने मन की उलझन को और किसी के साथ बांट भी नहीं सकती और मन ऊटपटांग सोचों से ऐसा कोहराम मचा रहा था कि यशी स्वयं को अपराधी की तरह महसूस कर रही थी। बाहर खड़े संतरी और अर्दली ने चैतन्य को देखा ही था तो आपस में या किसी और से उसके यहाँ आने का बताएंगे ही। शायद ये लोग ऐसा तो कह रहें हों कि कप्तान साहब की बीबी का दोस्त तो नक्सली है। अब तक तो ये समाचार लगभग सभी ने देखी और पढ़ ली होगी। अच्छा हुआ कि बेटी दादा दादी के साथ राजधानी में शिक्षा ग्रहण कर रही है। यशी तड़प रही थी कि समीर के साथ आमने-सामने खुल कर लंबी चर्चा हो जाए पर पिछले कुछ समय से समीर किसी प्रमुख मुद्दे को लेकर अत्यंत व्यस्त हैं। लगातार मीटिंग भी चल रहीं हैं मानों कोई व्यूह रचा जा रहा हो। तभी उसका माथा ठनका, कहीं चैतन्य के खिलाफ ही कोई घेराबंदी तो नहीं हो रही? वो फड़फड़ाने लगी कि समीर से जल्द से जल्द बता दे कि चैतन्य से उसका ना कोई लगाव है ना उसे उसके नक्सली होने का पता था। पर समीर का तो खाना सोना सब कुछ इतना अनियमित और अनिश्चित सा हो गया है कि उसे लगने लगा था कि उस बड़े बंगले में वो अकेली ही रहती है। अभी तक दूसरे अफसरों की बीबीयों से बात करते मिलते, आपस में मिलकर गेम्स खेलते या लेडीज़ क्लब की योजना बनाते समय आसानी से कट जाता था। अब इस खबर के बाद यशी चिंतित हो गई थी, एक हिचक और झिझक उसे किसी से भी बातें करने से रोक रही थी।

बंगले का गार्ड और अर्दली जिन्होंने चैतन्य को देखा था वो क्या सोच रहें होंगे या फिर आपस में इस बारे में बातें तो नहीं कर रहें होंगे? उसकी मनोदशा ऐसी हो गई कि लगा सांस लेने में दिक्कत हो रही हो, सिर में ऐसा भारीपन महसूस कर रही थी कि लगा फिर गर्दन पर टिक ही नहीं पाएगी। बेचैनी के मारे ना बैठ पा रही थी ना लेट पा रही थी। बाहर इतना बड़ा हरी मुलायम घास का लॉन तथा सुन्दर बागीचा है पर एक अनजानी ज़ंजीर पैरों को जकड़ रही थी और वो घर के बाहर कदम बढ़ाने में भी झिझक रही थी। खाना बना रखा है पर खा नहीं पाएगी, गला सूख रहा है पर उसे गीला करने की चेष्टा करने की भी इच्छा नहीं हो रही। बस एक ही विचार मन को मथे जा रहा है कि समीर से तुरंत बात करनी है। सिर के अंदर मानों भट्टी जल रही और फिर कभी भी फट जायेगा। यशी समझ गई थी कि उसका ब्लडप्रेशर इतना बढ़ गया होगा कि हेमोरेज हो सकता है। तभी उसे लगा कि स्वयं को शांत और संयत रखना उसकी प्राथमिकता होनी चाहिए वरना समीर के आने पर अपने मन की बात को सही तरीके से नहीं रख पाएंगी। लंबी-लंबी सांसे लेकर शांत चित्त से मेडिटेशन करने की कोशिश करने लगी।

आखिरकार समीर का फ़ोन आया कि वो रात आठ साढ़े आठ बजे तक पहुँच जाएगा और खाना भी खाएगा। फ़ोन पर उसकी आवाज़ सुन कर यशी का ऑक्सीजन लेवल ही मानों बढ़ गया हो, वो समीर की पसंद का कुछ बनाने की योजना बनाने लगी। दिल में बैठा भय

और शंका का भूत मानों भाग गया था। धीरे-धीरे वो सामान्य हो रही थी और आश्वस्त भी कि उसने कुछ ग़लत तो किया ही नहीं, चूक उससे हुई ही नहीं तो वो क्यों घबरा उठी!

समीर आते से ही बोले- "दस मिनिट दो, नहा कर आ जाता हूँ फिर साथ खाना भी खाएंगे और बातें भी कर लेंगे।"

एक लंबे अर्से के बाद समीर का सानिध्य मिलेगा वो अपनी तरफ से स्पष्टीकरण में अधिक समय जाया ना कर दे। दोनों टेबल पर बैठे और यशी ने कहा--"बस एक बात आपसे कहनी है कह दूं फिर साथ खाएंगे।"

समीर उसकी ओर देख कर बोला ---"यार जल्दी से बता दो, बहुत तेज़ भूख लगी है और थकान भी महसूस हो रही है।"

समीर की हड़बड़ाहट देख कर ना जाने कैसे यशी के मुँह से सीधे-सीधे, बिना भूमिका बांधें निकल गया उस दिन जो क्लास मेट चैतन्य मिलने आया था वो तो ------ "--- बात पूरी होने से पहले ही समीर ने खाना प्रारंभ कर दिया और कहा ----"यही बात थी, अधिक परेशान मत हो जाओ। उस पर हम लोग लगातार नज़र रख रहें हैं बस कुछ समय की बात है फिर उसका खेल ख़त्म।"

यशी खुले मुँह से उसे ताक रही थी, इतनी गंभीर बात को ऐसी सहजता से कहना मानों कोई मसला हो ही नहीं।

"अरे ऐसे क्या देख रही हो, खाना नहीं खाना है क्या? जल्दी सोना भी है, सुबह से बहुत व्यस्त हो जाऊंगा।" --- समीर का खाना समाप्ति पर था।

यशी ने अपने अचरज पर काबू पाया और समीर के लिए बनाई ख़ास मीठा डिश ले आई। स्वयं का खाना आनन-फानन में समाप्त कर बेड रूम में आई। मन में उठते प्रश्न उसे पूरी तरह से आश्वस्त नहीं कर पा रहे थे। कमरे में प्रवेश करते हुए उसने पूछा ----"जब आपको उसका इतिहास पता था, नज़र भी रख रहे थे तो फिर मुझसे मिलने क्यों दिया? तुम्हारी ये अर्दलियों की फौज मेरे बारे में कितना गलत सोच रही होगी !

"तुम यूँ ही तनाव मत लो, बस इतना समझ लो कि हम लोगों की एक प्रणाली होती है जिससे इनकी प्लानिंग और मक़सद जान सकें। यदि चैतन्य के खिलाफ तुरंत कोई कार्रवाई करते हैं तो दल के बाकी लोग चौकन्ने हो जाएंगे और वो कितना और किस तरह का नुक़सान पहुँचा सकतें हैं ये पता ही नहीं चलेगा।"----यशी को असमंजस में पड़े देख कर समीर बोला ----"यार प्लीज़, आज और कुछ मत पूछना, अगले चंद दिन बहुत व्यस्तता भरे रहेंगे। पर इतना वादा करता हूँ कि तुम पर तनिक भी आँच नहीं आएगी और आश्वस्त रहो कि तुमने कुछ ग़लत नहीं किया है। अब मुझ पर भरोसा कर खुद भी सो जाओ और मुझे भी सोने दो। "---समीर की थकान से भरी, मुंदती आँखों को देख यशी का दिल भर आया। वो आश्वस्त होकर उसके करीब लेट गई और उसके बालों को उंगलियों से सहलाने लगी।

यशी भी सो गई थी और ऐसा सोई कि सुबह जब आँखें खुली तो समीर को यूनिफॉर्म में पूरी तरह तैयार पाया। "मुझे जगाया क्यों नहीं, एकदम चले मत जाना, जल्दी से चाय नाश्ता तैयार कर लेती हूँ खा कर ही जाना। "--- बहुत तेजी से सब बना कर टेबल पर रखा।

"अब अगले कुछ दिनों के लिए मेरा कोई तय समय नहीं रहेगा, जब समय मिल जाए या जब सुविधा हो जाए आ जाया करूंगा। पर तुम बहुत चौकस रहना, आसपास के बंगलों में भी पूर्व की तरह टहलते हुए अकेले मत निकल पड़ना। असल में ये लोग सरकारी अफसरों के बंगलों में जा जाकर टोह ले रहें हैं, या तो अपने हथियार छुपाने या सदस्यों को पनाह देने तथा छुपाने की जगह की

तलाश कर रहें हैं। हम पूरी टोली को रंगे हाथों पकड़ने के लिए जाल बिछा रहें हैं। बहुत ही गुप्त तरीके और धैर्यपूर्वक कार्य करना होगा। तुम्हारे लिए वैसे तो कोई खतरे वाली बात नहीं है पर लापरवाही मत बरतना।"

यशी का चिंतित मुख देख कर बोला ---"अरे यार, चिन्ता वाली कोई बात है ही नहीं क्योंकि उन लोगों के हर कदम से हम वाकिफ हैं। बस तुम सहज और सामान्य बने रहना। एक और बात खास हिदायत के तौर पर बोल रहा हूँ, भूल से भी मेरी इन बातों को किसी से भी साझा मत करना, ना आमने-सामने ना फ़ोन पर। वरना हमारी योजना में सेंध लग गई तो सब चौपट हो जाएगा।"

समीर उसे अवाक् एवं सन्न छोड़ गया और तब से यशी ने वो सात दिन एक रोबोट की तरह गुजारे। टी वी लगाने से कतराने लगी, फ़ोन पर किसी से खुल कर बात करना दुष्कर हो गया था, कहीं मुँह से कोई गोपनीय बात निकल ना जाए। ना कुछ पढ़ने में मन लगता ना दूसरे कामों में। बस स्वाति नक्षत्र के चालक की तरह समीर का इंतजार करती और उस अल्प क्षणों में मानों जी जाती। समीर के चेहरे, हाव-भाव में जो आत्मविश्वास और दृढ़ता झलकती उससे यशी को भी कुछ ऊर्जा मिल जाती। इन हालातों का सर यशी के स्वास्थ्य पर तो पड़ ही रहा था, शारीरिक रूप से तो वो एक कमरे में कैद हो ही गई थी, पर मानसिक रूप से भी बुरी तरह प्रभावित हुई। बैठे-बैठे ऊल-जलूल सोचों में डूबी रहती और तब तक कई झपकियाँ लेते हुए अचानक चौंक कर यूँ चारों ओर देखती मानों तंद्रावस्था से जागी हो।

फ़ोन लगातार घनघना रहा था और यशी नीम बेहोशी की हालत में सुनते हुए भी समझ नहीं पा रही थी। अर्दली ने उसके बंद दरवाजे पर जोर से दस्तक दी तब जाकर चेतना में आई।

"मैडम काफी देर से फोन बज रहा है।"

"हाँ हाँ मैंने उठा लिया, "----- फ़ोन के दूसरी तरफ कलेक्टर साहब की पत्नी थी। यशी बधाई हो--- यशी पूछने वाली थी "किस बात की बधाई," पर अच्छा हुआ उन्होंने उसे मौका ही नहीं दिया और बोलती चली गईं।

"समीर ने जिस तरह योजना बना कर नेक्सलाईट के इस दल को घेरा कि जीत तो मिलनी ही थी। इस मामले से ये लोग फारिग हो जाएँ तो पार्टी वगैरह करतें हैं।"

जिले की किसी भी मुहीम में पुलिस अधीक्षक के साथ जिलाध्यक्ष का साथ और सहयोग होता है। इस जिले के जिलाध्यक्ष समीर से आयु और अनुभव में काफी वरिष्ठ हैं और दोनों पति-पत्नी का समीर और यशी के प्रति स्नेह मात्र दोस्ताना ना होकर कुछ अधिक है।

ख़बर पा कर यशी के शरीर में मानों विद्युत की तरंगें दौड़ गई और लगा वो ऊर्जावान हो उठी। स्वयं को फ्रेश किया और एक अच्छी सी पोशाक निकाल कर पहनी और बहुत दिनों के बाद आईने में स्वयं का मुआयना किया। सूखा बुझा-बुझा सा चेहरा साफ़-साफ़ समझा रहा था कि पिछले दिनों अनायास घटी एक घटना ने चेहरे की रौनक को किस तरह धूमिल कर दिया। वास्तविकता में इस लड़ाई को जो मैदान पर सामना कर रहा है उसके संघर्ष को तो यशी ने नज़र अंदाज़ ही कर दिया था। वो स्वयं तो कल्पना और ऊटपटांग सोच से स्वयं को पीड़ित मान किस को सज़ा दे रही थी या बेचारगी का तमगा लगाना चाहती थी । झटके से उठी और मन में भरे सारे शंकाओं को एक वायरस की तरह भगा दिया। सदा की तरह समीर के संघर्ष और विजय में शामिल होने के लिए तैयार हो गई ।

सम्पर्क सूत्र- 608 आई ब्लाक मेरीगोल्ड
ओशन पार्क, निपनिया,
इन्दौर- 452010
चलभाष- 9753351506

अंतहीन भय

➲ केशव मोहन पाण्डेय

हुड्डा सिटी सेंटर मेट्रो स्टेशन गुड़गाँव में ब्लू लाइन मेट्रो का अंतिम पड़ाव तो था ही, अब इसका स्वरूप एक शॉपिंग मॉल जैसा हो गया है। कबाब एक्सप्रेस से लेकर फूड प्वाइंट और न जाने किस-किस तरह की रेस्तरां और शॉपिंग प्वाइंट खुल गए हैं। स्टेशन पर हमेशा आने-जाने वालों का ताँता लगा रहा है। ढाई बजे के आस-पास भी मेट्रो में यहाँ से इतनी भीड़ चलती है कि सबको बमुश्किल बैठने का स्थान मिलता है। कई स्कूल बसें आकर जैसे ही तीराहे को पार करती हैं, एकाएक थोड़ा दाहिने होकर बाँये घूम जाती हैं। कई बसें आगे आकर प्री-बुकिंग टैक्सी प्वाइंट के पास रूकती हैं और लगभग हर बस से एक-दो मैम और सर उतरते हैं। उन्हें उतरने के बाद बड़ी ही सावधानी से स्टेशन जाना पड़ता है, नहीं तो ऑटो ड्राइवर ऐसा शोर मचाते रहते हैं कि कान फट जाए।

राघव भी आज उसी समय नव-निर्मित फूट ओवर से इस पार आया तो देखकर लगा कि कुछ असहज है। पता नहीं गुड़गाँव ट्रैफिक वाले निरंतर एक्पेरिमेंट करते रहते हैं या उनका प्री प्लांड एक्शन है? यहाँ ट्रैफिक में हमेशा कुछ-न-कुछ नया होता रहता है। कभी फूट ओवर के आगे एक गोल चक्कर होता था, आज सब सफाचट्ट। फिर पिल्लर संख्या एक सौ निन्यानबे और दो सौ के पास गोल चक्कर था, आज उसकी त्रिज्या चौथाई से भी कम हो गई है। अभी तक तो दायें-बायें देखकर नौजवान लड़के-लड़कियाँ सड़क पार कर लेती थीं, अब उसे भी काँटेदार तारों से घेर दिया गया है। कल तक उसमें भी एक-दो जगह खुला छोड़ा गया था, आज उसे भी बंद कर दिया गया। राघव को यह काम अच्छा लगा। इससे जनता की ही भलाई है नहीं तो सड़क पर भागती गाड़ियों को चकमा देकर भले लड़के-लड़कियाँ सड़क पार कर लेती हैं, मगर बेपरवाह गाड़ियाँ किसको स्वाहा कर दें, कौन जानता है? उस पर आटो चालकों का शोर-शराबा। ऊफ ! उनकी चले तो सवारियों को जबरन टांग कर बैठा लें। ... यहीं सब सोचते हुए राघव ने जैसे ही फूट ओवर के अंतिम स्टेप पर कदम रखा, बाएँ की ओर से सड़क पार करती एक लड़की की हरकतों पर नज़र गई थी भी देखने लायक। साँचे में ढली।

रावघ की आँखें दूर से ही उसे देखने लगीं। शायद वह व्यापार केंद्र की ओर से आई और अपनी ऑडी से उतरते ही अपने सुनहरे और सलीकेदार जुल्फों को जो एक ओर झटकी तो राघव रूक सा गया। मेट्रो पकड़ने की जल्दीबाजी मंद पड़ गई। राघव ने लड़की की उस अदा को देखा जिसे शायद कोई नहीं देख पाया था। ऑडी जिस गति और शान से आई थी, उसी गति और शान से चली गई। लड़की अपने गोरे तन पर काला कुर्ता और आसमानी रंग

का लैगी पहनी थी। दाँये कंधे से उसका आसमानी पर्स जैसा बैग लटक रहा था।

लड़की ने इधर आने के लिए फूट ओवर को देखा। अभी निर्माणाधीन है। वह असहज दिखी। देखने में लगती तो बेहद बोल्ड थी। अब मेट्रो स्टेशन आने के लिए या तो निर्माणाधीन फूट ओवर से आए, या आगे जाकर पिल्लर संख्या दो सौ के पास से टर्न ले। इन दोनों के बीच का रास्ता उसे अच्छा लगा। दो विकट परिस्थितियों में बीच का रास्ता निकालना आई. क्यू. का शार्पनेस कहा जाता है। लड़की ने झट से कँटीली तारों के बीच से अपना एक पैर बढ़ाया और दो तारों के बीच से साँचे में ढले अपने सलीकेदार तन को पार करना ही उचित समझा। पता नहीं झुझलाहट था या घबराहट। सलीकेदार तन अव्यवस्थित हो गया और ऊपर के तार का काँटा उसके पीठ के कपड़ों को फाड़ता हुआ उसे पीछे से आवरणहीन करता चला गया। लड़की तार को पार कर गई मगर पानी-पानी हो गई। राघव फूट ओवर की अंतिम सीढ़ी पर पैर रखा ही था कि उस घटना ने शॉक दे दिया। लड़की इधर-उधर किसी ऐसे को देखने लगी जो कोई भी तो उसका तन ढके। सभी स्त्री-पुरुष उसे देखते अपने रास्ते चले जा रहे थे। ऑटो-ड्राइवर्स का कमेंट उसे तो दुखी कर ही रहा था, राघव भी दुखी था। कई नौजवान तो टी-शर्ट में लटक रहे अपने काले चश्मे को आँख पर चढ़ा कर उसे घूरते निकलने लगे। नहीं देखने का बहाना करते रहे। एक औरत के पास जाकर लड़की ने उसका दुपट्टा लेकर तन ढकना चाहा कि वह झटके से छुड़ाकर चली गई। लड़की कातर दृष्टि से एक-एक का चेहरा देख रही थीं। कोई मुस्कुराकर चला जाता तो कोई मुँह फेर कर। कोई दुख व्यक्त करती नज़रों से देखता चला जाता । एक ऑटो ड्राइवर ने गमछे से अपना मुँह पोंछते हुए बगल वाले से कह रहा था - "आई थी हिरोइन बनने। मर्दानी बन रही थी, अब मज़ा आ रहा होगा। तन दिखा रही है।"

राघव भी सबको देख रहा था। स्वयं को भी। सबको स्वयं में व्यस्त देखकर वह लड़की की सहायता करने के लिए आगे बढ़ा ही था कि तभी वह एक ऑटो में बैठकर शायद घर वापस चली गई।

मेट्रो के स्पीकर से जब आवाज़ सुनाई दिया कि 'अगला स्टेशन राजीव चौक है, दरवाज़े बायीं ओर खुलेंगे' तब राघव को होश आया। अभी तक वह हुड्डा सिटी सेन्टर की घटना से उबरा ही नहीं था। सामने 'केवल वृद्धों के लिए सीट' पर नज़र टीक गई। देखा कि लोग एक नज़र तो उसपर डालते हैं, मगर मुँह बिचकाकर फेर लेते हैं ।

एक फटेहाल वृद्धा अपने जवान लड़के का सिर गोद में रखे बैठी थी। बेटे को कुछ ऐसी परेशानी थी कि वह ठीक से बैठ भी नहीं सकता था। शरीर में केवल हड्डियाँ ही नजर आ रही थीं। वह भी सूखी हुई। आँखें बाहर की ओर निकली। थोड़ा भी घूमाता तो लगता कि अभी हाथ में आ जाएँगी। वृद्धा कुछ बोल नहीं रही थी, सिर्फ रो रही थी। उनके चेहरे की झुर्रियों में उलझ कर आँसू सहस्रधारा में परिणत हो जा रहे थे। अपनी मैंली साड़ी के पल्लू से बेटे का चेहरा बार-बार पोंछती और चिंतित दृष्टि से देखती। राघव जानना चाहा। पास जाकर पूछा, 'क्या हुआ है आंटी?'

"यो मेरो छोरो सै।... एम्स में गई थी। ...डॉक्टर न्यू बोल्यो टी बी सै। ... बचण की आस ना सै।' -फिर अपना आँसू पोंछती है - 'रे क्यूकर ना बचेगा ? ... ऐ छोरो! ... यो ना रह्यो तो मैं एकली हो जांगी न रे।"

ट्रेन राजीव चौक रूकी। सभी उतरने-चढ़ने की बेचैनी में थे। जैसे यह ट्रेन नहीं, समय हो। जैसे एक बार गया तो आया नहीं। जैसे सभी को इमर्जेन्सी है। जैसे बस यह अंतिम ट्रेन है। जैसे अभी नहीं तो कभी नहीं। ...वैसे तो राघव को जहाँगीरपुरी जाना था। वह भी चाहता तो

किसी अंकल-आंटी की चिंता किए बिना अधिकतर नौजवानों जैसा कान में इयर फोन लगाकर आँखें मुदकर एक तरफ बैठ जाता; या तो एफ.एम. के गानों में खोया रहता या ड्रामा क्वीन का ऐड सुनता और सोने का स्वांग भरता; पर उसे लगा कि 'राजीव चौक की भीड़ में बुढ़िया अपने बेटे को कैसे उतार पाएगी? ... मैं उसकी सहायता कर देता हूँ।' वैसे तो बुढ़िया के पास एक कई साल पुराना किसी वस्त्रालय के थैला के अतिरिक्त उसका बीमार बेटा ही धन था। राघव ने उसके बेटे को दोनों बाजुओं में पीछे से हाथ लगाकर बाहर निकाल दिया। बुढ़िया भी उतर गई। बेटे का मुँह पोछी। अपने माथे का भी पसीना पोछी और चिल्लाने लगी। पता चला कि इस उतरने- चढ़ने की धक्कम- धुक्की में किसी ने बुढ़िया का थैला मार लिया।

संवेदना मानवता की बड़ी बेटी है। आज की बीमार मानवता स्वस्थ्य संवेदना कैसे जनेगी? जिस जगत में मानवता का ह्रास होता है, उस जगत में पशुता का उत्कर्ष होता है। ऐसा लगता कि आज मानव ने अपने आस-पास के वातावरण को पशुता से सुसज्जित कर लिया है। दधीचि, शिवि, कर्ण के दृष्टान्तों पर अपहरण, हत्या, चोरी आदि ने अपना मुलम्मा चढ़ा लिया है। आँसुओं का मोल शून्य हो गया है। एक मुस्कान की तलाश में जीवन न्योछावर करने की परिपाटी शुरू हो चुकी है। इन्हीं विचारों के जाल में उलझा राघव अब अपनी यात्रा का उद्देश्य नहीं समझ पा रहा था। लक्ष्य पर परिस्थितियों का ग्रहण लग गया था। आज देखे और भोगे गए व्यवहारों के दबाव के कारण सिर भारी हो चला था। राघव चाँदनी चौक उतर कर वहाँ की बाजारू भीड़ में खो जाने के लिए निकल पड़ा। ऊपर आकर एक कुल्हड़ लस्सी से गला तर किया फिर लाल किला की ओर चल पड़ा। लाल किला की विराटता का साक्षात्कार शायद राघव के चित्त को कुछ शांत कर दे। वह लाजपत राय मार्केट की तकनीकि सूरत को देखता तथा अलग-अलग दुकानों पर बजते अलग-अलग गानों से लड़ता आगे बढ़ रहा था। सड़क की दाहिनी ओर के जैन मंदिर में भजन चल रहा था। सामने बत्ती के पास कोने के हनुमान मंदिर पर आया। यहाँ आने वाले हर व्यक्ति की भाँति वह भी फ्रूट-चाट लिया और टूट पड़ा। ककड़ी, तरबूजे, आम ... सब कुछ तो है इसमे। दो झोंके में चाट मसाला डालकर नमक छिड़का और पॉलीथिन में से सींक लेकर एक बाइट मुँह में डाला। अभी पहली बाइट समाप्त भी नहीं कर पाया था कि सामने एक जोड़ा देखा। बीस-बाइस के थे। लड़के ने एक ऑटो रोका। राघव की नज़र गई तो वह खाने से अधिक जोड़े को देखने लगा। देखने क्या लगा; आँखों से सुनने लगा। लड़के ने उस टाइट फिटिंग जींस पर स्लीपलेस टॉप पहनी अपनी साथी तरूणी के लिए ऑटो रूकवाया। ऑटो एक साधारण-सा दिखने वाला प्रौढ़ चला रहा था। तरूणी उसमें अकेले नहीं जाना चाहती थी। उधर राघव फ्रूट चाट के एक-एक टूकड़े को मुँह में डालते हुए उस जोड़ी की ओर थोड़ा और सरक गया। अब उन दोनों की बातें सुनाई देने लगीं। लड़की आग्रह कर रही थी, – "तुम भी चलो न! अगर तुम्हें नहीं जाना तो मैं मेट्रो से चली जाऊँगी।"

"तुम्हें हो क्या गया है मनु? ... ऑटो से क्या बुराई है?"

"मुझे डर लगता है राज! देखते हो न, रोज न्यूज़ में कोई-न-कोई घटना नहीं देखते-पढ़ते क्या? ...सॉरी राज, मुझे अकेले डर लगता है।"

राज थोड़ा मुस्कुराते हुए मनु के कमर में हाथ डालकर बोला, -"इस डर्टी ओल्ड मैन से भी? कम ऑन यार।"

मनु उससे और चिपक गई और उसके सीने से सिर टिकाकर बोली, - "मुझे अकेले नहीं जाना बस । ..... इट्स फाइनल।"

•

ऑटो ड्राइवर स्टार्ट किया और - "सबके सामने तो चिपक रही है और मेरे साथ जाने में पसीना छूट रहा है। .... गो टू हेल।"- कहकर चला गया।

राघव के हाथ से चाट का पेपर-प्लेट छूट गया। उसका सिर दर्द से पुनः फटने लगा। लगा कि वह सड़क पर ही गिर जाएगा। पानी की बोतल खरीदी और लाजपत राय मार्केट की एक सीढ़ी पर बैठकर पूरी बोतल सिर पर उड़ेल लीया। सितंबर की झनकती दोपहर की ढलती उम्र और तीखी होती जा रही थी । राघव को समझ में नहीं आ रहा था कि यह मानवता का ह्रस है या अति-सतर्कता का विकास? बर्बर जीवन से यहाँ तक पहुँचने के बाद आज आदमी, आदमी से ही डर रहा है। भय और आतंक का ऐसा साम्राज्य फैला है कि पावन-से-पावन रिश्ते भी कलंकित होते जा रहे हैं। किस पर कोई विशवास करे? सही तो कर रही थी मनु। क्या पता वह साधारण सा दिखने वाला प्रौढ़ ड्राइवर असाधारण हो और उसके मुखौटे के पीछे कोई नरभक्षी पिशाच हो? अब तो परिचित चेहरों के पीछे से भी नर-पिशाच आ जाते हैं। वह तो अपरिचित था। सच तो है, कहाँ सुरक्षित है स्त्री? रोज तो ऑटो, कैब्स, बसों और लोगों के घरों में, द्वारों पर; हर जगह तो नारी के देह से खेला जाता है। खेलने का प्रयास किया जाता है। खूनी दाँतों से घिरी नारी देह अगर भय और आतंक के कारण किसी अपरिचित पर विश्वास नहीं कर पा रही है तो यह अनायास थोड़े ही है? उसे तो कभी और कहीं भी पैरों के नीचे बिछी ज़मीन बना दिया जाता है या चाकुओं से गोंद कर उसका अस्तित्व ही मिटा दिया जाता है। ... इस समय राघव के मानसिक दबाव का चरम था। उसे लगा कि अब घर वापस जाना चाहिए।

...राघव अभी-अभी कॉलेज से निकला है। सुन्दर, शांत व शीलवान राघव पढ़ाई पूरी कर के आई.टी. सेक्टर में दिल्ली-एन.सी.आर. में इंटरव्यू देता रहता है। पिता सूर्यपाल पी. डब्ल्यू. डी. में क्लर्क हैं। माँ भी एम. सी. डी. में कार्यरत। राघव है तो इकलौती संतान, मगर संस्कारवान। उसे न किसी प्रकार के घमण्ड में रखा गया और न वह रहता है। वसंतकुंज के पॉश इलाके में अपना घर है मगर गाड़ी के नाम पर एक स्कूटी। उससे अधिक के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट। वैसे तो वसंतकुंज जैसे जगहों के लोग घर के प्रत्येक सदस्य के लिए चरपहिया वाहन रखते हैं। दिल्ली में भयंकर ट्रैफिक जाम का यह सबसे बड़ा कारण है।

बचपन से ही सीमित साधनों में असीमित प्रसन्न रहने की परिस्थिति ने राघव को एक संवेदनशील युवक बना दिया। जब उसके पिता सूर्यपाल स्कूटी लेकर निकलते तब वह देखता कि माँ कितना समझाती। जब कभी माँ निकलती तो सूर्यपाल। जब कभी राघव निकलता तो दोनों। माँ बाकी गाड़ी वालों को खूब भला-बुरा कहती। माँ की माने तो किसी अन्य को तो ड्राइविंग आती ही नहीं। तभी तो रोज दुर्घटनाएँ होती हैं। वह जब सड़क पार करती है, तो कितना डरती है। बिना फूट-ओवर, ज़ेब्रा क्रॉसिंग, अंडरपास या बत्ती के वह सड़क पार नहीं करती है। उनकी नज़र में सड़क पर साँस रोककर दौड़ती गाड़ियाँ यातायात संसाधन से अधिक मृत्यु का साधन बन गई हैं। राघव अपने मानसिक दबाव को कम करने के लिए मन को इधर-उधर लगाने लगा। माँ के डर का भी एक कारण है। वह सड़क पार करके जामा मस्ज़िद की ओर बढ़ने लगा। वह भी सब-वे से ही पार करेगा।

अब वह चिड़िया बेचने वालों की दुकानें पार कर रहा था। वहाँ लोग पिंजरे में बंद कर के किसिम-किसिम के पक्षियों को बेंचते हैं। तोता, मैना, तीतर, बटेर, कबूतर, गौरैया। पक्षी अपनी पिंजरें की दुनिया में छटपटाते हैं, एक-दूसरे को नोचते हैं और थक-हारकर किनारे दूबक जाते हैं। जब राघव चिड़ियों की कलरव में खोया था तो उसे लगा कि यह पक्षियों की नहीं, असंख्य मानवों की

चीख-पुकार है। लगा कि चाँदनी चौक की भीड़ या जामा मस्जिद की पावनता पर कोई बम फेंक दिया हो। लगा कि कबूतर, तोते, मैना, कौवे तो पंख फड़फड़ाकर उड़ गए मगर बेचारे मनुष्य बेजान होकर निढ़ाल गिर पड़े। लगा कि जो जीवित है, उसका भी अंग भंग हो गया है। लगा कि चारों ओर अनगिनत लाशें पड़ी हैं। लगा कि उन लाशों में सबसे नीचे वही है। लगा कि उसकी माँ का भय अट्टहास कर रहा है। लगा कि अब वह भी नहीं बच पाएगा।... तभी सब-वे आ गया। उतरती सीढ़ी पर जैसे ही पैर रखा तो होश आया कि दुकानदार पिंजरे के पक्षियों को दाना दे रहे हैं और वे शोर कर रहे हैं।

राघव अंदर तक डरा हुआ था। वह शीघ्रता से घर पहुँचना चाहता था। वह माँ की गोद छुपना चाहता था। वह चाहता था कि उसके पापा उसे दुलार करें। अपने काम को छोड़कर उसे साहस दें। उसने सोचा कि ऑटो ले लूँ, पर अगले ही पल मनु याद आई और डर गया। क्या करे? दौड़कर घर पहुँचने का मन किया। कुछ दूर तक दौड़ा भी। स्वयं को असहाय पाकर बस का सफर ही सही समझा।

बस-स्टैंडों के अतिरिक्त लाल बत्तियों पर हरियाली के इंतजार में रूकती और फिर उतरती-चढ़ती सवारियों की भीड़ से राघव सहम जाता। वह सबके चेहरे को पढ़ना चाहता था। जैसे पहचानना चाह रहा हो। कौन डराएगा ? ... कौन जान ले लेगा??

घर पहुँचने पर राघव ने देखा कि सड़क पर काली पॉलिथीन में कुछ पड़ा हुआ है। संध्या का स्याह साया विस्तार ले रहा था। अस्पष्टता गहराती जा रही थी। अपने घर के सामने पड़ी उस पॉलिथीन को देखकर वह डर गया। लगा कि कोई कुछ जानलेवा उपकरण रख दिया है। चिल्लाया -"माँ।"

राघव की पुकार बहुत तेज नहीं थी, पर माँ ने सुन लिया। दौड़ी आई। बाहर की लाइट आन किया।- "क्या है बेटे ?"

माँ राघव के पास आ रही थी कि उसने रोका, -"यह क्या है माँ?"

माँ ने देखा- "शायद तेरी पार्वती बुआ ने कचरा फेंका है।. ..दीदी को लाख समझाओं, कोई फर्क नहीं पड़ता। ... सरकार चाहे लाख स्वच्छ भारत अभियान जैसी अच्छी से अच्छी कल्याणकारी योजना चलाए, मगर देश का कुछ नहीं होने वाला।" - माँ ने पॉलिथीन उठाकर पास के 'यूज़ मी' के बॉक्स में डाल दिया।

"मैं समझाऊँ क्या बुआ को? एकदम डरा दिया।"

माँ ने अंदर आते हुए राघव को समझाया - "वह तो खुद ही डरी रहती है। अभी आई थी। कह रही थी कि उसकी माँ की तबीयत ठीक नहीं है। दवाइयाँ काम नहीं कर रही हैं।"

माँ पता नहीं क्या-क्या कहने लगी मगर राघव के दिमाग में अब उसके बगल की उसकी मुँहबोली बुआ पार्वती बस गयीं। वे तीन बहनों और एक भाई में दूसरे नंबर की हैं। बड़ी बहन ने तो विवाह कर लिया मगर राघव को यह नहीं पता कि बाकी की शादी क्यों नहीं हुई। सभी अच्छी नौकरी करती हैं, मगर कारण कौन जाने? सैंतालिस की हो गई हैं। ... अभी एक दिन राघव की माँ से अपनी दिनचर्या बताने लगीं। कहने लगीं कि "अब तो डर लगता है। शादी की नहीं। माँ सहारा लग रही थी। अब लगता है कि माँ भी बहुत दिनों तक साथ नहीं देगी। भाभी क्या होगा मेरा? मेरा तो कोई नहीं है। आप तो जानती हैं कि भाई-बहन में कितना भी प्रेम रहे, माँ-बाप की छाया सिर से उठते ही उन रिश्तों में काँटे उग आते हैं। मैं तो अकेले में कभी-कभी सोच कर सिहर जाती हूँ। अब लगता है कि सच ही कहा गया है, जीवन की गाड़ी एक पहिए से नहीं चलती है।"

राघव पार्वती बुआ के डर को सोचते-सोचते स्वयं

के डर के विषय में भी सेचने लगा। तभी एक कप चाय लेकर माँ आई तो देखी कि वह अपने बेड पर निढाल पड़ा है। "क्या बात है बेटा? तबीयत तो ठीक है न?"

कोई उत्तर न पाकर लगा कि बेरोजगारी का तनाव है। उसके बालों को सहलाते हुए हिम्मत देने लगी "कोई बात नहीं बेटा, प्रयास करते रहो। तुम्हें तो बहुत अच्छी नौकरी मिलेगी।"

उत्तर में राघव अपने आक्रांत चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट लाते हुए उठा और चाय की चुस्की लेने लगा। माँ - बाप को ईश्वर का अवतार कहा जाता है। वे ईश्वर की ही भाँति अंतर्यामी भी होते हैं। संतति की आंतरिक भाव को भी समझ जाते हैं। अब सूर्यपाल जी भी आ गए। - "यह तो तुम्हारे न्यूज़ देखने का समय है न राघव?..... चलों। टी.वी. ऑन किया हूँ ।"

"पापा, आई वान्ट रेस्ट नाउ।"

"बेटा! अभी एक पाकिस्तानी रिपोर्टर का इंटरव्यू आने वाला है। वह दावा करता है कि उसने दाऊद को देखा है।"

माँ समझ गई कि इस समय राघव को कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। सूर्यपाल को लेकर चली गई। जाते हुए माँ ने पूछा - 'ये दाऊद कौन है?"

ड्राइंग रूम से आवाज आ रही थी। पहले तो अपनी पत्नी की नादानी पर सूर्यपाल ने ठहाका लगाया और शायद चाय की चुस्की लेते हुए बताने लगे। 'अरे भाग्यवान! दाऊद को नहीं जानती ? ... मुम्बई हमले का मास्टर माइंड कहा जाता है उसे। उसे हत्या और आतंक का जीता-जागता राक्षस कहा जाता है। उसका नाम सुनते ही भय का साम्राज्य फैल जाता है।"

शायद सूर्यपाल ने एक और चुस्की ली। राघव उसके आगे कुछ सुन नहीं पाया। उसकी आँखों के सामने तो भय और आतंक का दूसरा ही चेहरा नाचते गला। तार के घेरे को पार करने में अधनंगी हुई युवती का भय। उस औरत का दुपट्टा छिन लेने पर युवती के लिए फैला आतंक। ...उस बुढ़िया का उसके बेटे के ठीक न होने का भय। उसके थैले के नहीं मिलने पर उसके लिए फैले आतंक का रूप। ... उस तरूणी का अकेले ऑटो पर न जाने के निर्णय वाला भय और आतंक। माँ का भय और आतंक सड़क पर दौड़ती गाड़ियों को देखकर। भय और आतंक पार्वती बुआ के बेसहारा होने का... उस काली पॉलिथीन का...।

राघव को लगा कि उसने तो अनेक दाऊद को देखा है।

[redacted] प्लॉट नं0 65-66, तीसरा तल
जी ब्लॉक, गली नं0 20, राजापुरी,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
मो0- 9971116613

बाँह छुड़ाये जात हौ निबल जानि कै मोहि।
जे हिरदै ते जाहुगे सबल बदौंगो तोहि।।
- सूरदास

जहाँ जन्म लिया शंकराचार्य ने

➲ नीरज नीर

कोच्चि एयरपोर्ट से निकलकर जब हम मुन्नार जा रहे थे तो एयरपोर्ट से कुछ ही दूरी पर एक बोर्ड दिखा जिसपर शंकराचार्य के जन्म स्थान कलाडी की ओर जाने वाले रास्ते को इंगित किया गया था, जहाँ से शंकराचार्य का जन्मस्थान महज डेढ़-दो किलोमीटर था। बोर्ड देखकर मेरा मन शंकराचार्य का जन्म स्थान देखने के लिए पुलक उठा। लेकिन ड्राइवर इसके लिए तैयार नहीं हुआ। बहुत अफसोस के साथ हम मुन्नार की ओर चले गए थे। लेकिन सात दिनों के बाद जब मुन्नार, लक्षद्वीप और अलेप्पी की यात्रा के पश्चात हमें वापस कोच्चि आने का अवसर मिला तो हमने कलाडी जाने का निश्चय किया। कलाडी या मलयालम में कहें तो कलाटी कोच्चि से कुछ ही किलोमीटर पर है। कोच्चि एयरपोर्ट से तो यह बिल्कुल पास ही है। शंकराचार्य का जन्म पूर्णा नदी के तट पर बसे इसी कलाडी में हुआ था। कलाडी में जन्मस्थान जाने के रास्ते में शंकराचार्य के नाम से संस्कृत महाविद्यालय एवं अन्य कुछ संस्थाएं हैं। जब हम वहाँ पहुँचे तो शाम के चार बज रहे थे और विद्यार्थियों का एक समूह वहाँ घूमने आया हुआ था। उन विद्यार्थियों के अतिरिक्त वहाँ हमारे अलावे इक्का-दुक्का लोग ही थे। यहाँ यह उल्लेख जरूरी होगा कलाडी में जन्मस्थान के आसपास के क्षेत्रों में जितने घर दिखे उनमें सारे नाम क्रिश्चियन थे। वैसे भी कोच्चि, और उसके आसपास के जिलों में चर्च की बहुलता इतनी ज्यादा है कि हर कुछ सौ मीटर पर भव्य और चमचमाते हुए चर्च दिखाई देते हैं। मंदिर कहीं खोजने से नहीं मिलता है। यह विडंबना ही है कि सनातन संस्कृति के उद्धारक शंकराचार्य जहाँ जन्मे उसी स्थान से सनातन संस्कृति का लोप हो गया है।

जन्मस्थान में प्रवेश के लिए एक दरवाजा बना है, जिसपर ऊपर में देवनागरी लिपि में "श्री आदि शंकर जन्मभूमि क्षेत्रम, श्रींगेरी श्री शारदापीठम्" लिखा है। भीतर जाने पर देवी देवताओं के अलग-अलग मंदिर एक ही छत के नीचे बने दिखे। भीतर कैमरा ले जाने की मनाही थी। अंदर का माहौल बहुत सादा था। दीवारों पर कुछ जानकारियाँ लिखी गई थी। शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों पीठों के महत्व को उजागर करती और उनसे संबंधित अन्य बातें वहाँ दी गई थी।

उसी परिसर में एक तरफ एक छोटा स्तम्भ और वहीं एक छोटा सा मंदिर भी है। उसी स्तम्भ के पास शंकराचार्य की माँ आर्यम्बा की समाधि है। इस क्रम में वहाँ जो बात पता चली वह बड़ी दिलचस्प है। शंकरचार्य की यह जन्मस्थली सैकड़ों वर्षों तक खोई रही। कैसा अंधकार से भरा युग था कि जहाँ सनातन के उद्धारकर्ता का जन्म हुआ, वह स्थल ही भुला दिया गया! पूर्णा नदी के किनारे का वह स्थान जंगल में बदल गया था। सन 1910 ईस्वी में इस स्थान की खोज की गई।

शंकराचार्य के जन्मस्थान को अंधकार से प्रकाश में लाने का श्रेय शारदा पीठ श्रृंगेरी के शंकराचार्य श्री सच्चिदानंद शिवाभिनव नृसिंह भारती महास्वामी को जाता

है। उन्होंने माधवीय शंकर दिग्विजयम, जिसे सबसे प्रामाणिक, पारंपरिक और लोकप्रिय शंकराचार्य की जीवनी मानी जाती है, के वृत्तांतों के आधार पर शंकराचार्य के जन्म स्थान के रूप में कलाडी की खोज की। माधवीय शंकर दिग्विजयम का श्रेय स्वयं श्री विद्यारण्य को दिया जाता है, जो श्रृंगेरी पीठम के 12वें जगद्गुरु इस जन्म स्थान की खोज में मैसूर के तत्कालीन दीवान, शेषाद्रि अय्यर और त्रावणकोर के शासकों सहित कई लोगों ने मदद की थी, 21 फरवरी 1910 को, शंकराचार्य और शारदामाबा के मंदिरों को पवित्र किया गया था।

जन्मस्थान परिसर में शंकराचार्य की माता जी की समाधि बनी है और उसी समाधि के बगल में एक छोटा सा स्तम्भ है। पूर्णा नदी के किनारे इसी स्तम्भ के सहारे इस स्थान के बारे में यह सुनिश्चित किया गया कि शंकर का जन्मस्थान यही है।

परिसर में गणेश, सरस्वती सहित परिक्रमा में देवी के सात अवतारों की प्रतिमाएँ हैं। हमने देखा कि एक जगह एक पुजारी प्रसाद दे रहा था। वह एक युवा पुजारी था, जिसने श्वेत धोती पाहणी थी। हम भी वहाँ चले गए। हमें यह देख कर निराशा हुई कि वह पुजारी लगभग आधे फुट की ऊँचाई से गिराकर प्रसाद दे रहा था। मुझे यह देखकर बड़ा ही दुःख हुआ। शायद शंकर यह सब देखते तो उन्हें भी दुःख होता। यही सब कुछ कारण रहा होगा कि जहाँ शंकर ने जन्म लिया वहीं सनातन का लोप हो गया। जिस भी सिस्टम मानव में भेद करने की ऐसी व्यवस्था हो उसकी क्षति तो अवश्यंभावी ही है। दुःखी मन से हम बाहर आ गए।

बाहर निकलकर दाहिने तरह एक कृष्ण मंदिर था, हमने पता किया तो पता चला कि वह अभी बंद है, थोड़ी देर में खुलेगा। इस बीच हमारा मन उस जगह को देखने के लिए बेचैन हो रहा था, जहाँ शंकर को ग्राह ने पकड़ा था और उन्होंने अपनी माँ से सन्यास की अनुमति ली थी। वह जगह बिल्कुल जन्म स्थान और कृष्ण मंदिर के पीछे ही है। जन्मस्थान और कृष्ण मंदिर के बीच से एक रास्ता नीचे की ओर जाता है कोई 50-60 मीटर जाते ही पूर्णा नदी के दर्शन होते हैं। इस रास्ते में दाहिने हाथ पर एक वेद विद्यालय भी है। नदी के किनारे बड़े-बड़े घास से भरे थे। पानी हल्का मटमैला था। दक्षिण में लौटते मॉनसून के कारण होने वाली बारिश अभी थोड़े ही दिनों पूर्व समाप्त हुई थी। पानी की धार से बनने वाले गड्ढे मिट्टी में बने थे। वहीं नदी किनारे एक हॉल भी बनाया गया था, शायद जन्म स्थान से संबंधित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन करने के उद्देश्य से यह बनाया गया हो, लेकिन उसकी हालत देखरेख के अभाव और बरसात के पानी की वजह बहुत खराब थी।

एक बात जो मुझे बार-बार अनुभव हो रही थी कि कोच्चि या आसपास के जिन इलाकों में मैं घूम रहा था वहाँ जिस तरह चमचमाते चर्च दिखाई पड़ रहे थे, उनके मुकाबले जन्म स्थान और कृष्ण मंदिर दोनों बड़े ही उदास और ऐश्वर्य से हीन लग रहे थे। मंदिर परिसर में हमारे अलावे दो-तीन अन्य स्थानीय लोग ही थे। भीतर जाने पर बताया गया कि पुरूषों को ऊपरी वस्त्र निकालना होता है। मंदिर में कृष्ण की एक मूर्ति थी, जो किसी धातु के पत्तर को काटकर बनाई गई प्रतीत हो रही थी। वहाँ कुछ देर समय बिताने के बाद आ गए।

शंकराचार्य से जुडे स्थल को प्रत्यक्ष देखने के अनुभव के पश्चात हम वहाँ से वापस चल दिए। अंधेरे ने पूरी तरह पाँव पसार दिए थे।

सम्पर्क सूत्र- आशीर्वाद
बुद्ध विहार
ओ.पी.पी.- ग्रेट नं0-4,
अशोक नगर, ओपी- डोरन्डा
राँची- 834002, झारखण्ड
चनभाष- 8789263238

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

➲ रंजना मिश्रा

आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर चारों ओर चर्चाएं जोर-शोर से चल रही हैं। कुछ लोग इसमें भविष्य की महान संभावनाएँ तलाश रहे हैं तो कुछ लोग इसको लेकर की गई भविष्यवाणियों से बेहद डरे हुए हैं। कहा जा रहा है कि आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की वजह से लोगों की नौकरियों पर बहुत बड़ा खतरा मंडरा रहा है। कहा तो यहाँ तक जा रहा है कि मशीनी बुद्धिमत्ता धीरे-धीरे इतनी शक्तिशाली हो जाएगी कि ये एक दिन मनुष्यों पर ही हावी हो जाएगी। विशेषज्ञों का तो मानना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे सामने विलुप्ति का खतरा तक पैदा कर सकती है। दरअसल जिन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, अब वे लोग ही इससे जुड़े खतरों के प्रति आगाह कर रहे हैं। इनमें चैट जीपीटी के निर्माता ओपनएआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सैम ऑल्टमैन, डॉ. जेफ्री हिंटन, गूगल डीपमाइंड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डेमिस हासाबिस, एंथ्रोपिक के डारियो अमोदेई, प्रोफेसर योशुआ बेंगियो के साथ-साथ टेस्ला और ट्विटर के मालिक एलोन मस्क, एप्पल कंपनी के को-फाउंडर स्टीव वोजनियाक तथा कई अन्य अधिकारी, शोधकर्ता और इंजीनियर भी शामिल हैं। इन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव जाति के लिए महामारी और परमाणु युद्ध से भी घातक बताया है। विशेषज्ञों का मानना है कि इसे एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है तथा इसका गलत प्रयोग कर, समाज में गलत सूचना फैलाकर अस्थिरता पैदा की जा सकती है। संभावना ये भी जताई जा रही है कि भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की असीम ताकत दुनिया के कुछ चुनिंदा लोगों के पास होगी, जो इसका अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करेंगे और दुनिया के बाकी लोगों पर अपनी दमनकारी शक्ति से राज करेंगे। इस बात की भी आशंका है कि कहीं आने वाले समय में मनुष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता से युक्त मशीनों और रोबोटों पर इतना अधिक निर्भर न हो जाए कि वो अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमता को ही खो दे। गलत हाथों में पड़ने पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता या मशीनी बुद्धिमत्ता पूरे मानव समाज का विनाश कर सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से युक्त रोबोट भविष्य में मनुष्यों को ही अपने नियंत्रण में कर सकते हैं। मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण ही पूरे प्राणी जगत में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है, लेकिन यदि धरती पर किसी में (चाहे वह मशीन ही क्यों न हो) उससे अधिक बौद्धिक क्षमता विकसित हो जाएगी तो निश्चित ही उसका अस्तित्व मनुष्यों के लिए चुनौतीपूर्ण व खतरनाक साबित हो सकता है। गोल्डमैन सैक्स बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण लगभग 300 मिलियन नौकरियों से लोगों को हाथ धोना पड़ सकता है।

क्योंकि ये सारे काम कृत्रिम बुद्धिमत्ता से युक्त सॉफ्टवेयर के जरिए आसानी से, कम समय में और कम लागत में पूरे हो सकते हैं। चल चित्रण (फिल्मिंग) और ग्राफिक डिजाइनिंग के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल तेजी से हो रहा है और इसके परिणाम भी बेहतर दिखाई दे रहे हैं, जिससे इस क्षेत्र से जुड़े लोगों की नौकरियों को सबसे अधिक खतरा है। ऐसे में ग्राफिक डिजाइनरों को अपनी बौद्धिक कुशलता को बढ़ाते हुए कुछ अद्वितीय और मौलिक डिजाइन बनाने पर काम करना होगा, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा संभव न हो।

वर्तमान समय में विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का व्यापक उपयोग हो रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं में रोगों की पहचान, उपचार योजनाओं और औषधियों के विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मदद करती है। ये विनिर्माण के क्षेत्र में ऑटोमेशन के साथ-साथ उत्पादकता और गुणवत्ता को भी बेहतर बनाने का काम करती है। कृषि क्षेत्र में फसल मॉनिटरिंग और फसलों के बेहतर प्रबंधन में सहायक होती है। वाणिज्यिक क्षेत्र में एआई का उपयोग विपणन, ग्राहक सेवाओं और ग्राहकों के व्यवहार के अध्ययन के लिए किया जाता है। इसके साथ ही शिक्षा, संचार, वित्त तथा कई अन्य क्षेत्रों में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को बढ़ाने का काम चल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव जीवन के लिए खतरा मानने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तकनीक का विकास पर्यावरणीय परिवर्तन या सामाजिक परिवर्तन का कारण बन सकता है। इस तकनीकी अग्रसरता की वजह से सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन का प्रभाव, संभावित खतरों की बढ़ती संख्या, आने वाली नई बीमारियों का संभावित प्रसार, व्यक्तिगत गोपनीयता की कमी तथा रोबोटिक और ऑटोमेशन से नौकरियों की हानि, जलवायु परिवर्तन, जल संकट, जीवन के बिगड़ते हुए प्रदूषण स्तर और आतंकवाद जैसे कुछ मुख्य खतरे मानव जीवन को संकट में डाल सकते हैं। चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से रोगों के निदान और उपचार में गलतियाँ तथा मानव चिकित्सकों की कमी जैसे खतरे पैदा हो सकते हैं, साथ ही इसके त्रुटिपूर्ण निर्णयों और सुझावों की वजह से मरीजों का जीवन जोखिम में पड़ सकता है। एआई द्वारा व्यक्तिगत चिकित्सा जानकारी का इस्तेमाल करने की स्थिति में डेटा सुरक्षा और गोपनीयता की समस्याएँ भी पैदा हो सकती हैं। विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में तथा तकनीकी क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न होने वाली त्रुटियाँ, इन क्षेत्रों को दुष्प्रभावित कर सकती हैं। वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा वित्तीय निर्णयों में की गई गलतियाँ, वित्तीय नुकसान का कारण बन सकती हैं। एआई सिस्टम डेटा पर निर्भर होता है। इसलिए इंटरनेट का उपयोग करने वाले सभी व्यक्तियों की निजता (प्राइवेसी) पर इसका दुष्प्रभाव पड़ सकता है। सुरक्षा से जुड़े क्षेत्रों में भी इसके गलत निर्णयों से बड़े नुकसान हो सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से हैकिंग का भी खतरा हो सकता है, क्योंकि इसके द्वारा संचालित सिस्टम में विशेषज्ञता और गहराई से समझने की क्षमता में कमी हो सकती है, जिससे इसकी विशेषज्ञता और सुरक्षा कमजोर हो सकती है। हैकर्स इसका फायदा उठाकर सिस्टम को हानि पहुँचा सकते हैं। सुरक्षित और उत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का त्रुटिहीन होना और सुरक्षा के मामलों को सख्ती से लागू करना बहुत जरूरी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और मशीन लर्निंग का उपयोग होता है, ताकि उसे विभिन्न क्षेत्रों में मानव बुद्धिमत्ता की तरह काम करने की क्षमता हासिल हो सके। इस प्रकार मानव बुद्धिमत्ता के साथ मुकाबला करने के लिए डिजाइन की गई कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर प्रोग्राम्स और एल्गोरिदम्स के माध्यम से काम करती है। यह डेटा विश्लेषण करने, अनुमान लगाने, समस्या हल करने और निर्णय लेने में मदद कर सकती है। वर्तमान समय में

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर दुनिया भर में कई शोध कार्य चल रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक बेहतरीन तकनीक है। स्मार्टफोन, गूगल के सर्च सिस्टम, ओटीटी पर मूवी सजेशन, टैक्सला की कार, सिरी, गूगल मैप, रोबोटिक्स, एलेक्सा आदि में इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके कई टूल्स निर्मित हुए हैं। इन टूल्स के जरिए मनुष्यों के कई काम बेहद आसान हो रहे हैं, जैसे कंटेंट लिखना, कोई ईमेल लिखना, फोटो बनाना आदि कई ऐसे काम हैं, जिन्हें करने में किसी व्यक्ति को काफी समय लग सकता है, वो ये टूल्स सेकेंडों में ही कर देते हैं। दरअसल कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है, जिसका उपयोग कर ऐसे कंप्यूटर, कंट्रोल रोबोट या सॉफ्टवेयर तैयार किए जा रहे हैं, जिनमें इंसानों की तरह ही सोचने की क्षमता के साथ-साथ निर्णय लेने, सीखने व आवाज पहचानने की शक्ति मौजूद होगी। दूसरे शब्दों में कहें तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता से युक्त कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम उन्हीं तर्कों के आधार पर काम करते हैं, जिनके आधार पर मनुष्य का दिमाग काम करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से युक्त रोबोट बनाने के लिए कई कंपनियों ने मशीन लर्निंग में काफी निवेश किया है। एआई के एप्लीकेशन का उपयोग स्वास्थ्य सेवा, वित्त, परिवहन और मनोरंजन जैसे कई क्षेत्रों में तथा कई उद्योगों में किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से युक्त मिडजर्नी जैसे टूल की मदद से अपने विचारों को लिखकर उसके अनुरूप जटिल से जटिल तस्वीर को बड़ी आसानी से कुछ ही समय में बनाया जा सकता है। एक ओर तो इस प्रकार के एआई टूल इंसानों के लिए बहुत उपयोगी साबित हो रहे हैं, लेकिन दूसरी ओर ये उन कलाकारों के जीवन और व्यवसाय को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं, जिन्होंने इस कला को सीखने में वर्षों तक मेहनत की है। ऐसे टूल्स की वजह से उनकी रोजी-रोटी पर संकट खड़ा हो सकता है। कहा जा रहा है कि आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्षमता मानव बुद्धि की तुलना में कई गुना अधिक होगी। एआई द्वारा लिए गए निर्णय पहले से एकत्र की गई जानकारी और एल्गोरिदम के एक निश्चित सेट द्वारा निर्धारित होते हैं। इसका एक बड़ा लाभ यह है कि यह त्रुटियों को काफी कम कर सकता है और इससे प्राप्त होने वाले परिणाम अधिक शुद्ध व सटीक हो सकते हैं। चूंकि ये एकत्र किए गए डेटा पर काम करता है, इसलिए इसमें जितना अधिक और अच्छा डेटा संग्रहित होगा, ये उतनी ही कुशलता से सही परिणाम देने में सक्षम हो पाएगा। यानी एकत्र किया गया डेटा त्रुटि मुक्त होना चाहिए और इसमें मौजूदा कार्य के लिए प्रासंगिक जानकारी होनी चाहिए। संग्रहित डेटा का उपयोग मॉडल ट्रेन करने और पूर्वानुमान बनाने में किया जाता है, जिससे कि कंप्यूटर सिस्टम निष्कर्ष निकाल सके और कार्रवाई कर सके। एआई सिस्टम डेटा का विश्लेषण करके पैटर्न, ट्रेंड और नई जानकारियों को पहचान सकते हैं, जिससे वे हम मनुष्यों को समझने और सीखने में मदद कर सकते हैं। इसके साथ ही, एआई सिस्टम डेटा से आवश्यक संबंध और जानकारी का उपयोग करके नए निर्णय लेने में भी मदद कर सकता है। मॉडल ट्रेनिंग की प्रक्रिया के अंतर्गत एक कंप्यूटर सिस्टम को डेटा सेट के साथ प्रशिक्षित करके उसे किसी विशिष्ट कार्य को समझने और पूरा करने की क्षमता प्रदान की जाती है। यह किसी विशिष्ट टास्क या कार्य को सीखने के लिए एल्गोरिदम का इस्तेमाल करता है, ताकि वह नए डेटा पर सही और प्रासंगिक उत्तर प्रदान कर सके। यानी हमारे द्वारा प्रदान किए गए डेटा और मॉडल ट्रेनिंग के प्रोसेस के आधार पर, सिस्टम एक विशिष्ट कार्य को समझने और उसे करने की क्षमता विकसित करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के छह व्यापक आयाम हैं- भाषण और ऑडियो पहचान, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, 'छवि प्रसंस्करण, पैटर्न पहचान, गहन शिक्षण और रोबोटिक्स।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में एआई मेडिकल डायग्नोसिस और उपचार में मदद कर सकता है, जिससे बीमारियों की पहचान और उनका इलाज जल्दी हो सकता है। साथ ही सटीक सर्जरी के लिए एआई का उपयोग हो सकता है। खासकर प्रत्यारोपण के मामलों में रोबोटिक सर्जरी बेहद सफल हो रही है। एआई की मदद से अनेक अज्ञात बीमारियों का भी इलाज संभव हो पाएगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता न्यूरोलॉजिकल बीमारियों जैसे डिप्रेशन या अल्जाइमर के उपचार में भी सहायक हो सकती है। यह व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में भी सहायक हो सकती है, जिससे उन्हें बीमारी से मुकाबला करने की बेहतर क्षमता मिलेगी। हालाँकि रोबोटिक सर्जरी में अभी कुछ खामियाँ हैं और यह अभी बहुत महंगी भी है। इसीलिए आर्थिक रूप से कमजोर लोग इसका लाभ उठा पाने में सक्षम नहीं हैं, लेकिन उम्मीद है कि आने वाले समय में इसकी सभी खामियों को दूर कर लिया जाएगा और तकनीक के व्यापक होने के साथ-साथ रोबोटिक सर्जरी की लागत भी कम होने की संभावना है, जिससे ये सभी वर्गों के रोगियों की पहुँच में होगी। मरीजों की बड़ी संख्या को देखते हुए डॉक्टरों की सीमित संख्या स्वास्थ्य क्षेत्र में एक बड़ी समस्या है, जिसका समाधान एआई और रोबोटिक सर्जरी के द्वारा किया जा सकता है।

कलाकारों द्वारा रचनात्मकता की सहायता के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स का उपयोग किया जा सकता है, जो कलाकारों को उनकी कला के क्षेत्र में अधिक उन्नत और नई विचारधाराओं के लिए विश्वसनीय स्रोतों की खोज करने और उनसे प्रेरणा प्राप्त करने में मदद करेंगे। एआई के उपकरण कला संग्रहण और विपणन में मदद कर सकते हैं, जैसे कि उपयुक्त ग्राहक समुदाय का पता लगाने में। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने जनरेटिव आर्ट के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जहाँ कलाकारों द्वारा आर्ट और म्यूजिक बनाने के लिए एआई का उपयोग किया जा रहा है। चित्रकला और डिजाइन में भी एआई बेहतर प्रदर्शन कर रहा है, जैसे कि वर्चुअल आर्ट, कंप्यूटर जेनरेटेड ग्राफिक्स और डिजिटल आर्ट। यह संगीत समीक्षा और संगीत रचना के क्षेत्र में भी मदद कर रहा है। एआई फिल्म और वीडियो निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जैसे विशेष प्रभावों का उपयोग करना और डिजिटल चित्रण का सहारा लेना। इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से विभिन्न कला क्षेत्रों में अद्वितीय और उत्कृष्ट कार्य संभव हो रहे हैं, लेकिन यह आवश्यक है कि कलाकार स्वयं की दृढ़ रचनात्मकता और समर्पण के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संसाधनों का उपयोग करें, ताकि वे अपने कलात्मक कौशल को और अधिक बढ़ा सकें।

शिक्षा के क्षेत्र में एआई महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। एआई प्रौद्योगिकियों का उपयोग छात्रों की व्यक्तिगत शिक्षा में किया जा सकता है, ताकि उन्हें उनकी स्थिति, रुचियों और गुणों के आधार पर सहायता मिल सके। छात्रों को और अधिक स्पष्ट और सरल तरीके से समझाने के लिए एआई का उपयोग शिक्षा सामग्री को विकसित करने में किया जा सकता है। एआई प्रौद्योगिकियाँ छात्रों के शिक्षा स्वरूप को समझकर उन्हें विभिन्न शैलियों में पढ़ा सकती हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया में सुधार हो सकता है। बुद्धिमान शिक्षण प्रणाली शिक्षकों को पाठ प्रदान करने और छात्रों की प्रगति को मॉनिटर करने में मदद कर सकती है। एआई डेटा विश्लेषण के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता के मानकों को स्थापित करने में मदद कर सकता है और शैक्षणिक प्रदर्शन को सुधारने के लिए उपायों की पहचान कर सकता है। एआई को सामाजिक मुद्दों के समाधान के लिए भी उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि प्राथमिकताओं की पहचान, सामाजिक संकेतों के परिणाम स्वरुप सुझाव देना और सामाजिक

समुदायों के लिए समाधान खोजना। प्रदूषण मॉनिटरिंग, संसाधन की उपयोगिता को अनुमानित करना और पर्यावरणीय समस्याओं के लिए समाधान खोजने में भी इस तकनीक का उपयोग हो सकता है।

एआई से संचालित सेल्फ ड्राइविंग कारें सुरक्षा, यातायात प्रबंधन और यात्रा की सुविधा में सुधार कर सकती हैं। इन कारों की विशेषता यह होगी कि ये मानव त्रुटियों को कम कर सकती हैं, जो यातायात के क्षेत्र में अक्सर होती हैं। हालांकि नई प्रौद्योगिकियों और सिस्टम के साथ कुछ समस्याएँ भी जुड़ी होती हैं जैसे कि संयम और सुरक्षा के मुद्दे । रोबोट को कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जोड़कर उन्हें सोचने-समझने और क्रियान्वित करने की क्षमता प्रदान की जा सकती है। एआई के द्वारा रोबोट को वातावरण को समझने, सेंसर्स के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने और उसके साथ अनुकूल तरीके से व्यवहार करने की क्षमता मिल सकती है। एआई रोबोट जोखिमपूर्ण कार्यों को निष्पादित करके मानव जीवन को सुरक्षित रखने में मदद कर सकते हैं, जैसे अंतरिक्ष मिशन, जलवायु संशोधन, विमानों में जांच, दुर्घटनाओं, प्राकृतिक आपदाओं या अन्य आपातकालीन परिस्थितियों में। नुकीले स्थलों, विस्फोटक पदार्थों या अन्य खतरनाक स्थलों की जांच के लिए एआई रोबोट का इस्तेमाल किया जा सकता है। अत्यधिक तापमान या ठंडे क्षेत्रों में काम करना मनुष्यों के लिए खतरनाक हो सकता है, लेकिन ऐसी जगहों में एआई रोबोट आसानी से काम कर सकते हैं, क्योंकि उन्हें उपयुक्त तापमान या ठंड में सुरक्षित रहने की क्षमता प्राप्त होती है। एआई रोबोट लोगों की सहायता करने के लिए भी काम में लाए जा सकते हैं, जैसे वृद्धों और विकलांगों की मदद करने के लिए। इस प्रकार के रोबोट उत्पादकता में वृद्धि करके समय और श्रम की बचत कर सकते हैं, जिससे उत्पादकता में सुधार हो सकता है। एआई युक्त ड्रोन उच्च गुणवत्ता वाले निरीक्षण कार्यों के लिए उपयोग किए जा सकते हैं, जैसे कि खेतों का निरीक्षण, वन्यजीवों की गिनती और जलवायु तथ्य संग्रहण। ये ड्रोन आपातकालीन स्थितियों में जैसे कि आपदाओं की निगरानी, राहत कार्यों में मदद और सुरक्षा कार्यों में भी उपयोग हो सकते हैं। ये ड्रोन अपने आसपास के मानचित्र, आवश्यक जानकारियों और सेंसर के माध्यम से मार्गदर्शन करके स्वतंत्र नेविगेशन कर सकते हैं।

एआई की तकनीक के विकास से कई प्रकार की नौकरियों में बदलाव हो सकता है। ये कुछ नौकरियों को अधिक अच्छे से करने की क्षमता बढ़ा सकता है। तो वहीं कुछ नौकरियों को अनुपयुक्त बना सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित होने पर नई प्रकार की नौकरियाँ पैदा हो सकती हैं, जो मानव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सहयोग से किए जाने वाले कामों को बढ़ावा देंगी, जैसे एआई डेवलपमेंट, डेटा साइंटिस्ट, एआई एथिक्स और ह्यूमन-एआई इंटरेक्शन डिजाइनर। एआई सिस्टम के विकास, प्रबंधन और नियंत्रण, इंटेलिजेंट डेटा व्याख्या आदि से संबंधित नई प्रकार की नौकरियाँ भी पैदा हो सकती हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से कुछ नौकरियाँ स्वचालित हो सकती हैं जैसे डेटा एंट्री, संख्यात्मक कार्य और जानकारी की प्रोसेसिंग । स्वचालित उत्पादन, रोबोटिक्स, और स्वचालित प्रक्रियाओं के क्षेत्र में भी नौकरियाँ बढ़ सकती हैं। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित कौशल और ज्ञान की मांग बढ़ सकती है, जैसे मशीन लर्निंग इंजीनियर, डेटा वैशिष्ट्य, न्यूरल नेटवर्क डिजाइनर आदि। इसके अलावा एआई से नीतिगत पहलुओं, नैतिकता और सुरक्षा के क्षेत्र में भी नए नौकरी क्षेत्र खुल सकते हैं।

इस तकनीक का विकास हमारे जीवन में अनेक संभावनाओं को तो जन्म देगा, लेकिन साथ ही हमें कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ेगा। इसलिए हमें जागरूक रहकर सही प्रबंधन और सावधानी के साथ इनका

समाधान करने की आवश्यकता होगी। इस तकनीक का विकास विज्ञान में नए माध्यम खोल सकता है, समस्याओं का समाधान ढूँढने में मदद कर सकता है और नए सामाजिक-आर्थिक अवसर पैदा कर सकता है। एआई के अद्वितीय आविष्कार और नए उत्थान हमारे जीवन को एक नई दिशा दे सकते हैं। इस तकनीक को लेकर हमें उत्साहित होना चाहिए, क्योंकि यह हमें नई संभावनाओं की ओर आगे बढ़ने का मार्ग प्रदान कर सकती है। लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के गलत उपयोग को रोकने के लिए आवश्यक प्रयास किए जाने बहुत जरूरी हैं। हमें उचित जानकारी और शिक्षा के साथ इसे समझने और सहयोग करने की जरूरत है। इसके लिए लोगों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संभावित उपयोगों और उनके साथ जुड़ी हुई चुनौतियों के बारे में शिक्षित और जागरूक किया जाना चाहिए। एआई प्रौद्योगिकी के विकास में सुरक्षा और नैतिकता का ध्यान रखना बहुत जरूरी है, ताकि इसका सही उपयोग हो सके। गलत उपयोग के मामलों में सख्त कार्रवाई करने का विधान होना चाहिए। हर तकनीक के साथ अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों जुड़ी होती हैं। बस हमें उन्हें जिम्मेदारी पूर्वक उपयोग करने की जरूरत है। एआई युक्त मशीनों को लंबे समय तक काम में लगाया जा सकता है। सेना के जवानों की जगह रोबोट का इस्तेमाल किया जा सकता है। घर के रोजमर्रा के कामों जैसे सफाई, बिजली के कामों या खाना बनाने के कामों में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद ली जा सकती है। एआई तकनीक का उपयोग करके शहरों को बेहतर सेवाएँ और सुविधाएँ प्रदान की जा सकती हैं, जैसे व्यवस्थापन, ट्रैफिक प्रबंधन, पानी की आपूर्ति, बिजली सप्लाई, सुरक्षा और संचार सेवाएं आदि।

सम्पर्क सूत्र- सी-32 सर्वोदय नगर
कानपुर, उत्तर प्रदेश
पिन- 208005
मो0- 9336111418

मनुष्य कितना ही हृदयहीन हो, उसके हृदय के किसी न किसी कोने में पराग की भाँति रस छिपा रहता है। जिस तरह पानी और पत्थर में आग छिपी रहती है उसी तरह मनुष्य के हृदय में भी - चाहे वह कैसा ही क्रूर और कठोर क्यों ना हो, उत्कृष्ट और कोमल भाव छुपे रहते हैं।

- प्रेमचन्द

संस्थान समाचार

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0) एवं उ0प्र0 हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम, 25-26 जुलाई, 2024

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्याग राज्य विश्वविद्यालय चित्रकूट एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में "श्री राम सापेक्ष राष्ट्र निर्माण में स्वामी रामभद्राचार्य जी का अवदान विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो. शिशिर कुमार पांडेय जी के द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ सगीत विभाग की सहायक आचार्या डॉ. ज्योति विश्वकर्मा की सरस्वती वंदना से हुआ ।

उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व राज्य मंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय एप पूर्व सासद भैरों प्रसाद मिश्र, विश्वविद्यालय के मा0 कुलाधिपति के निजी सचिव श्री रमापति मिश्र तथा कुलसचिव मधुरेंद्र कुमार पर्वत भी उपस्थित रहे। अतिथियों के स्वागत के पश्चात् स्वागत उद्बोधन हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. किरण त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो0 शिशिर कुमार पांडेय ने श्री राम सापेक्ष राष्ट्र निर्माण में स्वामी रामभद्राचार्य जी की कृतियों एवं उनके वाचिक परम्परा तथा लेखन परंपरा में उत्कृष्ट योगदान को व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान युग के प्रख्यात मनीषी के रूप में राष्ट्र निर्माण में श्री रामचन्द्रजी के जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में श्री रामभद्राचार्य जी का अभिनव योगदान है। उनके द्वारा बताए गए विचार आज के समय में न केवल प्रासंगिक है बल्कि नए भारत के निर्माण में अनूठी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश हिन्दी

संस्थान की डॉ. अमिता दुबे ने हिन्दी संस्थान के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दी संस्थान न केवल हिन्दी भाषा बल्कि अन्य भाषाओं को साथ लेकर भारतीय संस्कृति के संवाहक के रूप में कार्य कर रही है। इस संस्थान के द्वारा पुरस्कारों के अतिरिक्त विभिन्न भाषाओं की उन्नति के लिए भी सतत रूप से प्रयास किए जाते हैं। विषय का विस्तृत परिचय देते हुए अधिष्ठाता डॉ. महेंद्र कुमार उपाध्याय ने राष्ट्र निर्माण में स्वामी रामभद्राचार्य जी के योगदान की विस्तार से वर्णित किया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. प्रमिला मिश्रा प्रभारी, संस्कृत विभाग ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गोपाल कुमार मिश्र, प्रभारी संगीत विभाग के द्वारा किया गया।

इसके पश्चात् संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र का प्रारम्भ डॉ. सभापति मिश्र की अध्यक्षता में किया गया। इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. तरुण कुमार मिश्र तथा डॉ. सत्या सिंह उपस्थित रहीं। इस तकनीकी सत्र में डॉ. किरण त्रिपाठी, डॉ. विश्वेश दुबे, डॉ. राम बहादुर मिश्र, डॉ. संजय कुमार मिश्र, डॉ. रजनीश कुमार सिंह ने अपने शोध परक आलेखों को प्रस्तुत किया। इस सत्र का संचालन शिक्षा संकाय की सहायक आचार्या डॉ. रीना पांडेय ने किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय, डॉ. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. निहार रंजन मिश्र, डॉ. गुलाब धर, डॉ. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. अमित अग्निहोत्री सहित विश्वविद्यालय परिवार के समस्त सदस्य उपस्थित रहे ।

दिनांक 26.7.2024 को द्वितीय एवं तृतीय सत्र संयुक्त रूप से संचालित किए गए। राष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग 30 शोध पत्रों का वाचन किया गया। संगोष्ठी में डॉ. योगेंद्र भारद्वाज, जे.एन.यू., डॉ. विजय पयासी, डॉ. प्रमिला मिश्रा, डॉ. मनोज द्विवेदी, डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी, डॉ. गोपाल कुमार मिश्र, डॉ. हरिकान्त मिश्र, डॉ. विश्वेश दुबे, डॉ. संख्या पांडेय ने अपने शोध परक आलेखों को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री कामदगिरि पीठ के प्रमुख संत श्री मदन गोपाल दास जी ने आशीर्वाद प्रदान किया। द्वितीय, तृतीय सत्रों का संचालन डॉ. शशिकांत त्रिपाठी ने किया तथा समीक्षा डॉ. महेंद्र

कुमार उपाध्याय ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम में प्रो. सभापति मिश्र, डॉ. अमिता दुबे, प्रधान संपादक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, अधिष्ठाता डॉ. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. सुशील त्रिपाठी, डॉ. निहार रंजन मिश्रा, डॉ.अमित अग्निहोत्री, डॉ. गुलाब धर, डॉ. रजनीश कुमार सिंह, डॉ. सुनीता श्रीवास्तव, डॉ. मुकुंद मोहन पांडेय, डॉ. दलीप कुमार, श्रीमती भविष्या माथुर, डॉ. ज्योति विश्वकर्मा, डॉ. शांत कुमार चतुर्वेदी, श्री सूर्य प्रकाश मिश्र, श्री कुमार प्रद्योत दुबे, जितेंद्र प्रताप सिंह, डॉ.. मनोज पांडेय, श्री हरिश्चंद्र, डॉ. तृप्ति रस्तोगी सहित विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य

उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रमिला मिश्रा प्रभारी संस्कृत विभाग ने किया ।

सम्पूर्ति सत्र के अवसर पर समारोह के अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के जीवन पर्यंत मा0 कुलाधिपति जगद्गुरु स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी महाराज उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ संगीत विभाग की सहायक आचार्या डॉ. ज्योति विश्वकर्मा की सरस्वती वन्दना से हुआ। तत्पश्चात स्थानीय कलाकारों के द्वारा गुरु वन्दना प्रस्तुत की गई। जगद्गुरु स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी ने कहा कि

यह गौरव का विषय है कि में इस विश्वविद्यालय को राज्य विश्वविद्यालय के रूप में देख रहा हूँ शीघ्र ही यह विश्वविद्यालय केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठापित होगा। उन्होंने यह भी कहा कि यह विश्वविद्यालय परपरागत विश्वविद्यालय से इतर भारतीय ज्ञान परंपरा का पोषण करते हुए ऋषि परंपरा का अनुसरण करेगा और मैकाले की शिक्षा प्रणाली के स्थान पर भारतीय शिक्षा प्रणाली को स्थापित कर विश्व के समक्ष एक नए आयाम को जन्म देगा। उन्होंने कहा कि सभी मिलजुलकर विश्वविद्यालय की प्रगति में अपना योगदान देंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज अग्रवाल, कुलाधिपति के निजी सचिव श्री रमापति मिश्र, श्री दिनेश प्रसाद मिश्रा पूर्व विधायक, सुश्री निर्मला वैष्णव प्रधानाचार्य प्रज्ञा चक्षु मूक बधिर विद्यालय मध्य प्रदेश, श्री लल्लू तिवारी जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिशिर कुमार पांडेय ने प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी की विश्व के समस्त कुलाधिपतियों से इतर अत्यंत मूर्धन्य विद्वान एवं मनीषी के रूप में प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव श्री मधुरेन्द्र कुमार पर्वत जी ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन संस्कृत विभाग की प्रभारी डॉ. प्रमिला मिश्रा ने किया। कार्यक्रम के अंत में सोहर गीत डॉ. ज्योति विश्वकर्मा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कला विभाग के द्वारा एक पेंटिंग प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय, डॉ. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. सुशील त्रिपाठी, डॉ. निहार रंजन मिश्रा, डॉ. अमित अग्निहोत्री, डॉ. गुलाब घर, डॉ. रजनीश कुमार सिंह, डॉ. सुनीता श्रीवास्तथ, डॉ. विशेषनारायण मिश्र, डॉ. शशिकान्त त्रिपाठी, डॉ. मुकुंद मोहन पांडेय, डॉ. दलीप कुमार, श्रीमती भविष्या माथुर, डॉ. ज्योति विश्वकर्मा, डॉ. शांत कुमार चतुर्वेदी, श्री सूर्य प्रकाश मिश्र, श्री कुमार प्रद्योत दुबे, जितेंद्र प्रताप सिंह, डॉ. मनोज पांडेय, श्री हरिश्चंद्र, आदि उपस्थित रहे। संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया जाता है।

कथाकार प्रेमचन्द, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त एवं राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन स्मृति समारोह, 31 जुलाई, 2024

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा कथाकार प्रेमचन्द, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त एवं राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के स्मृति समारोह के शुभ अवसर पर बुधवार 31 जुलाई, 2024 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन के निराला सभागार लखनऊ में पूर्वाह्न 10. 30 बजे से किया गया।

दीप प्रज्ज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त वाणी वंदना डॉ0 कामिनी त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत की गयी।

सम्माननीय अतिथि डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. हिमांशु सेन व डॉ. अनुराधा पाण्डेय 'अन्वी' का स्वागत डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया।

डॉ. अनुराधा पाण्डेय अन्वी ने कहा- भारत की आजादी में हिन्दी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। मैथिलीशरण गुप्त बन्धन मुक्त प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्हें संस्कृत व बांग्ला भाषा का भी ज्ञान था। उनकी रचनाओं में स्त्री पात्रों को विशेष स्थान मिला। नारी मन की व्यथा का आभास उनकी रचनाओं में मिलता है। वे एक सिद्धहस्त रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत की जनता को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया। उनकी रचना साकेत व भारत-भारती ने भारत के जन मानस में स्फूर्ति व नवीन जोश भरने का कार्य किया। उनकी रचनाएँ आत्म गौरव से भर देती हैं। साहित्य जगत में उनकी अमिट छाप है, वे कलम के पुजारी थे। वे लेखक, कवि, निबंधकार नाटककार व राजनीतिज्ञ के रूप में हमारे सामने आते है। उन्होंने हिन्दी की सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

डॉ0 हिमांशु सेन ने कहा- हिन्दी कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों में शांति, कसक व टीस की झलक दिखायी पड़ती है। उनकी कहानियाँ हृदय से उत्पन्न होती है साथ ही हृदय में आकार पाती है। प्रेमचन्द कहानीकार, उपन्यासकार व एक निबंधकार के रूप में हमारे सम्मुख हैं। कभी वे यथार्थवादी तो कभी वे आदर्शवादी लेखक की रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। उन्होंने कहानी 'ईदगाह' पर बोलते हुए कहा कि इस कहानी में। भावनाओं का आवेग

है. शांति प्रेम, त्याग है। प्रेमचन्द ने भाषा और साहित्य को उत्कर्ष पर लाने का कार्य किया है। साहित्य में समावेशी प्रवृत्ति विद्यमान है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं की धवल चाँदनी से साहित्य जगत को चमकाया। प्रेमचन्द जी की प्रारम्भिक स्वनाएँ आस्थावादी है। प्रेमचन्द जी की रचनाओं में दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, कृषक विमर्श आदि विद्यमान हैं।

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा- राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन स्वयं में एक चरित्र हैं। टण्डन जी ने हिन्दी की सेवा करते हुए भारत रत्न प्राप्त किया। वे हिन्दी के उद्धारक एवं उन्नायक के रूप में हमारे सामने हैं। टण्डन जी ने हिन्दी को एक नई पहचान दी। टण्डन जी का जीवन सादगी पूर्ण था। उनका मानना था कि हिन्दी को आजादी प्राप्ति का माध्यम बनाया जा सकता है। आर्य समाज ने भी हिन्दी की महत्ता पर विशेष बल दिया। वे हिन्दी के क्षेत्र में एक उदाहरण के रूप में हमारे सामने आते हैं। वे राष्ट्र भाषा को राष्ट्रीयता के प्रचार-प्रसार के लिए एक माध्यम मानते थे। टण्डन जी ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार व उसकी महत्ता को स्थापित करने का आजीवन प्रयास किया।

डॉ0 अमिता दुबे प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान एवं उ0प्र0 हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम, 9 अगस्त, 2024

आज राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उ0प्र0 एवं उ0प्र0 हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में तुलसी जयन्ती समारोह वर्ष 2024 स्वान्तः सुखाय तुलसी का आयोजन उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज लखनऊ में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्षता संस्थान के मा. अध्यक्ष, डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्रा, आई.ए.एस. ने की।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मानस मर्मज्ञ डॉ0 शंभुनाथ आई.ए.एस. पूर्व मुख्य सचिव, उ0प्र0 शासन उपस्थित थे एवं विशिष्ट अतिथि प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव,

आई.ए.एस.(सेवानिवृत्त) थे। माँ शारदे एवं गोस्वामी तुलसीदास का माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर समारोह का आरम्भ किया गया। माँ सरस्वती की वन्दना डॉ. शोभा दीक्षित 'भावना' द्वारा की गयी। कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन उ0प्र0 हिन्दी संस्थान की प्रकाशन अधिकारी डॉ. अमिता दुबे द्वारा प्रस्तुत किया गया। मंच पर उपस्थित सम्माननीय अतिथियों के माल्यार्पण एवं शाल्यार्पण आदि सम्मान के पश्चात कार्यक्रम में संस्थान का संक्षिप्त विवरण डॉ. सीमा गुप्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात सुशील चन्द श्रीवास्तव, डॉ. सरला अस्माँ, विजय त्रिपाठी, पं0 आदित्य द्विवेदी एवं गिरिजाशंकर दुबे 'गिरिजेश' द्वारा

अपने-अपने कर्तव्य एवं काव्यपाठ का भव्यता से प्रस्तुतिकरण करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी के बारे में अपने-अपने विचार व्यक्त किये गये। मंचस्थ मनीषी प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला एवं तुलसी कृत 'रामचरितमानस' की युग दर युग प्रासंगिकता पर भी अपने विचार व्यक्त किये। मुख्य अतिथि डॉ. शंभुनाथ, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) पूर्व मुख्य सचिव, उ0प्र0 शासन द्वारा श्रीराम भक्ति धारा के कवि श्री गोस्वामी तुलसीदास पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तुलसीदास जी ने ही जनमानस को श्रीराम के बारे में परिचित कराया उन्होंने ही श्री राम के विचार एवं आचरण को जनमानस तक पहुँचाया। अन्त में समारोह के अध्यक्ष डॉ. अखिलेश कुमार मिश्रा, आई.ए.एस. ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि

गोस्वामी तुलसीदास जी ने माना कि भगवान से मिलने के सेतु के रूप में हनुमान जी ने उनका मार्गदर्शन करते हुए प्रभु श्री राम से चित्रकूट के घाट पर मिलवाया। अतः पवनपुत्र हनुमान जी को श्रीराम चन्द्र जी के अनन्यतम भक्त के रूप में प्रतिष्ठापित करने का कार्य भी गोस्वामी तुलसीदास जी ने किया। समारोह में राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उ0प्र0 एवं उ0प्र0 हिन्दी संस्थान के सदस्य, पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। इसके पश्चात सभी आगन्तुक अतिथियों विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दिनेश चन्द्र अवस्थी जी ने किया इसके पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर एवं भगवतीचरण वर्मा स्मृति समारोह, 22 अगस्त, 2024

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा जारी प्रसाद द्विवेदी अमृतलाल नागर एवं भगवतीचरण वर्मा के स्मृति समारोह के शुभ अवसर पर वृहस्पतिवार 22 अगस्त, 2024 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन के निराला सभागार लखनऊ में पूर्वाहन 10.30 बजे से किया गया। दीप प्रज्ज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर एवं भगवती चरण वर्मा के चित्र पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त वाणी वंदना रत्ना शुक्ला द्वारा प्रस्तुत की गयी।

सम्माननीय अतिथि- पद्मश्री डॉ. विद्याबिन्दु सिंह, पद्मकान्त शर्मा प्रभात, श्री चन्द्रशेखर वर्मा का स्वागत डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया।

चन्द्रशेखर वर्मा ने कहा- भगवती चरण वर्मा की साहित्यिक यात्रा कवि के रूप में शुरू हुई। वह व्यक्ति को बात करने से पहले 30-40 सेकेण्ड तक पढ़ते थे। तदोपरान्त बातचीत का सिलसिला शुरू होता था। वर्मा जी को कृतियों में मानवीय संवेदनाओं का बिम्ब-प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। फिल्म जगत के अभिनेता दिलीप कुमार का नाम भगवती चरण वर्मा जी ने ही रखा था। वर्मा जी के कथा संसार को पढ़ते हुये पाठक के चेहरे पर भाव स्वतः ही नजर आने लगते हैं, भगवती चरण वर्मा का चित्रलेखा उपन्यास अद्वितीय उपन्यास है, जो जीवन दर्शन को रेखांकित करता है।

पद्मकान्त शर्मा 'प्रभात' ने कहा- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य, हिन्दी, संस्कृत और बंगला भाषाओं के उन्नायक थे। भारतीय संस्कृति और सामाजिक चेतना के अग्रदूत के रूप में याद किये जायेंगे। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के प्रथम उपाध्यक्ष थे और उपाध्यक्ष के समय के उनके संस्मरण और उनकी कविताओं का पाठ किया।

पद्मश्री डॉ0 विद्याविन्दु सिंह ने कहा- अमृतलाल

नागर जी की 108 वीं जयन्ती के अवसर पर नागर जी के विशाल साहित्य का स्मरण किया। उनकी कृति 'सुहाग के नुपुर' सारांश के माध्यम से भारतीय नारी के सुहाग चिह की उपयोगिता भी बताई। उन्होंने भारत में साइमन कमीशन के

आगमन पर उनके द्वारा लिखी गई कविता की चर्चा करते हुए कहा कि नागर जी का नाम विशेष सर्जकों में हैं जिन्होंने साहित्य की विरासत को आगे बढ़ाया और साहित्य से होते हुए वे रेडियों की दुनिया में भी आए। नागर जी ने लखनऊ के इतिहास के कुछ पन्नों पर अपनी लेखनी चलाई। तमिल महाकाव्य सिलप्पदिकारम् के आधार पर लिखा। उनका उपन्यास सुहाग के नूपुर पर चर्चा करते हुए। सुहाग के नूपुर को नागर जी की उत्कृष्टकृति बताया।

डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा कार्यक्रम का संचालन एवं संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया गया।

किसी का रुपया वापस किया जा सकता है परन्तु सहानुभूति के दो शब्द वह ऋण हैं जिसे चुकाना मनुष्य की शक्ति के बाहर है।

दुःखी मनुष्य जब स्नेह और सहानुभूति का शब्द सुनता है, तब आँसुओं की झड़ी लग जाती है

- सुदर्शन

सौंदर्य किसे कहते हैं? प्रकृति, मानव-जीवन तथा ललित कलाओं के आनंददायक गुण का नाम सौंदर्य है। इस स्थापना पर आपत्ति यह की जाती है कि कला में कुरूप और असुंदर को भी स्थान मिलता है; दुखांत नाटक देखकर हमें वास्तव में दुःख होता है; साहित्य में वीभत्स का भी चित्रण होता है; उसे सुंदर कैसे कहा जा सकता है? इस आपत्ति का उत्तर यह है कि कला में कुरूप और असुंदर विवादी स्वरों के समान हैं जो मुख्य राग को निखारते हैं। वीभत्स का चित्रण देखकर हम उससे प्रेम नहीं करने लगते; हम उस कला से प्रेम करते हैं जो हमें वीभत्स से घृणा करना सिखाती है। वीभत्स से घृणा करना सुंदर कार्य है या असुंदर? जिसे हम कुरूप, असुंदर और वीभत्स कहते हैं, कला में उसकी परिणति सौदर्य में होती है। दुःखांत नाटकों में हम दूसरों का दुःख देखकर द्रवित होते हैं। हमारी सहानुभूति अपने तक, अथवा परिवार और मित्रों तक सीमित न रहकर एक व्यापक रूप ले लेती है। मानव-करुणा के इस प्रसार को हम सुंदर कहेंगे या असुंदर? सहानुभूति की इस व्यापकता से हमें प्रसन्न होना चाहिए या अप्रसन्न ? दुःखांत नाटकों अथवा करुण रस के साहित्य से हमें दुःख की अनुभूति होती है किंतु यह दुःख अमिश्रित और निरपेक्ष नहीं होता। उस दुःख में वह आनंद निहित होता है जो करुणा के प्रसार से हमें प्राप्त होता है। इसके सिवा इस तरह के साहित्य में हम बहुधा मनुष्य को विषम परिस्थितियों से वीरतापूर्ण संघर्ष करते हुए पाते हैं। संघर्ष का यह उदात्त भाव दुःख की अनुभूति को सीमित कर देता है। वीर मनुष्यों का यह संघर्ष हमें अपनी परिस्थितियों के प्रति सजग करता है, उनकी पराजय भी प्रबुद्ध दर्शकों तथा पाठकों के लिए भविष्य में चुनौती का काम करती है। उनकी वेदना हमारे लिए प्रेरणा बन जाती है। आनंद को इस व्यापक रूप में लें, उसे इंद्रियजन्य सुख का पर्यायवाची ही न मान लें तो हमें करुण और वीभत्स के चित्रण में सौंदर्य के अभाव की प्रतीति न हो।

– डॉ0 रामबिलास शर्मा

साहित्य भारती
वर्ष:27, अंक-4, अक्टूबर-दिसम्बर, 2024 (संयुक्तांक) पंजीयन संख्या- 65194/96

साहित्य भारती

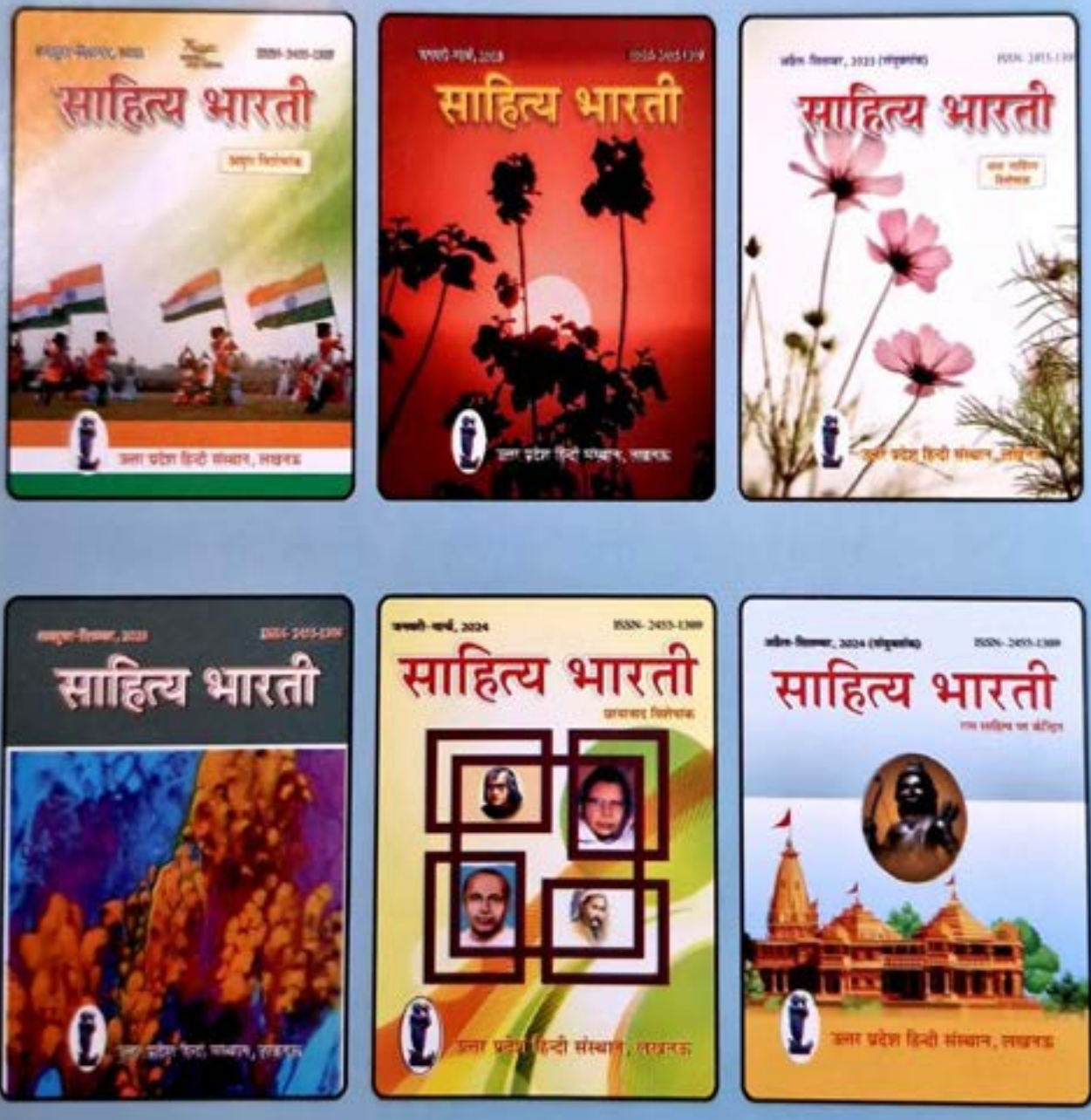

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रबन्ध सम्पादक, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा मौर्या इण्टरप्राइजेज, लखनऊ से मुद्रित तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, 6, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. अमिता दुबे
वेबसाइट : www.uphindisansthan.in ई-मेल: sahityabharti1976@gmail.com दूरभाष: 0522-2614470